साहित्य अकादेमी

वार्षिकी

2013-2014

अध्यक्ष : प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

उपाध्यक्ष : डॉ. चंद्रशेखर कंबार

सचिव : डॉ. के. श्रीनिवासराव

विषय-क्रम

भूमिका / 5

प्रमुख गतिविधियाँ / 8

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2013 / 9

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2013 / 13

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2013 / 17

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2013 / 21

कार्यक्रम

साहित्योत्सव / 25

अकादेमी 2013 प्रदर्शनी / 25

पुरस्कार अर्पण समारोह / 26

लेखक सम्मिलन / 28

संवत्सर व्याख्यान / 30

माननीय न्यायाधीश एम.एन. वेंकटचेलय्या द्वारा स्थापना दिवस व्याख्यान / 31

'वर्तमान साहित्य समालोचना : पाठ, प्रवृत्तियाँ एवं मुद्दे' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी / 31

हीरक जयंती समारोह साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यों का अभिनंदन / 35

आमने-सामने कार्यक्रम / 36

नई फ़सल : युवा कवि गोष्ठी / 37

बाल साहिति / 37

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्व एवं उत्तर क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन / 39

अनुवाद पुरस्कार 2012 प्रदत्त / 40

बाल साहित्य पुरस्कार 2013 प्रदत्त / 44

युवा पुरस्कार 2013 प्रदत्त / 47

भाषा सम्मान प्रदान समारोह / 50

अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदान कार्यक्रम / 52

संगोष्ठियाँ, परिसंवाद तथा सम्मेलन / 57

हिन्दी सप्ताह समारोह / 129

साहित्यिक कार्यक्रम शृंखला / 132

शासकीय निकायों की बैठकें / 138

क्षेत्रीय मंडल बैठकें / 138

भाषा परामर्श मंडल की बैठकें / 138

साहित्य अकादेमी पुस्तकालय / 139

लेखकों को यात्रा अनुदान / 139

कार्यशालाएँ / 140

पत्रिकाएँ / 140

सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम / 165

लेखक से भेंट /

कथा संधि /

कवि संधि /

लोक : विविध स्वर /

अस्मिता /

आविष्कार /

नारी चेतना /

मेरे झरोखे से /

कवि अनुवादक /

व्यक्ति और कृति /

साहित्य मंच बैठकें, प्रवासी मंच आदि /

पुस्तक प्रदर्शनियाँ / 171

परियोजना एवं संदर्भ कार्य / 174

प्रकाशन / 178

वार्षिक लेखा 2013-2014 / i-xxxviii

भूमिका

साहित्य अकादेमी का विधिवत् उद्घाटन भारत सरकार द्वारा 12 मार्च 1954 को किया गया था। भारत सरकार के जिस प्रस्ताव में अकादेमी का यह विधान निरूपित किया गया था, उसमें अकादेमी की यह परिभाषा दी गई है—भारतीय साहित्य के सक्रिय विकास के लिए कार्य करनेवाली एक राष्ट्रीय संस्था, जिसका उद्देश्य उच्च साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को समन्वित करना एवं उनका पोषण करना तथा उनके माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता का उन्नयन करना होगा। हालाँकि अकादेमी की स्थापना सरकार द्वारा की गई है, फिर भी यह एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में कार्य करती है। संस्था पंजीकरण अधिनियम 1860 के अंतर्गत इस संस्था का पंजीकरण 7 जनवरी 1956 को किया गया।

भारत की 'नेशनल एकेडेमी ऑफ़ लेटर्स' साहित्य अकादेमी साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और उसका देशभर में प्रसार करनेवाली केन्द्रीय संस्था है तथा सिर्फ़ यही ऐसी संस्था है जो भारत की चौबीस भाषाओं, जिसमें अंग्रेज़ी भी सम्मिलित है, में साहित्यिक क्रिया-कलापों का पोषण करती है। अपने 59 वर्षों में अधिक गतिशील अस्तित्व द्वारा इसने अपने निरंतर प्रयासों से सुरुचिपूर्ण साहित्य तथा पढ़ने की स्वस्थ आदतों को प्रोत्साहित किया है; इसने संगोष्ठियों, व्याख्यानों, परिसंवादों, परिचर्चाओं, वाचन एवं प्रस्तुतियों द्वारा विभिन्न भाषिक और साहित्यिक क्षेत्रों में अंतरंग संवाद को जीवंत बनाए रखा है; कार्यशालाओं तथा वैयक्तिक अनुबंधों द्वारा पारस्परिक अनुवादों की गति को तीव्र किया है; पत्रिकाओं, विनिबंधों, हर विधा के वैयक्तिक सृजनात्मक कार्यों, संग्रहों, विश्वकोशों, ग्रंथ-सूचियों, भारतीय लेखक परिचयकोश और साहित्येतिहास के प्रकाशन द्वारा एक गंभीर साहित्यिक संस्कृति का विकास किया है। अकादेमी ने अब तक चार हज़ार दो सौ से ज़्यादा पुस्तकें प्रकाशित की हैं, अकादेमी हर तीस घंटे में एक पुस्तक का प्रकाशन कर रही है। प्रत्येक वर्ष अकादेमी क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की कम-से-कम तीस संगोष्ठियों का आयोजन करती है। इसके अलावा आयोजित होनेवाली कार्यशालाओं और साहित्यिक सभाओं की संख्या प्रतिवर्ष लगभग दो सौ है। ये कार्यक्रम लेखक से भेंट, संवाद, कविसंधि, कथासंधि, लोक : विविध स्वर, व्यक्ति और कृति, मेरे झरोखे से, मुलाक़ात, अस्मिता, अंतराल, आविष्कार, साहित्य मंच और सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम जैसी शृंखलाओं के अंतर्गत अन्य देशों के लेखकों एवं विद्वानों के साथ आयोजित किए जाते हैं। इस वर्ष से महिला लेखकों के लिए नारी चेतना, पूर्वोत्तर लेखकों के लिए पूर्वोत्तरी तथा स्थापना दिवस उत्सवों जैसी नई साहित्यिक कार्यक्रम शृंखलाओं को आरंभ किया गया है।

अकादेमी प्रत्येक वर्ष अपने द्वारा मान्यता प्रदत्त चौबीस भाषाओं में साहित्यिक कृतियों के लिए पुरस्कार प्रदान करती है, साथ ही इन्हीं भाषाओं में परस्पर साहित्यिक अनुवाद के लिए भी पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। ये पुरस्कार साल भर चली संवीक्षा, परिचर्चा और चयन के बाद घोषित किए जाते हैं। अकादेमी उन भाषाओं के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान करने वालों को 'भाषा सम्मान' से विभूषित करती है, जिन्हें औपचारिक रूप से साहित्य अकादेमी की मान्यता प्राप्त नहीं है। यह सम्मान 'क्लासिकल एवं मध्यकालीन साहित्य' में किए गए योगदान के लिए भी दिया जाता है। अकादेमी प्रतिष्ठित लेखकों को महत्तर सदस्य और मानद महत्तर सदस्य चुनकर सम्मानित करती है। आनंद कुमारस्वामी और प्रेमचंद के नाम से एक 'फ़ेलोशिप' की स्थापना भी की गई है। अकादेमी ने बेंगलूरु, अहमदाबाद, कोलकाता और दिल्ली में अनुवाद-केन्द्र तथा दिल्ली में भारतीय साहित्य अभिलेखागार का प्रवर्तन किया है। नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी कैम्पस, शिलांग में जनजातीय और वाचिक साहित्य परियोजना के प्रवर्त्तन के लिए परियोजना कार्यालय स्थापित किया गया है तथा और भी कई कल्पनाशील परियोजनाएँ बनाई जा रही हैं। साहित्य अकादेमी को सांस्कृतिक और भाषाई विभिन्नताओं का ज्ञान है और वह स्तरों एवं प्रवृत्तियों को ध्वस्त कर कृत्रिम मानकीकरण में विश्वास नहीं करती; साथ ही वह गठन अंतः सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्रयोगात्मक सूत्रों के बारे में जागरूक है, जो भारत के साहित्य की विविध अभिव्यक्तियों को एकसूत्रता प्रदान करते हैं। विश्व के विभिन्न देशों के साथ यह एकता अकादेमी की सांस्कृतिक विनिमय के कार्यक्रमों द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय प्रजातिगत आयाम की खोज करती है।

अकादेमी की चरम सत्ता एक निन्यानवे सदस्यीय परिषद् (सामान्य परिषद्) में न्यस्त है, जिसका गठन निम्नांकित ढंग से होता है :

अध्यक्ष, वित्तीय सलाहकार, भारत सरकार द्वारा मनोनीत पाँच सदस्य, भारत सरकार के राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों के पैंतीस प्रतिनिधि, साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाओं के चौबीस प्रतिनिधि, भारत के विश्वविद्यालयों के बीस प्रतिनिधि, साहित्य-क्षेत्र में अपने उत्कर्ष के लिए परिषद् द्वारा निर्वाचित आठ व्यक्ति एवं संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, भारतीय प्रकाशक संघ और राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फ़ाउंडेशन के एक-एक प्रतिनिधि।

साहित्य अकादेमी की व्यापक नीति और उसके कार्यक्रम के मूलभूत सिद्धांत परिषद् द्वारा निर्धारित किए जाते हैं और उन्हें कार्यकारी मंडल के प्रत्यक्ष निरीक्षण में क्रियान्वित किया जाता है। प्रत्येक भाषा के लिए परामर्श मंडल है, जिसके सदस्य प्रसिद्ध लेखक और विद्वान होते हैं और उन्हीं के परामर्श पर तत्संबंधी भाषा का विशिष्ट कार्यक्रम नियोजित एवं कार्यान्वित होता है।

परिषद् का कार्यकाल पाँच वर्ष होता है। वर्तमान परिषद् अकादेमी की स्थापना के बाद तेरहवीं है और इसकी प्रथम बैठक फ़रवरी 2013 में संपन्न हुई। अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले कार्यकारी मंडल के सदस्यों और वित्त समिति के लिए सामान्य परिषद् के एक प्रतिनिधि का निर्वाचन परिषद् द्वारा किया जाता है। विभिन्न भाषाओं के परामर्श मंडल कार्यकारी मंडल द्वारा नियुक्त किए जाते हैं।

अध्यक्ष

साहित्य अकादेमी के पहले अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। सन् 1963 में वह पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मई 1964 में उनके निधन के बाद सामान्य परिषद् ने डॉ. एस. राधाकृष्णन् को अपना अध्यक्ष निर्वाचित किया। फ़रवरी 1968 में नवगठित परिषद् ने डॉ. ज़ाकिर हुसैन को साहित्य अकादेमी का अध्यक्ष निर्वाचित किया। मई 1969 में उनके निधन के पश्चात् परिषद् ने डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी को अध्यक्ष चुना। फ़रवरी 1973 में वह परिषद द्वारा पुनः अध्यक्ष चुने गए। मई 1977 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उपाध्यक्ष प्रो. के. आर. श्रीनिवास आयंगर साहित्य अकादेमी के कार्यवाहक अध्यक्ष बनाए गए। फ़रवरी 1978 में प्रो. उमाशंकर जोशी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1983 में प्रो. वी.के. गोकाक अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1988 में डॉ. बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 1993 में प्रो. यू.आर. अनंतमूर्ति अध्यक्ष चुने गए। 1998 में श्री रमाकांत रथ अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2003 में प्रो. गोपीचंद नारंग अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2008 में श्री सुनील गंगोपाध्याय अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2013-2017 के लिए पुनर्गठित सामान्य परिषद द्वारा प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को अकादेमी का अध्यक्ष चुना गया।

संविधान

साहित्य अकादेमी की स्थापना भारत सरकार के 15 दिसंबर 1952 के प्रस्ताव के अंतर्गत हुई, जिसमें अकादेमी का संविधान मूलतः अंतर्भुक्त था। अकादेमी एक स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करती है और अपने संविधान में आवश्यक संशोधन करने का अधिकार अकादेमी की सामान्य परिषद् में न्यस्त है। समय-समय पर इस अधिकार का प्रयोग भी किया जाता रहा है।

मान्य भाषाएँ

भारत के संविधान में परिगणित बाईस भाषाओं के अतिरिक्त साहित्य अकादेमी अंग्रेज़ी और राजस्थानी को ऐसी भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान कर चुकी है, जिसमें उसका कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा सकता है। इन 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यक्रम लागू करने के लिए परामर्श-मंडल गठित किए गए हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं—असमिया, बाङ्ला, बोडो, डोगरी, अंग्रेज़ी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयाळम्, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िया, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली, सिन्धी, तमिळ, तेलुगु और उर्दू।

संगठन

प्रधान कार्यालय : साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। यह भव्य भवन रवीन्द्रनाथ ठाकुर की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सन् 1961 में निर्मित हुआ था। इसमें तीनों राष्ट्रीय अकादेमियों—संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी और साहित्य अकादेमी स्थित हैं।

यह कार्यालय डोगरी, अंग्रेज़ी, हिन्दी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली और उर्दू के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है और इन भाषाओं के संदर्भ में क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में कार्य करता है।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता : सन् 1956 में स्थापित और अब 4, डी.एल.खान रोड (एस.एस.के.एम. अस्पताल के निकट) कोलकाता-700025 में स्थित यह क्षेत्रीय कार्यालय असमिया, बाङ्ला, बोडो, मणिपुरी और ओड़िया में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। इसके अतिरिक्त अंग्रेज़ी और तिब्बती भाषा की कुछ पुस्तकें भी यहाँ प्रकाशित होती हैं। यह अन्य उत्तर-पूर्वी भाषाओं में भी कार्यक्रमों का संयोजन करता है। यहाँ पर एक प्रमुख पुस्तकालय भी है।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु : सन् 1990 में स्थापित यह क्षेत्रीय कार्यालय अंग्रेज़ी की कुछ पुस्तकों के अतिरिक्त कन्नड, मलयाळम्, तमिऴ और तेलुगु में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यह कार्यालय सेंट्रल कॉलेज परिसर, यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी बिल्डिंग, डॉ. बी.आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळूरु-560001 में स्थित है। यहाँ पर एक प्रमुख पुस्तकालय भी है।

चेन्नई कार्यालय : सन् 2000 में स्थापित यह कार्यालय बेंगळूरु कार्यालय के कुछ कामों की देखरेख करता है और मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443 (304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई-600018 में स्थित है।

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई : सन् 1972 में स्थापित और 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400014 में स्थित यह कार्यालय हिन्दी और अंग्रेज़ी के कुछ प्रकाशनों सहित गुजराती, कोंकणी, मराठी और सिन्धी में अकादेमी के प्रकाशनों और कार्यक्रमों की देखरेख करता है।

प्रकाशनों की बिक्री : साहित्य अकादेमी का बिक्री विभाग 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के प्रकाशनों की बिक्री नई दिल्ली स्थित मुख्यालय और मुंबई, कोलकाता, बेंगळूरु और चेन्नई कार्यालयों से भी की जाती है।

14 फ़रवरी 2007 को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के रवीन्द्र भवन परिसर में एक स्थायी किताब-घर का उद्घाटन किया गया।

27 जुलाई 2007 को पुदुचेरी में एक पुस्तक बिक्री काउंटर का उद्घाटन किया गया।

10 अक्तूबर 2007 को रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, डायमंड हार्बर रोड, कोलकाता में एक स्थायी बिक्री केन्द्र का उद्घाटन किया गया।

पुस्तकालय : साहित्य अकादेमी का पुस्तकालय भारत के प्रमुख बहुभाषिक पुस्तकालयों में से एक है, यहाँ अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त चौबीस भाषाओं में विविध साहित्यिक और संबद्ध विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं के केन्द्रों के रूप में स्थापित किया गया है और उन क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भाषा पुस्तकालयों के लिए यह संपर्क संस्था के रूप में कार्य करता है।

साहित्य अकादेमी वेबसाइट : साहित्य अकादेमी की वेबसाइट http://www.sahitya-akademi.gov.in में इसकी स्थापना, उद्देश्यों, साहित्य अकादेमी की भूमिका एवं उसके इतिहास के विवरण उपलब्ध हैं। इसके अलावा अकादेमी की पुस्तकों की संपूर्ण सूची, जिसमें महत्वपूर्ण प्रकाशनों का भाषानुसार विवरण उपलब्ध है, उसकी पत्रिकाओं के बारे में सूचनाएँ, साहित्यिक गतिविधियाँ, विशेष परियोजनाएँ जैसे भारतीय साहित्य अभिलेखागार, अनुवाद—केन्द्रों तथा जनजातीय और वाचिक साहित्य परियोजना जैसी विशिष्ट परियोजनाएँ, अकादेमी पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यता के विवरण, पुस्तकालय के बारे में सूचना तथा गत वर्षों में संस्था की उपलब्धियों का मूल्यांकन उपलब्ध है।

प्रमुख गतिविधियाँ

- अकादेमी पुरस्कार 2013 घोषित एवं प्रदत्त
- अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2013 घोषित
- अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2012 प्रदत्त
- अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2013 घोषित एवं प्रदत्त
- अकादेमी युवा पुरस्कार 2013 प्रदत्त
- भाषा सम्मान प्रदत्त
- साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यताएँ प्रदत्त
- दो अंतरराष्ट्रीय काव्योत्सव आयोजित
- 47 संगोष्ठियों, 41 परिसंवादों तथा 2 भाषा सम्मेलनों का आयोजन
- 442 नई एवं पुनर्मुद्रित पुस्तकें प्रकाशित
- साहित्य मंच, सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों तथा पुस्तक विमोचन आदि के 144 कार्यक्रम संपन्न
- 11 कार्यशालाएँ आयोजित
- 'लेखक से भेंट' शृंखला में 20 कार्यक्रमों का आयोजन
- 'व्यक्ति और कृति' के अंतर्गत 10 कार्यक्रम आयोजित
- 'मेरे झरोखे से' शृंखला में 16 कार्यक्रमों का आयोजन
- 'लोक : विविध स्वर' शृंखला के अंतर्गत 9; 'मुलाक़ात' शृंखला के अंतर्गत 12; 'कथासंधि' शृंखला के अंतर्गत 11, 'कविसंधि' शृंखला के अंतर्गत 17; 'अस्मिता' शृंखला के अंतर्गत 11 तथा 'नारी चेतना' शृंखला के अंतर्गत 9 कार्यक्रमों का आयोजन
- 143 से अधिक पुस्तक-प्रदर्शनियों का आयोजन
- 2 अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेलों का आयोजन
- *इंडियन लिटरेचर* के 6 और *समकालीन भारतीय साहित्य* के 6 अंकों तथा *संस्कृत प्रतिभा* के दो अंकों का प्रकाशन

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2013

18 दिसंबर 2013 को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में वर्ष 2013 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार के लिए 24 पुस्तकों का चयन, संबद्ध भाषाओं में विसदस्यीय निर्णायक मंडल की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। मैथिली भाषा का पुरस्कार बाद में घोषित किया गया। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष के पूर्ववर्ती तीन वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2009 से 31 दिसंबर 2011 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2013 से सम्मानित लेखक

असमिया	:	रवींद्र सरकार, *धूलियारि भरिर साँच* (कविता-संग्रह)
बाङ्ला	:	सुबोध सरकार, *द्वैपायन ह्रदेर धारे* (कविता-संग्रह)
बोडो	:	अनिल बर', *देलफिनि अन्थाइ मोदाइ आरो गुबुन गुबुन खन्थाइ* (कविता-संग्रह)
डोगरी	:	सीताराम सपोलिया, *दोहा सतसई* (कविता-संग्रह)
अंग्रेज़ी	:	तेमसुला आओ, *लबरनम फ़ॉर माइ हेड* (कहानी-संग्रह)
गुजराती	:	चिनु मोदी, *खारां ज़रण* (कविता-संग्रह)
हिन्दी	:	मृदुला गर्ग, *मिलजुल मन* (उपन्यास)
कन्नड	:	सी.एन. रामचन्द्रन, *आख्यान-व्याख्यान* (निबंध-संग्रह)
कश्मीरी	:	मोही-उ-दीन रेशी, *एन. आतश* (कहानी-संग्रह)
कोंकणी	:	तुकाराम रामा शेट, *मनमोतयां* (निबंध-संग्रह)
मैथिली	:	सुरेश्वर झा, *संघर्ष आ सेहन्ता* (संस्मरण)
मलयाळम्	:	एम.एन. पालूर, *कथायिल्लतेवन्टे कथा* (आत्मकथा)
मणिपुरी	:	माखोनमनि मोङसाबा, *चीङलोन अमदगी अमदा* (यात्रा-वृत्तांत)
मराठी	:	सतीश काळसेकर, *वाचणारयाची रोजनिशी* (निबंध-संग्रह)
नेपाली	:	मनबहादुर प्रधान, *मनका लहर र रहरहरू* (यात्रा-वृत्तांत)
ओड़िया	:	विजय मिश्र, *वानप्रस्थ* (नाटक)
पंजाबी	:	मनमोहन, *निरवाण* (उपन्यास)
राजस्थानी	:	अंबिका दत्त, *आंध्योई नहीं दिन हाल* (कविता-संग्रह)
संस्कृत	:	राधाकान्त ठाकुर, *चलदूरवाणी* (कविता-संग्रह)
संताली	:	अर्जुन चरण हेम्ब्रम, *चंदा बोन्गा* (कविता-संग्रह)
सिन्धी	:	नामदेव ताराचंदाणी, *मंझ-नगरी* (कविता-संग्रह)
तमिळ	:	आर.एन. जो डी' क्रूज, *कोरकई* (उपन्यास)
तेलुगु	:	कात्यायनी विद्महे, *साहित्यआकाशमलो सगम* (निबंध-संग्रह)
उर्दू	:	जावेद अख़्तर, *लावा* (कविता-संग्रह)

रवींद्र सरकार

तेमसुला आओ

मोही-उ-दीन रेशी

सुबोध सरकार

चिनु मोदी

तुकाराम रामा शेट

अनिल बर'

मृदुला गर्ग

सुरेश्वर झा

सीताराम सपोलिया

सी.एन. रामचंद्रन

एन.एन. पालूर

माखोनमनि मोङसाबा

मनमोहन

नामदेव ताराचंदाणी

सतीश कालसेकर

अंबिका दत्त

आर.एन. जो डी' क्रूज

मनबहादुर प्रधान

राधाकान्त ठाकुर

कात्यायनी विद्महे

विजय मिश्र

अर्जुन चरण हेम्ब्रम

जावेद अख़्तर

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2013 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
- श्री अरुण शर्मा
- श्री हृषिकेश गोस्वामी
- डॉ. मालिनी गोस्वामी

बाङ्ला
- प्रो. अश्रु कुमार सिकदर
- श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती
- श्री रतुल देव बर्मन

बोडो
- श्री बिश्वेश्वर बसुमतारी
- श्री जनिल कुमार ब्रह्म
- श्री तोरेन बोरो

डोगरी
- डॉ. ओम गोस्वामी
- प्रो. सत्यपाल श्रीवत्स
- डॉ. निर्मल विनोद

अंग्रेज़ी
- डॉ. जसबीर जैन
- सुश्री ममंग दई
- श्री शिव के. कुमार

गुजराती
- श्रीमती धीरुबेन जी. पटेल
- डॉ. प्रवीण शांतीलाल दार्जी
- श्री रमन कांतिलाल सोनी

हिन्दी
- प्रो. अरविंदाक्षन
- श्रीमती चन्द्रकांता
- श्री हिमांशु जोशी

कन्नड
- डॉ. के. चिन्नप्पा गौडा
- डॉ. एच.सी. बोरलिंगय्या
- श्री टी.पी. अशोक

कश्मीरी
- प्रो. मिशल सुल्तानपुरी
- श्री मंसूर बनहाली
- प्रो. शफ़ी शौक़

कोंकणी
- श्रीमती मीना एस. काकोदकर
- श्रीमती मेल्विन रोड्रिग्स
- श्री रमेश बी. वेलुस्कर

मैथिली
- डॉ. देवेन्द्र झा
- डॉ. योगानंद झा
- डॉ. रूपनारायण चौधरी

मलयाळम्
- श्री एम. मुकुंदन
- श्री पॉल जकारिया
- प्रो. एम. थॉमस मैथ्यू

मणिपुरी
- श्री नाङबोडबम कुंजमोहन सिंह
- श्री अरमबम थीरेन सिंह
- प्रो. थौनाजम रतनकुमार सिंह

मराठी
- प्रो. सदानंद मोरे
- डॉ. कोट्टपल्ले नागनाथ
- प्रो. विलास खोले

नेपाली
- डॉ. गोकुल सिन्हा
- डॉ. प्रताप चंद्र प्रधान
- श्री मनप्रसाद सुब्बा

ओड़िया
- डॉ. कृष्णचंद्र बेहेरा
- डॉ. प्रसन्न कुमार स्वैन
- श्री सौभाग्य कुमार मिश्र

पंजाबी
- श्री अमरजीत ग्रेवाल
- श्री प्रेम प्रकाश
- डॉ. सतीश कुमार वर्मा

राजस्थानी
- डॉ. भरत ओला
- श्री अन्ना राम सुदामा
- श्री उपेन्द्र 'अणु'

संस्कृत
- प्रो. (श्रीमती) एम.वी. रमना
- प्रो. रमेश चन्द्र पंडा
- प्रो. शिवजी उपाध्याय

संताली
- श्री जदुमणि बेसरा
- श्री रामचंद्र मुर्मू
- डॉ. रतनचंद्र हेम्ब्रम

सिंधी
- श्री लक्ष्मण दुबे
- श्री लखमी खिलाणी
- श्री ढोलन राही

तमिऴ
- डॉ. सी.एस. लक्ष्मी (अम्बै)
- डॉ. इंदिरा आर. पार्थासारथी
- श्री पोन्नीलन

तेलुगु
- प्रो. बन्ना अलिया
- प्रो. एल्लूरि शिवा रेड्डी
- श्री जे.एस. मूर्ति 'बिहारी'

उर्दू
- श्री कृष्ण कुमार तूर
- श्री फ़े शीन एजाज़
- श्री सलाम बिन रज़्ज़ाक

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2013

10 मार्च 2014 को नई दिल्ली में अकादेमी के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2013 के लिए 23 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। अनुवाद पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा में चयन समितियों की अनुशंसा के आधार पर किया गया। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पहले के पूर्ववर्ती वर्ष के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2007 और 31 दिसंबर 2011 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

अनुवाद पुरस्कार 2013 से सम्मानित अनुवादक

असमिया : (स्व.) दीपिका चक्रवर्ती, *सेई समय (भाग-2)* [*सेई समय*, बाङ्ला (उपन्यास)–सुनील गंगोपाध्याय]

बाङ्ला : सोमा बंद्योपाध्याय, *गठनवाद, उत्तर-गठनवाद एबंग प्राच्य काव्यतत्व* [*साख़्तियात, पस-साख़्तियात और मशरिक़ी शेरियात*, उर्दू (समालोचना)–गोपीचंद नारंग]

बोडो : गोविन्द बोडो, *जागरी* [*जागोरी*, बाङ्ला (उपन्यास)–सतीनाथ भादुड़ी]

डोगरी : वीणा गुप्ता, *कलकत्ते दी कहानी : वाया बाईपास* [*कलिकथा वाया बाईपास*, हिन्दी (उपन्यास)–अलका सरावगी]

अंग्रेज़ी : रणजीत होस्कोटे, *आई, लल्ला : द पोएम्स ऑफ़ लल द्यद* [*लल्ल वाक्यानि*, कश्मीरी (कविता-संग्रह)–लल द्यद]

हिन्दी : बुद्धदेव चटर्जी, *अहीरन* [*अहीरन*, असमिया (उपन्यास)–इंदिरा गोस्वामी]

कन्नड : जे.पी. डोड्डमणि, *महात्मा ज्योतिराव फुले* [महात्मा ज्योतिराव फुले, मराठी (जीवनी)–धनंजय कीर]

कश्मीरी : अज़ीज़ हाजनी, *ज़े गज़ ज़मीन* [*दो गज़ ज़मीन*, उर्दू (उपन्यास)–अब्दुस्समद]

कोंकणी : हेमा नायक, *कलिकथा : वाया बाईपास* [*कलिकथा : वाया बाईपास*, हिंदी (उपन्यास)–अलका सरावगी]

मैथिली : गुणनाथ झा, *बाङ्ला एकांकी नाट्य संग्रह* [*बाङ्ला एकांकी नाट्य संग्रह*, बाङ्ला (एकांकी-संग्रह)–संक. एवं संपादन : अजित कुमार घोष (विभिन्न लेखक]

मलयाळम् : उल्लूर एम. परमेश्वरन्, *तिरुवाचकम* [*तिरुवाचकम*, तमिऴ (प्राच्य काव्य)–मणिक्का वाचाकार]

मणिपुरी : इबोचा सोइबम, *खम्बी मेगी माशसिंग* [*विंग्स ऑफ़ फायर*, अंग्रेज़ी (आत्मकथा)–ए.पी.जे. अब्दुल कलाम]

मराठी : फादर फ्रांसिस डी' ब्रुत्तो, *सुबोध बाइबिल-नव करार* [*बाइबिल : द न्यू टेस्टामेंट*, अंग्रेज़ी (रिलिजियस टेक्स्ट)]

नेपाली : आई.के. सिंह, *मैला आंचल* [*मैला आंचल*, हिंदी (उपन्यास)–फणीश्वरनाथ रेणु]

ओड़िया : बिलासिनी महांति, *अनबुत अंधकार : सआदत हसन मंटोंक अर्धशत कहानी* [*पचास कहानियों का संग्रह*, उर्दू–सआदत हसन मंटो]

पंजाबी : बलबीर माधोपुरी, *राजकमल चौधरी दियां कहानियां* [*राजकमल चौधरी की चुनिंदा कहानियां*, हिंदी (कहानी-संग्रह)–राजकमल चौधरी]

राजस्थानी : (स्व.) शान्ति भारद्वाज 'राकेश', *अर्धनारीश्वर* [*अर्धनारीश्वर*, हिंदी (उपन्यास)–विष्णु प्रभाकर]

संस्कृत : अभिराज राजेन्द्र मिश्र, *विजयपर्व* [*विजयपर्व*, हिंदी (नाटक)–रामकुमार वर्मा]

संताली : मंगल माझी (मुर्मू), *मलंग अनल* [*भाग्य चक्र*, बाङ्ला (उपन्यास)–हरधान अधिकारी]

सिंधी : खीमाण यू. मुलाणी, *डॉ. अम्बेडकर हिक प्रेरणादायी शख़्सियत* [*डॉ. अम्बेडकर*, हिंदी (निबंध-संग्रह)–रतनकुमार सांभरिया]

तमिऴ : इरियादियान (दास), *अवधेश्वरी* [*अवधेश्वरी*, कन्नड (उपन्यास)–शंकर मोकाशी पुणेकर]

तेलुगु : नलीमेला भास्कर, *स्मारक शिलालु* [*स्मारक शिलाकळ*, मलयाळम् (उपन्यास)–पुणातिल कुन्हअब्दुल्ला]

उर्दू : निज़ाम सिद्दीक़ी, *क्याप* [*क्याप*, हिंदी (उपन्यास)–मनोहर श्याम जोशी]

*इस वर्ष गुजराती भाषा में पुरस्कार नहीं।

(स्व.) दीपिका चक्रवर्ती

रणजीत सोल्खंदे

हेमा नायक

सोमा बंद्योपाध्याय

बुद्धदेव चटर्जी

गुणनाथ झा

गोविंद बोरो

जे.पी. डोडामणि

उल्लूर एम. परमेश्वरन्

वीणा गुप्ता

अजीत हाजनी

इबोचा सोइबम

फादर फ्रांसिस दी' ब्रिटो

(स्व.) शांति भारद्वाज 'राकेश'

श्रीमाप यु. मुत्ताणी

आई.के. सिंह

इरियादियान (दास)

अभिराज राजेन्द्र मिश्र

विलासिनी महांति

नलीमेला भास्कर

बलबीर माधोपुरी

मंगल माझी (मुर्मू)

निज़ाम सिद्दीकी

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2013 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
- श्री अंजन शर्मा
- श्री तीर्थ फुकन
- डॉ. राजेन सइकीया

बाङ्ला
- श्री एस. कृष्णमूर्ति
- सुश्री भारती नंदी
- श्री अफ़सर अहमद

बोडो
- डॉ. सुनील फुकन बसुमतारि
- श्री बिजोय बगलारी
- श्री मनेश्वर ब्रह्म (बसुमतारि)

डोगरी
- श्री दर्शन दर्शी
- श्री श्याम लाल रैणा
- श्री नरेन्द्र भसीन

अंग्रेज़ी
- प्रो. उदयन मित्र
- प्रो. सुमन्यु सत्पथी
- प्रो. जे.पी. दास

हिन्दी
- श्री गिरीश पंकज
- डॉ. ओम निश्चल
- सुश्री अंजु उद्दा मिश्र

कन्नड
- प्रो. सिद्धलिंग पट्टनशेट्टी
- प्रो. ओ.एल.एन. नागभूषण स्वामी
- डॉ. डी.ए. शंकर

कश्मीरी
- श्री गुलाम नबी आतिश
- श्री माखन लाल कँवल
- श्री शौकत अंसारी

कोंकणी
- प्रो. के.आर. वसंतमोनी
- श्री कमलाकर दत्ताराम म्हालशी
- डॉ. गीता शिनॉय

मैथिली
- डॉ. ब्रजकिशोर मिश्र
- डॉ. अमरनाथ झा
- डॉ. महेन्द्र नारायण राम

मलयाळम्
- डॉ. एस. तंकमणि अम्मा
- डॉ. आरसु (आर. सुरेन्द्रन)
- डॉ. देशमंगलम रामाकृष्णन्

मणिपुरी
- प्रो. क्ष. मुनाल सिंह
- डॉ. एलाङ्बम विजयलक्ष्मी देवी
- प्रो. श्यामसुन्दर सिंह

मराठी
- डॉ. उमा विरुपाक्ष कुलकर्णी
- डॉ. लक्ष्मीनारायण बोल्लि
- श्री नितिन गुलाबराव रिंधे

नेपाली
- डॉ. राजकुमारी दहाल
- डॉ. दिवाकर प्रधान
- डॉ. खगेन शर्मा

ओड़िया
- डॉ. अजय कुमार पटनायक
- डॉ. विजय कुमार नंदा
- डॉ. संतोष के. रथ

पंजाबी
- डॉ. मनमोहन
- श्रीमती रशपिन्दर रश्मि
- प्रो. जोगा सिंह

राजस्थानी
- श्री नंद भारद्वाज
- श्री कुंदन माली
- श्री अम्बिकादत्त

संस्कृत
- प्रो. राजेंद्र नानावटी
- श्री हरिदत्त शर्मा
- श्री पी.बी. रमनकुट्टी

संताली
- श्री कृष्णचंद्र सोरेन
- श्री विश्वनाथ टुडू
- श्री रवींद्रनाथ मुर्मू

सिन्धी
- श्री नामदेव ताराचंदाणी
- श्री हरीश करमचंदाणी
- सुश्री रश्मि रमाणी

तमिळ
- डॉ. के.एस. सुब्रह्मणियन
- डॉ. मा. रामलिंगम
- डॉ. तमिल सेल्वी

तेलुगु
- श्री रामतीर्थ
- प्रो. टी. विजय कुमार
- डॉ. नौमुलसत्यनारायण

उर्दू
- प्रो. तारिक छतारी
- डॉ. राशिद अनवर राशिद
- श्री माहेर मन्सूर

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2013

बाल साहित्य पुरस्कार के लिए पुस्तकों तथा समग्र योगदान हेतु लेखकों का चयन संबंधित भाषा में त्रिसदस्यीय चयन समितियों की अनुशंसा के आधार पर निर्धारित नियमों का अनुसरण करते हुए किया गया। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पहले के वर्ष के पूर्ववर्ती पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2007 और 31 दिसंबर 2011 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया जाना है। लेकिन आरंभिक पाँच वर्षों, जो 2010-2014 है, के लिए पुरस्कार बालसाहित्य के क्षेत्र में लेखक के सामग्र योगदान के लिए दिए जा सकते हैं, यदि उनकी कोई पुस्तक विचारार्थ नहीं है।

बाल साहित्य पुरस्कार 2013 से सम्मानित लेखक

असमिया : तोषप्रभा कलिता, *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*
बाङ्ला : नारायण देवनाथ, *कॉमिक्स समग्र* (कहानी)
बोडो : जतींद्र नाथ सोरगियारि, *बीरबलनि सल'* (कहानी)
डोगरी : कृष्ण शर्मा, *खड़ौने* (कहानी)
अंग्रेज़ी : अनिता नायर, *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*
गुजराती : श्रद्धा ए. त्रिवेदी, *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*
हिन्दी : रमेश तैलंग, *मेरे प्रिय बालगीत* (कविता)
कन्नड : एच.एस. वेंकटेशमूर्ति, *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*
कश्मीरी : रशीद कांसपुरी, *गुल ते बुलबुल* (निबंध और कविता)
कोंकणी : माया अनिल खरंगटे, *रानाच्या मनांत* (उपन्यास)
मैथिली : धीरेन्द्र कुमार झा, *हमरा बीच विज्ञान* (निबंध)
मलयाळम् : सुमंगला (लीला नम्बूदिरिपाद), *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*
मणिपुरी : रघु लैशांथेम, *पटपंगी थोइबी* (कहानी)
मराठी : अनंत भावे, *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*
नेपाली : भोटू प्रधान, *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*
ओड़िया : नदिया बिहारी महांति, *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*
पंजाबी : कमलजीत नीलों, *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*
राजस्थानी : विमला भंडारी, *अणमोल भेंट* (कहानी)
संस्कृत : एच.आर. विश्वास, *मार्जालस्य मुखं दृष्टम्* (नाटक)
संताली : सारि धरम हांसदा, *डोंबे बाहा* (कविता)
सिन्धी : वासुदेव 'निर्मल', *मुँखे चार पुछ ड़े!* (कहानी)
तमिऴ : रेवती (ई.एस. हरिहरन), *पवलम तंता परिसु* (कहानी)
तेलुगु : डी. सुजाता देवी, *आठलो अरटिपंडु* (कहानी)
उर्दू : असद रज़ा, *नन्हें मुन्नों की सरकार* (कहानी)

तोषप्रभा कलिता

अनिता नायर

रशीद कांसपुरी

नारायण देबनाथ

श्रद्धा ए. त्रिवेदी

माया अनिल खरंगटे

जतींद्र नाथ स्वर्गियारि

रमेश तैलंग

धीरेंद्र कुमार झा

कृष्ण शर्मा

एन.एल. वेंकटेशमूर्ति

सुमंगला (लीला नम्पूतिरिपाद)

रघु लेशांग्थेम

कमलजीत नीलों

वासुदेव 'निर्मल'

अनंत भावे

विमला भंडारी

रेवती (ई.एस. हरिहरन)

भोटू प्रधान

एच.आर. विश्वास

डी. सुजाता देवी

नदिया बिहारी महांति

सारि धरम हांसदा

असद रज़ा

बाल साहित्य पुरस्कार 2013 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
- श्री देवव्रत दास
- श्री हीरेन्द्रनाथ दत्त
- श्री प्रफुल्ल चन्द्र बोरा

बाङ्ला
- प्रो. पवित्र सरकार
- श्री रणजीत दास
- श्री सैलेन घोष

बोडो
- श्री अरविन्द उजीर
- श्री गोविन्द नार्जारी
- डॉ. रीता बोरो

डोगरी
- श्री अभिशाप (कुलदीप कुमार शर्मा)
- प्रो. अर्चना केसर
- श्री प्रकाश प्रेमी

अंग्रेज़ी
- प्रो. अनीसुर रहमान
- डॉ. अर्शिया सत्तार
- सुश्री नमिता गोखले

गुजराती
- श्री चन्द्रकान्त टोपीवाला
- श्री हर्षद त्रिवेदी
- डॉ. उषा उपाध्याय

हिन्दी
- डॉ. बालशौरि रेड्डी
- श्री प्रकाश मनु
- प्रो. रमेश कुंतल मेघ

कन्नड
- श्री बोलवार महमद कुन्ही
- श्री देवु पात्तर
- डॉ. कृष्णमूर्ति हनूर

कश्मीरी
- श्री फयाज़ तिलगामी
- डॉ. इक़बाल नाज़की
- प्रो. शाद रमज़ान

कोंकणी
- श्री दामोदर मावजो
- डॉ. (श्रीमती) माधवी सरदेसाई
- डॉ. प्रकाश आर. वाजरिकर

मैथिली
- डॉ. अमरनाथ चौधरी
- प्रो. भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता
- डॉ. सुरेश्वर झा

मलयालम्
- श्री एम.के. सानू
- श्री एम.एम. यशीर
- श्री पेरूम्बदवम श्रीधरन

मणिपुरी
- डॉ. कोइजाम शांतिबाला देवी
- श्री लॉइजम जयचंद्र सिंह
- डॉ. एन. खगेंद्र सिंह

मराठी
- श्री बाबा भांड
- डॉ. राजन गवास
- श्री सतीश आलेकर

नेपाली
- डॉ. भवानी प्रसाद शर्मा
- श्री दुर्गाप्रसाद श्रेष्ठ
- सुश्री इंद्रमणि दनाल

ओड़िया
- श्रीमती अमूल्यमणि मिश्र
- प्रो. गणेश्वर मिश्र
- प्रो. महेश्वर मोहांती

पंजाबी
- डॉ. मोहनजीत
- श्री नछत्तर
- डॉ. सुरजीत पातर

राजस्थानी
- डॉ. ज्योतिपुंज
- श्री लक्ष्मण दान कविया
- श्री मोहन आलोक

संस्कृत
- डॉ. कलानाथ शास्त्री
- डॉ. वी. कुटुम्ब शास्त्री
- प्रो. राधाकान्त ठाकुर

संताली
- श्री आदित्य कुमार मांडी
- श्री गोराचांद मुर्मू
- श्री जमादार किस्कू

सिन्धी
- श्री मोहन गेहाणी
- डॉ. जगदीश लछाणी
- श्रीमती कला प्रकाश

तमिळ
- डॉ. ए.ए. मानक्कल
- प्रो. (श्रीमती) आर. मीनाक्षी
- श्री कुरंजीवेलन

तेलुगु
- प्रो. एन. भक्तवत्सल रेड्डी
- श्री सईद सलीम
- श्री वासीरेड्डी नवीन

उर्दू
- श्री अब्दुल रहमान
- श्री ज़ामसुंदर आनंद लहर
- श्री सुलेमान खुमार

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2013

23 अगस्त 2013 को चेन्नै में अकादेमी के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2013 के लिए 22 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। युवा पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा चयन समितियों की अनुशंसा के आधार पर किया गया। यह पुरस्कार 35 वर्ष तक की आयु के लेखकों की प्रकाशित पुस्तकों तथा पुरस्कार वर्ष में 1 जनवरी तक लेखक की आयु 35 वर्ष से कम होनी चाहिए, को दिया जाता है।

युवा पुरस्कार **2013** से सम्मानित लेखक

असमिया : विजय शंकर बर्मन, *अशोकाष्टमी* (कविता-संग्रह)

बाङ्ला : शुभ्र बंद्योपाध्याय, *बौद्ध लेखमाला ओ अन्यान्य श्रमण* (कविता-संग्रह)

बोडो : सानसुमै खुंग्रि बसुमतारि, *फेलोंनि सावगारि* (उपन्यास)

डोगरी : धीरज केसर 'निक्का', *रफ कॉपी* (कविता-संग्रह)

अंग्रेज़ी : जेनिस पारिअत, *बोट्स ऑन लैंड* (कहानी-संग्रह)

गुजराती : अशोक चावड़ा 'बेदिल', *डाळखी थी साव छूटां* (कविता-संग्रह)

हिन्दी : अर्चना भैंसारे, *कुछ बूढ़ी उदास औरतें* (कविता-संग्रह)

कन्नड : लक्कूरु आनंद, *बटवाडेयागद रसीधी* (कविता-संग्रह)

कोंकणी : योगिनी आचार्य, *मातयेंतले गंध* (कविता-संग्रह)

मैथिली : दिलीप कुमार झा 'लूटन', *अँकुरा रहल संघर्ष* (कविता-संग्रह)

मलयाळम् : पी.वी. शाजीकुमार, *वेल्लरिपाडम* (कहानी-संग्रह)

मणिपुरी : अखोम यांदिबाला देवी, *लाई मथा सारी* (कविता-संग्रह)

मराठी : रवी लक्ष्मीकांत कोरडे, *धूसर झालं नसतं गाव* (कविता-संग्रह)

नेपाली : सूरज धड़कन, *घर* (कहानी-संग्रह)

ओड़िया : क्षेत्रबासी नाएक, *दादन* (कहानी-संग्रह)

पंजाबी : हरप्रीत कौर, *तू मैंनु सिरलेख दे* (कविता-संग्रह)

राजस्थानी : कुमार अजय, *संजीवणी* (कविता-संग्रह)

संस्कृत : राजकुमार मिश्र, *भारतभूषणम्* (कविता-संग्रह)

संताली : लालचंद सरेन, *तेराङ* (कहानी-संग्रह)

तमिळ : कथिर भारती, *मैसियावुक्कु मूंडु मच्छंगळ* (कविता-संग्रह)

तेलुगु : मैत्रि कृष्ण मोहन, *प्रवहिंचे पादालु* (कविता-संग्रह)

उर्दू : मोईद रशीदी, *तख्लीक़, तख़ईल और इस्तेआरा* (कहानी-संग्रह)

(इस वर्ष सिन्धी और कश्मीरी में पुरस्कार नहीं है)

विजय शंकर वर्मन

जेनिस परिजात

लक्कुरु आनंद

शुभ्र बंद्योपाध्याय

अशोक चावड़ा 'बेदिल'

योगिनी आचार्य

सानसुमि खुप्रि बसुमतारि

अर्चना चैतारे

दिलीप कुमार शा 'नूटन'

धीरज फेसर 'निक्का'

पी.पी. अजीकुमार

अहोम याँदिबाला देवी

लालचंद सरेन

लप्रीत कौर

रवी लक्ष्मीकांत कोरडे

कबीर भारती

कुमार अजय

सूरज धड़वन

मंत्रि कृष्ण मोहन

राजकुमार मिश्र

क्षेत्रवासी नायक

मोइद रशीदी

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2013 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
डॉ. अरूपा पतंगिया कलिता
प्रो. नगेन सइकिया
प्रो. प्रदीप आचार्य

बाङ्ला
प्रो. सुतपा सेनगुप्ता
प्रो. मानवेंद्र बंद्योपाध्याय
प्रो. पिनाकेश सरकार

बोडो
डॉ. अनिल कुमार बोरो
श्री इंद्रजीत ब्रह्म
श्री गोविंद बसुमतारि

डोगरी
श्री ज्ञानेश्वर शर्मा
प्रो. नीलांबर देव शर्मा
सुश्री विजया ठाकुर

अंग्रेज़ी
प्रो. सच्चिदानंद मोहांती
डॉ. अमिय देव
डॉ. कविता ए. शर्मा

गुजराती
श्री हरीश मीनाश्रु
डॉ. महेश चंपकलाल
डॉ. रंजना अरगडे

हिन्दी
श्री भारत भारद्वाज
प्रो. हरि मोहन
डॉ. रामदरश मिश्र

कन्नड
डॉ. के. शरीफ़ा
श्री नागतिहल्ली चंद्रशेखर
श्री पद्मराज दण्डवती

कश्मीरी
श्री गुलाम नबी गौहर
श्री प्राण किशोर
श्री गुलाम नबी ख़याल

कोंकणी
डॉ. किरण बुडकुले
श्री उदय भेम्ब्रे
श्री प्रसाद लोलिनकर

मैथिली
डॉ. देवकांत झा
श्री सत्यानंद पाठक
डॉ. ताराकांत झा

मलयाळम्
श्री टी.पी. राजीवन
श्रीमती पी. वत्सला
श्री वैशाखन

मणिपुरी
श्री काङजम राधाकुमार सिंह
डॉ. सागोलसेम लनछेनबा मीतेई
डॉ. तोइजम तम्फा देवी

मराठी
प्रो. जी.एम. पवार
श्री इंद्रजीत भालेराव
श्री प्रवीण डी. बांदेकर

नेपाली
श्री बीरभद्र कार्कीढोली
श्री कृष्णराज घतानी
डॉ. शांति छेत्री

ओड़िया
प्रो. आदिकंद साहु
श्री देवप्रसाद दास
डॉ. प्रसन्न कुमार पटनाइक

पंजाबी
डॉ. आत्मजीत सिंह
डॉ. कृपाल कज़ाक
डॉ. वनीता

राजस्थानी
श्री अरविंद आशिया
डॉ. मालचंद तिवाड़ी
डॉ. नीरज दइया

संस्कृत
प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति
प्रो. महावीर प्रसाद अग्रवाल
प्रो. पंकज चांदे

संताली
श्री चंद्र कुमार किस्कू
श्री कानाइलाल टुडू
श्री पूर्ण चंद्र हेम्ब्रम

तमिल
डॉ. के. चेल्लप्पन
श्री रविसुब्रह्मण्यन
श्री सुप्रभारतीमणियन

तेलुगु
प्रो. एम. नरेंद्र
डॉ. बोलेती पर्वतिसम
डॉ. वदेरवु चिन्ना वीरभद्रुडु

उर्दू
डॉ. अश्फ़ाक अहमद आरिफ़
डॉ. अज़ीज़ परिहार
डॉ. परवेज़ शहरयार

कार्यक्रम

साहित्योत्सव 2014

साहित्योत्सव 2014 का आयोजन नई दिल्ली में 10-15 मार्च 2014 के दौरान बड़े पैमाने पर मेघदूत रंगशाला परिसर, कमानी सभागार, रवींद्र भवन लॉन और साहित्य अकादेमी सभागार में किया गया। साहित्योत्सव में देश भर के सभी उम्र के लेखकों की सहभागिता सुनिश्चित करने का प्रयत्न किया गया। इस बार के साहित्योत्सव का प्रमुख आकर्षण 'अकादेमी प्रदर्शनी' थी, जिसमें अकादेमी की पिछले साठ साल की यात्रा को छायाचित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया था। साहित्य अकादेमी की षष्ठिपूर्ति के इस अवसर पर अकादेमी के महत्तर सदस्यों के अभिनंदन का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। साहित्योत्सव में अकादेमी पुरस्कार अर्पण समारोह, लेखक सम्मिलन, संवत्सर एवं स्थापना दिवस व्याख्यान, आमने-सामने, लोक : विविध स्वर, पूर्वोत्तरी : पूर्वोत्तर एवं उत्तर भारत के लेखकों का सम्मिलन, महत्तर सदस्यों का अभिनंदन, युवा साहिति : युवा कवियों का सम्मिलन, बालसाहिति : बच्चों और किशारों के लिए कार्यक्रम तथा 'वर्तमान साहित्य समालोचना : पाठ, प्रवृत्तियाँ एवं मुद्दे' विषयक संगोष्ठी जैसे कार्यक्रम समाहित थे।

अकादेमी प्रदर्शनी 2013 का उद्घाटन

"साहित्य अकादेमी का 60 साल का उत्सव 24 भारतीय भाषाओं के लेखकों एवं पाठकों का उत्सव है। एक लेखिका होने के नाते अकादेमी की इस विशिष्ट प्रदर्शनी का उद्घाटन करना मेरे लिए विशेष गौरव की बात है।" उक्त वक्तव्य प्रख्यात बाङ्ला लेखिका नवनीता देवसेन ने साहित्योत्सव 2014 के दौरान आयोजित अकादेमी प्रदर्शनी (1954-2014) का उद्घाटन करते हुए दिया। उन्होंने कहा कि अकादेमी की 60 वर्ष की उपलब्धियाँ हमें आगे देखने की ताक़त प्रदान करती हैं। यह पल और प्रदर्शनी से गुज़रना सबके लिए एक यादगार अनुभव है।

इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि अकादेमी की 60 वर्ष की अनवरत यात्रा और उपलब्धियों के पीछे विभिन्न कालखंडों में अकादेमी से जुड़े रहे सामान्य परिषद् के सदस्यों और अध्यक्षों की संकल्पना और दृष्टि रही है, जिसको साकार करने में अकादेमी के अधिकारी और कर्मचारी

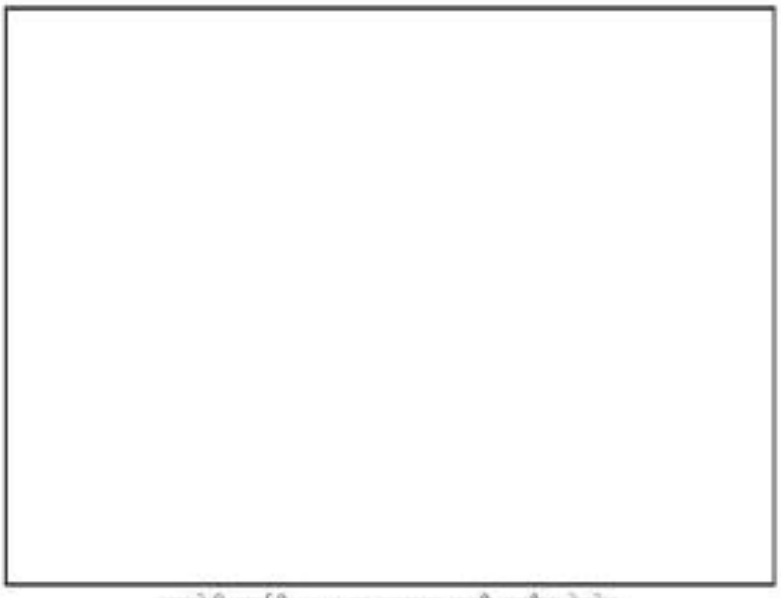

अकादेमी प्रदर्शनी 2013 का उद्घाटन करती नवनीता देवसेन

अनवरत प्रयत्न करते रहे हैं। यह सचमुच उत्साहपूर्ण उत्सव का समय है।

आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने समस्त अतिथियों और साहित्य-प्रेमियों का औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी की साल भर की उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि इस प्रदर्शनी के उद्घाटन के साथ ही अकादेमी के हीरक जयंती-समारोह की शुरुआत हो गई है, जिसे साल भर तक मनाया जाता रहेगा। उन्होंने बताया कि 2013 में अकादेमी द्वारा कुल 348 साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें संगोष्ठी, परिसंवाद, कार्यशालाओं के अलावा विभिन्न कार्यक्रम शृंखलाओं के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम शामिल हैं। अकादेमी द्वारा देशभर में आयोजित कुल 180 पुस्तक प्रदर्शनियों में भागीदारी की गई। 24 भाषाओं में पुनर्मुद्रण सहित कुल 265 पुस्तकें प्रकाशित की गईं। अकादेमी के पुस्तकालयों में कुल 3,830 नई पुस्तकें शामिल की गईं, जहाँ 2,20,111 पुस्तकें पहले से ही मौजूद थीं।

प्रदर्शनी में स्थापना काल से लेकर अब तक की साहित्य अकादेमी की यात्रा को चित्रमय झाँकियों और तथ्यों के माध्यम से रेखांकित किया गया था। अनेक हिस्सों में विभाजित इस प्रदर्शनी में अकादेमी की स्थापना, भवन-निर्माण, अकादेमी के अध्यक्ष, सामान्य परिषद्, सचिव आदि से संबंधित जानकारियाँ संजोई गई थीं। अकादेमी की विभिन्न कार्यक्रम शृंखला की छवियों के साथ-साथ साहित्योत्सव 2013, रवींद्रनाथ ठाकुर की 150वीं जयंती के समारोह तथा अकादेमी के स्वर्ण जयंती समारोहों की छवियाँ भी मोहक थीं। प्रदर्शनी का एक हिस्सा अकादेमी द्वारा प्रकाशित की जानेवाली पत्रिकाओं और साहित्यकारों पर केंद्रित फ़िल्मों की जानकारी देनेवाला था। एक अन्य हिस्से में विगत वर्ष के सभी पुरस्कार विजेताओं की छवियाँ प्रदर्शित की गई थीं।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2013 अर्पण समारोह

"अकादेमी लेखकों को पुरस्कृत नहीं, सम्मानित कर रही है; और ऐसा करके अकादेमी लेखकों के प्रति अपना फ़र्ज़ अदा कर रही है।... ऐसा लेखक जो जगते हुए रोता रहता है, अपने चरित्रों के साथ बार-बार मरता है, उसे

बाएँ से दाएँ : चंद्रशेखर कंबार, रमाकांत रथ, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं के. श्रीनिवासराव

समारोह के दौरान मंचस्थ पुरस्कृत लेखकों का एक समूह

हम पुरस्कार देकर क्या कर सकते हैं; लेकिन यह एक प्रतीक है।" ये बातें साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अकादेमी पुरस्कार (2013) अर्पण समारोह की अध्यक्षता करते हुए कही।

11 मार्च 2014 को सायं 6 बजे कमानी सभागार, नई दिल्ली में 23 भारतीय भाषाओं के लेखकों को उनकी श्रेष्ठ कृतियों के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार (2013) अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. तिवारी के हाथों प्रदान किए गए। अकादेमी पुरस्कार के रूप में 1,00,000 रुपए का चेक और उत्कीर्ण ताम्र फ़लक प्रदान किया जाता है। पुरस्कृत लेखकों का अभिनंदन अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा माल्यार्पण एवं पुष्पगुच्छ प्रदान कर किया गया। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी पुरस्कृत लेखकों को बधाई दी और सभी का औपचारिक स्वागत किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में अकादेमी की प्रमुख गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय देते हुए अकादेमी की उपलब्धियों को रेखांकित किया।

बंगला पुरस्कार विजेता तेमसुला आओ को पुरस्कार प्रदान करते प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

उर्दू पुरस्कार विजेता जावेद अख़्तर को पुरस्कार प्रदान करते प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रो. तिवारी ने कहा कि अकादेमी के कार्य-संचालन में केवल लेखकों की ही भूमिका होती है। इस नाते यह भारत की एकमात्र स्वायत्त संस्था है। यह भारतीय लोकतंत्र की प्रतिष्ठा का एक चिह्न है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि लेखक बेज़ुबान को स्वर देता है, मौन को मुखरित करता है और अभिव्यक्ति देता है।

समारोह में रवींद्र सरकार (असमिया), सुबोध सरकार (बाङ्ला), अनिल बर' (बोडो), सीताराम सपोलिया (डोगरी), तेमसुला आओ (अंग्रेज़ी), चिनु मोदी (गुजराती), मृदुला गर्ग (हिंदी), सी.एन. रामचंद्रन (कन्नड), मोहिउद्दीन रेशी (कश्मीरी), तुकाराम रामा शेट (कोंकणी), सुरेश्वर झा (मैथिली), माखोनमनी मोङसाबा (मणिपुरी), सतीश काळसेकर (मराठी), मनबहादुर प्रधान (नेपाली), विजय मिश्र (ओड़िया), मनमोहन (पंजाबी), अंबिकादत्त (राजस्थानी), राधाकांत ठाकुर (संस्कृत), अर्जुन चरण हेम्ब्रम (संताली), नामदेव ताराचंदाणी (सिंधी), आर.एन. जो डी' क्रूज़ (तमिळ), कात्यायनी विद्महे (तेलुगु) और जावेद अख़्तर (उर्दू) को साहित्य अकादेमी पुरस्कार (2013) से सम्मानित किया गया। मलयाळम् भाषा में पुरस्कृत लेखक एम.एन. पालूर किन्हीं कारणों से समारोह में उपस्थित नहीं हो पाए।

समारोह के मुख्य अतिथि थे साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष, ओड़िया के प्रख्यात कवि (पद्मभूषण) रमाकांत रथ। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि प्रतिबद्ध लेखकों का चरित्र किसी भी पूर्वाग्रह, विद्वेष और अंध-भक्ति से मुक्त होता है। आज के बहुत से राजनेताओं की तरह वह भारत के किसी दूसरे राज्य या वहाँ के लोगों की तुलना में अपने राज्य या वहाँ के लोगों के श्रेष्ठत्व का दावा नहीं करता। भारत के किसी दूसरी भाषा और साहित्य की तुलना में अपनी भाषा और साहित्य के श्रेष्ठत्व का भी नहीं। समारोह के अंत में अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया। समारोह के पश्चात् जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादेमी द्वारा मनोहारी मणिपुरी नृत्य की प्रस्तुति की गई।

लेखक सम्मिलन

12 मार्च 2014 को 'लेखक सम्मिलन' का आयोजन अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में पूर्वाह्न 10.30 बजे मेघदूत परिसर, रवींद्र भवन में किया गया। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने समागत लेखकों, साहित्य-प्रेमियों, मीडियाकर्मियों और पुरस्कृत लेखकों का औपचारिक स्वागत किया तथा कार्यक्रम की विशिष्टता पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में इक्कीस भाषाओं के पुरस्कृत लेखकों ने अपने वक्तव्य दिए। एम.एन. पालूर (मलयाळम्), सतीश काळसेकर (मराठी) और जावेद अख़्तर (उर्दू) किन्हीं अपरिहार्य कारणों से इस कार्यक्रम में शामिल नहीं हो पाए।

रवींद्र सरकार (असमिया) ने कहा कि आधुनिक समय बहुत जटिल है और इसने आदमी को आदमी और प्रकृति से विमुख कर दिया है। एक अच्छी कविता इस विमुखता को दूर करती है और हमारे व्यक्तित्व एवं यथार्थ का मेल संभव करती है। सुबोध सरकार (बाङ्ला) के अनुसार, "मेरे लिए कविता मानवीय सभ्यता का तहख़ाना है। एक कवि एक इल्ली (कैटरपिलर) की तरह है, जो इस सपने के साथ किसी पेड़ पर चढ़ती है कि वह एक तितली में बदल जाएगी।"

अनिल बर' (बोडो) ने कहा कि एक लेखक और कवि के रूप में मेरी भूमिका को भाषा-संस्कृति के संरक्षण द्वारा नृजातीय पहचान की खोज करनेवाली बोडो जनता से अलग करके नहीं समझा जा सकता। सीताराम सपोलिया (डोगरी) ने अपनी रचनात्मक यात्रा को साझा करते हुए बताया कि मैं मानव की गरिमा और मानवीय प्रेम के सूत्रों का सदा समर्थक रहा हूँ। मैंने परंपरा के निर्वाह के साथ आधुनिक जीवन की संवेदनाओं को सँजोने का प्रयास किया है।

तेमसुला आओ (अंग्रेज़ी) ने अंग्रेज़ी को भारतीय भाषा के रूप में मान्यता के लिए अकादेमी के संस्थापकों

वक्तव्य देते सुबोध सरकार तथा संचालन चंद्रशेखर कंबार

की दूरदर्शिता को याद करते हुए कहा कि बहुत से वाचिक समुदाय अंग्रेज़ी को अपने साहित्य के उन्नयन का माध्यम बना रहे हैं, जैसे कि मैं अपनी मातृभाषा में न लिखकर अंग्रेज़ी में लिखती हूँ। चिनु मोदी (गुजराती) ने बताया कि *खारां झरण* (पुरस्कृत कृति) उनकी स्मृतिशेष पत्नी के संदर्भों में रची गई रचना है।

मृदुला गर्ग (हिंदी) ने अपनी रचना प्रक्रिया पर बात करते हुए कहा कि उपन्यास लिखना, निजी ज़िंदगी को हलाक़ करके, नई ज़िंदगी शुरू करने जैसा है।... यह नई ज़िंदगी औरों से उधार ली हुई होती है... अपने जिए देखे-सुने, पढ़े-गुने की बिना पर ही, खुद को नकारो और दूसरों को ज़िंदगी में दाख़िल हो। फिर उसे ऐसे लिखो, जैसे खुद जी रहे हो। सी.एन. रामचंद्रन (कन्नड) ने कहा कि एक आलोचक के रूप में वे किसी विशिष्ट विचारधारा के प्रति प्रतिबद्ध नहीं हैं।

मोहि-उ-द्दीन रेशी (कश्मीरी) ने कहा कि कश्मीर का निवासी होने के नाते मैंने वर्तमान कश्मीर की पीड़ा को महसूस किया है, उसे जिया है तथा उससे उपजी यंत्रणा से परिचित हूँ। तुकाराम रामा शेट (कोंकणी) ने अपने रचनात्मक अनुभवों पर बात करते हुए बताया कि गाँव का माहौल, वहाँ की भाषा, वाक्प्रचार, मुहावरे, वहाँ की प्राकृतिक संपदा मेरी क़लम के द्वारा अक्षरबद्ध होते हैं।

सुरेश्वर झा (मैथिली) ने कहा कि मेरा जीवन-संघर्ष मुख्यतः मिथिला के जन-जीवन के उद्धार से जुड़ा है। यही कारण है कि मेरी रचना-यात्रा प्राचीन मिथिला और वहाँ के लोगों से सीधे जुड़ी हुई है। माखोनमनी मोङसाबा (मणिपुरी) ने कहा कि उनकी पुस्तक एक अभिनेता के रूप में विभिन्न देशों की उनकी यात्राओं का परिणाम है।

मनबहादुर प्रधान (नेपाली) ने यात्रा संबंधी अपने रोचक अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि एक लेखक होने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि आप कहीं की भी यात्रा कर सकते हैं, कभी भी, जब आप चाहें—मन ही मन अथवा अपनी किताब में केवल एक बार नहीं, बल्कि बारंबार तथा अपने एकाकीपन को दूर कर सकते हैं।

विजय मिश्र (ओड़िया) ने कहा कि मेरा राज्य ओड़िशा नृत्य और गीत के लिए जाना जाता है। संभवतः मेरे नाटककार होने का मूल कारण यही है—एक कलाकार, जो गीत और नृत्य के इन दोनों रूपों को मिश्रित करता है। मनमोहन (पंजाबी) ने अपनी पुरस्कृत कृति पर बात करते हुए कहा कि मूलतः मैं एक कवि हूँ। मेरे लिए कविता शब्दों को संपूर्णता प्रदान करना है। हम जिन शब्दों को देखते हैं, वे संपूर्ण नहीं हैं। शब्द की संपूर्णता शब्दों से परे है।

अंबिकादत्त (राजस्थानी) ने कहा कि मैं एक लेखक की हैसियत से चाहता हूँ कि मैं अपनी रचनाओं के ज़रिए लोगों को जीवन-संघर्षों में खड़े रहने, लड़ने के लिए ताक़त दे सकूँ, ऊर्जा दे सकूँ, खुशी दे सकूँ! राधाकांत ठाकुर (संस्कृत) ने संस्कृत कविता की नई प्रवृत्तियों पर बात करते हुए कहा कि मैंने आधुनिक पीढ़ी के सत्य और प्रोन्नत जीवन स्थितियों को उद्घाटित करना चाहा है।

अर्जुन चरण हेम्ब्रम (संताली) ने बताया कि मेरा साहित्यिक अनुभव संताली भाषा के सॉफ्टवेयर और साहित्य के आंदोलनों में जुड़ा हुआ है। नामदेव ताराचंदाणी (सिंधी) ने इस बात पर क्षोभ व्यक्त किया कि आज भारत में सिंधी भाषा संकट में है, जो इतनी प्राचीन है कि संस्कृत को बहिन कहकर गर्व कर सकती है। पर आज हमारे पुस्तकालय म्यूज़ियम बनते जा रहे हैं।

आर.एन. जो डी' क्रूज़ (तमिळ) ने समुद्रतटीय जनजीवन की विभिन्न स्थितियों को साझा करते हुए कहा कि जो समुदाय अपने इतिहास और संस्कृति के बारे में नहीं जानता और उनका सम्मान नहीं करता, वह कभी प्रगति नहीं कर सकता।

कात्यायनी विद्महे (तेलुगु) ने बताया कि उनकी पुस्तक तेलुगु में महिला लेखन की संपूर्ण यात्रा का जायज़ा लेती है। लेखिकाएँ केवल अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा का प्रदर्शन ही नहीं करतीं, बल्कि वे उनकी भूमिका को कमतर आँकनेवाली नकारात्मक शक्तियों से कठिन संघर्ष भी करती हैं।

विशेष संदर्भ में रेखांकित करते हुए सार्थक विमर्श प्रस्तुत किया।

उन्होंने कहा कि किसी विशिष्ट संदर्भ में किसी विद्वान ने यह उत्तर दिया कि यदि आप मुझसे पूछते हैं तो मैं नहीं जानता, लेकिन यदि आप नहीं पूछते तो मैं जानता हूँ। कविता भी कुछ ऐसी ही चीज़ है। यदि आप यह पूछते हैं कि तकनीकी के इस युग में कविता का क्या उपयोग है तो मेरा जवाब भी ऐसा ही होगा, लेकिन मैं जानता हूँ—मुझे मीलों की यात्रा तय करनी है। "किसी बड़े सरोकार के प्रति प्रतिबद्ध कविता को व्यापक मान्यता मिल सकती है। लेकिन केवल प्रतिबद्धता ही कविता को बड़ा नहीं बनाती। प्रेरित कविता का मानक बौद्धिक ईमानदारी है, नहीं तो यह मात्र 'चालाकीपूर्ण लेखन' अथवा 'आदेशानुसार निर्मित' जैसा कुछ बनकर रह जाती है। सूक्ष्म आंतरिक साहस के साथ एक कवि को बाह्य शक्तियों के दबाव और अनुनय का विरोध करना होगा।" इस व्याख्यान को पुस्तकाकार प्रकाशित किया गया और इस अवसर पर इसका लोकार्पण किया गया।

संवत्सर व्याख्यान : ओ.एन.वी. कुरुप

"आधुनिक कविता विरोध और प्रतिरोध की कविता के रूप में पिछली सदी के आपातकाल के दौरान उभरी।" यह बात प्रख्यात मलयाळम् लेखक ओ.एन.वी. कुरुप ने 10 मार्च को 2014 आयोजित संवत्सर व्याख्यान में कही। 'परिभाषाओं को ललकारती कविता : आधुनिक समय में इसकी प्रासंगिकता' विषयक अपने व्याख्यान में उन्होंने कविता की परिभाषा से अपनी बात शुरू करते हुए इसकी अद्यतन यात्रा को मलयाळम् भाषा के

ओ.एन.वी. कुरुप

स्थापना दिवस व्याख्यान

अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में पूर्व मुख्य न्यायाधीश एम.एन. वेंकटचेलय्या द्वारा अकादेमी का स्थापना दिवस व्याख्यान दिया गया। अपने व्याख्यान में उन्होंने कहा तकनीकी विस्फोट से आक्रांत दुनिया में मनुष्य के अंदर के संसार को बचाने और उसे सुंदर बनाने का काम साहित्य करता है। अतः साहित्य अकादेमी जैसी संस्थाओं का होना बेहद ज़रूरी है। अकादेमी की स्थापना नेहरू सरकार द्वारा किए गए सबसे महत्त्वपूर्ण कुछेक निर्णयों में से एक है। उन्होंने विश्व के महत्त्वपूर्ण विचारकों, राजनीतिज्ञों, लेखकों के वक्तव्यों को प्रस्तुत करते हुए भाषा और साहित्य की महत्ता को प्रतिपादित किया और कहा कि साहित्य मानव सभ्यता की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है।

अपने व्याख्यान में उन्होंने मानव जाति के उद्भव एवं विकास, विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में मानव सभ्यताओं के योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने पश्चिम की ग्रीक और लैटिन जैसी शास्त्रीय भाषाओं की तुलना में संस्कृत भाषा की श्रेष्ठता के बारे में भी बताया। उन्होंने इस बात पर क्षोभ व्यक्त किया कि भारत की समृद्ध विरासत के बावजूद लगभग 500 बोलियाँ विलुप्तप्राय हैं। ऐसे में उन्होंने भारतीय भाषाओं और उनके साहित्य के संरक्षण और प्रकाशन के क्षेत्र में साहित्य अकादेमी के असाधारण योगदान और भूमिका के लिए बधाई दी।

कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने पुष्पगुच्छ से माननीय वेंकटचेलय्या का अभिनंदन किया। सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी के 60 वर्षों की यात्रा में इसके सभी अध्यक्षों, उपाध्यक्षों, सामान्य परिषद् के सदस्यों तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों के योगदान का स्मरण करते हुए व्याख्यानकर्ता वेंकटचेलय्या का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया।

पूर्व मुख्य न्यायाधीश एम.एन. वेंकटचेलय्या

राष्ट्रीय संगोष्ठी

वर्तमान साहित्य समालोचना : पाठ, प्रवृत्तियाँ एवं मुद्दे

'वर्तमान साहित्य समालोचना : पाठ, प्रवृत्तियाँ एवं मुद्दे' विषयक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात हिंदी आलोचक नामवर सिंह द्वारा किया गया। संगोष्ठी के आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने समागत विद्वानों, अतिथियों, साहित्य-प्रेमियों का औपचारिक स्वागत करते हुए मंचासीन विद्वानों का संक्षिप्त परिचय दिया और आशा व्यक्त की कि तीन दिनों तक चलनेवाली यह संगोष्ठी भारतीय भाषाओं के लेखकों एवं विद्वानों के लिए सार्थक विमर्श लेकर उपस्थित होगी।

इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय भाषण में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि आलोचना बहुत कठिन काम है, क्योंकि एक आलोचक पहले प्रभाव ग्रहण करता है, फिर विवेचना और विश्लेषण के पश्चात् मूल्यांकन करता है और निर्णय देता है। उन्होंने विभिन्न पाश्चात्य और भारतीय काव्यशास्त्रियों के नामों और सिद्धांतों को संदर्भित करते हुए कहा कि आज की आलोचना बहुत गणितीय हो गई है।

नामवर सिंह ने कहा कि संस्कृत काव्यशास्त्र के किसी भी ग्रंथ में आलोचना या समालोचना शब्द प्राप्त नहीं होता है। अंग्रेज़ी शब्दों के अनुवाद-क्रम में इन शब्दों का प्रयोग और प्रचलन हुआ है। संस्कृत में 'सहृदय' शब्द मिलता है, जिसे अब हमने छोड़ दिया है। उन्होंने कहा कि आलोचना में टटकापन आज के आलोचकों की सबसे बड़ी चुनौती है और यही किसी नवीन सिद्धांत के लिए प्रस्थान भी होगा। उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा को छोड़ दें तो हिंदी अथवा संभवतः किसी भी भारतीय भाषा में किसी नवीन साहित्य सिद्धांत का सूत्रपात नहीं हुआ।

मनोज दास ने अपने भाषण में कहा कि मेरे लिए आलोचना समालोचनात्मक सराहना है। उन्होंने बीसवीं शताब्दी के विभिन्न आलोचना सिद्धांतों को संदर्भित करते हुए कहा कि आज बहुत-सी 'ग्लोबल थ्योरीज़' हैं, लेकिन कोई एक ग्लोबल थ्योरी नहीं है।

ऐजाज़ अहमद ने अपने बीज-भाषण में बहुभाषिक साहित्यिक परिदृश्य को रेखांकित करते हुए अनुवाद तथा तुलनात्मक साहित्य अध्ययन के सिद्धांतों पर बात की। उन्होंने रचनाओं के पुनर्पाठ और रचनात्मक एवं समालोचनात्मक साहित्य के परस्पर अनुशीलन के बारे में कुछ उद्धरण भी प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं का साहित्य, प्रदर्शकारी कलाओं के माध्यम से एकसूत्र में जुड़ा हुआ है तथा यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी अग्रेसित होता रहा है।

इस अवसर पर अकादेमी के महत्तर सदस्य मनोज दास के अंग्रेज़ी रचना संचयन *मनोज दास : ए रीडर* का लोकार्पण नामवर सिंह और विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के हाथों किया गया, जिसके संपादक पी. राजा हैं।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि याधिक परंपराओं की काफ़ी लंबे समय से उपेक्षा होती रही है। पिछले कुछ वर्षों में इसकी तरफ़ कुछेक आलोचकों का ध्यान गया है, लेकिन वह पर्याप्त नहीं है।

प्रथम सत्र हरीश त्रिवेदी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जो 'वर्तमान साहित्य समालोचना : वैश्विक परिदृश्य' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र में टी. विजय कुमार (सिद्धांत के समय में साहित्यिक समालोचना), सचिन केतकर (मराठी की अवाँगार्द कविता को पढ़ने के तीन तरीक़े) और पी.पी. रवींद्रन (आधुनिकता और वर्तमान) ने अपने आलेख पढ़े।

बाएँ से दाएँ : नामवर सिंह, के. श्रीनिवासराव, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, मनोज दास, ऐजाज़ अहमद एवं चंद्रशेखर कंबार

'भारतीय भाषाओं में समालोचना की स्थिति' विषयक द्वितीय सत्र सितांशु यशश्चंद्र की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें सी.एन. रामचंद्रन (पहचान की तलाश में आज की कन्नड समालोचना), वासंती (तमिळ भाषा में साहित्य समालोचना की प्रवृत्तियाँ) और सी. मृणालिनी (तेलुगु समालोचना) ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

दूसरे दिन 'आधिपत्य की खोज', 'भारतीय काव्यशास्त्रीय सिद्धांत की ओर', 'पश्चिमी प्रभाव, भारतीय प्रत्युत्तर' तथा 'भारतीय भाषाओं में साहित्य समालोचना की स्थिति' विषयों पर केंद्रित चार सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः गणेश देवी, गोपीचंद नारंग, शमीक बंद्योपाध्याय और भालचंद्र नेमाडे ने की।

संगोष्ठी के तृतीय सत्र में एम.टी. अंसारी, वाई.एल. एलोन और बी. राघवन ने अपने आलेख पढ़े। एम.टी. अंसारी का आलेख एम.टी. वासुदेवन नायर के प्रथम उपन्यास नालुकेतु (1958) के विशेष संदर्भ में मलयाळम् साहित्य में चित्रित अच्छे-बुरे मुस्लिम पात्रों के बारे में था। वाई.एम. एलोन ने 'आधिपत्य का प्रश्न : भाषा और प्रतिनिधित्व' विषयक अपने आलेख में दलित लेखन के विशेष संदर्भों में अपने विचार रखे। वी. राघवन ने 'स्थानिकता में वैश्विक पितृसत्ता की खोज' विषयक अपना आलेख बीसवीं सदी के मलयाळम् नाट्य साहित्य एवं स्त्री केंद्रित कहानियों के नाट्य रूपांतरों को संदर्भित करते हुए प्रस्तुत किया।

चतुर्थ सत्र में पुरुषोत्तम अग्रवाल, सी. राजेंद्रन और एस. शेट्टर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सी. राजेंद्रन ने समकालीन मलयाळम् काव्यशास्त्र में परंपराओं के पुनरुत्थान की चुनौतियों पर अपना आलेख पढ़ा। पुरुषोत्तम अग्रवाल ने आलोचकों द्वारा भक्ति साहित्य की समकालीनता को मान्यता देने की ज़रूरत पर बल दिया। अपने अध्यक्षीय भाषण में गोपीचंद नारंग ने कहा कि आलोचना का आज का परिदृश्य बिलकुल बदला हुआ है, साहित्य भी ज़िंदगी की तरह ठहरा हुआ नहीं है, यह बदलता रहता है, नए पुराने की कशमकश जारी रहती है। आज की साहित्यिक आलोचना उदारमना है।

पंचम सत्र में सच्चिदानंद मोहांति, जीजेवी प्रसाद और आर. राज राव ने अपने आलेख पढ़े। राज राव ने अपने आलेख में यौनिकता के असामान्य मनोविज्ञान के संदर्भ में भारत और विदेशों के कुछ लेखकों और उनकी कृतियों को विश्लेषित करने का प्रयत्न किया। सच्चिदानंद मोहांति ने 'वैश्विक राजधानी के समय में सार्वभौम आधुनिकता' विषयक विद्वत्तापूर्ण आलेख प्रस्तुत किया।

षष्ठ सत्र में के.सी. बराल, एम. असदुद्दीन और स्वपन चक्रवर्ती ने अपने आलेख पढ़े। कैलाश सी. बराल ने पूर्वोत्तर भारत के अंग्रेज़ी लेखन को संदर्भित करते हुए उसके आलोचनात्मक परिदृश्य पर अपने विचार व्यक्त किए। स्वपन चक्रवर्ती ने 'बंकिमचंद्र की बाङ्ला कृति *बंगदर्शन* के संदर्भ में पुस्तक समीक्षा, साहित्यिक समालोचना एवं पढ़नेवाली जनता' विषयक अपना आलेख प्रस्तुत किया।

अंतिम दिन 'साहित्य समालोचना : विज्ञान अथवा कला', 'भारतीय भाषाओं में साहित्य समालोचना की स्थिति', 'सौंदर्यशास्त्र एवं साहित्य समालोचना' तथा 'क्या पुस्तक समीक्षा को साहित्य समालोचना माना जाना चाहिए' विषयों पर केंद्रित चार सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः मैनेजर पांडेय, पुरुषोत्तम अग्रवाल, कपिल कपूर और ई.वी. रामकृष्ण ने की।

सप्तम सत्र में अक्षय कुमार और बी. राजीवन ने अपने आलेख पढ़े। बी. राजीवन ने अपने आलेख में मलयाळम् के दो प्रतिष्ठित आलोचकों ए. बालकृष्ण पिल्लै और के.पी. अप्पन के हवाले से एक सार्थक विमर्श प्रस्तुत करते हुए कहा कि आलोचना के विज्ञान अथवा कला होने संबंधी सवाल को नए तरह से देखने की ज़रूरत है, जहाँ द्वैत की जगह बहुलता हो तथा निष्क्रिय मौलिकता की जगह सक्रिय व्यावहारिकता हो।

मैनेजर पांडेय ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि विज्ञान का आधार तटस्थता और अलगाव है, लेकिन साहित्यिक आलोचना में लगाव और आत्मपरकता का विशेष महत्त्व है।...आलोचना समाज विज्ञानों से तो क़रीब है, लेकिन प्रकृति विज्ञान से दूर है।... जब भावना और बुद्धि का द्वैत खत्म होगा, तभी विज्ञान और साहित्य एक हो सकते हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि ऐसा संभव है। उन्होंने

आगे कहा कि सटीकता की जितनी संभावना विज्ञान में होती है, उतनी साहित्य और आलोचना में नहीं हो सकती।

अक्षय कुमार ने आज की पंजाबी आलोचना पर पंजाबी की चार आलोचनात्मक पुस्तकों के हवाले से अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा कहा कि यूँ तो पंजाबी में प्रचुर आलोचनाएँ लिखी गई हैं, लेकिन उसमें बहुत कुछ असंगत भी है।

अष्टम सत्र में अनामिका और के.एस. रविकुमार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अध्यक्षीय भाषण में पुरुषोत्तम अग्रवाल ने कहा कि आलोचना की सबसे बड़ी समस्या यह है कि यह जनसंपर्क अभियान और मित्रधर्म-निर्वाह में बदल जाती है। कमोबेश यह प्रायः सभी भाषाओं की समस्या है।

अनामिका ने अपने आलेख में हिंदी भाषा की साहित्यिक आलोचना के बिलकुल ताज़ा (2010-13) परिदृश्य पर अपनी बात रखी। स्त्री, दलित एवं आदिवासी विमर्शों के परिप्रेक्ष्य में उन्होंने हिंदी क्षेत्र में उभरे कुछ नए आलोचकों का नामोल्लेख भी उनकी कृतियों के संदर्भ देते हुए किए।

के.एस. रविकुमार ने मलयाळम् भाषा की साहित्यिक आलोचना के वर्तमान परिदृश्य पर अपना आलेख पढ़ा। मलयाळम् आलोचना के उद्भव और विकास का संक्षिप्त रेखांकन करते हुए उन्होंने कहा कि समकालीन मलयाळम् साहित्यिक समालोचना अपेक्षाकृत अधिक वस्तुनिष्ठ, व्याख्यात्मक और अंतर-अनुशासनिक हो गई है।

नवम् सत्र में राधावल्लभ त्रिपाठी, निर्मल सेल्वमोनी और शरण कुमार लिंबाले ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। राधावल्लभ त्रिपाठी ने 'संस्कृत साहित्य-सिद्धांत के नए क्षितिज' शीर्षक आलेख में कहा कि संस्कृत काव्यशास्त्र का आधुनिक अध्ययन लगभग सौ साल पुराना है।... उन्नीसवीं एवं बीसवीं सदी में प्राच्य अध्ययन के अंतर्गत अलंकारशास्त्र पर हुए विमर्श से तुलनात्मक काव्यशास्त्र एवं सौंदर्यशास्त्र का उद्भव हुआ। उन्होंने समकालीन संस्कृत आलोचकों पर बात करते हुए कहा कि युवा संस्कृत लेखक सृजन की नई प्रविधियों को अपना रहे हैं, जिसके कारण साहित्य सिद्धांत को भी ताज़ा दृष्टि प्राप्त हो रही है।

निर्मल सेल्वमोनी ने तमिळ कविता के नवीन संदर्भों में बात करते हुए विभिन्न कविता पंक्तियों को उद्धृत करते हुए अपना आलेख प्रस्तुत किया। शरण कुमार लिंबाले ने 'दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र' विषयक अपने आलेख में कहा कि दलित लेखकों ने पारंपरिक कला की कसौटियों और सौंदर्यशास्त्र को नकारा है। उन्होंने अलग सौंदर्यशास्त्र रचने का प्रयत्न किया है, लेकिन दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र तय करने के लिए रूढ़, प्रस्थापित सौंदर्यशास्त्र को अपूर्ण और अयोग्य साबित करने में अपनी सभी बौद्धिक शक्ति की बाजी लगाने का नाटक करने की आवश्यकता नहीं है।

दशम सत्र में डी.एस. राव, गिरिराज किराडू और अंतरा देवसेन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंतरा देवसेन ने कहा कि पुस्तक समीक्षा की अपनी सीमाएँ हैं,

बाएँ से दाएँ : के. सच्चिदानंदन, डी. एस. राव, ई.वी. रामकृष्णन, गिरिराज किराडू तथा अंतरा देवसेन

लेकिन साहित्यिक समालोचना में व्यापकता होती है। अपनी बात को उन्होंने अनेक उदाहरणों और तथ्यों के माध्यम से पुष्ट किया। डी.एस. राव ने कहा कि पुस्तक समीक्षा को साहित्यिक समालोचना से अलग नहीं किया जा सकता। एक व्यावहारिक है तो दूसरा सिद्धांत। गिरिराज किराडू ने राजस्थानी, हिंदी और अंग्रेज़ी भाषा-साहित्य के जुड़े दृष्टांतों के माध्यम से अपनी बात कही। विमर्श में यह बात उभरकर सामने आई कि पुस्तक समीक्षाओं को साहित्यिक समालोचना के रूप में मान्यता दी जा सकती है, लेकिन हमेशा नहीं।

संगोष्ठी का समापन भाषण प्रख्यात् मलयाळम् एवं अंग्रेज़ी लेखक के. सच्चिदानंदन द्वारा दिया गया। उन्होंने कहा कि आलोचना के सिद्धांत परिवर्तित होते रहते हैं और उसका इतिहास उसके सामने आई चुनौतियों का भी इतिहास होता है। उन्होंने पूरी संगोष्ठी में पढ़े गए प्रमुख आलेखों के हवाले से कहा कि भारतीय भाषाओं की समालोचना बहुत ही परिवर्तनशील है और उसका भविष्य भारत के लोकतंत्र को मज़बूत करनेवाला है।

महत्तर सदस्यों का अभिनंदन

"भारतीय समाज की यह परंपरा है कि परिवार के मुखिया जो वरिष्ठ होते हैं, हम उन्हें सम्मान देते हैं, क्योंकि उनके मार्गदर्शन से ही हमारा रास्ता आसान होता है। अकादेमी एक समय में लगभग पाँच हज़ार लेखकों के संपर्क में रहती है। ऐसी स्थिति में किसी भी तरह की समस्याओं को सुलझाने में हमें हमारे महत्तर सदस्यों का अमूल्य निर्देश प्राप्त होता है।" यह बात अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अकादेमी के महत्तर सदस्यों के अभिनंदन समारोह में 13 मार्च को सायं 6 बजे आयोजित कार्यक्रम में कही।

प्रारंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए बताया कि अकादेमी के साठ साल पूरे होने के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला यह उत्सव अधूरा होता, यदि इस अवसर पर उन वरिष्ठ लोगों को याद नहीं किया जाता, जिन्होंने इसके विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इसलिए इस अवसर पर अकादेमी ने अपने सभी महत्तर सदस्यों के अभिनंदन का यह कार्यक्रम आयोजित किया है। अपरिहार्य कारणों से हमारे वर्तमान उन्नीस महत्तर सदस्यों में से केवल नौ ही यहाँ उपस्थित हो पाए हैं। हम उनका हार्दिक स्वागत करते हुए, यहाँ अनुपस्थित और अपने दिवंगत महत्तर सदस्यों के प्रति भी श्रद्धावनत हैं।

इस अवसर पर अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने पुष्पगुच्छ के द्वारा सभी महत्तर सदस्यों का स्वागत किया। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने शॉल और प्रतीक चिह्न प्रदान कर सभी महत्तर सदस्यों का अभिनंदन किया। अभिनंदन

बाएँ से दाएँ : केदारनाथ सिंह, सत्यव्रत शास्त्री, सीताकांत महापात्र, रमाकांत रथ, चंद्रशेखर कंबार, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, गोपीचंद नारंग, मनोज दास, चंद्रनाथ मिश्र 'अमर', अर्जन हसिद एवं रघुवीर चौधरी

के पश्चात् सभी महत्तर सदस्यों ने अपने संक्षिप्त वक्तव्य में अकादेमी का धन्यवाद देते हुए कुछ सुझाव प्रस्तुत किए।

आमने-सामने कार्यक्रम

13 मार्च 2014 को पूर्वाह्न 10 बजे मेघदूत परिसर में आयोजित 'आमने-सामने' कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए बताया कि साहित्योत्सव में पहली बार इस नए कार्यक्रम 'आमने-सामने' की परिकल्पना की गई है, जिसमें पुरस्कृत लेखकों से विद्वानों की बातचीत का आयोजन किया गया है, इस कार्यक्रम में श्रोता भी

प्रयाग शुक्ल एवं मृदुला गर्ग

सवाल पूछने के लिए आमंत्रित हैं। उन्होंने बताया कि प्रयोग के तौर पर इस बार अकादेमी द्वारा छह प्रतिनिधि पुरस्कृत लेखकों के साथ यह कार्यक्रम प्रस्तुत किया जा रहा है। यदि यह प्रयोग सफल होता है तो आगामी वर्ष से इसमें सभी पुरस्कृत लेखकों को शामिल किया जाएगा। उन्होंने कहा कि लेखक अपनी मातृभाषा में भी बातचीत करने के लिए स्वतंत्र है।

'आमने-सामने' कार्यक्रम के अंतर्गत मृदुला गर्ग (हिंदी), कात्यायनी विद्महे (तेलुगु), चिनु मोदी (गुजराती), आर. एन. जो डी' क्रूज (तमिळ), तेमसुला आओ (अंग्रेज़ी) तथा सुबोध सरकार (बाङ्ला) से क्रमशः प्रयाग शुक्ल, सी. मृणालिनी, सितांशु यशश्चंद्र, मालन वी. नारायण, एस्थर सिएम तथा एन.के. भट्टाचार्जी ने बातचीत की। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी की उपसचिव रेणु मोहन भान ने किया। विद्वानों और श्रोताओं ने पुरस्कृत लेखकों से उनके आरंभिक लेखन, लेखन की प्रेरणा, रचनात्मक यात्रा, उनकी कृतियों तथा समय-समाज से जुड़ी विभिन्न स्थितियों पर उनसे सवाल पूछे। आरंभ में प्रत्येक लेखक ने अपनी रचना का पाठ भी प्रस्तुत किया।

मृदुला गर्ग ने कहा कि उन्होंने लेखन की शुरुआत कहानी से की, लेकिन उपन्यास में उनका मन ज़्यादा रमता है। कविताएँ भी लिखीं, लेकिन सिर्फ़ अंग्रेज़ी में। हाँ, यह ज़रूर है कि मेरे हर उपन्यास में एक कविता ज़रूर होती है।

कात्यायनी विद्महे से अधिकांश सवाल-जवाब तेलुगु भाषा में हुए, क्योंकि श्रोताओं में तेलुगुभाषी ज़्यादा थे। उन्होंने अपनी रचना-यात्रा के बारे में बताते हुए कहा कि वे मार्क्सवादी स्त्रीवादी लेखिका हैं।

चिनु मोदी से हिंदी एवं गुजराती में सवाल किए गए। उन्होंने बताया कि मैं एक निर्भीक लेखक हूँ और सच बोलने, लिखने से मुझे कोई रोक नहीं सकता। आर. एन. जो डी' क्रूज़ ने बातचीत क्रम में अपने पुरस्कृत उपन्यास के बारे में बताया, जो समुद्रतटीय समुदायों और उनके जीवन पर केंद्रित है। तेमसुला आओ ने बताया कि पूर्वोत्तर की वाचिक परंपराओं में गानों का बहुत ज़्यादा प्रचलन और महत्त्व है, यही कारण है कि मेरी पुस्तकों और कविताओं में उसका संदर्भ प्रमुखता से मिलता है। कविता मेरा पहला और आख़िरी प्यार है। सुबोध सरकार ने कहा कि कविता का सच व्यक्तिगत भी होता है और सार्वजनिक भी, लेकिन मेरी कोशिश यह है कि वह पाठकों का सच हो।

युवा साहिति

13 मार्च 2014 को आयोजित 'युवा साहिति' कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात कवि लीलाधर मंडलोई ने कहा कि कविता की सबसे बड़ी

अपनी असमिया कहानी प्रस्तुत करते हुए कोंकना दत्त। मंच पर जे.पी. दास तथा अन्य युवा लेखक

उपलब्धि यह होनी चाहिए कि वह अपने समय में झूठी साबित न हो।...युवा कविता का अभी सम्यक् मूल्यांकन होना है। मैं आश्वस्त हूँ कि युवा कवि अलिखित त्रासदियों की तह तक पहुँचने और भूमंडलीय तथा तकनीक के प्रभाव के बीच प्रतिरोध की आवाज़ को ज़िंदा रखेंगे।

कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी ने युवाओं को मंच देने के लिए यह कार्यक्रम विशेष तौर से शुरू किया है। उन्होंने युवाओं को ध्यान में रखकर अकादेमी द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं, यथा—युवा पुरस्कार, यात्रा अनुदान, विभिन्न कार्यक्रम शृंखलाएँ तथा नवोदय योजना के बारे में जानकारी दी।

इस अवसर पर अकादेमी द्वारा 'नवोदय योजना' के अंतर्गत प्रकाशित सात पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। लोकार्पित कविता-संग्रह हैं—*गाउँका नीलडामहरू* (नेपाली, नरेश कटुआल), *अपनों में नहीं रह पाने का गीत* (हिंदी, प्रभात), *अंतिम विदाई से तुरंत पहले* (हिंदी, प्रांजल धर), *फ़र्स्ट इंस्टिक्ट* (अंग्रेज़ी, विजया सिंह), *समडे ड्रीम* (अंग्रेज़ी, वितस्ता रैणा) और *मुस्तक़बिल* (डोगरी, संदीप सूफ़ी) जबकि कहानी-संग्रह है—*टावक टारको* (संताली, मीना मुर्मू)।

उद्घाटन सत्र के पश्चात् क्रमशः जे.पी. दास, बलदेव वंशी और दिनेश कुमार शुक्ल की अध्यक्षता में आयोजित तीन सत्रों में 22 भाषाओं के युवा कवियों ने अपनी कविताएँ अपनी मातृभाषा अथवा हिंदी-अंग्रेज़ी अनुवाद में पढ़ीं। प्रतिभागी कवियों के नाम निम्नांकित हैं—कोंकना दत्त (असमिया), जातुश हरिश्चंद्र जोशी (गुजराती), आरिफ़ राजा (कन्नड), अरुणाभ सौरभ (मैथिली), रणवीर सारुङबा (मणिपुरी), मनोज बोगटी (नेपाली), सालिम सलीम (उर्दू), मौ दासगुप्त (बाङ्ला), मिहिर चित्रे (अंग्रेज़ी), मंजूर यूसुफ़ (कश्मीरी), लोपा आर. (मलयाळम्), प्रीतिधारा सामल (ओड़िया), ओम नागर (राजस्थानी), प्रवीण पंड्या (संस्कृत), अनुज लुगुन (हिंदी), विजित गोयारी (बोडो), युगा अडारकर (कोंकणी), कल्पना दुधाल (मराठी), नीतू अरोड़ा (पंजाबी), श्यामचरण टुडू (संताली), भारत सदारंगानी (सिंधी) तथा सिरिकि स्वामी नायडू (तेलुगु)।

कार्यक्रम का संयोजन-संचालन अकादेमी के उपसचिव ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने किया।

बाल साहित्य

14 मार्च 2014 को आयोजित 'बाल साहित्य' कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी बच्चों, शिक्षकों, अभिभावकों, साहित्यकारों, साहित्य-प्रेमियों का स्वागत करते हुए बताया कि साहित्योत्सव के अंतर्गत 'बाल साहित्य' कार्यक्रमों को पहली बार पिछले वर्ष 2013 में शामिल किया गया था, जिसका व्यापक स्वागत हुआ। उन्होंने बालसाहित्य को लेकर अकादेमी द्वारा चलाई जानेवाली योजनाओं—यथा,

व्याख्यान देते हुए प्रकाश मनु

बालसाहित्य पुरस्कार, पुस्तक-प्रकाशन, कार्यक्रम शृंखला आदि के बारे में बताया।

समारोह का उद्घाटन प्रख्यात हिंदी बाल-साहित्यकार प्रकाश मनु ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि सही मायने में यह बच्चों का उत्सव है, मेला है। कार्यक्रम में बच्चों की बड़ी उपस्थिति को देखते हुए उन्होंने अपना लिखित भाषण न पढ़कर बच्चों को तीन छोटी-छोटी कहानियाँ और एक कविता सुनाई। उन्होंने यह सुझाव दिया कि अकादेमी की 'भारतीय साहित्य के निर्माता' शृंखला के अंतर्गत बाल साहित्यकारों पर भी विनिबंध प्रकाशित किए जाने चाहिए।

'बाल साहित्य' के अंतर्गत 'आओ कहानी बुनें' कार्यक्रम में कमलजीत नीलों, अनूपालाल और उषा बंदे ने बहुत ही रोचक और प्रभावी ढंग से अपनी पंजाबी, हिंदी और अंग्रेज़ी कहानियाँ सुनाईं। पठित कहानियों ने बच्चों का ही नहीं, समारोह में उपस्थित बड़ों का भी मन मोह लिया। कार्यक्रम का संयोजन अकादेमी की उपसचिव गीतांजलि चटर्जी ने किया।

अकादेमी द्वारा पहली बार बच्चों के बीच 'कविता-लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। वरिष्ठ एवं कनिष्ठ दो वर्गों के लिए आयोजित इस प्रतियोगिता में 16 विद्यालयों के कुल 56 बच्चों ने भागीदारी की। निर्णायक की भूमिका सुरेखा पाणंदीकर और दीपा अग्रवाल ने निभाई।

अकादेमी की उपसचिव गीतांजलि चटर्जी के संयोजन में आयोजित 'आज के तकनीकी युग में किशोरों में पढ़ने की चुनौतियाँ' विषयक परिचर्चा में वक्ताओं के बीच समन्वयक की भूमिका देबप्रिया राय ने निभाई।

सुपरिचित अंग्रेज़ी बालसाहित्य लेखिका पारो आनंद ने कहा कि किशोरावस्था की अवधारणा भारत में अपेक्षाकृत नई है। पहले बच्चे सीधे युवा हो जाते थे। बच्चों-किशोरों की पाठकीय अभिरुचि के संदर्भ में उन्होंने कहा कि मुझे लगता है, आज पढ़ने की अभिरुचि और इच्छा बच्चों में बड़ों से ज़्यादा है।

शमित बासु ने कहा कि रचना का सुखद अंत किए जाने का प्रचलन व्यावसायिक कारणों से लगता है, जैसे कि सुखद अंतवाली फ़िल्में ज़्यादा चलती हैं। लेकिन आज के मध्यवित्त परिवारों में दुखद पहलू ज़्यादा प्रमुखता से नज़र आते हैं।

परिचर्चा के अंग्रेज़ी में लिखित शीर्षक में प्रयुक्त 'यंग एडल्ट' शब्द को स्पष्ट करते हुए वी.के. कार्तिक ने

बाएँ से दाएँ : शमित बासु, देवप्रिया राय, पारो आनंद, वी.के. कार्तिक तथा स्मृति लापेक

कहा कि 'यंग एडल्ट' उम्र की वह अवस्था है, जिसमें बच्चा स्वयं निर्णय लेकर खरीदने की स्थिति में होता है, क्योंकि बच्चों की पुस्तकें माँ-बाप, अभिभावक अथवा शिक्षकों के अनुमोदन से ही खरीदी जाती हैं।

स्मृति लामेक ने कहा कि बच्चे क्या पढ़ना चाहते हैं, यह माता-पिता या शिक्षकों द्वारा तय नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि इसे बच्चों पर छोड़ देना चाहिए।

पूर्वोत्तरी

15 मार्च 2014 को 'पूर्वोत्तरी' कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें उत्तर-पूर्व एवं उत्तर क्षेत्र के 22 कवि एवं कथाकार सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रसिद्ध मणिपुरी लेखक एच. बिहारी सिंह ने कहा कि उत्तर-पूर्व की कविता में हमें हिंसा और संघर्ष के स्वर सुनाई देते हैं, लेकिन यह सब एक स्थायी शांति की तलाश के लिए ही है। हमारे पूर्वोत्तर राज्य विभिन्न भाषाओं में अपने को व्यक्त करते हैं, लेकिन उनकी मूल प्रेरणा एक ही है और वह है भारत के लोकतंत्र का सम्मान। आगे उन्होंने कहा कि हमारे राज्यों की सांस्कृतिक विभिन्नता और भाषाई विवादों को एक सही रास्ते की खोज के लिए किए जानेवाले प्रयास के रूप में देखा जाना चाहिए।

उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि हिंदी के प्रख्यात कवि मंगलेश डबराल ने कहा कि मुख्यधारा से दूर की कविताओं में ही जीवन के बुनियादी तत्त्व पाए जा सकते हैं। कविता की मुख्य भूमि हाशिए की भूमि ही है। छोटे-छोटे भूगोल से ही नए और महत्त्वपूर्ण और विश्वसनीय स्वर सुनाई दे रहे हैं। भूमंडलीकरण के दौर में बाज़ार से लड़ने के लिए छोटे-छोटे प्रदेशों से ही ऊर्जा लेनी होगी।

कार्यक्रम के आरंभ में स्वागत भाषण देते हुए अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि साहित्योत्सव में इस 'पूर्वोत्तरी' कार्यक्रम को पहली बार शामिल किया गया है। हमारा उद्देश्य है कि इस तरह के कार्यक्रम से हम दूर-दराज़ के क्षेत्रों में उपेक्षित भाषाओं के साहित्य को देश की मुख्यधारा से जोड़ने की कोशिश करें।

सत्र में अरूपा बरुआ (असमिया), विजय बागलरी (बोडो), वरयाम सिंह (हिंदी), सुमन बांतवा (नेपाली), चंद्रमणि झा (मैथिली), सरबजीत कौर सोहल (पंजाबी), फटिकचंद हेम्ब्रम (संताली) तथा अब्दुल अहद शाज़ (उर्दू) ने अपनी कविताओं का पाठ मूल एवं हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद में किया। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी की उपसचिव रेणु मोहन भान ने किया। सत्राध्यक्ष गंगा प्रसाद विमल ने कहा कि यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण आयोजन है। भिन्न भाषाओं की भिन्न पृष्ठभूमि और भूगोल के बावजूद भी हम देख सकते हैं कि उनके सरोकार और चिंताएँ कितनी मिलते-जुलते हैं। समारोह के अंत में अकादेमी के उपसंपादक देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक धन्यवाद-ज्ञापन किया।

अतिथियों का स्वागत करते हुए के. श्रीनिवासराव।
बाएँ से दाएँ : एच. बिहारी सिंह, मंगलेश डबराल एवं रेणुमोहन भान

अनुवाद पुरस्कार 2012 अर्पण समारोह

साहित्य अकादेमी के वार्षिक अनुवाद पुरस्कार 2012 समारोहपूर्वक 23 अगस्त 2013 को चेन्नै में प्रदान किए गए। अकादेमी के अध्यक्ष और प्रतिष्ठित हिंदी कवि-आलोचक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न हुए इस समारोह के मुख्य अतिथि थे प्रख्यात तमिळ लेखक अशोक मित्रन। समारोह के आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों, लेखकों साहित्यप्रेमियों और मीडियाकर्मियों का हार्दिक स्वागत किया। अकादेमी के उपाध्यक्ष और प्रख्यात कन्नड साहित्यकार चंद्रशेखर कंबार ने समारोह के अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के हाथों प्रदान किए गए, जबकि उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने विजेताओं का पुष्पगुच्छ अथवा माल्यार्पण द्वारा अभिनंदन किया। इस पुरस्कार के अंतर्गत पचास हज़ार रुपए की राशि और उत्कीर्ण ताम्रफ़लक शामिल हैं। इस अवसर पर पुरस्कृत लेखकों में पंकज ठाकुर (असमिया), ओइनम नीलकंठ सिंह (बाङ्ला), स्वर्णप्रभा चैनारी (बोडो), शशि पठानिया (डोगरी), एम.एल. तंगप्पा (अंग्रेज़ी), शालिनी चंद्रकांत टोपीवाला (गुजराती), रामजी तिवारी (हिंदी), के.के. नायर एवं अशोक कुमार (कन्नड), अब्दुल अहद हाजिनी (कश्मीरी), गुरुनाथ शिवाजी केळेकार (कोंकणी), महेंद्र नारायण राम (मैथिली), आनंद (पी. सच्चिदानंदन) (मलयाळम्), ई. सोनामणि सिंह (मणिपुरी), शारदा साठे (मराठी), गीता उपाध्याय (नेपाली), प्रशांत कुमार मोहांति (ओड़िया), सतीश कुमार वर्मा (पंजाबी), पूर्ण शर्मा 'पूरण' (राजस्थानी), भागीरथि नंद (संस्कृत), रवींद्रनाथ मुर्मू (संताली), हीरो ठाकुर (सिंधी), जी. नांजुंदन (तमिळ), आर. वेंकटेश्वर राव (तेलुगु) और अतहर फ़ारूक़ी (उर्दू) शामिल थे।

बाएँ से दाएँ : के. श्रीनिवासराव, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, अशोक मित्रन और चंद्रशेखर कंबार

पुरस्कार-अर्पण के पश्चात् विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपना अध्यक्षीय भाषण करते हुए तमिलनाडु की अपनी पहली यात्रा का स्मरण किया। उन्होंने कहा कि अनुवाद यद्यपि कठिन कार्य है, लेकिन हमारे जैसे बहुभाषी देश की यह अनिवार्य आवश्यकता है। उन्होंने एक रूसी लेखक की उक्ति को उद्धृत किया, जिसने कहा था, "हम अनुवाद के समय में रह रहे हैं, यहाँ तक कि हम अपनी मुस्कान को अनूदित करने के लिए विवश हैं।"

एस.एल. रंगप्प (अंग्रेज़ी) को पुरस्कार प्रदान करते हुए विश्वनाथ प्रसाद तिवारी (बाएँ)

मुख्य अतिथि अशोक मित्रन ने कहा कि अनुवाद पुरस्कार विजेताओं की प्रशस्ति का पाठ सुनते हुए वे चकित थे कि उन लोगों ने भारतीय भाषाओं को समृद्ध करने में कितना महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। उन्होंने 1940 के दशक को याद करते हुए बताया कि उस समय बंकिम चंद्र चटर्जी और रवींद्रनाथ ठाकुर के तमिळ अनुवाद सर्वाधिक बिकनेवाली कृतियों में थे।

अंत में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि भाषिक बहुलता इस उपमहाद्वीप की विशिष्टता है। हमारी भाषाएँ आपसी दुर्बोधता के बावजूद एक जैसा इतिहास, नियति और भविष्य लिए हुए हैं। उन्होंने अंग्रेज़ी की अनिवार्य विवशता की ओर संकेत करते हुए कहा कि कई मामलों में यह हमारी मातृभाषाओं को निगल गई है। यद्यपि भूमंडलीकरण के इस युग में बचे रहने के लिए अंग्रेज़ी एकमात्र विकल्प है, तथापि हमारे बच्चों में मातृभाषा के प्रति प्रेम को बनाए रखने की ज़रूरत है।

शक्ति पद्मनिया (डोगरी) का अभिनंदन करते हुए चंद्रशेखर कंबार

अनुवादक सम्मिलन

साहित्य अकादेमी के अनुवाद पुरस्कार 2012 के सभी पुरस्कृत विजेताओं के सम्मिलन का आयोजन चेन्नै में 24 अगस्त 2013 को मद्रास विश्वविद्यालय के मरियाना कैंपस में स्थित प्लेटिनम जुबली सभागार में किया गया। इस अवसर पर विजेता अनुवादकों ने अनुवाद से

अनुवाद सम्मेलन में बोलते हुए आनंद। बाएँ से दाएँ : चंद्रशेखर कंबार एवं के. श्रीनिवासराव

संबंधित अपने अनुभवों को साझा किया। अनुवादकों ने पुरस्कार प्रदान किए जाने के लिए साहित्य अकादेमी के प्रति आभार प्रकट किया। अधिकांश अनुवादकों के वक्तव्य में यह पीड़ा उभरकर आई कि यद्यपि अनुवाद आज के समय की ज़रूरत बन गया है तथा साहित्य के क्षेत्र में तो कभी-कभी यह मौलिक सर्जना से भी कठिन कार्य प्रतीत होता है, तथापि अनुवाद-कार्य को पर्याप्त सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता। ऐसे में अकादेमी द्वारा पुरस्कार प्रदान कर उन्हें दी जानेवाली मान्यता और मान-सम्मान प्रसन्नता का विषय है। अनुवाद कर्म के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा के क्रम में यह बात सामने आई कि साहित्यिक अनुवाद सांस्कृतिक अनुवाद भी है और गहरी संलग्नता के बिना श्रेष्ठ अनुवाद कदापि संभव नहीं है। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने की।

अभिव्यक्ति कार्यक्रम

साहित्य अकादेमी के अनुवाद पुरस्कार 2012 अर्पण समारोह के बाद चेन्नै में 25 अगस्त 2013 को मद्रास विश्वविद्यालय के मरियाना कैंपस में स्थित प्लेटिनम जुबली सभागार में 'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत 24 भारतीय भाषाओं के पचास से भी अधिक लेखकों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। यह कार्यक्रम पाँच सत्रों में विभाजित था। दो सत्र कविता-पाठ के लिए, दो कहानी-पाठ के लिए और पाँचवा सत्र आलेख-पाठ का था, जिसके अंतर्गत 'मैं क्यों लिखता हूँ' विषय पर प्रख्यात लेखकों ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए बताया कि अभिव्यक्ति कार्यक्रम बहुसांस्कृतिक उत्सव है, जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं की विभिन्न पीढ़ियों की साहित्य-सर्जना के विविध पहलुओं से हमारा परिचय होगा। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक कृष्णस्वामी नाचिमुथु ने आरंभिक भाषण किया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात तमिळ कवि और फ़िल्मी गीतकार वैरमुत्तु ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा किए जानेवाले कार्यों के लिए उसकी सराहना करते हुए कहा कि अकादेमी का कार्य हृदय की तरह है। जैसे हमारा हृदय रक्त की शुद्धि कर उसे हमारे संपूर्ण शरीर में पहुँचाता है, उसी प्रकार अकादेमी भी सभी भारतीय भाषाओं के संपूर्ण साहित्य में से श्रेष्ठ साहित्य का चयन कर उसे कश्मीर से कन्याकुमारी तक संपूर्ण भारत में पहुँचाने का कार्य करती है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। उन्होंने कहा कि प्रत्येक मातृभाषा हमारे देश की राष्ट्रीय भाषा है।

उद्घाटन सत्र में अंशुमान कर (बाङ्ला), सुशील बेगाना (डोगरी), कमल वोरा (गुजराती), अरुण कमल

अभिव्यक्ति कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए वैरमुतु

(हिंदी), प्रतिभा नंदकुमार (कन्नड), सावित्री राजीवन (मलयाळम्), अरंबम ओडवी मेमचोबी (मणिपुरी), सलमा (तमिळ), देवप्रिया (तेलुगु) और शीन काफ़ निज़ाम (उर्दू) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। कार्यक्रम के अंत में अकादेमी के उपाअध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र कहानी-पाठ का था, जिसकी अध्यक्षता सा. कंदासामी ने की। इस सत्र में रवींद्र कालिया (हिंदी), अमरनाथ झा (मैथिली), अजय स्वैन (ओड़िया), पावन्नन (तमिळ) और योल्गा (तेलुगु) ने अपनी कहानियों अथवा उपन्यास अंशों का पाठ किया।

'मैं क्यों लिखता हूँ' विषयक विमर्श के आगामी सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात तमिळ लेखक सिर्पी बालसुब्रमणियम ने की। इस सत्र में अरुंधती सुब्रहमणियम (अंग्रेज़ी), विनोद जोशी (गुजराती), मृदुला गर्ग (हिंदी), एस. फ़ीस्टिना 'वामा' (तमिळ), के. शिव रेड्डी (तेलुगु) और शरण कुमार लिंबाले (मराठी) ने अपनी प्रेरणा और प्रभावों के बारे में विस्तार से बताया।

अगला सत्र पुनः कहानी-पाठ का था, जिसमें नागति हल्ली चंद्रशेखर (कन्नड), बी. मुरली (मलयाळम्), नछत्तर (पंजाबी), अमृतम सूर्य (तमिळ) और एम. नरेंद्र (तेलुगु) ने अपनी कहानियों का पाठ किया। इस सत्र की अध्यक्षता भालचंद्र नेमाडे ने की।

अंतिम सत्र कविता-पाठ का था, जो प्रख्यात मलयाळम् कवि के. सच्चिदानंदन की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में कविता-पाठ करनेवालों में अनीज उज़ ज़मान (असमिया), विश्वेश्वर बसुमतारी (बोडो), तमिल सेल्वी (कन्नड), अज़ीज़ हाजिनी (कश्मीरी), माधव बोरकर (कोंकणी), बिंधा सुब्बा (नेपाली), अर्जुन देव चारण (राजस्थानी), के. रामकृष्ण वारियर (संस्कृत), यशोदा मुर्मू (संताली), वासदेव मोही (सिंधी), तमिष्राची थंगपांडियन (तमिळ) और एम. संपत कुमार (तेलुगु) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

बाल साहित्य पुरस्कार 2013 अर्पण समारोह

सभागृह करते हुए मुख्य अतिथि मनोज दास, मंच पर पुरस्कार विजेता और अकादेमी के सचिव एवं अध्यक्ष

साहित्य अकादेमी के बालसाहित्य पुरस्कार 2013 समारोहपूर्वक 15 नवंबर 2013 को गोवा राज्य संग्रहालय सभागार, पणजी, गोवा में प्रदान किए गए। तीन दिनों तक आयोजित इस समारोह में 'पुरस्कार-अर्पण समारोह', 'लेखक सम्मिलन' और 'बच्चों के लिए लेखन की नई चुनौतियाँ' विषयक परिसंवाद शामिल थे।

15 नवंबर को आयोजित पुरस्कार-अर्पण समारोह में स्वागत भाषण करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने बालसाहित्य के उन्नयन के लिए साहित्य अकादेमी द्वारा किए जा रहे प्रयत्नों का संक्षिप्त विवरण देते हुए बताया कि अकादेमी द्वारा बालसाहित्य पुरस्कार दिए जाने की शुरुआत 2010 में की गई थी। उन्होंने सूचित किया कि इस बार बालकहानी के लिए नौ, बालकविता तथा निबंध के लिए दो-दो पुरस्कारों के अलावा आठ बालसाहित्यकारों को उनके समग्र योगदान के लिए पुरस्कार प्रदान किए जा रहे हैं।

तेलुगु पुरस्कार विजेता डी. सुजाता देवी को पुष्प गुच्छ भेंट करते हुए मनोज दास

अकादेमी के अध्यक्ष से पुरस्कार ग्रहण करते कन्नड लेखक एच.एस. वेंकटेशमूर्ति

अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी तथा कहा कि सच्चा लेखक विशेषकर बालसाहित्यकार किसी पुरस्कार की प्रत्याशा में नहीं लिखता। उन्होंने कहा कि बच्चों के लिए लिखना सर्वाधिक कठिन चुनौती है। ओड़िया और अंग्रेज़ी के प्रख्यात लेखक मनोज दस इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने अपने भाषण में बालसाहित्य की विशिष्टताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि बच्चों की निर्दोषिता, बहुरंगी संसार, काल्पनिकता, जिज्ञासा और प्यार हमें आकर्षित करते हैं।

इस अवसर पर चौबीस भारतीय भाषाओं के लेखकों को अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। पुरस्कार के रूप में पचास हज़ार रुपए की राशि का चेक और उत्कीर्ण ताम्रफ़लक प्रदान किए गए। पुरस्कृत लेखकों में शामिल थे—तोषप्रभा कलिता (असमिया), नारायण देवनाथ (बाङ्ला), जतींद्रनाथ सोरागियारी (बोडो), कृष्ण शर्मा (डोगरी), अनिता नायर (अंग्रेज़ी), श्रद्धा त्रिवेदी (गुजराती), रमेश तैलंग (हिंदी), एच. एस. वेंकटेशमूर्ति (कन्नड), रशीद कांसपुरी (कश्मीरी), माया खरंगटे (कोंकणी), धीरेंद्र कुमार झा (मैथिली), सुमंगला (मलयाळम्), रघु लैशांथेम (मणिपुरी), अनंत भावे (मराठी), भोटू प्रधान (नेपाली), नदिया बिहारी मोहांति (ओड़िया), कमलजीत नीलो (पंजाबी), विमला भंडारी (राजस्थानी), एच.आर. विश्वास (संस्कृत), सारिधरम हांसदा (संताली), वासुदेव 'निर्मल' (सिंधी), रेवती (तमिळ), डी. सुजाता देवी (तेलुगु) और असद रज़ा (उर्दू)।

लेखक सम्मिलन

16 नवंबर को आयोजित 'लेखक सम्मिलन' में साहित्य अकादेमी बालसाहित्य पुरस्कार 2013 से पुरस्कृत लेखकों ने अपनी रचनात्मक यात्रा और अनुभवों को साझा किया। प्रायः लेखकों ने बालसाहित्य रचना के लिए बाल मनोविज्ञान की समझ होना और बच्चों के स्तर तक उतरना ज़रूरी बताया। लेखकों ने बालसाहित्य के प्रकाशन और बच्चों तक उसकी पहुँच की चुनौतियाँ और समस्याओं की भी चर्चा की।

परिसंवाद

बच्चों के लिए लेखन : नई चुनौतियाँ

17 नवंबर को 'बच्चों के लिए लेखन : नई चुनौतियाँ' विषयक राष्ट्रीय परिसंवाद का उद्घाटन प्रख्यात रंगकर्मी बंशी कौल ने किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कोई ऐसा नाट्यकार

व्याख्यान देते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पुंडलीक नायक।
बाएँ से दाएँ : के. श्रीनिवासराव, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी तथा वनी कौल

नज़र नहीं आता, जो बच्चों के लिए ख़ासतौर पर नाटक लिखता हो। उन्होंने कहा कि बच्चों को तरह-तरह से हतोत्साहित करने की बजाय उन्हें स्वाभाविक रूप से विकास करने देना चाहिए।

परिसंवाद के प्रारंभ में स्वागत भाषण करते हुए अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि आज यह एक अनिवार्य आवश्यकता है कि बच्चों के लिए लेखन संबंधी चुनौतियों पर गहन विमर्श किया जाए और उन्हें अभिलेखित किया जाए। इससे उत्कृष्ट बालसाहित्य लेखन की संभावनाएँ उजागर होंगी।

प्रतिष्ठित कोंकणी लेखक पुंडलिक नायक इस समारोह में मुख्य अतिथि थे। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि यह चकित करनेवाली बात है कि सिनेमा जैसा लोकप्रिय माध्यम भी बच्चों के प्रति गंभीर नहीं है। वास्तव में बच्चों के लेखक को अपने भीतर के बच्चे को ज़िंदा रखना होता है।

अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि बच्चों के लेखन की सबसे बड़ी चुनौती सहज सरल भाषा में अभिव्यक्ति है। ज्ञान और शिक्षा का सहज संप्रेषण बहुत ही कठिन है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता देविका रंगाचारी ने की। इस सत्र में दीपा अग्रवाल, शांतनु तमुली और सुधा जी. खरंगटे ने अपने आलेख पढ़े उनके आलेखों में बच्चों की उम्र के अनुसार लेखन की आवश्यकता तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा समुचित कार्टून धारावाहिकों की प्रस्तुति पर विचार किया गया था।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता तानाजी हलर्नकर ने की। इस सत्र में बाबा भांड, दिविक रमेश और के. श्रीकुमार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र में बालसाहित्य की समृद्ध विरासत का स्मरण करने के साथ-साथ सृजन की चुनौतियों पर भी सार्थक विमर्श किया गया।

परिसंवाद का अंतिम सत्र कविता-पाठ का था, जिसकी अध्यक्षता हिंदी के प्रख्यात बालसाहित्यकार प्रकाश मनु द्वारा की गई। इस सत्र में विनोद गांधी (गुजराती), आनंद वी. पाटील (कन्नड), भरत नाइक (कोंकणी), सरबजीत सिंह बेदी (पंजाबी), दीनदयाल शर्मा (राजस्थानी) और नाज़िर फ़तेहपुरी (उर्दू) ने अपनी-अपनी भाषाओं की बालकविताओं का पाठ मूल और हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ किया।

प्रख्यात कोंकणी साहित्यकार दामोदर मावजो ने परिसंवाद में समापन भाषण दिया।

अकादेमी युवा पुरस्कार 2013 अर्पण

समारोह में अध्यक्षीय भाषण देते हुए विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, मंच पर युवा पुरस्कार विजेता और अतिथि बैठे हैं

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2013 का पुरस्कार अर्पण समारोह जोधपुर के राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के जय नारायण व्यास स्मृति भवन में 5 फ़रवरी 2014 को सायं 5 बजे आयोजित किया गया।

साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने मुख्य अतिथि नंद किशोर आचार्य सहित सभी मंचस्थ विद्वानों और सभागार में उपस्थित श्रोताओं का स्वागत किया। उत्कृष्ट लेखकों और शोधार्थियों के साथ-साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी और सभी युवा पुरस्कार विजेता इस अवसर पर मौजूद थे। युवा लेखकों के परिजन और मित्रों सहित बड़ी संख्या में मीडियाकर्मी भी मौजूद थे। के. श्रीनिवासराव ने युवा पुरस्कार को अकादेमी का सर्वाधिक अहम पुरस्कार बताया। उन्होंने कहा कि पुरस्कार अर्पण समारोह जोधपुर में पहली बार आयोजित हो रहा है। उन्होंने बताया कि 24 भाषाओं की विभिन्न विधाओं के सर्वश्रेष्ठ लेखन को पुरस्कृत करनेवाली साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रायः वरिष्ठ लेखकों को दिया जाता है, जिनकी उपलब्धि सिद्ध है। ऐसे में बेहद प्रतिभासंपन्न युवा लेखक पुरस्कारों से वंचित रह जाते हैं। इसीलिए साहित्य अकादेमी ने युवा प्रतिभाओं के विकास को प्रोत्साहित करने की खातिर युवा पुरस्कार को ज़रूरी समझा है।

अकादेमी अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी से पुरस्कार ग्रहण करते हुए अर्पना चैतारे

असमिया पुरस्कार विजेता विजय शंकर बर्मन को पुरस्कार प्रदान करते हुए अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने समारोह की अध्यक्षता की और 21 युवा पुरस्कार विजेताओं को उत्कीर्ण ताम्र-फ़लक और पचास हज़ार रुपए का चेक प्रदान किया, जबकि मुख्य अतिथि नंद किशोर आचार्य ने पुष्प गुच्छ अथवा माल्यार्पण द्वारा पुरस्कृत लेखकों का अभिनंदन किया। अंग्रेज़ी की पुरस्कृत लेखिका जेनिस पारिअत किन्हीं कारणों से उपस्थित नहीं थीं।

लेखक सम्मिलन

पुरस्कार समारोह के विजेताओं का एक सम्मिलन भी 6 फ़रवरी को राजस्थान संगीत नाटक अकादमी की गैलरी में आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न भाषाओं के युवा लेखकों ने अपनी पुस्तकों पर चर्चा की और अपने रचनात्मक अनुभव साझा किए।

पुरस्कृत युवा लेखकों कुमार अजय (राजस्थानी), अर्चना मैंसारे (हिंदी), विजय शंकर बर्मन (असमिया), शुभ्र बंद्योपाध्याय (बाङ्ला), सानसुमै खुंग्रि (बोडो), धीरज केसर 'निक्का' (डोगरी), अशोक चावड़ा 'बेदिल' (गुजराती), लक्कूरु आनंद (कन्नड), योगिनी आचार्य (कोंकणी), दिलीप कुमार झा 'लूटन' (मैथिली), पी.वी. शाजी कुमार (मलयाळम्), अखोम यांदिवाला देवी (मणिपुरी), रवि लक्ष्मीकांत कोरडे (मराठी), सूरज धड़कन (नेपाली), क्षेत्रबासी नाएक (ओड़िया), हरप्रीत कौर (पंजाबी), राजकुमार मिश्र (संस्कृत), लालचंद सरेन (संताली), सेंगतिर सेलवन (कथिरभारती) (तमिळ), मंत्रि कृष्ण मोहन (तेलुगु) और अब्दुल मोईद (उर्दू) ने इस अवसर पर अपने रचनात्मक अनुभव साझा किए।

आविष्कार : युवा लेखन उत्सव

साहित्य अकादेमी द्वारा 6 फ़रवरी 2014 को राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर की गैलरी में युवा लेखकों का दो दिवसीय उत्सव 'आविष्कार' आयोजित किया गया।

अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी ने तो अंग्रेज़ी को भारतीय भाषा के रूप में मान्यता दी है किंतु सरकार ने अब तक ऐसा नहीं किया है। उन्होंने कहा कि अंग्रेज़ी को उसका सम्मान मिलना चाहिए। हालाँकि उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि हमारी कई क्षेत्रीय भाषाएँ इस बाधा के कारण लुप्तप्राय हो रही हैं और सरकार को इस समस्या से भी दो-चार करना होगा।

उर्दू के उत्कृष्ट कवि शीन काफ़ निज़ाम ने उत्सव का उद्घाटन किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि कविता अमर होती है और पाँच हज़ार साल से जीवित है। हालाँकि उन्होंने एक मानवीय विडंबना को रेखांकित किया कि हर कोई 'विभीषण' के गुणों की सराहना करता है, पर रावण के भाई का नाम अपने बच्चों के लिए नहीं चुनता। इसी प्रकार हर किसी को कविता अच्छी लगती है, पर वह अपने बच्चों को यह लिखने की प्रेरणा नहीं देता।

बाएँ से दाएँ : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, के. श्रीनिवासराव, अर्जुन देव चारण एवं शीन काफ़ निज़ाम

अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक अर्जुन देव चारण ने अपने आरंभिक भाषण में कहा कि एक लेखक की अपनी मातृभाषा से गहरे संबंध की दरकार होती है। प्रारंभ में अकादेमी सचिव के. श्रीनिवासराव ने उत्कृष्ट लेखकों और उपस्थित साहित्य-प्रेमियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि कोई भी लेखक या लेखन साहित्य-प्रेमियों के अभाव में जीवित नहीं रह सकता।

7 फ़रवरी को आयोजित 'हम क्यों लिखें' इस विषयक प्रथम सत्र में लेखकों ने अपने अनुभव बाँटे कि उन्हें लेखन की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई। भानु भारती की अध्यक्षता में संपन्न इस सत्र में शुभ्र बंद्योपाध्याय (बाङ्ला), सागर शाह (गुजराती), अरुण देव (हिंदी), के.पी. सुधीरा (हिंदी) और अरविंद अशिया (राजस्थानी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'कहानी-पाठ' को समर्पित द्वितीय सत्र ख्यात राजस्थानी लेखक मालचंद तिवाड़ी की अध्यक्षता में हुआ। इस सत्र में निर्मल विक्रम, मनीषा कुलश्रेष्ठ, सनतोंबी निंगोमबम, अशोक कौटिक कोली और मदन गोपाल लाढ़ा ने क्रमशः डोगरी, हिंदी, मणिपुरी, मराठी एवं राजस्थानी में अपनी कहानियों का पाठ किया।

कविता-पाठ सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात उर्दू कवि चंद्रभान ख़याल ने की। इस सत्र में यतींद्र मिश्र, सागर नज़ीर, टीका भाई, गगनदीप शर्मा, ओम नागर, कौशल तिवारी, शीलू तन्हा और मोहम्मद अफ़ज़ल जोधपुरी ने क्रमशः हिंदी, कश्मीरी, नेपाली, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, सिंधी और उर्दू में अपनी कविताएँ सुनाईं।

भाषा सम्मान अर्पण समारोह

13 मई 2013, शिलांग

2012 के लिए भाषा सम्मान, कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य में योगदान के लिए नारायण चंद्र गोस्वामी एवं हासू याज्ञिक को; खासी भाषा एवं साहित्य के लिए सौंदर सिंह माजव को; कोडवा भाषा एवं साहित्य के लिए आद्दंड सी. करियप्प और (स्व.) मंदिरा जया अप्पन को संयुक्त रूप से; तथा मिसिंग भाषा एवं साहित्य के लिए टाबू राम टाईद को प्रदान किया गया।

भाषा सम्मान अर्पण समारोह और पुरस्कार विजेता सम्मिलन का आयोजन 13 मई 2013 को सोसो थाम सभागार, शिलांग में किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण किया। प्रतिष्ठित हिंदी कवि एवं विद्वान तथा अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने पुरस्कार प्रदान किए तथा अध्यक्षीय भाषण किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे, मेघालय के माननीय शहरी विकास मंत्री अंपरीन लिंगदोह, जबकि विशिष्ट अतिथि थे अकादेमी की सामान्य परिषद् में मेघालय राज्य के प्रतिनिधि सदस्य और खासी एवं अंग्रेज़ी के प्रख्यात लेखक एवं विद्वान सिलवानस लामारे।

के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि साहित्य अकादेमी, जो मुख्यतः अपने द्वारा मान्यताप्राप्त भाषाओं के प्रति प्रतिबद्ध है, ने यह पाया कि इन भाषाओं के अलावा भी जो साहित्यिक संपदा मौजूद है, वह भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है; तथा उसका भी सम्मान होना चाहिए। इस प्रकार भाषा सम्मान की स्थापना अकादेमी द्वारा गैर-मान्यताप्राप्त भाषाओं के लेखकों एवं विद्वानों के लिए की गई। अकादेमी ने बड़ी संख्या में

बाएँ से दाएँ : के. श्रीनिवासराव, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, अंपरीन लिंगदोह (प्रथम पंक्ति)
पिछली पंक्ति में हैं सिलवानस लामारे एवं अन्य भाषा सम्मान विजेता।

अपनी भाषाओं की कालजयी कृतियों के अनुवाद प्रकाशित किए हैं।

उन्होंने बताया कि प्रत्येक वर्ष मध्यकालीन साहित्य की विशिष्टताओं का अनुसंधान कर समकालीन समय की प्रेरणा बननेवाले विद्वानों को भाषा सम्मान प्रदान करने के साथ-साथ साहित्य अकादेमी प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्य के इतिहास, सर्वेक्षण एवं संचयनों का प्रकाशन भी कर रही है। उन्होंने पुरस्कार विजेताओं, मुख्य अतिथि माननीय मंत्री अंपरीन लिंगदोह, विशिष्ट अतिथि सिलवानस लामारे, अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी तथा इस अवसर पर उपस्थित लेखकों एवं साहित्यप्रेमियों का हार्दिक स्वागत किया।

तत्पश्चात् साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने छह प्रख्यात लेखकों और विद्वानों को भाषा सम्मान प्रदान किए। विशिष्ट अतिथि सिलवानस लामारे ने पुरस्कृत विद्वानों को माल्यार्पण किया। इस अवसर पर नारायण चंद्र गोस्वामी, हासू याशिक, टाबू राम टाईद, आद्दंड सी. करियप्प और सींदर सिंह माजव ने सम्मान ग्रहण किए।

इस अवसर पर बोलते हुए, साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने बहुभाषिकता और बहु-सांस्कृतिकता से भरपूर विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं की विविधता से युक्त हमारे देश के गौरव को दुहराया। उन्होंने भाषा, पारंपरिक कलाएँ, संस्कृति और अन्य तत्वों के महत्त्व पर विस्तार से चर्चा की। आगे उन्होंने कहा, "मनुष्य की महानतम खोज भाषा है। भाषा के रूप में मनुष्य के पास एक अनूठी शक्ति है। भाषा अँधेरे के बीच प्रकाश की तरह है। बिना शब्दों के दुनिया अंधकार में रह जाती। इस प्रकार भाषा की कोई सीमा नहीं है, चूँकि यह किसी को भी विरासत और संस्कृति के रूप में प्राप्त होती है। भाषा सांस्कृतिक पहचान के लक्षणों में से एक है।" उन्होंने श्रोताओं को बताया कि अकादेमी ने 24 भारतीय भाषाओं को मान्यता प्रदान की है तथा इन भाषाओं में पुरस्कार दिए जाते हैं। अकादेमी अन्य लिखित/मौखिक सैकड़ों भाषाओं के विकास के लिए प्रयत्नशील है। चूँकि ये भाषाएँ हमारी समृद्ध संस्कृति एवं विरासत का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसलिए यह ज़रूरी है कि भाषाओं का आदर और उन्हें समृद्ध करने के प्रयत्न किए जाएँ, जो मनुष्य का महानतम आविष्कार हैं।

समारोह के मुख्य अतिथि मेघालय के माननीय शहरी विकास मंत्री अंपरीन लिंगदोह ने अपने भाव और विचार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें खासी भाषा की प्रगति और विकास को लेकर गर्व है। यद्यपि ये लोग इस भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने के लिए अभी भी संघर्षशील हैं, तथापि उन्हें यह उम्मीद है कि यह सपना शीघ्र ही साकार हो पाएगा। उन्होंने कहा कि यद्यपि खासी भाषा का साहित्य और लोकसाहित्य काफ़ी समृद्ध है, लेकिन अभी भी उसको भाषा में अभिलेखित होना है। डॉ. लिंगदोह ने आशा व्यक्त की कि साहित्य अकादेमी लोकसाहित्य की समृद्ध विरासत को अभिलेखन के माध्यम से संरक्षित करने की दिशा में पर्याप्त सहयोग देगी, ताकि भावी पीढ़ियों को उसका पर्याप्त लाभ मिल सके। अकादेमी को इन्हें सांस्कृतिक वैश्वीकरण के आक्रमण से भी बचाना चाहिए।

पुरस्कार विजेता सम्मिलन में, पुरस्कृत लेखकों ने अपनी मातृभाषाओं में अपने कार्यों के लिए पुरस्कार दिए जाने को लेकर अकादेमी के प्रति अतिरिक्त कृतज्ञता का ज्ञापन किया, क्योंकि उनकी भाषाएँ अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं हैं। उन लोगों ने उन परिस्थितियों का उल्लेख भी किया जिन्होंने उन्हें लेखक बनाया और इस बात की प्रेरणा दी कि वे अपनी मातृभाषा में प्राथमिक रूप से लेखन करें। उन्होंने अपने सर्जनात्मक अनुभवों को भी साझा किया।

कार्यक्रम के अंत में सिलवानस लामारे ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अकादेमी महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह

अर्जन हाशिद को महत्तर सदस्यता प्रदत्त

साहित्य अकादेमी ने अपना सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता प्रख्यात सिंधी कवि श्री अर्जन हाशिद को 21 जुलाई 2013 को अहमदाबाद, गुजरात में आयोजित एक कार्यक्रम में प्रदान की। अर्जन हाशिद ने 1956 में लेखन कार्य प्रारंभ किया। उनके सात कविता-संग्रह प्रकाशित हैं। श्री हाशिद ने कविता की समस्त विधाओं में लिखा है, किंतु वह अपने गीतों और ग़ज़लों के लिए सर्वाधिक जाने जाते हैं। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में आमंत्रित अतिथियों तथा श्रोताओं का अभिवादन किया। अपने भाषण में उन्होंने श्री हाशिद का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया।

बाएँ से दाएँ : के. श्रीनिवासराव, वासदेव मोही, अर्जन हाशिद, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं प्रेम प्रकाश

अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने श्री हाशिद को महत्तर सदस्यता के स्मृति चिह्न तथा शॉल से सम्मानित किया। श्री हाशिद ने अपने स्वीकृति वक्तव्य में साहित्य अकादेमी द्वारा उन्हें महत्तर सदस्यता दिए जाने हेतु आभार व्यक्त किया। सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक प्रेम प्रकाश ने श्री हाशिद को एक सरल, प्रभावकारी एवं सटीक कवि के रूप में व्याख्यायित किया। महत्तर सदस्यता कार्यक्रम के पश्चात् 'संवाद' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक प्रेम प्रकाश ने की। प्रख्यात सिंधी साहित्यकारों—वासदेव मोही, नामदेव ताराचंदाणी और विम्मी सदारंगानी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

सत्यव्रत शास्त्री को महत्तर सदस्यता प्रदत्त

साहित्य अकादेमी ने 16 जुलाई 2013 को नई दिल्ली में प्रख्यात संस्कृत कवि एवं समालोचक प्रो. सत्यव्रत शास्त्री को अपने सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता से सम्मानित किया। प्रो. शास्त्री एक उत्कृष्ट कवि हैं।

साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में समकालीन संस्कृत साहित्य को प्रो. शास्त्री द्वारा दिए गए योगदानों की चर्चा की। उन्होंने बताया कि प्रो. शास्त्री ने तीन महाकाव्य, चार खंडकाव्य, एक गद्यकाव्य की डायरी लिखी है। उन्होंने यह भी कहा कि वह एक अनुवादक भी हैं जिन्होंने हिंदी,

बाएँ से दाएँ : के. श्रीनिवासराव, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, सत्यव्रत शास्त्री एवं चंद्रशेखर कंबार

अंग्रेज़ी तथा संस्कृत भाषाओं में कई उत्कृष्ट अनुवाद कार्य किए हैं।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष एवं प्रख्यात कवि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने प्रो. शास्त्री को स्मृति चिह्न तथा शॉल भेंट की। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष, वरिष्ठ कन्नड कवि एवं कथाकार तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित चंद्रशेखर कंबार भी उपस्थित थे।

प्रो. शास्त्री ने अपने स्वीकृति वक्तव्य में साहित्य अकादेमी का उन्हें इस सम्मान से सम्मानित किए जाने का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के अंत में प्रो. कंबार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

महत्तर सदस्यता कार्यक्रम के पश्चात् 'संवाद' कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक राधावल्लभ त्रिपाठी ने की। प्रख्यात लेखकों एवं विद्वानों जैसे—सत्यव्रत वर्मा, हरेकृष्ण सत्पथी, कमल आनंद तथा एस. रंगनाथ ने सत्यव्रत शास्त्री के जीवन एवं कार्यों पर अपने विचार प्रकट किए।

रघुवीर चौधरी को महत्तर सदस्यता प्रदत्त

साहित्य अकादेमी ने अपना सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता, प्रख्यात गुजराती लेखक, कवि एवं समालोचक रघुवीर चौधरी को 20 जुलाई 2013 को अहमदाबाद स्थित गुजराती साहित्य परिषद् में प्रदान की। महत्तर सदस्यता कार्यक्रम के पश्चात् 'संवाद' कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक सितांशु यशश्चंद्र ने की, इस कार्यक्रम में प्रख्यात गुजराती विद्वानों जैसे—चंद्रकांत टोपीवाला, रमेश दवे तथा सतीश व्यास ने भाग लिया।

अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत व्याख्यान में आमंत्रित अतिथियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने डॉ. चौधरी को महत्तर सदस्यता का स्मृति चिह्न तथा शॉल भेंट कर सम्मानित किया। डॉ. श्रीनिवासराव ने प्रशस्ति-पाठ किया।

रघुवीर चौधरी (दाएँ) को महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

श्री चौधरी की सुपुत्री दृष्टि पटेल ने उनका स्वीकृति वक्तव्य पढ़कर सुनाया। स्वीकृति वक्तव्य में उन्होंने कहा कि एक लेखक के रूप में वह संतुष्ट हैं। उन्होंने अपने एक कृषक होने के अनुभवों पर भी अपने उद्‌गार प्रस्तुत किए। उन्होंने अपनी रचना यात्रा के विविध चरणों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने अपनी कुछ गुजराती कविताओं के उद्धरण भी प्रस्तुत किए।

'संवाद' कार्यक्रम में सितांशु यशश्चंद्र ने डॉ. चौधरी को महत्तर सदस्यता प्रदान किए जाने पर हर्ष व्यक्त किया तथा उन्होंने डॉ. चौधरी के कार्यों का संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत किया। चंद्रकांत टोपीवाला ने कहा डॉ. चौधरी उनके घनिष्ठ मित्र हैं तथा उन्होंने गुजराती साहित्य को अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। रमेश आर. दवे ने नाट्य साहित्य में डॉ. चौधरी के योगदानों की चर्चा की।

सीताकांत महापात्र को महत्तर सदस्यता प्रदत्त

साहित्य अकादेमी का सर्वोच्च सम्मान 'महत्तर सदस्यता' ओड़िया के प्रख्यात साहित्यकार सीताकांत महापात्र को 14 दिसंबर 2013 को अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया।

सीताकांत महापात्र ओड़िया के प्रतिष्ठित कवि, आलोचक और विद्वान हैं, जो जनजातीय कविता के क्षेत्र में अपने विशिष्ट योगदान के लिए भी जाने जाते हैं। उन्होंने आदिम जनजातीयों, कर्मकांड आधारित समाजों के लिए आधुनिक राज्यों द्वारा चलाई जानेवाली विकास-योजनाओं के संदर्भ में गहनता से कार्य किया है। उनकी रचनाओं में ओड़िशा की परंपराओं की अनुगूँज सुनाई पड़ती है।

इस अवसर पर बोलते हुए अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि सीताकांत महापात्र मिथ, परंपरा और संस्कृति के कवि हैं, जिन्हें अपनी भाषा से बेहद प्यार है।

समारोह के आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सबका औपचारिक स्वागत करते हुए प्रशस्ति-पाठ किया।

इस अवसर पर अपने स्वीकृति वक्तव्य में सीताकांत महापात्र ने कहा कि साहित्य अकादेमी का यह सर्वोच्च सम्मान न केवल उनके लेखन का बल्कि ओड़िया भाषा एवं साहित्य का सम्मान है। अपना यह सम्मान काव्यगुरु जगन्नाथ दास और संतकवि भीमा भोई को समर्पित करते हुए उन्होंने अपनी रचना-यात्रा और प्रेरणा-स्रोतों के बारे में संक्षेप में बताया।

सम्मान-अर्पण समारोह के पश्चात् 'संवाद' नामक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें प्रफुल्ल मोहांति,

अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
से महत्तर सदस्यता सम्मान ग्रहण करते हुए सीताकांत महापात्र (बाएँ)

बसंत कुमार पंडा और अपर्णा मोहांति ने सीताकांत महापात्र की रचनाओं के विभिन्न आयामों पर सार्थक विमर्श प्रस्तुत किया। प्रफुल्ल मोहांति ने महापात्र को संबंधों और मौन के कवि के रूप में व्याख्यायित किया। पंडा ने उन्हें अपने समय का मिथोग्राफ़र बताया। अपर्णा मोहांति ने उनकी कविताओं की रहस्यपूर्ण अभिव्यक्तियों पर विमर्श किया।

समारोह में सीताकांत महापात्र की ओड़िया कृति के अंग्रेज़ी अनुवाद *रोटेशन ऑफ़ अनएंडिंग टाइम्स* (अनुवादक : एस.पी. रथ एवं एवं मार्क हॉलपेरिन) तथा उनके रचनात्मक अवदान पर केंद्रित कृति (सं. संघमित्र मिश्र एवं रंजित नाएक) का लोकार्पण भी किया गया। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक गौरहरि दास ने समारोह के अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

एम.टी. वासुदेवन नायर को महत्तर सदस्यता प्रदत्त

एम.टी. वासुदेवन नायर को अकादेमी की महत्तर सदस्यता प्रदान किए जाने का कार्यक्रम कालिकट के अलकापुरी होटल में 31 जनवरी 2014 को आयोजित किया गया। अतिथियों का स्वागत साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने किया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने एम. टी. के जीवन और लेखन पर विस्तार से चर्चा की।

वरिष्ठ कवि एवं साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने एम.टी. को महत्तर सदस्यता प्रदान की। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में उन्होंने कहा कि एम.टी. मलयाळम् में अपने लेखन के माध्यम से भारतीय साहित्य के मुखर उद्घोषक हैं। उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति ने जीवन के विभिन्न पक्षों को छुआ है। भारत को उनके रूप में हमें एक बेहद प्रतिभा संपन्न तीक्ष्ण बुद्धि वाला विद्वान एवं कल्पनाशील लेखक मिला है।

वरिष्ठ कवि एवं साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने एम.टी. को महत्तर सदस्यता प्रदान की।

एम.टी. ने अपने स्वीकृति वक्तव्य में अपने पूर्व के लेखकों को याद किया। उन्होंने चंगमपुझा, केशव देव, पी. कुन्हीरमण नायर, वाइकम मोहम्मद बशीर को याद किया और उनके जीवन-संघर्ष और पीड़ाओं की चर्चा की उन्होंने आत्मविश्लेषण करते हुए ख़ुद से पूछा कि आख़िर तुम क्यों लिखते हो और बताया कि उन्हें अब तक इस प्रश्न का संतोषप्रद उत्तर प्राप्त नहीं हो पाया है। मैं सोचता हूँ कि मैं जीवन के दर्द, सुख, भय, स्वप्न और भ्रम के प्रति एक सामान्य आदमी के मुक़ाबले कहीं अधिक संवेदनशील हूँ। मैं यदि अपनी शंकाएँ और सरोकार ख़ुद

एम.टी. वासुदेवन नायर को ताल फलक प्रदान करते हुए विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

जैसी सोच वालों के संग न बांटूँ तो अपराध-बोध का शिकार हो जाता हूँ।

इसके बाद 'संवाद' कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें प्रख्यात समालोचक के. पी. शंकरन ने एम. टी. के लिए आलेख उद्धृत कर लेखक के गहरे सरोकारों की पड़ताल की। उन्होंने एम.टी. को प्रकृति, वातावरण, असहाय और असहायों के ऊपर पूरे विश्व में घटित होनेवाले अत्याचार के प्रति बेहद चिंतित बताया।

सुनील पी. इलयीदम ने अपने वक्तव्य में कहा कि एम.टी. के साहित्य में इतिहास प्रतिबिंबित होता है और पात्रों के माध्यम से वह अपने समाज को प्रतिबिंबित करते हैं। इं. पी. राजगोपालन ने बताया कि एम.टी. का साहित्य पुनर्जागरण की सीमाओं के बावजूद उत्तरजीवी रहा। उनके पात्र भले ही अपनी प्रकृति में अंतर्मुखी हों, पर आवश्यकता पड़ने पर वह अपने आवरण को त्याग कर बाहर आते हैं। उन्होंने इसके समर्थन में एम.टी. की अनेक कथाओं से उदाहरण प्रस्तुत किए।

अलांकोडे लीलाकृष्णन ने एम.टी. के लेखन में प्रतिबिंबित होते गाँव, ग्रामीण, परिवेश और प्रकृति आदि की चर्चा की। उन्होंने बताया कि उनके जन्म स्थान में बहनेवाली नदी नीला तो अब तक उनकी रचनाओं में मुखर है। उन्होंने अपने व्याख्यान के अंत एम.टी. को केरल का निजी अभिमान बताया।

संगोष्ठियाँ, परिसंवाद तथा सम्मेलन

आदि भाषा सम्मेलन
6-7 अप्रैल 2013, अरुणाचल प्रदेश

साहित्य अकादेमी द्वारा 6-7 अप्रैल 2013 को आदि आगोम कैबांग के संयुक्त तत्त्वाधान में डूइंग गूमिन हॉल, पासी घाट, ईस्ट सियांग, अरुणाचल प्रदेश में आदि भाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में सत्रह विद्वानों और दो प्रदर्शनकारी कलासमूहों ने भाग लिया।

प्रख्यात लेखिका ममंग दई ने उद्‌घाटन सत्र की अध्यक्षता की, जबकि अरुणाचल प्रदेश सरकार में मानवीय शिक्षा, विज्ञान एवं तकनीकी मंत्री बोसीराम सीराम इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। प्रख्यात विद्वान तथा आदि आगोम कैबंग के महासचिव कालिंग बोरांग ने बीज-भाषण किया। अरुणाचल प्रदेश की प्राथमिक शिक्षा के निदेशक बोडोंग इरांग विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। साहित्य अकादेमी के कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय प्रभारी गौतम पॉल ने आमंत्रित अतिथियों और उपस्थित श्रोताओं का औपचारिक स्वागत किया।

सम्मेलन की शुरुआत नृत्य-संगीत की बहुरंगी प्रस्तुतियों से हुई। स्वागत भाषण करते हुए गौतम पॉल ने कहा कि कार्यक्रम की रूपरेखा इस तरह से बनाई गई है कि आदि भाषा के अतीत वर्तमान और भविष्य विस्तार से विचार-विमर्श संभव हो सके। उन्होंने बताया कि मान्यताप्राप्त भाषाओं के अलावा साहित्य अकादेमी लघु भाषा समूहों को लेकर भी कार्य कर रही है, जिसका मुख्य उद्देश्य भाषा एवं संस्कृति का संरक्षण और विकास है।

कालिंग बोरांग ने अपने बीज-भाषण में आदि भाषा की समृद्ध विरासत का विवरण दिया, विशेषकर वाचिक परंपरा का, जिसमें नैतिक और महाकाव्यात्मक साहित्य के तत्त्व मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि इनका अभिलेखन ज़रूरी है, ताकि इसकी वाचिक एवं सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित किया जा सके। उन्होंने स्कूली पाठ्‌यक्रम में भी प्रभावी ढंग से इस भाषा को शामिल किए जाने पर ज़ोर दिया तथा कहा कि यह आवश्यक है कि आदि और मिसिंग भाषाओं के लिए एक ही लिपि को अपनाया जाए।

बाएँ से दाएँ : गौतम पॉल, ममंग दई, बोसीराम सिराम, निनि पर्टिन, बोडोंग इरिंग एवं ओबांग टाईंग

अपने उद्घाटन भाषण में मुख्य अतिथि माननीय मंत्री श्री बोसीराम सिराम ने आदि भाषा एवं साहित्य के उन्नयन के लिए युवाओं का आह्वान किया। उन्होंने आदि भाषा में साहित्यिक शोध, प्रकाशन और अभिलेखन पर ज़ोर दिया। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा के निदेशक, जो इस अवसर पर उपस्थित थे, को सुझाव दिया कि इस भाषा को स्कूली शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रभावी ढंग से कार्यान्वित करने की समुचित व्यवस्था पर ध्यान दें।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित प्राथमिक शिक्षा, अरुणाचल प्रदेश के निदेशक बोडोंग यिरांग ने बताया कि राज्य में कुल बयासी भाषा और बोलियाँ हैं। उन भाषाओं में आदि भी एक है, जो उत्तरी असम के तिब्बती-बर्मी भाषा समुदाय की भाषा है और आदि समाज की सांस्कृतिक विरासत को वहन करती है। उन्होंने आशा व्यक्त कि यह सम्मेलन आदि भाषा के विकास के लिए नए रास्ते दिखलाएगा। वाचिक एवं लिखित दोनों ही रूपों में बेहद समृद्ध साहित्य यहाँ उपलब्ध है।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए ममंग दई ने कहा कि आदि भाषा पारंपरिक लोकगाथा आबांग का अभिलेखन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि आबांग हमारे आध्यात्मिक एवं बौद्धिक जीवन का आधार हैं। उन्होंने कहा कि साहित्य विचारों के संयोजन की शैली है और इसके संपूर्ण विकास के लिए सामूहिक प्रयत्न की आवश्यकता है। उन्होंने पासीघाट में इस सम्मेलन के आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस तरह की पहलक़दमी से राज्य के कवि एवं लेखक समृद्ध होंगे। साहित्यिक गतिविधियों के क्षेत्र से जुड़े अपने अनुभवों को साझा करते हुए उन्होंने कहा कि सम्मेलन का उद्देश्य विशेषरूप से समाज में मानवता, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, न्याय और समानता की बेहतर समझ का विकास करते हुए आदि भाषा एवं सांस्कृतिक विरासत का उन्नयन होना चाहिए।

प्रथम सत्र में सार्वजनिक पुस्तकालय, अरुणाचल प्रदेश के उपनिदेशक तारक मिज़ो, आदि आगोम कैबांग के सहायक महासचिव मैक्टिल अपूम तथा प्रख्यात संस्कृति विशेषज्ञ टालोम डूपक ने क्रमशः 'आदि साहित्य', 'आदि लिपि' और 'आदि लोकगीत' विषयक आलेखों का पाठ किया। इस सत्र की अध्यक्षता भी ममंग दई ने की।

दोपहर बाद के सत्र की अध्यक्षता आदि आगोम कैबांग के पूर्व अध्यक्ष दाना पर्टिन ने की। 'साहित्य एवं भाषा' विषयक इस सत्र में कालिंग बोरंग, पेर्टिन और नगागिन लेगो ने क्रमशः 'आदि एवं उसकी भाषाओं का परिचय', 'आदि भाषाओं के भाषिक परिप्रेक्ष्य' एवं 'आदि भाषा के उन्नयन का महत्त्व' शीर्षक आलेखों का पाठ किया।

कालिंग बोरांग ने अपने आलेख में आदि भाषा की पृष्ठभूमि और संदर्भों पर विमर्श प्रस्तुत किया। आदि समुदाय के इतिहास पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि आदि के इतिहास के समर्थन में लिखित दस्तावेज़ नहीं हैं। किंवदंतियों के अनुसार वे उत्तरी दिशा से यहाँ आए। वर्तमान में वे सियांग नदी के साथ अरुणाचल प्रदेश के वेस्ट सियांग, अपर सियांग, ईस्ट सियांग, लोअर सियांग एवं ज़िलों में और लोहित ज़िले के कुछ भागों में बसे हुए हैं। उन्होंने मिथक, विश्वास, समाज व्यवस्था, कैबांग की संरचना, आदि भाषा, आदि शिक्षा प्रणाली और आदि साहित्य के बारे में भी बताया। उन्होंने पेमिंग आबांग और इससे मिलते-जुलते आदि परंपरा के कुछ कम प्रचलित, लेकिन महत्त्वपूर्ण आबांगों के बारे में भी बताया और आदि आगोम कैबांग से इनकी विशिष्टताओं के साथ इन्हें संरक्षित किए जाने की अपील की।

7 अप्रैल 2013 को सम्मेलन के तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात विद्वान एवं लेखक तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी ओसोंग इरिंग

ने की। तृतीय सत्र 'आदि लोकगीत और परंपरा' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र में ओलिंग रतन, अराक मेगु, ओसिक पर्टिन और निनि पर्टिन ने क्रमशः 'आदि समुदाय के लोकगीत', 'आदि लोकगीतों का वर्गीकरण', 'आदि भाषा का इतिहास' और 'आदि जीवन पर सपनों का प्रभाव' शीर्षक आलेखों का पाठ किया।

प्रख्यात लेखक तथा पूर्व सूचना आयुक्त बानी डांगेन ने चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता की। यह सत्र 'आधुनिक आदि साहित्य' पर केंद्रित था। जे. एन. कॉलेज में सहायक प्रोफ़ेसर गिंदू बोरांग, कवि एवं विद्वान गिरिन तामुलि, कालिंग बोरांग तथा आदि कल्चर एंड लिटरेरी सोसायटी, रोइंग के महासचिव मैक्टिन लेगो ने इस सत्र में अपने आलेख पढ़े।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि थे, मिशिंग आगोम कैबांग के अध्यक्ष बिधेशर डोली। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि लिखित साहित्य के विकास की तमाम तरह की चुनौतियों के बारे में उन्होंने चर्चा की, ख़ासतौर पर लिपि की समस्या और अपूर्ण स्रोत। उन्होंने दोनों ही भाषा समुदायों का इस बात के लिए आह्वान किया कि वे अपनी भाषा के विकास और संरक्षण के लिए प्रयास करें।

इस अवसर के विशिष्ट अतिथि एवं स्कूली शिक्षा के निदेशक तापांग टालोह ने शोध एवं अभिलेखन पर ज़ोर देते हुए उन्होंने सुझाव दिया कि विशेषज्ञों और आधिकारिक विद्वानों द्वारा पाठ्यक्रम भी तैयार कराया जाना चाहिए।

आदि आगोम कैबांग के महासचिव ओबांग टाईग ने अपने समापन वक्तव्य में आदि समाज के वर्तमान भाषा परिदृश्य तथा आदि आगोम कैबांग द्वारा आदि भाषा के विकास के लिए किए जानेवाले प्रयासों का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा प्राप्त सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

अनुवाद तथा सत्ता-विमर्श पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
10-11 अप्रैल 2013, नई दिल्ली

अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली तथा साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में 10-11 अप्रैल 2013 को प्रीव्यू थिएटर, ईएमपीसी, इग्नू कैंपस, नई दिल्ली में 'अनुवाद एवं सत्ता-विमर्श' विषय पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन इग्नू के कुलपति प्रो. एम. असलम द्वारा किया गया। उद्घाटन-सत्र में विद्यापीठ के निदेशक अवधेश कुमार सिंह ने आगत अतिथियों का स्वागत करते हुए विषय प्रवर्त्तन किया। संगोष्ठी का उद्घाटन वक्तव्य देते हुए इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति एम. असलम ने संगोष्ठी के आयोजन पर प्रसन्नता ज़ाहिर करते हुए स्पष्ट कहा कि अनुवाद करते समय विषय की मौलिकता का विशेष ध्यान रखना परम आवश्यक है। उन्होंने कहा कि अनूदित साहित्य में भाषा की सहजता और स्वाभाविकता परम आवश्यक है। साहित्य अकादेमी के उपसचिव ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने अनुवाद के महत्त्व पर अपने विचार रखते हुए भाषाओं और बोलियों के महत्त्व पर बल दिया।

संगोष्ठी के बीज वक्तव्य में प्रख्यात चिंतक मैनेजर पांडेय ने विभिन्न विचारकों एवं चिंतकों द्वारा किए गए अनुवादों के उदाहरण से प्रतिनिधित्व की राजनीति पर प्रकाश डाला, और सत्ता-विमर्श के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हुए तथा अनुवाद की सुदीर्घ परंपरा को रेखांकित किया। जेंडर साहित्य के अनुवाद पर केंद्रित सत्र में एन. कमला, सविता सिंह एवं इप्शिता चंदा ने अपने विचार व्यक्त किए।

औपनिवेशिक/उत्तर-औपनिवेशिक साहित्य के अनुवाद विषयक सत्र में विशिष्ट चिंतक अशोक वाजपेयी ने अनुवाद कर्म के महत्त्व को रेखांकित करते हुए साफ़-साफ़

कहा कि अनुवाद और सत्ता विमर्श का संबंध औपनिवेशिक काल की उपज है। इस सत्र में राजेंद्र यादव ने उत्तर-औपनिवेशिक काल को आधुनिकता एवं स्वतंत्रता से जोड़ते हुए जेंडर के संबंध में सत्ता-विमर्श को रेखांकित किया। देवेंद्र राज अंकुर ने अपने वक्तव्य में औपनिवेशिक काल में नाटकों के अनुवाद पर प्रकाश डाला। इन सत्रों में सायमा अख़्तर, शबनम शाहीन, आरती अनुपम ने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के दूसरे दिन 'सबाल्टर्न साहित्य का अनुवाद' पर केंद्रित सत्र में संजीव कुमार ने कहा कि जब हम सबाल्टर्न साहित्य के अनुवाद की बात करते हैं तो पाते हैं कि वहाँ भाषा विचारों को व्यक्त करने का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह स्वयं एक विचार के रूप में होती है, जिसका अनुवाद करना कठिन होता है। बजरंग बिहारी तिवारी ने अपने वक्तव्य में दलित साहित्य में दलित की मनः स्थिति को लाने के लिए लेखक एवं अनुवादक दोनों को उपाश्रितों की जीवनचर्या का अनुभव होने पर बल दिया। टी.वी. कट्टिमणि ने अनुवाद की शक्ति एवं राजनीति तथा अनुवाद में भाषा एवं साहित्यकार की शक्ति को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि भीमराव आंबेडकर और अनुवाद दलित साहित्य के प्रचार-प्रसार की प्रेरणा के दो तत्त्व हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि कन्नड एवं हिंदी अनुवाद के साहित्य का इतिहास लिखा जाना चाहिए।

'अनुवाद एवं बहुसांस्कृतिकता' विषयक सत्र में अरुण कमल ने कहा कि प्रत्येक संस्कृति की अपनी एक भाषा होती है, और संस्कृति मूलतः भाषा से ही व्याख्यायित होती है। राजकुमार प्रसाद ने अपने वक्तव्य में कहा कि अनुवाद एक संस्कृति से एक ख़ास प्रकार के अनुवादों के माध्यम से उस दूसरी संस्कृति पर आधिपत्य निर्मित करता है। सुशांत कुमार मिश्र ने कहा कि कोई अनुवाद वैश्विक होगा या क्षेत्रीय यह मात्र स्थान पर ही निर्भर नहीं करता, इसमें समय भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। विष्णु खरे ने कहा कि कोई भी अनुवाद कार्य अनुवाद के कहे जानेवाले प्रत्येक क्षेत्रों के स्तरों पर प्रश्न खड़ा करता है। इन सत्रों में अर्चना देवी, सफदर इमाम तथा ओ. पी. झा ने शोध आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के अंत में संपूर्ण विचार-विमर्श का सार-संक्षेप अवधेश कुमार सिंह ने प्रस्तुत किया तथा जगदीश शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम के विभिन्न सत्रों का संचालन देवशंकर नवीन, मनीष कुमार, धीरज, अंकिता श्रीवास्तव तथा शिवम शर्मा ने किया।

'भारत की बौद्धिक परंपराएँ : संस्कृत शास्त्रों के आलोक में' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

14-15 अप्रैल 2013, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के उपसचिव ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने उद्घाटन में आमंत्रित एवं उपस्थित विद्वानों एवं साहित्य-प्रेमियों का औपचारिक स्वागत किया। हवाई विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफ़ेसर रमानाथ शर्मा ने अपने उद्घाटन भाषा में शास्त्रीय परंपराओं की कुछ आधारभूत अवधारणाओं की चर्चा की, जैसे संप्रदाय, कूटशनित्यता और प्रवहनीयता। अपने बीज-भाषण में राधावल्लभ त्रिपाठी ने संस्कृत के शास्त्रीय विमर्श में पुरुष-वर्चस्व को रेखांकित किया। उन्होंने तीन हज़ार सालों के कालखंड में संस्कृत की शास्त्रीय परंपरा का संक्षिप्त इतिहास चार विकास-स्तरों के माध्यम से प्रस्तुत किया। सत्यव्रत शास्त्री ने अपने अध्यक्षीय भाषण में इसकी जड़ों और आधारभूत अवधारणाओं की तलाश की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने संस्कृत व्याकरण की कुछ कोटियों पर अपनी बात रखी।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता रमेश कुमार पांडेय ने की, जबकि के.ई. देवनाथन ने 'समकालीन परिदृश्य में न्याय की अवधारणा की प्रासंगिता' विषयक अपने विद्वत्तापूर्ण

बाएं से दाएं : राधावल्लभ त्रिपाठी, सत्यव्रत शास्त्री, रमानाथ शर्मा एवं के.डी. सुब्रयुडु

आलेख का पाठ किया। के. वेंकटेश मूर्ति ने महामहोपाध्याय पंडित रामावतार शर्मा द्वारा दर्शन की नई व्यवस्था पर लिखित *परमार्थदर्शनम्* पर आधारित अपने आलेख का पाठ किया। उन्होंने न केवल कृति में प्रतिपादित नव्य अवधारणाओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया, बल्कि रामावतार शर्मा को एक मौलिक चिंतक के रूप में स्थापित किया तथा समकालीन दर्शन में उनके योगदान को रेखांकित किया। पीयूषकांत दीक्षित द्वारा पंडित बदरीनाथ शुक्ल द्वारा प्रतिपादित देहात्मवाद की अवधारणा पर लिखित आलेख उनकी अनुपस्थिति में उनके एक शिष्य द्वारा प्रस्तुत किया गया।

द्वितीय सत्र 'नई सहस्राब्दी में वेदांत' विषय पर केंद्रित था। प्रख्यात पारंपरिक विद्वान प्रोफ़ेसर प्रह्लादाचार ने इस सत्र की अध्यक्षता की। संस्कृत के प्रोफ़ेसर गोदावरीश मिश्र ने विगत कुछ शताब्दियों में वेदांत के आचार्यों के संदर्भ में विश्लेषणात्मक आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने वेदांत विचार-प्रणालियों के अंतर्गत पद्धतियों के बदलते प्रतिमानों का अध्ययन भी प्रस्तुत किया। सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्वान रमानाथ शर्मा ने संगणकीय भाषाविज्ञान की दृष्टि से व्याकरणिक कोटियों की व्यावहरिकता पर विमर्श प्रस्तुत किया। उन्होंने यह विचार व्यक्त किया कि संपूर्ण परंपरा सक्रिय और विकासशील है। सुपरिचित विद्वान सुब्रयुडु ने आज के संदर्भ में वेदांत की प्रासंगिकता पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने वेदांत के अंतर्गत अन्य व्यवस्थाओं के संश्लेषण पर बल दिया।

दूसरे दिन का प्रथम सत्र प्रोफ़ेसर एवं विद्वान शशिप्रभा कुमार की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। सच्चिदानंद मिश्र ने 'वैशेषिक दर्शन के वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य' विषय पर अपना आलेख पढ़ा। उन्होंने वैशेषिक व्यवस्था को यथार्थवाद के एक स्कूल के रूप में स्थापित किया। चर्चित विद्वान प्रोफ़ेसर अंबिकादत्त शर्मा ने 'आधुनिकता, अंतर-धार्मिक विवाद तथा बुद्धि' विषयक अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए ईसाइयत से प्रेरित आधुनिकता में अंतर-धार्मिकता के विवाद का मूल खोजने का प्रयत्न किया। उनके अनुसार दुनिया के केवल तीन धर्म विशेषरूप से विस्तारवादी और परिवर्तनवादी रहे हैं, ईसाई, इस्लाम और बौद्ध। इस्लाम में धर्मयुद्ध के तत्त्व को ईसाइयत से प्रेरित आधुनिकता के विस्तार के कारण संवेग प्राप्त हुआ, लेकिन बौद्ध धर्म अपनी निरंतर विस्तारवादी नीति के बावजूद पूरी तरह अहिंसावादी रहा। मधु खन्ना ने 'शाक्ततन्त्र की कालातीत आधुनिकता' विषयक अपने आलेख में कुंडलिनी पर विचार करते हुए शाक्त परंपरा में स्त्री विमर्श को रेखांकित किया। रमाकांत पांडेय ने बीसवीं शताब्दी में व्याकरण के नए विमर्शों का विश्लेषण करते हुए स्फोट-सिद्धांत के संदर्भ में रामाज्ञा पांडेय के वर्गीकरण के औचित्य को स्थापित किया।

चतुर्थ सत्र बौद्धिक विमर्शों के वैविध्य पर केंद्रित था। कमलेश दत्त त्रिपाठी ने इस सत्र की अध्यक्षता की।

प्रख्यात संस्कृत कवि हर्षदेव माधव ने शाक्ततंत्र के चार वर्गों, मैत्रल, मुदित, करुणा और उपेक्षा के आधार पर नए काव्यशास्त्र की पुनर्संरचना पर विमर्श प्रस्तुत किया। राजेन्द्र मिश्र ने उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी के दौरान संस्कृत में नए साहित्यशास्त्र की पुनर्संरचना एवं पुनर्निर्माण के प्रयत्नों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने आधुनिक काल में लिखित बहुत-सी साहित्य-सिद्धांत विषयक संस्कृत कृतियों को संदर्भित किया। कमलेश दत्त त्रिपाठी ने उत्तर-आधुनिक काल में नाट्यशास्त्र की प्रासंगिकता पर विमर्श प्रस्तुत किया।

पंचम सत्र 'भाषा और यथार्थ' पर केंद्रित था। पी. सी. मुरलीमाधवन ने इस सत्र की अध्यक्षता की। प्रो. रामानुज देवनाथन ने लका, जैसे उत्तर-आधुनिक चिंतक के संदर्भ में भर्तृहरि में भाषिक अद्वैत का प्रतिपादन किया। दीप्ति त्रिपाठी ने व्याकरण और विभिन्न भाषाशास्त्रीय वर्गों के संदर्भ में भर्तृहरि के दर्शन से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विमर्श प्रस्तुत किया। मल्हार कुलकर्णी ने आधुनिक युग में पाणिनि के व्याकरण की प्रासंगिकता पर चर्चा की तथा संगणकीय भाषाविज्ञान के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों का विवरण प्रस्तुत करते हुए पाणिनीय व्यवस्था के डाटा बेस तैयार किए जाने पर भी अपना दृष्टिकोण रखा।

समापन सत्र में बलराम शुक्ल ने दो दिनों के दौरान हुए संगोष्ठी के विमर्शों का सार-संक्षेप प्रस्तुत किया। समापन सत्र की अध्यक्षता वी.आर. पंचमुखी ने की, जबकि इस सत्र में गोदावरीश मिश्र, रमाकांत शुक्ल और के. श्रीनिवासराव ने संभाषण किए।

साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने इस संयुक्त आयोजन के लिए राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान को धन्यवाद दिया तथा आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी उनका सहयोग निरंतर मिलता रहेगा और आनेवाले वर्षों में अनेक सार्थक आयोजन किए जाएँगे। सभी वक्ताओं ने वैचारिक आदन-प्रदान के लिए अनूठे अवसर प्रदान करने की दिशा में साहित्य अकादेमी द्वारा किए जानेवाले प्रयासों की सराहना की तथा सुझाव दिया कि संगोष्ठी के आलेखों और विमर्शों को पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाना चाहिए।

राधावल्लभ त्रिपाठी ने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की तरफ़ से धन्यवाद-ज्ञापन किया।

वारली भाषा सम्मेलन

29-30 जून 2013, वाड़ा, ठाणे, महाराष्ट्र

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज वाड़ा, ठाणे महाराष्ट्र के संयुक्त तत्वावधान में 29-30 जून 2013 को कॉलेज सभागार में दो-दिवसीय वारली भाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। कॉलेज के प्रधानाचार्य एन.के. फड़के ने सम्मेलन का उद्घाटन किया।

अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने श्रोताओं और विद्वान प्रतिभागिओं का औपचारिक स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने कहा कि अकादेमी भारत की भीली, कोकबोराक, तुलु, बुंदेली, लद्दाखी, हिमाचली, भोजपुरी जैसी ग़ैर-मान्यताप्राप्त भाषाओं तथा देश को समृद्ध करनेवाली उनकी वाचिक परंपराओं को लेकर गहराई से चिंतित है।

अपने उद्घाटन भाषण में प्रो. फड़के ने कहा कि ऐसे सम्मेलनों के माध्यम से भारत में जनजातियों से संबंधित ग़लत धारणाओं के खंडन तथा उनकी विशिष्ट संस्कृति एवं परंपराओं को बनाए रखते हुए उन्हें मुख्यधारा में लाने में मदद मिलेगी।

प्रख्यात विद्वान किरणकुमार कावठेकर ने बीज-भाषण दिया। उन्होंने बी.के. राजबाड़े, महादेव अंधारे, डॉ. विल्सन जैसे विद्वानों को संदर्भित करते हुए वारली भाषा के उद्भव संबंधी विचार प्रस्तुत किए।

सुदाम जाधव ने अपने अध्यक्षीय भाषण में एक बेहद दिलचस्प तथ्य से परिचय कराया। उन्होंने कहा कि वारली भाषा में ल, इ, श, क्ष, छ, अक्षर मौजूद हैं। उन्होंने उन ध्वनियों को उच्चरित करके बताया, जिन्हें वारली भाषा ने इन अनुपलब्ध ध्वनियों से स्थानापन्न किया है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता भास्कर गिरधारी ने की, जबकि सुनील धनकुटे, चंद्रकांत गायकवाड़, सचिन जीवडे एवं बलवंत मगदुम ने अपने आलेख पढ़े। मगदुम ने अपने 'वारली समुदाय में ईश्वर की अवधारणा' विषयक अपने आलेख में यह सूचना दी कि वारली समुदाय मुख्यतः प्रकृति की पूजा करता है, इसीलिए वहाँ विभिन्न प्रकार की वृक्षपूजाएँ, पशुपूजाएँ और ग्रहपूजाएँ हैं।

जीवडे ने महाराष्ट्र और गुजरात में बोली जानेवाली वारली भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि वारली भाषा को गुजराती और मराठी भाषा मात्र ने प्रभावित नहीं किया है, बल्कि इस पर अन्य भाषाओं का भी प्रभाव है। धनकुटे ने वारली परंपराओं की बदलती कसौटियों के बारे में बात की। गायकवाड ने कहा कि वारली एक देशज जनजाति अथवा आदिवासी है, जो इंडो-आर्यन वर्ग की वारली भाषा में बात करती है।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता अरविंद मर्डीकर ने की, जबकि इसमें तुकाराम रोंगटे, भास्कर गिरधारी, गोकुल शिखारे और मोहिनी सावडेकर ने अपने आलेखों का पाठ किया। गिरधारी ने महालक्ष्मी पूजन, दशहरा, दशहरा नवमी उत्सव, सूगी, दिवाली, वाघभारस, विवाह आदि वारली रीति-रिवाजों और संस्कारों पर अपने विचार प्रकट किए। सावडेकर ने कहा कि सैकड़ों वर्षों से साक्षरता-पूर्व वारली समुदाय के लोगों ने अपने संस्कार पाठ, गीत, मिथक, किंवदंतियों आदि को पीढ़ी-दर-पीढ़ी सफलतापूर्वक अग्रसारित किया है। रोंगटे ने वारली गीतों को उनके कथ्य के अनुसार तीन भागों में वर्गीकृत किया; पहला देव, धर्म, जन्म एवं मृत्यु; दूसरा विवाह एवं प्रेम; तथा तीसरा कृषि संबंधी। शिखरे ने वारली नृत्य और वाद्य यंत्रों के बारे में अपना आलेख पढ़ा।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता माहेश्वरी गावित ने की, जबकि इस सत्र में राजू शॉवर, दर्शना म्हात्रे और मुकुंद कुले ने अपने आलेख पढ़े। वारली चित्रकला पर केंद्रित चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता सुधाकर यादव ने की, जबकि इसमें मंगला शिन्कर एवं विवेक कुडु ने अपने आलेख पढ़े। दोनों ही सत्रों में वारली कला-प्रक्रिया के अद्वितीय सौंदर्य और मौलिक लयात्मकता को उजागर किया गया।

माहेश्वरी गावित ने समापन भाषण दिया। समापन सत्र के मुख्य अतिथि थे प्रकाश भातंब्रेकर। आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज, वाड़ा में मराठी विभाग में एसोसिएट प्रोफ़ेसर कैलाश जोशी ने संगोष्ठी के अंत में औपचारिक धन्यवाद-ज्ञापन किया।

बाएँ से दाएँ : मुकुंद कुले, राजू शॉवर, माहेश्वरी गावित एवं दर्शना म्हात्रे

कबीर उत्सव

3-4 अगस्त 2013, वाराणसी

साहित्य अकादेमी द्वारा मालवीय मूल्य अनुशीलन केंद्र, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधन में 3-4 अगस्त 2013 को कबीर उत्सव का आयोजन किया गया। उत्सव का उद्घाटन करते हुए प्रतिष्ठित आलोचक पुरुषोत्तम अग्रवाल ने कहा कि कबीर को हाशिए की आवाज़ कहना, दरअसल भारतीय इतिहास को उपनिवेश की दृष्टि से देखने का परिणाम है। कबीर की वाणी संवेदनशील व्यक्ति के चित्त की कविता है। आगे उन्होंने कहा कि कबीर सहित सभी भक्तिकालीन कवियों की 'भक्ति' विभिन्न सामाजिक मूल्यों का समुच्चय है। अतः उन्हें संत कवि की जगह केवल कवि कहना भी उनके महत्त्व को कहीं से भी कम नहीं करता है।

आरंभिक वक्तव्य देते हुए अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक सूर्यप्रसाद दीक्षित ने कबीर और तुलसी को विरोधी चिंतक के रूप में देखे जाने को ग़लत माना। उन्होंने कहा कि दोनों लोक जीवन और लोक मंगल के कवि हैं। इस सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की।

प्रथम सत्र 'लोक में कबीर' विषय पर केंद्रित था जिसकी अध्यक्षता सूर्य प्रसाद दीक्षित ने की और नीरजा माधव, गौतम चटर्जी और प्रकाश उदय ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सायंकाल 'कबीर स्मृति काव्य गोष्ठी' वरिष्ठ कवि ज्ञानेंद्रपति की अध्यक्षता में संपन्न हुई, जिसमें अष्टभुजा शुक्ल, आशीष त्रिपाठी, यशिष्ठ अनूप, ओम निश्चल, दानिश, जनार्दन प्रसाद पांडेय, अरुणाभ सौरभ, परमजीत सिंह आदि कवियों ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

अगले दिन का प्रथम सत्र 'विद्वत समाज में कबीर' विषय पर केंद्रित था। इसकी अध्यक्षता अवधेश प्रधान ने की और अजय वर्मा, राजेंद्र प्रसाद पांडेय, राकेश कुमार मित्तल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सभी वक्ताओं का कहना था कि कबीर को नितांत भारतीय कविता के व्याकरण से समझने की ज़रूरत है, नहीं तो हम उन्हें केवल भक्ति कवि कहकर उनका क़द छोटा करते रहेंगे। दोपहर के सत्र में बलराम पांडेय अरुणेश नीरन तथा उदय प्रताप सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए और अध्यक्षता रामवचन राय ने की। विषय था 'बेहद्दी मैदान में कबीर'।

शाम को मालवा से आए लोक गायक भैरूसिंह चौहान एवं साथियों ने कबीर गायन प्रस्तुत किया। लोक शैली में गाए कबीर पदों ने श्रोताओं को भरपूर आनंद प्रदान किया।

'पंजाब में बाल साहित्य' पर परिसंवाद

11 अगस्त 2013, मोहाली, पंजाब

साहित्य अकादेमी ने पंजाबी साहित, मोहाली के सहयोग से 11 अगस्त 2013 को शिवालिक स्कूल मोहाली, पंजाब में 'पंजाबी में बाल साहित्य' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए साहित्य अकादेमी की पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक रवेल सिंह ने वर्तमान पंजाबी साहित्य की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने इस बात की आवश्यकता पर बल दिया कि जो भी व्यक्ति बच्चों के लिए लिखता है उसे बच्चों की मानसिकता का बोध होना चाहिए।

इससे पूर्व साहित्य अकादेमी की प्रकाशन सहायक मनजीत भाटिया ने अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी द्वारा 24 भारतीय भाषाओं में बाल साहित्य को प्रोत्साहित किए जाने वाले प्रयासों की चर्चा की। प्रख्यात विद्वान मनमोहन ने बीज-भाषण में कहा कि भारत की तुलना में पश्चिमी देशों में बाल साहित्य को अधिक सम्मान प्राप्त है।

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार विजेताओं मनमोहन सिंह दाऊ एवं दर्शन सिंह आशट तथा सरबजीत बेदी ने अपने अनुभव साझा किए तथा पंजाबी बाल

बाएँ से दाएँ : मनमोहन, रवैल सिंह, मनमोहन सिंह दाऊ और अन्य

साहित्य के विविध आयामों पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में कई विद्वानों ने भाग लिया तथा प्रस्तुत आलेखों पर चर्चा भी की। परिसंवाद की अध्यक्षता दीपक मनमोहन सिंह तथा जसपाल कांग ने की। अमरजीत घुम्मन ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

शहरयार पर परिसंवाद

26 अगस्त 2013, अलीगढ़

साहित्य अकादेमी ने शहरयार के जीवन और कार्यों पर आधारित एक परिसंवाद का आयोजन 26 अगस्त 2013 को ए.एम.यू., कला संकाय, दिल्ली में आयोजित किया। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (ए.एम.यू.) के कुलपति ज़मीर उद्दीन शाह ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में कहा कि शहरयार एक उत्कृष्ट शायर थे।

जनरल शाह ने कहा कि शहरयार ने इस विश्वविद्यालय में दो दशकों से अधिक अध्यापन कार्य किया। उन्हें न केवल ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया, बल्कि उन्होंने हिंदी सिनेमा के लिए कई लोकप्रिय गीत भी लिखे हैं। उन्होंने इस तथ्य को स्वीकारा कि शहरयार ने उर्दू भाषा के विकास में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

साहित्य अकादेमी की उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक चंद्रभान ख़याल ने अपने आरंभिक व्याख्यान में कहा कि वह चार दशकों तक शहरयार से जुड़े रहे तथा उनके किए गए कार्यों को सदियों तक याद रखा जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि वह एक महान शायर होने के साथ-साथ एक अच्छे इंसान भी थे। ए.एम.यू. के जनसंचार विभाग के अध्यक्ष शाफ़े किदवई ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि शहरयार अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त करने में दक्ष थे।

बाएँ से दाएँ : चंद्रभान ख़याल, ज़मीर उद्दीन शाह, अबुल कलाम क़ासमी तथा ख़ुर्शीद अहमद

ए.एम.यू. के पूर्व उर्दू विभागाध्यक्ष खुर्शीद अहमद ने शहरयार के शायरी के विविध आयामों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि शहरयार और अख़्लतरुल इमान ने उर्दू नज़्म को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। अबुल कलाम क़ासमी ने शहरयार की कविता को सृजनात्मक बताया।

पेजावर सदाशिव राव पर परिसंवाद

31 अगस्त 2013, उडुपी

31 अगस्त 2013 को उडुपी में पेजावर सदाशिव राव की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ पेजावर सदाशिव राव कृत कविताओं के चंद्रशेखर केदलाया द्वारा गायन के साथ हुआ। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु के प्रभारी एस.पी. महालिंगेश्वर ने स्वागत व्याख्यान दिया। ना. दामोदर शेट्टी ने आरंभिक व्याख्यान किया।

मुरलीधर उपाध्याय हिरियादक ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में बताया कि किस प्रकार से वह विद्यार्थी जीवन में वह सदाशिव राव की कृतियों को बड़े शौक़ से पढ़ते थे। उनके साहित्यिक कार्य उत्कृष्ट थे। यदि सदाशिव राव का 26 की युवावस्था में निधन नहीं हुआ होता तो कन्नड साहित्य उनकी कई उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियों से समृद्ध होता।

नरहल्ली बालसुब्रह्मण्य ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में बताया कि किस प्रकार से पेजावर सदाशिव राव 'नव साहित्य' के पुरोधा थे। उन्हें तटवर्ती कर्नाटक के प्रख्यात साहित्यिक साहित्यकारों जैसे—मुद्दना, गोविंद पै, सेदियापु कृष्ण भट की श्रेणी में रखा जा सकता है।

प्रथम सत्र में जनार्द्धन भट ने 'एक कहानीकार के रूप में पेजावर सदाशिव राव' शीर्षक अपने आलेख में पेजावर की आठ कहानियों का विश्लेषण किया। द्वितीय सत्र में धारीनी सुभदायिनी ने पेजावर सदाशिव राव की कविताओं पर आधारित आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि उनकी कविताओं में देशप्रेम झलकता है। तृतीय सत्र में ए.वी. नवाडा ने पेजावर सदाशिव राव द्वारा अभिलेखों में उपलब्ध पत्रों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया, जो उन्होंने गोकाक और अपनी माँ को लिखे थे। जब सदाशिव राव मिलन विश्वविद्यालय में थे तब जो पत्र उन्होंने गोकाक को लिखा था, वह पत्र प्रजना मारपल्ली ने पढ़कर सुनाया। उस पत्र में समकालीन लेखकों के साहित्यिक कार्यों की चर्चा की गई थी।

चतुर्थ सत्र में ना. दामोदर शेट्टी ने 'एक नाटककार के रूप में पेजावर सदाशिव राव' विषयक आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने उनके दो नाटकों *बीदीगिलीदा नारी* तथा *जीवन संगीत* का विश्लेषण प्रस्तुत किया। पेजावर सदाशिव राव के चचेरे भाई सी.आर. बल्लाल ने पेजावर परिवार के इतिहास के बारे में बताया।

अंत में नरहल्ली बालसुब्रह्मण्य ने संपूर्ण कार्यक्रम पर अपना पर्यवेक्षण प्रस्तुत किया।

'आत्मकथा, यात्रा वृत्तांत, समालोचना तथा निबंध' पर संगोष्ठी

31 अगस्त से 1 सितंबर 2013, सम्बलपुर, ओड़िशा

साहित्य अकादेमी ने संबलपुर विश्वविद्यालय के सहयोग से 'आत्मकथा, यात्रा वृत्तांत, समालोचना तथा निबंध' विषय पर एक द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का बीजू पट्टनायक सभागार, ज्योति विहार, संबलपुर, ओड़िशा में 31 अगस्त से 1 सितंबर 2013 को आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात ओड़िया कवि तथा अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य गोपाल कृष्ण रथ ने की। संबलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति बी.बी. बारिक ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। प्रख्यात कथाकार तथा साहित्य अकादेमी की ओड़िया परामर्श

बाएँ से दाएँ : कृष्णचंद्र सोरेन, गोपाल कृष्ण रथ, राजेंद्र किशोर पांडा, बी.सी. बारीक, मिहिर कुमार साहु और गौरहरि दास

मंडल के संयाजक गौरहरि दास ने आरंभिक व्याख्यान दिया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के कार्यक्रम अधिकारी मिहिर कुमार साहु ने अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात ओड़िया कवि तथा विद्वान राजेंद्र किशोर पांडा थे। अकादेमी की ओड़िया परामर्श मंडल के सदस्य कृष्णचंद्र प्रधान ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। संबलपुर विश्वविद्यालय के ओड़िया विभाग के एम.के. मेहर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र का विषय था—'ओड़िया यात्रा साहित्य'। इस सत्र की अध्यक्षता लब्धप्रतिष्ठ समकालीन ओड़िया साहित्य के यात्रा-वृत्तांत लेखक भूपेन महापात्र ने की। अनुसूया महापात्र, गौरांग चरण दास, मनरंजन प्रधान तथा प्रसन्ना कुमार स्वैन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र का विषय था—'आत्मकथा'। इस सत्र की अध्यक्षता ओड़िया परामर्श मंडल के सदस्य जतींद्र कुमार नायक ने की। अर्पणा मोहांति, विजयनंद सिंह, द्वारिकानाथ नायक, संग्राम जेना तथा उदयनाथ साहु ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र 'समालोचना' पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता कुमुद रंजन पाणिग्रही ने की। ए.के. दास, देवीप्रसाद पट्टनायक, कैलाश पट्टनायक, संतोष के. रथ तथा श्याम भोई ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र 'ओड़िया निबंधों' पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात निबंधकार देवेन्द्र कुमार दास ने की। बब्रूवाहन महापात्र, समर मुदाली तथा प्रसन्न कुमार पट्टनायक ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'आधुनिक असमिया साहित्य में शंकरदेव' पर परिसंवाद

7 सितंबर 2013, डिब्रूगढ़, असम

शंकरदेव की 445 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर 7 सितंबर 2013 को दुलियाजान कॉलेज में "आधुनिक असमिया साहित्य में शंकरदेव" विषय पर एक परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस परिसंवाद का आयोजन साहित्य अकादेमी ने असम साहित्य सभा की दुलियाजान शाखा के सहयोग से किया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कमला बरगोहाई ने की। करबी डेका हजारिका ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में असमिया कला तथा साहित्य पर शंकरदेव के प्रभाव की चर्चा की। डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के प्रोफ़ेसर आनंद बरमोदई ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने शंकरदेव कालीन प्राचीन साहित्य तथा आधुनिक असमिया साहित्य के अंतर को विश्लेषित किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रफुल्ल बोरा ने की। प्रथम आलेख वक्ता बीना बोरदोलई तथा दीपक गोगई ने

परिसंवाद के उद्घाटन सत्र में मंच पर आसीन प्रतिभागी

प्रस्तुत किया। उनके आलेख का विषय था—बेजबोरो भाषा में शंकरदेव। तृतीय आलेख रंजन भट्टाचार्य ने प्रस्तुत किया। उनके आलेख का विषय था—महेशनाग द्वारा शंकरदेव का अध्ययन। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता नवकुमार हंदिक्यू ने की। प्रथम आलेख संयुक्त रूप से ऐईचेन्ना बरगोहाईं तथा फूलाज्योति सैकया ने प्रस्तुत किया। उनके आलेख का विषय था—शंकरदेव के जीवन पर आधारित जीवनीपरक उपन्यास। अजित सैकिया के आलेख का विषय था—जनजातीय उपन्यासों में शंकरदेव। अंतिम आलेख प्राणजीत बोरा ने प्रस्तुत किया। उनके आलेख का विषय था—आधुनिक असमिया कविता में शंकरदेव।

समापन सत्र की अध्यक्षता पुण्य सैकिया ने की। उन्होंने आशा व्यक्त की कि शंकरदेव के जीवन पर आधारित यह संवाद लोगों में उनके प्रति जागरूकता पैदा करेगा।

'मीराजी : साहित्य और विचार' पर परिसंवाद

9 सितंबर 2013, कोलकाता

9 सितंबर 2013 को प्रख्यात उर्दू शायर मीराजी पर साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के कार्यक्रम अधिकारी मिहिर कुमार साहु ने स्वागत भाषण दिया।

शाफ़े किदवई ने अपने बीज-भाषण में मीराजी की जीवन शैली एवं उनकी लेखन-शैली पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने यह भी बताया कि मीराजी ने कई विदेशी कृतियों को उर्दू में भी अनूदित किया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि खलील मामून ने मीराजी को एक सशक्त कवि बताया। उन्होंने मीराजी को भारतीयता से परिपूर्ण एक 'पूर्ण कवि' की संज्ञा दी। चंद्रभान ख़याल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि, "मीराजी एक असाधारण कवि थे जिन्होंने एक असाधारण जीवन जीया।" यद्यपि मीराजी का 37 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया था, उर्दू कविता को दिया गया उनका योगदान आज भी प्रासंगिक है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता निज़ाम सिद्दिक़ी ने की तथा आसिम शाहनवाज़ शिबली ने मीराजी की तुलना उर्दू शायर मीर से की तथा श्री अनवर ने मीराजी की शायरी पर आधारित आलेख प्रस्तुत किए। भोजनोपरांत सत्र की अध्यक्षता एफ़.एस.एजाज़ ने की। अबुजर हाशमी, अशफ़ाक अहमद अफ़ी तथा अजय मालवी ने मीराजी पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

बोडो नाटक पर संगोष्ठी

9-10 सितंबर 2013, असम

साहित्य अकादेमी ने बोडो साहित्य सभा के सहयोग से 'बोडो नाटक' पर 9-10 सितंबर 2013 को बोडोलैंड विश्वविद्यालय, कोकराझार, बीटीएडी, असम में एक द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

बोडो साहित्य सभा के अध्यक्ष कामेश्वर ब्रह्म ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के कार्यालय प्रभारी गौतम पॉल ने स्वागत व्याख्यान दिया। साहित्य अकादेमी की बोडो परामर्श मंडल के संयोजक प्रेमचंद मुशाहरि ने सत्र का उद्घाटन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बोडोलैंड विश्वविद्यालय, कोकराझार के रजिस्ट्रार शेखर ब्रह्म थे।

प्रथम सत्र में भौमिक बोरो ने 'बोडो जात्रा गावन का विषय एवं तकनीक' पर आलेख प्रस्तुत किया। ब्रह्मा कछारी के आलेख का विषय था—'बोडो जात्रा गावन का सामाजिक प्रभाव।' मंगल सिंह हाज़ोवारी के आलेख का विषय था—'बोडो जात्रा गावन का उद्भव एवं विकास'। बिसेश्वर बसुमतारी, खावराम सोरगियारी तथा स्वर्ण प्रभा चैनारी ने भी प्रस्तुत आलेखों पर अपने विचार व्यक्त किए।

द्वितीय सत्र में इंदिरा बोरो ने 'आधुनिक बोडो नाटक विषय एवं तकनीक', स्वर्ण प्रभा चैनारी ने 'आधुनिक बोडो नाटक में दर्शायी गई सामाजिक छवि' तथा वी. बसुमतारी ने 'बोडो के ऐतिहासिक नाटक' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र में तुलन मुशाहरि ने 'कमल कुमार ब्रह्म के नाटकों में महिला पात्रों' तक राजेंद्र कुमार बसुमतारी ने 'मनोरंजन लहरी कृत नाटकों में बोडो की सामाजिक वास्तविकता' पर आलेख प्रस्तुत किए। ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म ने प्रस्तुत आलेखों पर चर्चा की।

चतुर्थ सत्र में अदराम बसुमतारी ने 'कमल कुमार कृत नाटकों के विषय और तकनीक', रविरूप ब्रह्म ने 'बोडो एकांकी तथा रेडियो नाटक' तथा जीवेश्वर कोच ने 'मंगल सिंह हाज़ोवारी कृत नाटकों का समीक्षात्मक विश्लेषण' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। इंदिरा बोरो तथा खबराम सोरगियारी ने प्रस्तुत आलेखों पर चर्चा की।

समापन सत्र की अध्यक्षता बोडो साहित्य सभा के अध्यक्ष कामेश्वर ब्रह्म ने की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि शिक्षा विभाग बी.टी.सी., कोकराझार के सचिव प्रफुल्ल कुमार हाज़ोरबारी थे। उन्होंने कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुत आलेखों पर संक्षेप में अपने विचार व्यक्त किए।

'बोडो साहित्य में समालोचना' पर परिसंवाद

11 सितंबर 2013, करबी अंगलोंग, असम

साहित्य अकादेमी ने बोडो साहित्य सभा के सहयोग से बोडो साहित्य में समालोचना विषय पर 11 सितंबर 2013 को बोडो साहित्य सभा भवन करबी अंगलोंग ज़िला, असम में एक परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। बोडो साहित्य सभा के सचिव निर्मल बसुमतारी ने आरंभिक व्याख्यान दिया। बोडो साहित्य सभा के अध्यक्ष निपेन च. बगलारी ने उद्घाटन व्याख्यान दिया।

प्रथम आलेख अरबिन्दो उजीर ने प्रस्तुत किया। उनके आलेख का विषय था—आधुनिक बोडो कविता।

परिसंवाद का एक सत्र

गोपीनाथ ब्रह्म ने अरबिन्दो उजीर कृत पुस्तक सोल ऑफ़ साउंड के पात्रों का संक्षेप में ब्यौरा प्रस्तुत किया। लोकेश्वर ब्राइनारी के आलेख का विषय था– आधुनिक कविताओं का संक्षिप्त ब्यौरा। ऋतुराज बसुमतारी ने अपने आलेख में उजीर कृत दो कविताओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक मुशाहरी ने सत्र की अध्यक्षता की।

द्वितीय सत्र का विषय था–बोडो उपन्यास में समालोचना। इस सत्र की अध्यक्षता ललित च. बसुमतारी ने की। सत्र के वक्ता महेश एन. बोडो ने अपने आलेख में मनोरंजन लहरी के उपन्यास के पात्र रेखेकास की चर्चा की। तृतीय सत्र का विषय था–बोडो कहानी में समालोचना। इस सत्र की अध्यक्षता विस्वेश्वर बसुमतारी ने की तथा धनंजय नार्जारी तथा उत्तम च. ब्रह्म ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। बोडो साहित्य सभा के सचिव मदन च. सोरगियारी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'बच्चों के लिए नैतिक कहानियाँ' पर परिसंवाद

15 सितंबर 2013, विशाखापटनम

15 सितंबर 2013 को विशाखापटनम में 'बच्चों के लिए नैतिक कहानियाँ' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलूरु के कार्यालय प्रभारी एस.पी. महालिंगेश्वर ने श्रोताओं का स्वागत किया।

तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक तथा श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय, हैदराबाद के पूर्व कुलपति एन. गोपी ने उद्घाटन व्याख्यान दिया। उन्होंने बाल लेखक वेंकटप्पय्या तथा अन्य प्रतिष्ठित आलेख वक्ता लेखकों का स्वागत किया।

तेलुगु मासिक पत्रिका *बालबाल* के संपादक तथा एक प्रतिष्ठित बाल लेखक के.एस.वी. रमनम्मा ने अध्यक्षीय व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि उत्कृष्ट पुस्तकें बच्चों को नव-शिखरों पर ले जाने में सहायक सिद्ध होंगी।

प्रथम सत्र का विषय था–'बच्चों के लिए नैतिक कहानियाँ'। इस सत्र की अध्यक्षता तेलुगु मासिक पत्रिका *चंदामामा* के पूर्व संपादक तथा प्रख्यात कहानी लेखक ने की। इस सत्र में चोक्कापु वेंकटरामन, एन. उमामहेश्वर राव, बी. नागेश्वरराव तथा पी. सुरेश कुमार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता रवि गंगा राव ने की। उन्होंने कहा कि नाटकों का बच्चों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। दसारी वेंकटरमन्ना, शिवम प्रभाकर तथा दरला चिट्टी बाबू ने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र की अध्यक्षता बी. भीमेश्वरा राव ने की। पी.एस.एन. मूर्ति, डी.के. चदुवुला बाबू तथा के. लक्ष्मीनारायणम्मा ने आलेख प्रस्तुत किए। तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य वेल्ला वेंकटाप्पय्या ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार विजेता रेड्डी राघवय्या ने भी व्याख्यान प्रस्तुत किया।

'मणिपुरी साहित्य में स्वच्छंदतावाद' पर संगोष्ठी

15-16 सितंबर 2013, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी ने द कल्चरल फ़ोरम, मणिपुर के सहयोग से 'मणिपुरी साहित्य में स्वच्छंदतावाद' विषय पर 15-16 सितंबर 2013 को मणिपुरी राइफ़ल्स बैंकट हॉल, इंफ़ाल में एक द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी का उद्घाटन कल्चरल फोरम के अध्यक्ष एल. इबोतोन सिंह ने किया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के कार्यालय प्रभारी गौतम पॉल ने स्वागत व्याख्यान दिया। एन. खगेन्द्र सिंह ने बीज भाषण किया। उन्होंने साहित्य में स्वच्छंतावाद के महत्व पर प्रकाश डाला। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श

मंडल के संयोजक एच. बिहारी सिंह ने आरंभिक व्याख्यान देते हुए कहा कि कई युवा लेखकों ने अपने उपन्यासों, कहानियों में स्वच्छंद परंपरा को अपनाया है। उन्होंने टोकपम इबोम्चा, थोईबी देवी, रामसिंह, एम.के. विनोदनी देवी, कुंजमोहन सिंह, रजनीकांत, इबोहल सिंह, सुरेंद्रजित सिंह, मीनकेतन सिंह, नीलबीर शास्त्री, सी.सी. थोंग्रा आदि अनेक लेखकों की कृतियों को संदर्भित किया।

'मणिपुरी कविता में स्वच्छंतावाद' विषयक प्रथम सत्र की अध्यक्षता मणिपुर विश्वविद्यालय के थ. रत्नकुमार ने की। इस सत्र में टी. थंफा देवी, एन. विद्यासागर तथा के. शांतिबाला देवी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। थंफा देवी के आलेख का शीर्षक था 'इरावल, कमल, चौबा, अंनघल और मिनिकेतन के मणिपुरी काव्य में स्वच्छंदतावाद'। विद्यासागर के आलेख का विषय था। 'समरेंद्र, नीलकांत, मधुबीर, बीरेन तथा इबोपिशाक की मणिपुरी कविता में स्वच्छंदतावाद'। शांतिबाला देवी ने 'भुवनसना, लनचंबा मेमचौबी, वीरेंद्रजित तथा रघु की मणिपुरी कविता में स्वच्छंदतावाद' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र 'मणिपुरी कहानी में स्वच्छंतावाद' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता ख. प्रकाश सिंह ने की। ई. दीनमणि सिंह, एन. रोजिका देवी, के. हेमचंद्र सिंह तथा एच. नलिनी देवी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र का विषय था—'मणिपुर नाटक में स्वच्छंदतावाद', जिसकी अध्यक्षता एन. खगेन्द्र सिंह ने की। इस सत्र में एन. अहानजाओ मैती, राजेन थोइजाम्बा तथा माखोनमणि मोंगसाबा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अंतिम सत्र 'मणिपुरी उपन्यास में स्वच्छंदतावाद' विषय पर केंद्रित था, जो ख. कुंजो सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। एकाशिनि देवी, शरतचंद्र लोंगजोंबा तथा शांतिबाला देवी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। एच. बिहारी सिंह ने समापन व्याख्यान दिया। संगोष्ठी के अंत में द कल्चरल फ़ोरम, मणिपुर के सचिव क्षेत्रीय राजेन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'तमिळ साहित्य का तमिळ सिनेमा पर प्रभाव' पर संगोष्ठी

20-21 सितंबर 2013, चेन्नै

साहित्य अकादेमी, चेन्नै ने 20-21 सितंबर 2013 को 'तमिळ साहित्य का तमिळ सिनेमा पर प्रभाव' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण दिया। साहित्य अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक कृष्णस्वामी नाचिमुथु ने अध्यक्षीय व्याख्यान दिया। प्रख्यात तमिळ लेखक एवं जानेमाने संपादक मालन ने आरंभिक व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि तमिळ साहित्य ने सिनेमा को कई रूपों जैसे संवाद, गीतों, वृत्तांत तकनीक आदि में प्रकाशित किया है। उन्होंने जयकांतन, राजाजी, एन. कविनगर, कल्की, मु.वा., पी.एस. रमय्या, अखिलन, की.रा., नील पद्मनाभन की साहित्यिक रचनाओं की चर्चा की तथा यह भी बताया कि फ़िल्में उपन्यासों से किस प्रकार भिन्न होती हैं।

वरिष्ठ फ़िल्म निर्देशक बालु महेन्द्रन ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। प्रख्यात तमिळ लेखक तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता नील पद्मनाभन कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। उन्होंने कहा कि साहित्य तथा सिनेमा एक-दूसरे को प्रभावित किए बिना नहीं रह सकते। जानेमाने तमिळ समालोचक आर. कामरासु ने समापन व्याख्यान दिया। साहित्य अकादेमी के चेन्नै कार्यालय प्रभारी ए. एस. इलानगोवन ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र का विषय था—'पाठ से सिनेमा में संक्राति।' पटकथाकार एवं अभिनेता मु. रामस्वामी ने सत्र की अध्यक्षता की। लेनिन, अमशनकुमार तथा शशि ने सत्र के विषय पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र ज्ञानशेखरन तथा गौतमन के फ़िल्म-निर्माण के अनुभवों पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता ना. मुथुस्वामी ने की। तृतीय सत्र में थियोडोर भास्कर ने

बाएँ से दाएँ : कामरसु, बालु महेंद्र, नीलपद्मनाभन, नासर एवं के. श्रीनिवासराव

'संसार की कल्पना' विषय पर आधारित आलेख प्रस्तुत किया।

21 सितंबर 2013 को आयोजित चतुर्थ सत्र का विषय था—'चर्चित पात्रों को जीवंत करना'। प्रख्यात तमिऴ लेखिका जी. तिलकवती ने सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने सत्यजित रे तथा मृणाल सेन की फ़िल्मों के महत्त्वपूर्ण पात्रों की चर्चा की। उन्होंने 'पथेर पांचाली' तथा 'फ्लाइट ऑफ़ पीज़ंस' का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया। फ़िल्म कलाकार शिवकुमार ने इंदिरा पार्थसारथी के उपन्यास पर आधारित फ़िल्म 'उचियेथिल' के पात्रों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। अभिषेक ने स्टेनसलवस्की की पुस्तक *एन ऐक्टर परहैप्स* को एक उत्कृष्ट कृति तथा उभरते अभिनेताओं के लिए एक गाइड बताया। उन्होंने टी. जानकीरमन की मोहामुल के पात्रों पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

पंचम सत्र का विषय था—'क्या फ़िल्में उपन्यास का मूल तत्त्व रखती हैं?' प्रख्यात तमिऴ लेखक पोन्नीलन ने फ़िल्म निर्माताओं की कठिनाइयों के बारे में बताया। जानेमाने लेखकों एवं फ़िल्म निर्माताओं ने इस सत्र में भाग लिया। जानेमाने लेखक एस. रामकृष्णनन् ने कहा कि फ़िल्म निर्माण एक भिन्न कला है तथा लेखक केवल पटकथा तथा संवाद लेखन में ही सहायता कर सकता है। भाग्यराज ने कहा कि निर्देशक को पूर्ण स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। आर.सी. शक्ति ने अपने विवादित प्रसंगों तथा श्रोताओं द्वारा उन पर की गई प्रतिक्रियाओं के बारे में बताया। नंजिल नाडन ने फ़िल्म निर्माताओं को स्वतंत्रता दिए जाने का समर्थन किया।

इंदिरा पार्थसारथि ने समापन व्याख्यान प्रस्तुत किया।

कोनदुरु वीरराघवाचार्युलु जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी

21-22 सितंबर 2013, तेनाली

21-22 सितंबर 2013 को तेनाली में कोनदुरु वीरराघवाचार्युलु शतवार्षिकी पर एक द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु के कार्यालय प्रभारी एस.पी. महालिंगेश्वर ने श्रोताओं का स्वागत किया।

बाएँ से दाएँ : चंद्रशेखराचारी, ए. वेंकटेश्वर रेड्डी, कान्नेगंती वेंकटराव एवं वेल्गा वेंकटप्पया

तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य वेल्गा ने सत्र का उद्घाटन किया। उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन की कोनदुरु के साथ अपनी स्मृतियों को साझा किया। वह डॉ. कोनदुरु से एक महान शिक्षक तथा एक ऐसा व्यक्तित्व जो जीवन के मूल्यों में विश्वास करता है, के रूप में बेहद प्रभावित थे। उन्होंने यह भी बताया कि डॉ. कोनदुरु तेलुगु के एक बहुमुखी लेखक थे तथा उनकी कृतियों में उपन्यास, कविता, साहित्यिक समालोचना, दर्शनशास्त्र आदि शामिल थे। वह 'प्रत्यानंद' के नाम से लोकप्रिय थे।

डॉ. कोनदुरु न केवल एक बहुमुखी कवि, कथाकार तथा जीवनीकार थे, बल्कि वह एक महान विद्वान भी थे। डॉ. कोनदुरु की सुपुत्री पी. श्रीदेवी ने सत्र की अध्यक्षता की तथा अपने पिता की महान विद्वत्तापूर्ण खूबियों के बारे में बताया। प्रख्यात डॉक्टर एवं साहित्यकार पी. दक्षिणामूर्ति ने शैक्षिक सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने डॉ. कोनदुरु के अंतिम दिनों में एक डॉक्टर के रूप में उनका उपचार करने के दौरान उनके साथ के अपने अनुभवों को साझा किया। बी. सुंदर राव ने एक उपन्यासकार के रूप में डॉ. कोनदुरु पर अपने विचार प्रकट किए। अल्लूरी वेंकट नरसिम्हा राजु ने एक लेखक के रूप में डॉ. कोनदुरु की साहित्यिक प्रतिभा पर अपने विचार प्रकट किए।

द्वितीय सत्र का विषय था—'साहित्यिक समालोचक के रूप में डॉ. कोनदुरु'। शंकरनारायण ने सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने 1980 के दशक के दौरान डॉ. कोनदुरु के साथ अपने अनुभवों के बारे में बताया। के.वी. पद्मावती, एम.रविकृष्ण तथा जमपानी पूर्णचंद्र प्रसाद ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। शाम के सत्र की अध्यक्षता डॉ. कोनदुरु के सहयोगी एवं छात्र तथा साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य वेल्गा वेंकटप्पय्या ने की। अन्नारेड्डी, वेंकटेश्वर रेड्डी सोपिति चंद्रशेखराचारी तथा कान्नेगंती वेंकटराव ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता के. वी. प्रसाद ने की। के. कनकचारी ने अपने समापन व्याख्यान में डॉ. कोनदुरु के जीवन और कार्यों के बारे में बताया। जमपानी पूर्णचंद्र प्रसाद ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'मैथिली साहित्य के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान' पर परिसंवाद

22 सितंबर 2013 कोलकाता

साहित्य अकादेमी ने 22 सितंबर 2013 को 'मैथिली भाषा और साहित्य के विकास में मैथिली पत्रिकाओं का योगदान' विषय पर अपने क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के सभागार में एक परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। परिसंवाद का उद्घाटन भोगेन्द्र झा ने किया तथा देवेन्द्र झा ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी

के विशेषकार्यधिकारी (कार्यक्रम) एन.सी. महेश ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी की मैथिली परामर्श मंडल की संयोजक वीणा ठाकुर ने आरंभिक व्याख्यान दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता मैथिली पत्रिका कर्णामृत के संपादक तथा प्रख्यात मैथिली लेखक राजनंदन लाल दास ने की। ताराकांत झा, रामलोचन ठाकुर तथा अनमोल झा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मैथिली विद्वान वीरेन्द्र मलिक ने की। नवीन चौधरी, अशोक झा तथा गिथिलेश झा ने मैथिली के समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं के योगदानों आदि पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता किशोरकांत झा ने की तथा गुणनाथ झा ने समापन व्याख्यान प्रस्तुत किया। महेन्द्र हजारी परिसंवाद के पर्यवेक्षक थे। गुणनाथ झा ने समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए।

'मुंदुर कृष्णनकुट्टी और उनकी साहित्यिक दुनिया' पर परिसंवाद

28 सितंबर 2013, पलक्काड

साहित्य अकादेमी ने पलक्काड ज़िला पब्लिक लाइब्रेरी के सहयोग से 28 सितंबर 2013 को 'मुंदुर कृष्णनकुट्टी और उनकी साहित्यिक दुनिया' विषय पर पलक्काड में एक परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु के कार्यालय प्रभारी एस.पी. महालिंगेश्वर ने अतिथियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। वरिष्ठ मलयाळम् समालोचक एवं विद्वान एम. थॉमस मैथ्यु ने परिसंवाद का उद्घाटन किया।

मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक सी. राधाकृष्णन ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य के.एस. रविकुमार ने अपने बीज-भाषण में कहा कि मुंदुर की कहानियों को सत्तर के दशक में काफ़ी लोकप्रियता मिली। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य पी.के. पराक्कदावु ने अपने आरंभिक व्याख्यान में कहा कि मुंदुर ने कहानी लेखन में एक अनूठा मार्ग बनाया। वह सदैव युवा पीढ़ी से जुड़े रहे।

प्रथम सत्र में के.पी. मोहनन ने मुंदुर कृष्णनकुट्टी के राजनीतिक लेखन पर, गणेश माथुर ने मुंदुर कृत कहानियों में क्षेत्रीय संस्कृति पर, जी. दिलिपन ने 'मुंदुर कृष्णनकुट्टी की कहानियों में वैकल्पिक दुनिया' पर तथा के.पी. रमेश ने 'आत्म की परतें' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

मुंदुर सेतुमाधवन ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की। यह सत्र श्रद्धांजलि पर आधारित था। उन्होंने अपनी कृष्णनकुट्टी की स्मृतियों के बारे में बताया। अशोकन चारुविल, जॉर्ज जोसेफ़ के., एन. राधाकृष्णन नायर तथा पी. मुरली ने सत्र के विषय पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

शाम को समापन सत्र का आयोजन किया गया। पलक्काड ज़िला पब्लिक लाइब्रेरी के अध्यक्ष रामचंद्र ने उपस्थित श्रोताओं का स्वागत किया। प्रख्यात समालोचक के.पी. शंकरन ने सत्र की अध्यक्षता की तथा विस्तार से मुंदुर की साहित्यिक उपलब्धियों के बारे में बताया। प्रख्यात लेखक वैशाखन ने समापन व्याख्यान दिया। ज़िला लाइब्रेरी काउंसिल के सचिव कासिम ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

बलराज साहनी जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी

28-29 सितंबर 2013, नवी मुंबई

साहित्य अकादेमी ने पंजाबी कल्चरल आर्ट एवं वेलफेयर एसोसिएशन, नवी मुंबई के सहयोग से बलराज साहनी का भारतीय सिनेमा और साहित्य को दिए गए उनके

बाएँ से दाएँ : रवेल सिंह, सुरजीत पातर, एम.एस. सेतु, जावेद सिद्दीकी और के. श्रीनिवासराव

योगदान पर 28-29 सितंबर 2013 को नवी मुंबई में एक द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात फ़िल्म निर्देशक एम.एस.सेतु ने की। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में उन्होंने कहा कि बलराज साहनी ने 'दो बीघा ज़मीन' में एक रिक्शा-चालक और 'धरती के लाल' में एक ग़रीब किसान के चुनौतीपूर्ण किरदार निभाए।

साहित्य अकादेमी की पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक रवेल सिंह ने अपने आरंभिक व्याख्यान में साहनी द्वारा पंजाबी साहित्य तथा हिंदी सिनेमा को दिए गए योगदानों की चर्चा की। प्रख्यात पंजाबी कवि सुरजीत पातर ने अपने बीज-भाषण में बताया कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सुझाव पर बलराज साहनी ने पंजाबी में लिखना प्रारंभ किया। फ़िल्मी जीवन की चर्चा की तथा उनकी राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित पंजाबी फ़िल्म 'सतलुज दे कण्डे' का भी ज़िक्र किया।

संगोष्ठी तीन सत्रों में विभक्त थी। प्रथम सत्र की अध्यक्षता जगबीर सिंह ने की। इस सत्र का विषय था—बलराज साहनी और भारतीय सिनेमा। अमरीक सिंह, मनमोहन सिंह तथा अनीस आज़मी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता दीपक मनमोहन सिंह ने की तथा इस सत्र का विषय था—बलराज साहनी और पंजाबी साहित्य। अमरीक ग्रेवाल, जसपाल कांग तथा अमरजीत घुम्मन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंतिम सत्र की अध्यक्षता एच.एस. गिल ने की। सतीश कुमार ने बलराज साहनी का साहित्यिक और सिनेमा के प्रति दृष्टिकोण, रशपिन्दर रश्मि ने 'ग़ैर ज़ज़्बाती डायरी' तथा सुनीता धीर ने 'पंजाबी रंगमंच और बलराज साहनी' विषयों पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'मैथिली में बाल साहित्य' पर परिसंवाद

29 सितंबर 2013, जमशेदपुर

साहित्य अकादेमी ने अंतर्राष्ट्रीय मैथिली परिषद् के सहयोग से 29 सितंबर 2013 को चिमनलाल भालोटिया सभागार, जमशेदपुर में 'मैथिली में बाल साहित्य' विषय पर एक परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। परिसंवाद का उद्घाटन ए.एस.ई.ए., जमशेदपुर के अध्यक्ष एस.एन. ठाकुर ने किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता ब्रजकिशोर मिश्र ने की तथा भगवान चौधरी ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल की संयोजिका वीणा ठाकुर ने आरंभिक व्याख्यान दिया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के विशेषकार्याधिकारी (कार्यक्रम) एन.सी. महेश ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता विवेकानंद ठाकुर ने की। रवींद्र कुमार चौधरी, शिवकुमार 'टिल्लु' तथा पंचानन

मिश्र ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मैथिली कवयित्री शांति सुमन ने की। अरुणा झा, सियाराम झा 'सरस' तथा श्यामल सुमन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सुधीर चंद्र मिश्र ने भी इस सत्र में अपने विचार व्यक्त किए।

समापन सत्र की अध्यक्ष गिरिजानंद झा 'अर्द्धनारीश्वर' ने की। अशोक कुमार झा 'अविचल' परिसंवाद के पर्यवेक्षक थे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिलीप झा थे। आर.के.चौधरी ने सत्र संचालन किया। वीणा ठाकुर ने साहित्य अकादेमी तथा अमलेश झा ने अंतर्राष्ट्रीय मैथिली परिषद् की ओर से धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'भारतीय कथा-साहित्य में यथार्थवाद' पर संगोष्ठी

4-5 अक्टूबर 2013, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में 4-5 अक्टूबर 2013 को प्रख्यात मलयाळम् साहित्यकारों तकषी शिवशंकर पिळ्ळै एवं एस. के. पोट्टक्काट्ट की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 'भारतीय कथा-साहित्य में यथार्थवाद' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात हिंदी आलोचक नामवर सिंह द्वारा किया गया। उन्होंने भारतीय साहित्य में मलयाळम् भाषा के प्रभूत योगदान को स्मरण करते हुए बिना किसी यूरोपीय संदर्भ के भारतीय लेखकों को उद्धृत करते हुए ही यथार्थवाद पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि यथार्थवाद की माँग है, हाशिये के लोगों और जीवन के साथ न्याय। गद्य में जब हाशिये के लोगों की संवेदना उनके अपने ही शब्दों में व्यक्त हुई, तभी यथार्थवाद का उदय हुआ।

अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक सी. राधाकृष्णन ने आरंभिक व्याख्यान में तकषी और पोट्टेक्काट्ट की रचनात्मक यात्रा और जीवन-संघर्षों पर प्रकाश डाला तथा दोनों के लेखन की तुलना करते हुए उनकी समानता और भिन्नता के बिंदुओं को व्याख्यायित किया। चर्चित मलयाळम् लेखक वी. राजाकृष्णन् ने अपने बीज-भाषण में भारतीय कथा-साहित्य के परिप्रेक्ष्य में यथार्थवाद पर विमर्श प्रस्तुत किया तथा कुछ पश्चिमी दार्शनिकों के संदर्भ भी दिए। यथार्थवाद के सिलसिले में उन्होंने तकषी और पोट्टेक्काट्ट की रचनाओं की प्रासंगिकता और योगदान को भी रेखांकित किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने विदेशी और भारतीय विद्वानों को संदर्भित करते हुए कहा कि यथार्थवाद पर प्रचुर लेखन हुआ है तथा साहित्य में इसके बहुत-से रूप दिखाई पड़ते हैं। हमें यथार्थवाद के सभी रूपों के प्रति उदारमना होना चाहिए। समारोह के आरंभ में औपचारिक स्वागत भाषण करते हुए अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने तकषी और पोट्टेक्काट्ट का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया तथा उनके साहित्यिक योगदान और विशिष्टताओं को रेखांकित किया।

'तकषी, पोट्टेक्काट्ट और मलयाळम् साहित्य' विषयक प्रथम सत्र की अध्यक्षता के. सच्चिदानंदन द्वारा की गई। इस सत्र में के. एस. रविकुमार, के.पी.रामनुण्णि और पी.के. पराक्कदवु ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र विशेषरूप से तकषी पर केंद्रित था। इसकी अध्यक्षता ए. सेतुमाधवन ने की। इस सत्र में प्रदीपन पंपिरिक्कुनु और अनिता नायर ने क्रमशः 'तकषी : एक दलित पाठ' और 'तकषी का अनुवाद करते हुए' शीर्षक आलेखों का पाठ किया।

'पुनर्जागरण और भारतीय कथा-साहित्य' विषयक तृतीय सत्र प्रख्यात कोंकणी लेखक दामोदर मावजो की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें निर्मलकांति भट्टाचार्जी, प्रदीप आचार्य, प्रफुल्ल कुमार मोहांति और चंद्रकांत पाटील

स्वागत भाषण करते हुए के. श्रीनिवासराव। बाएँ से दाएँ : पी. राजकृष्णन्, नामवर सिंह, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं सी. राधाकृष्णन्

ने क्रमशः बांग्ला, असमिया, ओड़िया और मराठी कथा-साहित्य को संदर्भित करते हुए अपने आलेख प्रस्तुत किए।

5 अक्टूबर को चतुर्थ सत्र एवं पंचम सत्र भी 'पुनर्जागरण और भारतीय कथा-साहित्य' पर केंद्रित थे। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता के.चेल्लपन ने की। इस सत्र में एन. मनु चक्रवर्ती और एन. चंद्रशेखर रेड्डी ने क्रमशः कन्नड एवं तेलुगु कथा-साहित्य के परिप्रेक्ष्य में अपने विमर्श प्रस्तुत किए। पंचम सत्र अवधेश कुमार सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसके अंतर्गत अनामिका, एम. असदुद्दीन और अक्षय कुमार ने क्रमशः हिंदी, उर्दू और पंजाबी कथा-साहित्य के संदर्भ में अपने आलेख प्रस्तुत किए।

षष्ठ सत्र विशेषरूप से पोट्टेक्काट्ट पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता सी. राधाकृष्णन् ने की। इस सत्र में पी.पी.रवींद्रन, सी. आर. प्रसाद और शमशाद हुसैन ने क्रमशः पोट्टेक्काट्ट के उपन्यासों, कहानियों और यात्रावृत्तों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र में ओम चेरी, एन.एन. पिळ्ळै और एम. मुकुंदन ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

कालोजी नारायण राव जन्मशतवार्षिकी

9 अक्टूबर 2013, हैदराबाद

साहित्य अकादेमी द्वारा तेलुगु विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद के संयुक्त तत्त्वाबधान में 9 अक्टूबर 2013 को आर्ट्स कॉलेज के सभागार में कालोजी नारायण राव की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन उस्मानिया विश्वविद्यालय के कुलपति एस. सत्यनारायण द्वारा किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक एन. गोपी द्वारा की गई। आंध्र ज्योति के संपादक के. श्रीनिवास ने बीज-भाषण दिया। एस. मलेश, प्रधानाचार्य, आर्ट्स कॉलेज तथा अकादेमी की सामान्य परिषद् की सदस्या सी. मृणालिनी इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे। आरंभ में अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय प्रभारी एस. पी. महालिंगेश्वर ने औपचारिक स्वागत भाषण किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता एम. चेन्नपा ने की। इस सत्र में आर. चंद्रशेखर रेड्डी, वाई. सुधाकर और ज्योत्सना प्रभा ने कालोजी पर केंद्रित अपने आलेखों का पाठ किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता एम. वगैया ने की। इस सत्र में कात्यायनी विदमहे, एन. सिद्ध रेड्डी, बन्न इलैया और टी. माला रेड्डी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र एन. नित्यानंद राव की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें प्रख्यात फ़िल्म निर्देशक बी. नरसिंह राव, तेलुगु गीतकार आद्रेसी की विशेष उपस्थिति थी। एस. नारायण रेड्डी और एन. शंकरम् ने भी इस सत्र में अपने विचार रखे। अंत में अकादेमी के सामान्य परिषद् के सदस्य एस. वी. सत्यनारायण ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन दिया।

'भक्ति और कविता' पर संगोष्ठी

12-13 अक्टूबर 2013, तिरुर

साहित्य अकादेमी द्वारा थुंचन मेमोरियल ट्रस्ट, तिरुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 12-13 अक्टूबर 2013 को 'भक्ति और कविता' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

प्रख्यात हिंदी लेखक पुरुषोत्तम अग्रवाल ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उन्होंने 'कबीर और तुलसीदास : दर्शन एवं कविता' विषयक व्याख्यान दिया। आरंभ में मलयाळम् भाषा परामर्श मंडल के सदस्य के. पी. रामणुन्नि ने औपचारिक स्वागत भाषण किया। मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक सी. राधाकृष्णन ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने हरिनामकीर्तन, शंकर और गीता को संदर्भित करते हुए अपने विचार रखे। के. सच्चिदानंदन ने 'भक्ति की गत्यात्मकता : सामाजिक और सौंदर्यशास्त्रीय' विषयक बीज-भाषण प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने आलवार, नयन्नार, कबीर, तुलसीदास, नारायण गुरु और मीरा को संदर्भित करते हुए अपनी बात रखी।

'उत्तर भारतीय धारा' विषयक प्रथम सत्र की अध्यक्षता विद्यानंद झा ने की। उन्होंने विद्यापति और जयदेव की परंपरा पर अपने विचार रखे। इस सत्र में सतीश बड़वे ने 'मराठी का भक्तिकाव्य' विषयक आलेख प्रस्तुत किया। 'उत्तर भारत में भक्तिकाव्य' विषयक द्वितीय सत्र की अध्यक्षता ए. नटराजन ने की। उन्होंने तमिळ भक्तिकाव्य के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किए। इस सत्र में एन. गुरु प्रसाद ने तेलुगु भक्तिकाव्य और नटराज हूलियार ने कन्नड भक्तिकाव्य के सामाजिक परिप्रेक्ष्य पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

बाएँ से दाएँ : के.पी. रामणुन्नि, के. सच्चिदानंदन, पुरुषोत्तम अग्रवाल एवं सी. राधाकृष्णन्

तृतीय सत्र 'मलयाळम् में भक्ति साहित्य' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता सी. अच्युताणुन्नि ने की। उन्होंने कहा कि भक्ति केवल समर्पण नहीं है, इसे सामाजिक संदर्भों में देखा जाना चाहिए। इस सत्र में एन. वी. पी. उनिथिरि ने 'पूनथानम की सामाजिक प्रासंगिकता' विषयक आलेख का पाठ किया। एन. अजय कुमार ने 'चेरुस्सेरी और मेल्पथुर' विषयक आलेख पढ़ा, जबकि पी. वेणुगोपालन ने इतिहास पुराण परंपरा के

संदर्भ में एषुथचन की भूमिका पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। कलाधरन ने 'दृश्य एवं वाचिक कला में भक्ति की अभिव्यक्ति' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

चतुर्थ सत्र भी 'मलयाळम् में भक्ति साहित्य' विषय पर केंद्रित था। इसकी अध्यक्षता एम. आर. राघव वारियन ने की। इस सत्र में एस. ज़कारिया ने 'मलयाळम् में बाइबिल संबंधी भक्ति साहित्य', पी. पवित्रन ने 'श्रीनारायणगुरु और उनके समकालीन', एम. कृष्णन नंबूतरी ने 'भक्ति और कविता' तथा शमशाद हुसैन ने 'अरबी मलयाळम् में भक्ति' विषयक आलेख प्रस्तुत किए।

'पंडितराज जगन्नाथ : सांप्रदायिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता के प्रतीक' पर परिसंवाद

17 अक्टूबर 2013, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी और देववाणी-परिषद्, दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में 'पंडितराज जगन्नाथ : कवि तथा विचारक' शीर्षक परिसंवाद का आयोजन अकादेमी सभागार नई दिल्ली में 17 अक्टूबर 2013 को संस्कृत के सरस कवि, काव्यशास्त्र के प्रौढ़ चिंतक और मुग़ल बादशाह शाहजहाँ के द्वारा पंडितराज की उपाधि से सम्मानित जगन्नाथ पंडित के व्यक्तित्व और कृतित्व पर चर्चा करते हुए देश के कई विश्रुत विद्वानों ने उन्हें श्रद्धापूर्वक स्मरण किया। परिसंवाद के दो सत्रों में विद्वानों ने जहाँ एक ओर नए काव्यशास्त्र की संभावनाओं तथा आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र पर व्याख्यान दिए वहीं पंडितराज जगन्नाथ के काव्यों से चुने हुए श्लोकों के पाठ द्वारा वातावरण को सरस बना दिया गया।

उद्घाटन सत्र में पधारे वक्ताओं और अतिथियों का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने इस बात पर हर्ष व्यक्त किया कि पंडितराज जगन्नाथ के विषय पर आयोजित इस परिसंवाद में विद्वानों ने अत्यधिक रुचि प्रदर्शित की है। उन्होंने अकादेमी द्वारा संस्कृत साहित्य के विषय में किए गए कार्यक्रमों का परिचय भी दिया।

साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक राधावल्लभ त्रिपाठी ने अपने आधार वक्तव्य में बताया गया कि पंडितराज जगन्नाथ संस्कृत कविता और शास्त्र परंपरा के एक ऐसे देदीप्यमान नक्षत्र हैं, जिनका कृतित्व बीसवीं और इक्कीसवीं शताब्दियों में लगातार अधिकाधिक प्रासंगिक होता चला जा रहा है। कविता में यदि पंडितराज जगन्नाथ बाण, भवभूति और शंकराचार्य के कवित्व की ऊँचाइयों का स्पर्श करते हैं तो काव्य चिंतन में वे आनंद वर्धन और अभिनवगुप्त से कम महत्त्व के नहीं हैं। पंडितराज जगन्नाथ को विलक्षण प्रतिभा के धनी बताते हुए उनकी रचनाओं और ग्रंथों के सम्यक् अभ्यास और समीक्षा की आवश्यकता रेखांकित की।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात हिंदी समालोचक नामवर सिंह ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में संस्कृत काव्यशास्त्र को उसकी जकड़न से मुक्त करने

संभाषण करते हुए नामवर सिंह। बाएँ से दाएँ : ब्रजेंद्र त्रिपाठी, हरिराम मिश्र, राधावल्लभ त्रिपाठी, हर्षदेव माधव एवं के. श्रीनिवासराव

की आवश्यकता पर बल दिया और ध्वनि सिद्धांत पर सीमाओं को समझकर अलंकार के द्वारा संरचनावादी काव्यशास्त्र के निर्माण की संभवनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पंडितराज जैसे विचारकों का चिंतन नए साहित्य के नए प्रतिमान बढ़ाने के लिए भी उपादेय है।

प्रख्यात संस्कृत विद्वान हर्षदेव माधव ने 'नए काव्यशास्त्र की संभावनाएँ' विषय पर व्याख्यान देते हुए पंडितराज जगन्नाथोत्तर अभिराज राजेन्द्र मिश्र, शंकरदेव शर्मा अवतरे, रेवाप्रसाद द्विवेदी, राधावल्लभ त्रिपाठी आदि के काव्यशास्त्रीय ग्रंथों का संदर्भ देते हुए स्वयंप्रणीत *वागीश्वरीकंठसूत्रम्* के अवदान की भी चर्चा की। संस्कृत विद्वान हरिराम मिश्र ने 'पंडितराज जगन्नाथ तथा आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

द्वितीय सत्र में भी लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलाधिपति तथा सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश संस्कृत विद्वान डॉ. मुकुंदराम शर्मा की अध्यक्षता में रमाकांत शुक्ल, भागीरथि नंद, केशव जोशी, मुनिराज पाठक, सुनील जोशी, रम्या शुक्ला और शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ के छात्रों ने पंडितराज जगन्नाथ रचित *गंगालहरी, भामिनी विलास, रसगंगाधर* आदि ग्रंथों के श्लोकों का सस्वर पाठ कर वातावरण को सरस बना दिया।

डॉ. मुकुंदराम शर्मा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में पंडितराज जगन्नाथ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने जहाँगीर, शाहजहाँ तथा दाराशिकोह के साथ पंडितराज जगन्नाथ के संबंधों पर विशद प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि पंडितराज मुग़लदरबार में रहकर भी उसकी सीमाओं से बंधे नहीं रहे। उन्होंने सुदूर असम में राजा प्राणनारायण की राजसभा को भी विभूषित किया। पंडितराज जगन्नाथ वास्तव में देश के सांप्रदायिक सौहार्द, हिंदू-मुस्लिम एकता और राष्ट्रीय एकता के भी प्रतीक हैं।

महमूद अयाज़ पर परिसंवाद

18 अक्टूबर 2013, बेंगलूरु

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 18 अक्टूबर 2013 को बेंगलूरु में प्रख्यात उर्दू कवि, आलोचक, संपादक और पत्रकार के जीवन और कृतित्व पर केंद्रित परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद की अध्यक्षता अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक चंद्रभान ख़याल ने की, जबकि इस अवसर पर अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य शाफ़े किदवई मुख्य अतिथि थे। अकादेमी पुरस्कार प्राप्त प्रतिष्ठित उर्दू कवि ख़लील मामून ने बीज-भाषण दिया।

इस अवसर पर अपने भाषण में चंद्रभान ख़याल ने कहा कि महमूद अयाज़ एक शीर्षस्थ कवि ही नहीं, वरन एक विशिष्ट संपादक भी थे। उन्होंने साहित्यिक पत्रिका सीगात और दैनिक सालार के लिए की गई उनकी सेवाओं को रेखांकित किया। शाफ़े किदवई ने कहा कि आधुनिकता पर केंद्रित सीगात का विशेषांक साहित्यिक यात्रा में मील का पत्थर है।

परिसंवाद में आज़म शाहिद, मेहर मंसूर, सुलेमान खुमार, शाइस्ता युसुफ़, अकरम नक़्क़ाश, हलीमा फ़िरदौस, मंज़ूर अहमद दक्कनी, अज़ीज़ुल्ला बेग़, एन. एम. सईद और फरहत एहसास ने अपने-अपने आलेखों में महमूद अयाज़ के कृतित्व के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला।

अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी मुश्ताक़ अहमद ने आरंभ में सभी अतिथियों और श्रोताओं का औपचारिक स्वागत किया तथा परिसंवाद का संचालन किया। इस अवसर पर महमूद अयाज़ की पत्नी भी उपस्थित थीं।

एम. पी. अप्पन जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद

18 अक्टूबर 2013, तिरुवनंतपुरम्

साहित्य अकादेमी द्वारा 18 अक्टूबर 2013 को केसरी स्मारक सभागार, तिरुवनंतपुरम् में प्रतिष्ठित मलयाळम्

संभाषण करते हुए सी.आर. प्रसाद।
बाएँ से दाएँ : एम.पी. अयप्पन, प्रभा वर्मा एवं सी. राधाकृष्णन्

लेखक एम. पी. अप्पन की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन सुपरिचित कवयित्री प्रभा वर्मा ने किया, जबकि उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक सी. राधाकृष्णन ने किया। इस अवसर पर एम. पी. अप्पन के सुपुत्र एम. पी. अयप्पन भी उपस्थित थे। प्रभा वर्मा ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि श्री अप्पन की कविताएँ राष्ट्रवादी संवेदना का सुंदर उदाहरण हैं। श्री अयप्पन ने अपने पिता से जुड़े कुछ संस्मरण सुनाए।

प्रथम सत्र ख्यात मलयाळम् आलोचक एम. थॉमस मैथ्यू की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में देशमंगलम् रामकृष्ण ने 'कवि, कविता और काव्यभाषा' तथा डी. बेंजामिन ने 'एम. पी. अप्पन की कविताओं में उपदेश तत्त्व' विषयक आलेखों का पाठ किया।

द्वितीय सत्र जार्ज अनांकूर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में एन. मुकुंदन ने अप्पन के अनुवाद कार्य पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। विश्वमंगलम सुंदरसन, एम. एन. राजन, आईर जी. पद्मराय ने अप्पन की कविताओं पर अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए उनकी विशिष्टताओं और मलयाळम् साहित्य में उनके योगदान को रेखांकित किया।

माझी रामदास टुडु पर परिसंवाद

20 अक्टूबर 2013, शिलांग

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रख्यात संताली लेखक माझी रामदास टुडु पर एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन 20 अक्टूबर 2013 को शिलांग में आयोजित किया गया। परिसंवाद का उद्घाटन भाषण करते हुए उदयनाथ माझी ने रामदास टुडु के योगदानों को रेखांकित करते हुए संताल जीवन और संताली भाषा के संदर्भ में उनके विचारों को उद्धृत किया। इस अवसर पर बीज-भाषण करते हुए सूर्य सिंह बेसरा ने इस बात पर ज़ोर दिया कि अधिकाधिक साहित्य-सृजन से ही हमारी संस्कृति का विकास संभव है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे फ़ादर फ्रांसिस हेंब्रम। उन्होंने कहा कि भाषा और संस्कृति की रक्षा के लिए संतालों की साक्षरता और शिक्षा में बढ़ोतरी ज़रूरी है। इस सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक गंगाधर हांसदा ने की। आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी एन. सी. महेश ने औपचारिक स्वागत भाषण किया।

परिसंवाद का प्रथम सत्र 'माझी रामदास टुडु का जीवन और सामाजिक-धार्मिक परिप्रेक्ष्य' था। इस सत्र की अध्यक्षता रूपचंद हांसदा ने की। सत्र में शोभानाथ बेसरा, रामचंद्र मुर्मू और जोबा मुर्मू ने अपने आलेख पढ़े। शोभानाथ बेसरा ने रामदास टुडु के जीवन और मूल्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि धर्म में बहुत शक्ति होती है। रामचंद्र मुर्मू ने रामदास टुडु की पुस्तकों को संदर्भित करते हुए औपनिवेशिक काल में संताल जीवन में धर्म की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा कि संताल जीवन को आकार देने में धर्म ने महती भूमिका निभाई है। जोबा मुर्मू ने रामदास टुडु कृत *करम धरम* को संदर्भित करते हुए करम सिद्धांत को व्याख्यायित किया और बताया कि जनजीवन में इसे किस तरह अपनाया गया

है। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता दमयंती बेसरा द्वारा की गई, जिसका विषय था, 'संताली साहित्य में माझी रामदास टुडु का योगदान'। इस सत्र में मोहन चंद्र बास्के, सलखू मुर्मू और रामधन हेंब्रम ने अपने आलेख पढ़े। वक्ताओं ने प्रथम संताली लेखक के रूप में रामदास टुडु की भूमिका, उनकी कृति *खेरवाल बोंसो धोरम पूथी* का साहित्यिक महत्त्व और उनकी अन्य कृतियों पर विस्तार से चर्चा की।

अंतिम सत्र 'संताली समाज को रामदास टुडु का योगदान' विषय पर केंद्रित था। इसकी अध्यक्षता जदुमणि बेसरा ने की। इसमें मदन मोहन सोरेन, दासरथि सोरेन और रघुनाथ हेंब्रम ने अपने आलेख पढ़े। मदन मोहन सोरेन ने रामदास टुडु की पुस्तकों में समाज का चित्रण विषय पर बात की। दासरथि सोरेन ने खेरवाल के संदर्भ में समाज को उनके द्वारा दिए गए उपदेशों पर प्रकाश डाला। रघुनाथ हेंब्रम ने *खेरवाल बोंसो धोरम पूथी* में अभिव्यक्त विचारों की चर्चा की।

'मैथिली प्रबंधकाव्य की परंपरा और विकास' पर संगोष्ठी

21-22 अक्टूबर 2013, मधेपुरा, बिहार

साहित्य अकादेमी द्वारा 21-22 अक्टूबर 2013 को मधेपुरा, बिहार में पार्वती विज्ञान महाविद्यालय, मधेपुरा के संयुक्त तत्त्वाधान में 'मैथिली प्रबंध काव्य की परंपरा और विकास' विषयक द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा के कुलपति आर. एन. मिश्र द्वारा किया गया। अकादेमी के उपसंपादक देवेंद्र कुमार देवेश ने संगोष्ठी के आरंभ में औपचारिक स्वागत भाषण दिया। अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल की संयोजिका वीणा ठाकुर ने अपने आरंभिक भाषण में पंडित चंदा झा को संदर्भित करते हुए मैथिली लेखक रामदेव झा ने अपने बीज-भाषण में कहा कि मैथिली प्रबंधकाव्य के संदर्भ में बहुत ही समृद्ध भाषा है। उन्होंने महाकाव्य और प्रबंधकाव्य के अंतर को रेखांकित किया। सत्राध्यक्ष रमाकांत मिश्र ने अंग्रेज़ी और मैथिली के प्रबंधकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र महेंद्र झा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें रमण झा, देवनारायण साह और हरिवंश झा ने क्रमशः 'मैथिली प्रबंधकाव्य में अलंकार योजना', 'मैथिली के मिथकीय प्रबंधकाव्य' और 'रामकथा पर आधारित मैथिली प्रबंधकाव्य' विषयक आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता माधुरी झा ने की, जिसमें रंजित कुमार सिंह और रवींद्र कुमार चौधरी ने क्रमशः 'कृष्णकथा पर आधारित मैथिली प्रबंधकाव्य' तथा 'इतिहास आधरित मैथिली प्रबंधकाव्य' विषयों पर अपने आलेख पढ़े।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता जगदीश नारायण प्रसाद ने की। इस सत्र में अभय कुमार ने 'मैथिली प्रबंधकाव्य की भाषा' और कुलानंद झा ने 'महाकाव्य और प्रबंधकाव्य में अंतर' विषयक आलेखों का पाठ किया।

दूसरे दिन, चतुर्थ और पंचम सत्र संयुक्त रूप से आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता कैप्कर ठाकुर ने की। इस सत्र में धीरेंद्र कुमार, शिवप्रसाद यादव, ललिता झा, विश्वनाथ झा, रामनरेश सिंह और वीरेंद्र झा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

षष्ट सत्र की अध्यक्षता धीरेंद्रनारायण झा 'धीर' ने की। इस सत्र में अशोक सिंह तोमर, किशोर कुमार सिंह, कमल मोहन 'चुन्नू' और शंकरदेव झा ने मैथिली प्रबंधकाव्यों गत्यावति, चाणक्य, राधाविरह और प्रतिज्ञा पांडव के विशेष संदर्भ में अपने आलेखों का पाठ किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता ललितेश मिश्र ने की। इस सत्र में धीरेंद्रनाथ मिश्र ने अपना पर्यवेक्षकीय भाषण दिया। अंत में पार्वती विज्ञान महाविद्यालय के प्रधानाचार्य के. पी. यादव ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'तमिळ उपन्यासों में साहित्यिक प्रवृत्तियाँ' पर संगोष्ठी

23-24 अक्टूबर 2013, चैन्नै

साहित्य अकादेमी द्वारा तमिळ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 23-24 अक्टूबर 2013 को 'तमिळ उपन्यासों में साहित्यिक प्रवृत्तियाँ' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

तमिळ विश्वविद्यालय के कुलपति एम. तिरुमलै इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे, जबकि प्रख्यात तमिळ लेखक सिर्पी बालसुब्रह्मणियम विशिष्ट अतिथि थे। उन्होंने तमिळ साहित्य के क्रमिक विकास को रेखांकित करते हुए श्रेष्ठ उपन्यासों पर अपने विचार रखे। आरंभ में साहित्य अकादेमी के एस.एस. इलानगोवन ने औपचारिक स्वागत भाषण किया। प्रतिष्ठित कथालेखिका तिलकवती ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि तमिळ उपन्यासों की शुरुआत ऐतिहासिक कथानकों से हुई और आज यह विभिन्न सूक्ष्म विषयवस्तुओं को अभिव्यक्त कर रही है। अकादेमी के तमिळ भाषा परामर्श मंडल के संयोजक के. नाचिमुथु ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि प्रारंभिक तमिळ उपन्यासों में पारिवारिक मुद्दों को उठाया गया था, जबकि बाद के उपन्यासों में सामाजिक मुद्दे अधिक नज़र आते हैं।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता आरसु द्वारा की गई। इस सत्र में हमीम मुस्तफ़ा ने मरुपक्कम नामक उपन्यास का विश्लेषण करते हुए अपनी बात रखी। अन्य वक्ताओं ने तमिळ उपन्यासों में अभिव्यक्ति इतिहास, संस्कृति आदि तत्त्वों पर प्रकाश डाला। अगले सत्र के अध्यक्ष रमा गुरुनाथन थे। इस सत्र में पद्मावती विवेकानंदन ने दलित लेखिका वामाकृत उपन्यास करुक्कु को विशेष रूप से संदर्भित किया। सेतुपति ने तुप्पुकारी नामक उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में अपने विचार रखे।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता विवेकानंदन ने की। इस सत्र में मुरुगेशपंडियन और चंद्रकांतन ने अपने आलेख कुला माधरी और थोल नामक उपन्यासों के संदर्भ में अपने आलेख प्रस्तुत किए। अगला सत्र 'साहित्यिक पुनरुत्थान' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता बी. माधिवनन ने की। इस सत्र में ए. गुणशेखरन, के. मरियप्पन और अरिवुरुवोन ने अपने आलेखों का पाठ किया।

संभाषण करते हुए सिर्पी बालसुब्रमणियम। बाएं से दाएं : आर. कामराज, ए.एस. इलानगोवन, एम. तिरुमलै, के. नाचिमुथु और अन्य

संगोष्ठी का अंतिम सत्र 'तमिळ उपन्यास परंपरा में नई धारा और आधुनिकता' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता के. पंचांगम ने की। इस सत्र में पी. आनंदकुमार और पी. रविकुमार ने तमिलवन और रामकृष्णन के उपन्यासों को विश्लेषित किया। समापन सत्र तमिळ विश्वविद्यालय के कुलसचिव एस. गणेशराम की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। प्रख्यात तमिळ कथाकार प्रभंजन ने समापन व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने विचार रखते हुए कहा कि सिनेमा, टीवी और अन्य मीडिया के वर्चस्व के बावजूद समाज में पुस्तकों की प्रमुख भूमिका सदैव बरक़रार रहेगी।

'बोडो जनजाति और साहित्य : उत्तरजीविता का संधान' पर परिसंवाद

25 अक्टूबर 2013, कामरूप, असम

साहित्य अकादेमी द्वारा 25 अक्टूबर 2013 को रंगिया कॉलेज, कामरूप, असम में 'बोडो जनजाति और साहित्य : उत्तरजीविता का संधान' विषयक एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में अकादेमी के बोडो भाषा परामर्श मंडल के संयोजक प्रेमानंद मुशाहरि ने बीज भाषण करते हुए बोडो साहित्य की उत्तरजीविता से जुड़े महत्वपूर्ण बिंदुओं पर अपने विचार प्रकट किए। रंगिया कॉलेज के प्रधानाचार्य जोगेश काकती इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे। उन्होंने कहा कि मातृभाषा का प्रयोग अगली पीढ़ियों का अनिवार्य कर्तव्य है, तभी हमारी भाषा अस्तित्वमान रह सकेगी।

गौहाटी विश्वविद्यालय की बोडो प्रोफ़ेसर स्वर्णप्रभा चैनारी ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में लैश्री मोहिलारी, वीरशाह गिरि बसुमतारी और सोमैना बसुमतारी ने क्रमशः 'भारतीय परिप्रेक्ष्य में बोडो साहित्य की वर्तमान स्थिति', 'बोडो साहित्य सौंदर्य : एक अनुशीलन' तथा 'बोडो साहित्य की पाठकीय अभिस्वीकृति' विषयक आलेखों का पाठ किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की पी.सी. बसुमतारी ने की। इस सत्र में विरूपाक्ष गिरि बसुमतारी ने 'उत्तरजीविता के लिए संघर्षरत बोडो साहित्य', रजब मुशाहरि ने 'बीसवीं शताब्दी के आरंभ में बोडो साहित्य की प्रवृत्तियाँ' तथा फूकन बसुमतारी ने 'बोडो साहित्य की अभिस्वीकृति' विषयक आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद में बोडो साहित्य के क्रमिक विकास, विभिन्न विधाओं में लेखन, पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों के प्रकाशन की स्थिति, शिक्षा जगत में इसकी स्थिति, लिपि का संघर्ष, पाठकीय अभिरुचि आदि विषयों पर गहन विचार-विमर्श हुआ।

'कन्नड की साहित्यिक पत्रिकाएँ और उनकी स्वीकार्यता' पर परिसंवाद

26 अक्टूबर 2013, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी द्वारा 26 अक्टूबर 2013 को जैन विश्वविद्यालय, बेंगळूरु के संयुक्त तत्त्वावधान में विश्वविद्यालय परिसर में स्थित स्नातक अध्ययन केंद्र के सभाकक्ष में 'कन्नड की साहित्यिक पत्रिकाएँ और उनकी स्वीकार्यता' विषयक एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन यूनेस्को फैलो चूड़ामणि नंदगोपाल द्वारा किया गया। कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य पी. चंद्रिका ने आरंभिक व्याख्यान में विषय-प्रवर्तन किया। इस अवसर पर कन्नड आलोचक नटराज हूलियार ने अपने बीज भाषण में कहा कि साहित्यिक पत्रिकाओं द्वारा स्थापित साहित्य सिद्धांत हमारे दैनंदिन बहस-मुबाहिसों का विषय बन गए हैं। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता

बाएँ से दाएँ : नटराज हुलियार, चंद्रकांत पाटील, चूड़ामणि नंदगोपाल एवं पी. चंद्रिका

कन्नड साहित्यिक पत्रिका *संक्रमण* के संपादक चंद्रशेखर पाटील ने की। उन्होंने कहा कि लघु साहित्यिक पत्रिकाओं ने न केवल साहित्यिक वरन आज के सांस्कृतिक दबावों पर भी समुचित विमर्श प्रस्तुत किया है।

प्रथम सत्र विजयम्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इसमें राघवेंद्र पाटील तथा शूद्र श्रीनिवास ने क्रमशः 'साहित्यिक पत्रिकाएँ और सृजनात्मकता' एवं 'सांस्कृतिक परिदृश्य और साहित्यिक पत्रिकाएँ' विषयक आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता गिराड्डी गोविंदराज ने की। इस सत्र में एल.एन. मुकुंदराज ने 'साहित्यिक पत्रिकाओं का महत्व' तथा आर.जी. हल्ली नागराज ने 'साहित्यिक पत्रिकाओं का सामाजिक दायित्व' विषयक आलेखों का पाठ किया।

अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य और प्रख्यात कन्नड लेखक अरविंद मालगट्टी ने समापन भाषण दिया। उन्होंने साहित्यिक पत्रिकाओं की दायित्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया, जिन्होंने इन सबको समुचित स्थान और दिशा दी। समापन सत्र की अध्यक्षता गिराड्डी गोविंदराज ने की। उन्होंने कहा कि संस्थाओं द्वारा संचालित पत्रिकाएँ मृतप्राय हैं, जबकि व्यक्तिगत प्रयासों से निकलनेवाली पत्रिकाओं में पर्याप्त स्वतंत्रता होती है।

पुट्टपर्थी नारायणाचार्य जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद

27 अक्टूबर 2013, कडपा

साहित्य अकादेमी द्वारा 27 अक्टूबर 2013 को सी.पी. ब्राउन भाषा शोधकेंद्र, योगी वेमन विश्वविद्याल के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रतिष्ठित तेलुगु कवि, आलोचक और अध्येता पुट्टपर्थी नारायणाचार्य की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक तेलुगु कवि एन. गोपी द्वारा किया गया। सी.पी. ब्राउन भाषा शोधकेंद्र के संस्थापक सचिव जनुमद्दी हनुमतशास्त्री इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे। शशिश्री ने पुट्टपर्थी से अपने नज़दीकी संबंधों की चर्चा करते हुए उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर बीज भाषण दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता विद्वान कट्टु नरसिंहलु ने की। इस सत्र में एम. मल्लिकार्जुन रेड्डी और जी.वी. साई प्रसाद ने क्रमशः 'जनप्रिय रामायणम और पंडारी भागवतम' तथा 'मेघदूतम और पुरागमनस' विषयक आलेख प्रस्तुत किए। नरसिंहलु ने कहा कि पुट्टपर्थी में परंपरा और प्रयोग का श्रेष्ठ सम्मिश्रण दिखाई देता है।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता सी. गोविंदराजु ने की। इस सत्र में वी. गोपालकृष्ण शास्त्री, टी. रामा प्रसाद रेड्डी और वाई. मधुसुदन ने अपने आलेखों में पुट्टपर्थी की विभिन्न कृतियों; यथा : पेनुगोंडा लक्ष्मी, शाजी, सिपाई पितुरी, गांधीजी महाप्रस्थानम, अग्निवीणा, शिवतांडवम और श्रीनिवास प्रबंधाम का विश्लेषण किया और तेलुगु साहित्य में उनके महत्त्व को प्रतिपादित किया।

तृतीय सत्र पी. संजीवम्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में एम. नरेंद्र और एम. संपत कुमार ने

क्रमशः 'अंग्रेज़ी साहित्य और पुट्टपर्थी' एवं 'पुट्टपर्थी की मिथकीय आलोचना' विषयक आलेखों का पाठ किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता टी. वासंती ने की। इस सत्र में पुट्टपर्थी की बेटी पुट्टपर्थी नागपद्मिनी देवी ने समापन भाषण किया।

उपेंद्रनाथ अश्क जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद

27 अक्टूबर 2013, चंडीगढ़

साहित्य अकादेमी द्वारा पार्क व्यू होटल, चंडीगढ़ के सभागार में 27 अक्टूबर 2013 को प्रख्यात हिंदी रचनाकार उपेंद्रनाथ अश्क की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया, जिसमें देश के विभिन्न स्थानों से आए अधिकारी विद्वानों ने अश्क के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर गंभीर विचार मंथन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के उपसचिव ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य में अतिथि विद्वानों एवं श्रोताओं का अभिनंदन करते हुए अश्क जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर चर्चा की। उनके रचना-संसार के अनेक पड़ावों का उल्लेख त्रिपाठी जी ने रोचक प्रसंगों के माध्यम से किया। हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक सूर्यप्रसाद दीक्षित ने आरंभिक व्याख्यान में पंजाब के रचनाकारों की हिंदी को देन और अश्क जी के बहुमुखी कृतित्व के विषय में बताया। दीक्षित जी ने अश्क जी के विध-वैविध्य को उनकी विशेषता मानते हुए उनके कवि, नाटककार, उपन्यासकार, निबंधकार, संस्मरणकार, आत्मकथाकार, अनुवादक, संपादक एवं रंगकर्मी रूप के बारे में बताकर उनकी समग्र साहित्य-यात्रा पर विस्तार से प्रकाश डाला। प्रसिद्ध कथाकार एवं संपादक रवीन्द्र कालिया ने उद्घाटन व्याख्यान में अश्क जी की पारिवारिक पृष्ठभूमि और उनके साथ बिताए अतीत को रोचक स्मृतियों में जीवित किया। उन्होंने अश्क जी की अद्भुत संघर्षशीलता एवं आतिथ्य सत्कारी स्वभाव का भी उल्लेख किया। प्रख्यात समालोचक डॉ. रमेश कुंतल मेघ ने अध्यक्षीय भाषण में अश्क जी के उपन्यासों में संपूर्ण परिवेश एवं विचारधारा की अनुपस्थिति के परिप्रेक्ष्य में उनके साहित्य पर तात्त्विक दृष्टिपात किया।

'अश्क का कथा साहित्य और उनके एकांकी' विषयक प्रथम सत्र में विख्यात पत्रकार एवं लेखिका रेणुका नय्यर ने कहानी लेखन पर अश्क जी के साथ हुई अपनी चर्चा को विभिन्न प्रसंगों के साथ याद किया। उपन्यासकार सुरेश सेठ ने संस्मरणात्मक रूप में अश्क जी की एकांकियों की विशेषताओं को व्यक्त किया। कथाकार सुदर्शन वशिष्ठ ने *गिरती दीवारें* उपन्यास को पूरा करने धर्मशाला पहुँचे अश्क जी के साथ गुज़ारे एवं बिताए समय तथा उनकी कहानियों की विषयवस्तु, उनके व्यक्तिगत अनुभव, मेहनत एवं जीवट के बारे में बताया। सत्र के अध्यक्ष पुष्पपाल सिंह ने अपने संबोधन में अश्क जी द्वारा स्वयं के उपन्यासों को लेकर उनके बड़बोलेपन की याद दिलाते हुए उपन्यास को उनके साहित्य का सबसे कमज़ोर पक्ष बताया। उन्होंने मध्यवर्ग को कथा के केंद्र में लाने को अश्क जी का सबसे बड़ा अवदान माना।

द्वितीय सत्र 'अश्क का कथेतर गद्य एवं काव्य' विषय पर केंद्रित था, जिसमें ग़ज़लकार माधव कौशिक ने अश्क जी के विपुल कविता-साहित्य एवं सैकड़ों ग़ज़लों के मूल्यांकन की उपेक्षा पर आश्चर्य तथा चिंता प्रकट की। उन्होंने बताया कि अश्क जी स्वयं को मूल रूप में कवि ही मानते थे। उनकी कविताओं में नाटकीयता का अद्भुत गुण है *बरगद की बेटी, चाँदनी रात में अजगर, प्रभा मंडल, अदृश्य नदी* आदि उनके उल्लेखनीय काव्य-ग्रंथों पर चर्चा की गई। कथाकार ममता कालिया ने उनके

संस्मरण एवं आत्मकथा लेखन पर व्याख्यान देते हुए अश्क जी को बड़े जीवट का पूर्णकालिक लेखक माना। उनके अनुसार अश्क जी ने पहली बार संस्मरण को इंसानी जामा पहनाया। वे संस्मरण के पात्रों के साथ हाथापाई भी करते थे। चेहरे अनेक में उनके आत्मकथात्मक लेखों ने उस समय हंगामा कर दिया था।

चंद्र त्रिखा ने अपने वक्तव्य में अश्क जी के लेखन की सक्रियता व प्रासंगिकता को उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि बताया। अश्क जी हर विधा की सीमा को समझते हुए एक विधा की शैली को दूसरी विधा पर हावी नहीं होने देते थे। अपने अध्यक्षीय भाषण में वीरेंद्र मेहंदीरत्ता ने कहा कि वे युवाओं की संभावनाओं को तलाशते थे। अश्क जी कुछ रचनाओं में पूरे युग को समेटने वाले सार्थक एवं महत्त्वपूर्ण लेखक थे तथा भाषा की सशक्तता उनकी हिंदी को सबसे बड़ी देन है। परिसंवाद के अंत में चंद्र त्रिखा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'इक्कीसवीं सदी की प्रतिनिधि कृतियाँ' विषय पर संगोष्ठी तथा कवि सम्मिलन

27-28 अक्टूबर 2013, श्रीनगर

साहित्य अकादेमी के उत्तरी क्षेत्रीय मंडल द्वारा 27-28 अक्टूबर 2013 को एसपी कॉलेज, श्रीनगर में 'इक्कीसवीं सदी की प्रतिनिधि कृतियाँ' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात कश्मीरी कवि और कथाकार जी.एन. गौहर ने किया। इसके पहले अकादेमी की उपसचिव गीतांजलि चटर्जी ने औपचारिक स्वागत भाषण किया। कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक मो. ज़मान आज़ुर्दा ने आरंभिक वक्तव्य दिया। अज़ीज़ हाजिनी ने बीज-भाषण दिया।

उन्होंने अपने भाषण में इक्कीसवीं सदी के साहित्य में उभरने वाली अद्यतन प्रवृत्तियों की चर्चा करते हुए उत्तर भारतीय भाषाओं विशेषकर कश्मीरी भाषा-साहित्य की समस्याओं पर अपने विचार रखे।

एसपी कॉलेज के प्रधाचानार्य यासिन शाह इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता उर्दू परामर्श मंडल और उत्तरी क्षेत्रीय मंडल के संयोजक चंद्रभान ख़याल ने की। वक्ताओं ने अपनी भाषाओं के विशेष संदर्भ में भाषा-साहित्य की वर्तमान चुनौतियों पर अपने विचार रखे।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक ललित मगोत्रा ने की। उन्होंने उत्तर क्षेत्रीय भाषाओं में परस्पर साहित्यिक संवाद के महत्त्व को उजागर किया। इस सत्र में क़ुदुस जावेद (उर्दू), माधव हाडा (हिंदी) और राजेश मन्हास (डोगरी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक अर्जुन देव चारण की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में मकरंद परांजपे (अंग्रेज़ी), गुलशन (कश्मीरी) तथा कुंदनलाल माली (राजस्थानी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक राधावल्लभ त्रिपाठी ने की। इस सत्र में योगराज अंगरीश (पंजाबी), पूर्वी पवार (अंग्रेज़ी), सुशील बेगाना (डोगरी) तथा मौला बक्श (उर्दू) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र के पश्चात कवि सम्मिलन का आयोजन किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कश्मीरी कवि जी.एन. ख़याल ने की। दीपक अर्शी एवं सुरजीत होश (डोगरी), मकरंद परांजपे (अंग्रेज़ी), लीलाधर जगूड़ी (हिंदी), अली शाइदा तथा शाहिद देलनावी (कश्मीरी) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक ज़मान आज़ुर्दा ने की। शाद रमज़ान (कश्मीरी), आर.एस. बरार (पंजाबी), जनार्द्धन हेगड़े (संस्कृत) तथा अतुल कनक (राजस्थानी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अगला सत्र कविता-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता चंद्रभान ख़याल ने की। शौक़त अंसारी एवं अयूब साबिर (कश्मीरी), दर्शन भुट्टर एवं जसविंदर सिंह (पंजाबी), शबनम अशाई एवं महताब आलम (उर्दू), मिथेश निर्मोही एवं ओम पुरोहित (राजस्थानी) तथा सुशील बेगाना (डोगरी) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

कृष्णमूर्ति पुराणिक जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी

6 नवंबर 2013, गोकाक

साहित्य अकादेमी, बेंगलूरु कार्यालय द्वारा रोटरी क्लब, गोकाक के सहयोग से 6 नवंबर 2013 को मंगलदेवी तमवासी सभागार, रोटरी क्लब, गोकाक में कन्नड लेखक कृष्णमूर्ति पुराणिक की जन्मशती के अवसर पर एकदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने किया। अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य अर्जुन गोलसंगी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। इस सत्र के विशिष्ट वक्ता थे मल्लिकाअर्जुन कल्लोली, जबकि अध्यक्षता कृष्णमूर्ति पुराणिक के पुत्र आनंद पुराणिक ने की। डॉ. कंबार ने कहा कि कृष्णमूर्ति पुराणिक एक महान लेखक और शिक्षक थे, जिन्होंने कन्नड साहित्य को कहानी, उपन्यास और नाटक के क्षेत्र में लगभग सौ कृतियाँ प्रदान कीं।

प्रथम सत्र सी.के. नवलगी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इसमें वाई.एम. भजंत्री ने 'कृष्णमूर्ति के उपन्यासों का सामाजिक पक्ष' विषयक अपना आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता विजय कुमार कटगीहल्लीमठ ने की। इस सत्र में गुरुपद मारिगुड्डी ने 'कृष्णमूर्ति के उपन्यासों में नारी पात्र' विषयक आलेख पढ़ा। तृतीय सत्र के अध्यक्ष थे प्रकाश देशपांडे। इस सत्र में एच. डी. कोलकार ने 'पुराणिक का काव्य और कहानियाँ' विषयक आलेख प्रस्तुत किया। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता वाई. बी. हिम्माडी ने की, जिसमें टी.एस. चौगले ने 'पुराणिक के गीतनाट्य' विषय पर व्याख्यान दिया।

समापन सत्र की अध्यक्षता राघवेंद्र पाटील ने की। सरजू काटकर ने समापन भाषण दिया। सतीश नादगौड़ा इस सत्र में विशिष्ट अतिथि थे। काटकर ने कहा कि कृष्णमूर्ति ऐसे लेखकों में से हैं, जिन्होंने बड़े पाठक समाज का निर्माण किया। राघवेंद्र पाटील ने कहा कि पुराणिक की रचनाओं

दीप प्रज्वलन करते हुए चंद्रशेखर कंबार, मल्लिकार्जुन कल्लोली, आनंद पुराणिक, सोमशेखर और अन्य

को किसी आलोचक की आवश्यकता नहीं, क्योंकि वे पाठकों के बीच सीधे स्वीकार्य हैं।

'ओड़िया साहित्य की नई फ़सल' पर संगोष्ठी

8 नवंबर 2013, बालासोर

साहित्य अकादेमी द्वारा फ़क़ीरमोहन साहित्य परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में 8 नवंबर 2013 को 'ओड़िया साहित्य की नई फ़सल' विषयक एकदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन रोटरी भवन, बालासोर में किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात ओड़िया कवि ब्रजनाथ रथ ने किया। उन्होंने कहा कि हर लेखक का भिन्न स्वर होता है। इस अवसर पर ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक गौरहरि दास ने आरंभिक व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि विश्व की अन्य भाषाओं की भाँति ओड़िया साहित्याकाश भी युवा प्रतिभाओं से चमक रहा है। अरविंद गिरि ने अपने बीज भाषण में कहा कि अनेक बाधाओं के बावजूद युवा लेखन प्रतिबद्ध है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता फ़क़ीरमोहन साहित्य परिषद् के अध्यक्ष रविनारायण दास ने की। आरंभ में अकादेमी के कोलकाता कार्यालय प्रभारी गौतम पॉल ने औपचारिक स्वागत भाषण किया और अतिथियों का संक्षिप्त परिचय दिया।

प्रथम सत्र उत्कल साहित्य समाज के अध्यक्ष विजयनंद सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें दिलीप स्वाइन, शुभश्री लेंका और अंजन चंद ने क्रमशः आधुनिक कविता, उपन्यास और अनुवाद साहित्य पर अपने आलेखों का पाठ किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता सैरिंध्री साहू ने की। इस सत्र में लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, कविता बारीक, श्रीदेव और हेमेंद्र महापात्र ने क्रमशः ओड़िया साहित्य में व्यंग्य, कहानी, साहित्य का भविष्य और नाटक के संदर्भ में अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता गोपालकृष्ण रथ ने की। इस सत्र में प्रह्लाद चरण मोहांति मुख्य अतिथि थे, जबकि मनोज त्रिपाठी विशिष्ट अतिथि। संगोष्ठी के अंत में फ़क़ीरमोहन साहित्य परिषद् के उपाध्यक्ष विप्लव कुमार मोहांति ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'नेपाली में उत्तर-उपनिवेशवादी साहित्य' पर संगोष्ठी

9-10 नवंबर 2013, गांतोक

साहित्य अकादेमी द्वारा 9-10 नवंबर 2013 को गांतोक में सिक्किम विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 'नेपाली में उत्तर-उपनिवेशवादी साहित्य' विषयक द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन सिक्किम विश्वविद्यालय के कुलपति तंकबहादुर सुब्बा द्वारा किया गया। प्रख्यात नेपाली साहित्यकार प्रतापचंद्र प्रधान ने बीज-वक्तव्य दिया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सानु लामा द्वारा की गई। अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक प्रेम प्रधान ने आरंभिक वक्तव्य दिया। सत्र की अध्यक्षता सिक्किम विश्वविद्यालय की नेपाली विभागाध्यक्ष कविता लामा ने की। आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी एन.सी. महेश ने औपचारिक स्वागत भाषण किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता मोहन पी. दाहाल ने की, जिसमें दियाकर प्रधान, पारसमणि दंगल और महेश प्रधान ने अपने आलेख पढ़े।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता जस योंजन 'प्यासी' ने की। इस सत्र में ज्ञानबहादुर छेत्री, कृष्णराज घतानी,

बलराम पांडेय और टेकबहादुर छेत्री ने अपने आलेख पढ़े।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता पेमा तामांग द्वारा की गई, जिसमें देवेंद्र सुब्बा, पदम नेपाल और विधान गोलय द्वारा आलेख पाठ किए गए।

समापन सत्र की अध्यक्षता कृष्ण सिंह मोक्तान ने की। प्रद्युम्न श्रेष्ठ ने इस सत्र में पर्यवेक्षकीय भाषण प्रस्तुत किया, जबकि प्रख्यात कवि-आलोचक जीवन नामदुंग द्वारा समापन भाषण दिया गया।

गुंडर्ट-केरलपाणिनि जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद

19 नवंबर 2013, तिरुवनंतपुरम

साहित्य अकादेमी द्वारा 19 नवंबर 2013 को मलयाळम् विभाग, केरल विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में केरल-पाणिनि एवं गुंडर्ट की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन विश्वविद्यालय परिसर, तिरुवनंतपुरम में किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन प्रख्यात मलयाळम् आलोचक के.एस. रविकुमार द्वारा किया गया। स्कारिया ज़कारिया ने 'मलयाळम् भाषा की विरासत' शीर्षक बीज भाषण प्रस्तुत किया। पुथुस्सेरी रामचंद्रन ने ढाई हज़ार वर्ष प्राचीन पाणिनि के *अष्टाध्यायी* को संदर्भित करते हुए कहा कि वह भारत की व्याकरणिक विरासत है। सी. आर. प्रसाद ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि यह मलयाळम् भाषा के लिए स्वर्णकाल है, क्योंकि इसे शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त हुआ है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता वेणुगोपाल पणिक्कर ने की। उन्होंने 'व्याकरण का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र में वी.पी. मारकोस ने 'केरल-पाणिनि और गुंडर्ट की व्याकरणिक अवधारणा' तथा एल. सुषमा ने 'केरलपाणिनियम् : एक सामाजिक पाठ' विषयक आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र पुथुस्सेरी रामचंद्रन की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें पी.एम. गिरीश, पी. श्रीकुमार, जोसेफ स्कारिया और पी. जयकृष्णन् ने क्रमशः 'मलयाळम् व्याकरण में रूपक : अवधारणा एवं अर्थ', 'आधुनिक भाषाविज्ञानी एवं केरलपाणिनियम्', 'सहायक क्रियाएँ एवं भाषा शैली' और 'केरलपाणिनियम् पर नान्नुल का प्रभाव' विषयक आलेखों का पाठ किया।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता बी.वी. शशिकुमार ने की। सीमा जेरोम, हरिकुमार वांगमपुझा और सी.आर. प्रसाद ने इस सत्र में क्रमशः 'व्याकरणिक पाठ में औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रयोग', 'गुंडर्ट के व्याकरण की संपूर्णता' तथा 'केरलपाणिनियम : द्रविड़ भाषाओं का व्याकरण' विषयक आलेख प्रस्तुत किए।

चीत-भाषण करते हुए स्कारिया उकारिया, उनके दाएँ सी.आर. प्रसाद एवं के.एस. रविकुमार

शताब्दी स्मरण पर्व : स्वप्नस्थ, भूगुरई अंजनीरा, अमृतलाल याज्ञिक और भूपेंद्र त्रिवेदी परिसंवाद

23 नवंबर 2013, मुंबई

साहित्य अकादेमी द्वारा राजी आसर विद्यालय, घाटकोपर, मुंबई के संयुक्त तत्त्वावधान में 23 नवंबर 2013 को 'शताब्दी स्मरण पर्व' शीर्षक परिसंवाद का आयोजन विद्यालय सभागार में किया गया। यह पर्व गुजराती के चार लेखकों को समर्पित था—स्वप्नस्थ, भूगुरई अंजनीरा, अमृतलाल याज्ञिक और भूपेंद्र त्रिवेदी।

बाएँ से दाएँ : धीरूभाई मेहता, सितांशु यशश्चंद्र एवं चंद्रकांत टोपीवाला

परिसंवाद के आरंभ में अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के सदस्य कमल वोरा ने अतिथियों और श्रोताओं का औपचारिक स्वागत किया। धीरूभाई मेहता ने आरंभिक वक्तव्य दिया। गुजराती कवि उदयन ठक्कार ने भी अपने विचार व्यक्त किए। प्रथम सत्र के आरंभ में याज्ञिक के गद्यलेखन के कुछ अंशों का पाठ प्रस्तुत किया गया। सितांशु यशश्चंद्र ने याज्ञिक के कृतित्व पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने गुजराती भाषा के संदर्भ में याज्ञिक के शिक्षा विषयक कर्मों का मूल्यांकन किया तथा बताया कि वे छात्र-मनोविज्ञान के गहरे पारखी थे। इसके बाद चंद्रकांत टोपीवाला ने भूगरई अंजनीरा के कृतित्व पर अपने आलेख का पाठ किया। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि किस प्रकार अच्छी कविता और अच्छी आलोचना एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं।

दोपहर बाद के सत्र में स्वप्नस्थ की पाँच कविताओं की संगीतमय प्रस्तुति की गई। इसके बाद समीर भट्ट ने मार्क्सवाद और गाँधीवाद के परिप्रेक्ष्य में उनके काव्य पर प्रकाश डाला। इसके बाद भूपेंद्र बालकृष्ण त्रिवेदी के दर्शनविषयक विचारों की प्रस्तुति के पश्चात् कांति पटेल ने उनके कृतित्व पर केंद्रित अपने आलेख का पाठ किया। कार्यक्रम के अंत में कमल वोरा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

हारूमल सदारंगाणी 'खादिम' जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी

23-24 नवंबर 2013, इंदौर

साहित्य अकादेमी द्वारा नेशनल काउंसिल फ़ॉर प्रोमोशन ऑफ़ सिंधी लैंग्वेज, नई दिल्ली और सिंधी अदबी संगत, इंदौर के संयुक्त तत्त्वावधान में 23-24 नवंबर 2013 को इंदौर में प्रख्यात सिंधी लेखक हारूमल सदारंगाणी 'खादिम' की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में अकादेमी के सिंधी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक प्रेम प्रकाश ने उद्घाटन भाषण किया। आरंभ में अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव

कृष्णा किंबहुने ने औपचारिक स्वागत भाषण किया। इस अवसर पर लक्ष्मण भाटिया कोमल ने बीज भाषण किया। इस सत्र की अध्यक्षता वासदेव मोही ने की, जबकि रमेश वारल्याणी विशिष्ट अतिथि थे। अंत में एनसीपीएसएल के निदेशक निर्मल गोपलाणी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की 150वीं जयंती पर संगोष्ठी

24 नवंबर 2013, लखनऊ

साहित्य अकादेमी द्वारा उ.प्र. हिंदी संस्थान लखनऊ के निराला सभागार में 24 नवंबर 2013 को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की 150वीं जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में बोलते हुए अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने उन्हें युग प्रवर्तक लेखक/संपादक बताया और हिंदी भाषा को सामाजिक बनाने में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने उनके व्यक्तित्व को किसानी संस्कार वाला बताया, जिसमें समाज की बुनियादी समस्याओं को समझने की दूरदृष्टि थी। अपने उद्घाटन वक्तव्य में प्रसिद्ध लेखक/आलोचक रमेश चंद्र शाह ने कहा कि हिंदी साहित्य में आधुनिक युग की शुरुआत द्विवेदी जी ने *सरस्वती* पत्रिका के माध्यम से की। वे हिंदी के भाषा एवं व्याकरण पर विशेष ध्यान देते थे और उसे भारतीयता की पहचान मानते थे। प्रसिद्ध आलोचक नंदकिशोर आचार्य ने महावीर प्रसाद द्विवेदी की काव्य रचना पर बोलते हुए उनकी कविता में परंपरा और आधुनिकता के बीच समन्वय स्थापित किया। इससे पहले अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक सूर्य प्रसाद दीक्षित ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि द्विवेदी जी भाविक शुद्धता एवं नव जागरण युग के प्रणेता थे। उन्होंने विज्ञान एवं चिकित्सा जैसे विषयों पर स्वयं भी लिखा और दूसरों को भी लिखने की प्रेरणा दी।

'द्विवेदी जी और साहित्यिक पत्रकारिता' पर आधारित प्रथम सत्र में अपने अध्यक्षीय संबोधन में अच्युतानंद मिश्र ने कहा कि द्विवेदी जी जिस दौर में पत्रकारिता कर रहे थे, उसमें हिंदी साहित्य ही उसका आधार था। संसाधनों की कमी के बाद भी उन्होंने *सरस्वती* के माध्यम से ऐसा लेखक मंडल बनाया जिसमें अनेक भाषाओं और विषयों के विशेषज्ञ थे। उनकी पत्रकारिता ने देश में राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना की आधारशिला रखी। इस सत्र में अखिलेश, आशीष त्रिपाठी और विजय दत्त श्रीधर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी का द्वितीय सत्र द्विवेदी जी की समालोचना और उनके निबंधों पर आधारित था, जिसकी अध्यक्षता वागीश शुक्ल जी ने की। इसमें ज्योतिष जोशी, हरिमोहन शर्मा, रेवती रमण ने अपने विचार रखे।

संभाषण करते हुए रमेश चंद्र शाह।
बाएँ से दाएँ : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, नंदकिशोर आचार्य एवं सूर्य प्रसाद दीक्षित

तृतीय और अंतिम सत्र द्विवेदी जी की कविता, अनुवाद और भाषा नीति पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता गंगारतन पांडेय ने की और नरेश सक्सेना, पवन कुमार अग्रवाल एवं सत्यदेव मिश्र ने अपने विचार व्यक्त किए।

संगोष्ठी का संचालन साहित्य अकादेमी के उपसचिव ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने किया।

स्वामी विवेकानंद की 150वीं जयंती पर संगोष्ठी

25-26 नवंबर 2013, कोलकाता

साहित्य अकादेमी द्वारा 25-26 नवंबर 2013 को रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान, कोलकाता के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रख्यात विचारक स्वामी विवेकानंद की 150वीं जयंती के अवसर पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन स्वामी नित्यमुक्तानंद ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने विवेकानंद के विचार-दर्शन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला और कहा कि यदि कोई व्यक्ति उनका अनुसरण करता है तो वह अपने जीवन को सम्यक् बना सकता है। संगोष्ठी के प्रारंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण करते हुए विवेकानंद के जीवन, कृतित्व और उपदेशों की विशिष्टताओं को रेखांकित किया। अकादेमी के बाङ्ला भाषा परामर्श मंडल के संयोजक रामकुमार मुखोपाध्याय इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। बीज भाषण सव्यसाची भट्टाचार्य द्वारा दिया गया। उन्होंने विवेकानंद के जीवन का नियमन करनेवाले चार तत्त्वों को व्याख्यायित किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता स्वामी सुपरानंद ने की। सत्रांत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन अकादेमी के कोलकाता कार्यालय प्रभारी गौतम पॉल ने किया।

'स्वामी विवेकानंद और उनका समय' विषयक प्रथम सत्र की अध्यक्षता आलोक राय ने की। इस सत्र में सोमनाथ भट्टाचार्य और संदीपन सेन ने अपने आलेख पढ़े। संदीपन सेन ने विवेकानंद के समकालीन सांस्कृति परिवेश पर बात की। प्रो. भट्टाचार्य ने समकालीन साहित्यकारों से विवेकानंद के संदर्भों का उल्लेख किया। आलोक राय ने कहा कि स्वामी जी ने पूर्व और पश्चिम के संश्लेषण का प्रयत्न किया।

द्वितीय सत्र 'वेदांत दर्शन और धार्मिक सुधार' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रव्रजिका भास्वरप्राण ने की। इस सत्र में सीतानाथ गोस्वामी और तारा चटर्जी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। 'स्वामी विवेकानंद और उनके समकालीन' विषयक तृतीय सत्र शीर्षेंदु मुखोपाध्याय की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में अमित्रसूदन

बाएँ से दाएँ : के. श्रीनिवासराव, रामकुमार मुखोपाध्याय, सव्यसाची भट्टाचार्य, स्वामी सुपर्णानंद एवं स्वामी नित्यमुक्तानंद

भट्टाचार्य और सुब्रत मुखोपाध्याय ने अपने आलेखों का पाठ किया। भट्टाचार्य ने विवेकानंद के साथ रवींद्रनाथ ठाकुर और भगिनी निवेदिता के संबंधों की पड़ताल की, जबकि सुब्रत मुखोपाध्याय ने गिरीशचंद और विवेकानंद के संबंधों पर प्रकाश डाला।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता सौरीन भट्टाचार्य ने की, जिसमें नृसिंह प्रसाद भादुड़ी और सौमित्र बसु ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री भादुड़ी ने प्रारंभिक शिक्षाशास्त्रियों के साथ विवेकानंद का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया। श्री बसु ने ब्रिटिशों द्वारा लादी जा रही शिक्षा व्यवस्था को संदर्भित करते हुए कहा कि विवेकानंद मातृभाषा में शिक्षा दिए जाने के पक्षधर थे।

पंचम सत्र उज्ज्वल कुमार मजूमदार की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसका विषय था, 'स्वामी विवेकानंद का साहित्य में योगदान'। इस सत्र में विश्वजीत राय और रविशंकर बल ने अपने आलेखों का पाठ किया। वक्ताओं ने विवेकानंद के साहित्य में अभिव्यक्त दार्शनिक तत्त्वों को रेखांकित किया। 'संगीत के क्षेत्र में विवेकानंद का योगदान' विषयक षष्ट सत्र की अध्यक्षता सुधीर चक्रवर्ती ने की, जिसमें देवाशीष राय और सर्वानंद चौधरी ने अपने आलेख पढ़े। श्री राय ने विवेकानंद द्वारा रचित गीतों पर बात की, जबकि श्री चौधरी ने उनमें प्रयुक्त ताल पर प्रकाश डाला। उन दोनों ने नंदन सेनगुप्ता, गौतम राय और निशांत सिंह के सहयोग से विवेकानंद के कुछ गीतों की प्रस्तुतियाँ भी कीं।

संगोष्ठी का समापन भाषण स्वामी त्यागरूपानंद द्वारा दिया गया। इस सत्र की अध्यक्षता भारती राय ने की। धन्यवाद ज्ञापन रामकुमार मुखोपाध्याय द्वारा किया गया।

रेव. प्रो. थानिनायग अडिगलर की जन्मशती पर संगोष्ठी

25-26 नवंबर 2013, तिरुचिरापल्ली

साहित्य अकादेमी, चेन्नै कार्यालय द्वारा रेव. फ्रा. जेवियर थानिनायग अडिगलर शोध केंद्र और सेंट जोसफ़ कॉलेज के संयुक्त तत्त्वावधान में 25-26 नवंबर 2013 को सेंट जोसफ़ कॉलेज, तिरुचिरापल्ली में तमिळ लेखक रेव. फ्रा. जेवियर थानिनायग अडिगलर की जन्मशती के अवसर पर द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कृष्णमूर्ति नाचिमुथु ने अडिगलर के बहुआयामी व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालते हुए तमिळ भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में किए गए उनके योगदान को रेखांकित किया। प्रारंभ में चेन्नै कार्यालय प्रभारी ए.एस. इलानगोवन ने औपचारिक स्वागत भाषण किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता वाई. सुब्बरयालु ने की। इस सत्र में मु. रामासामी, ए. आरसु, ए. एंटोनी क्रूज और इंदिरा मैनूएल ने अडिगलर के कृतित्व के विभिन्न पक्षों पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र में अडिगलर की शोध प्रविधि से लेकर उनके विभिन्न शोधाध्ययनों की विस्तार से चर्चा हुई और शोध क्षेत्र में उनके प्रमुख अवदानों पर विमर्श किया गया।

द्वितीय सत्र यू. रासु की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें वालन आरसु, बी. माथिवानन और यू. अलीभावा ने क्रमशः 'अडिगलर का योगदान', 'अडिगलर का तमिळ में लेखन' एवं 'संगम साहित्य पर अडिगलर के विचार' विषयक अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र की अध्यक्षता के. रामासामी ने की। इस सत्र में के. थिरुमारन, आर. कामरासु, ई. सुसाई ने क्रमशः 'अडिगलर की शोध

पत्रिकाएँ', 'शिक्षा विषयक अडिगलर के विचार' एवं तोलकप्पियम संबंधी अडिगलर का अध्ययन' विषयक अपने आलेखों का पाठ किया।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता के.वी. बालसुब्रमणियम ने की। इस सत्र में आर. संबथ, एस. अल्बर्ट और रवि सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पंचम सत्र एस.एस. रामर इलांगो की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में मराईमलाई इलाक्कुवनर, के. नेडुंचेझियान और सैम विजय ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता पी. मरुधन्यागम ने की। इस सत्र में प्रख्यात भाषाशास्त्री एस.वी. षन्मुगम ने अडिगलर की भाषिक तकनीक पर अपने विचार रखे।

राजकिशोर राय जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी

30 नवंबर 2013, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी द्वारा 30 नवंबर 2013 को प्रख्यात ओड़िया साहित्यकार राजकिशोर राय की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एकदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन आईडीसीओएल सभागार, भुवनेश्वर में किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन असम के राज्यपाल महामहिम जानकी वल्लभ पटनायक द्वारा किया गया। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक गौरहरि दास ने अपने आरंभिक वक्तव्य में राजकिशोर राय का संक्षप्ति जीवन-परिचय देते हुए उनकी साहित्यिक उपलब्धियों को रेखांकित किया। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपथारिक स्वागत भाषण किया। अपने उद्घाटन भाषण में जे.वी. पट्टनायक ने राजकिशोर राय को साहित्य और संगीत दोनों का कलाकार बताया। इस अवसर पर राजकिशोर राय की सुपुत्री मालविका राय भी उपस्थित थीं। उन्होंने बीज भाषण करते हुए बताया कि अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक वे साहित्य सृजन में संलग्न थे। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात ओड़िया कथाकार विभूति पट्टनायक ने की।

प्रथम सत्र महापात्र नीलमणि साहू की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें अध्यापक विश्वरंजन, असीत मोहांति, कपिलेश्वर गहन और किशोर चंद्र दास ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दाशरथि दास की अध्यक्षता में संपन्न द्वितीय सत्र में विजय कुमार नंदा, सविता प्रधान और प्रमोध कुमार परिदा ने अपने आलेखों का पाठ किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता जतींद्र कुमार नायक ने की, जबकि शांतनु कुमार आचार्य ने समापन भाषण दिया। मनोज त्रिपाठी ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

बाएँ से दाएँ : के. श्रीनिवासराव, मालविका राय, जानकीवल्लभ पटनायक एवं विभूति पटनायक

जयादेवी थायीलिगडे जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद

नवंबर 2013, मुंबई

साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु कार्यालय द्वारा कन्नड विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में नवंबर 2013 को मुंबई में प्रख्यात कन्नड लेखिका और स्वतंत्रता सेनानी जयादेवी थायीलिगडे की जन्मशती के अवसर पर एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया।

प्रख्यात कन्नड कवि बी.ए. सनदी ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य जी. एन. उपाध्याय ने आरंभिक व्याख्यान दिया। कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक नरहल्ली बालसुब्रमण्य ने विभिन्न लेखकों से तुलना करते हुए जयादेवी लिगडे के योगदान को रेखांकित किया। आरंभ में अकादेमी के बेंगळूरु कार्यालय प्रभारी एस.पी. महालिंगेश्वर ने औपचारिक स्वागत भाषण किया।

इस अवसर पर अर्जुन गोलसंगी, जनार्दन भट, गुरु लिंगप्पा डाबले और श्रीनिवास जोकट्टे ने भी जयादेवी लिगडे के साहित्य की विशिष्टताओं और कन्नड साहित्य में उनके योगदान पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

लक्ष्मीधर नायक जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी

1 दिसंबर 2013, कटक

साहित्य अकादेमी द्वारा उत्कल साहित्य समाज के संयुक्त तत्त्वावधान में 1 दिसंबर 2013 को प्रख्यात ओड़िया साहित्यकार लक्ष्मीधर नायक की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर कटक, ओड़िशा में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता ओड़िया कथालेखिका प्रतिभा राय ने किया। सत्र की अध्यक्षता उत्कल साहित्य समाज के अध्यक्ष विजयनंद सिंह ने की। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक गौरहरि दास ने आरंभिक वक्तव्य दिया। मुख्य अतिथि हरप्रसाद दास ने कहा कि लक्ष्मीधर नायक ओड़िया में ग़ज़ल विधा के जनक थे। बीज भाषण कमलकांत मोहांति ने किया। आरंभ में अकादेमी सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत भाषण किया। उत्कल साहित्य समाज के उपाध्यक्ष देयस्नान दास ने सत्र का संचालन किया। इस अवसर पर ओड़िया में अकादेमी बालसाहित्य पुरस्कार विजेता साहित्यकार नदिया बिहारी मोहांति को पुरस्कार प्रदान किया गया, क्योंकि संबंधित समारोह में वे उपस्थित नहीं हो पाए थे। सत्र के अंत में अकादेमी के कोलकाता कार्यालय प्रभारी गौतम पॉल ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र 'लक्ष्मीधर नायक का जीवन और कृतित्व' विषय पर केंद्रित था, जो रत्नाकर जैनी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में विजय के. सत्पथी, कैलाश, पटनायक, अपर्णा मोहांति, अरुण मोहांति और विष्णुचंद्र राउतराय ने आलेखों का पाठ किया। 'लक्ष्मीधर नायक की बहुआयामी प्रतिभा' विषयक द्वितीय सत्र की अध्यक्षता

स्वागत भाषण करते हुए के. श्रीनिवासराव।
बाएँ से दाएँ : हरप्रसाद दास, प्रतिभा राय, कमलकांत मोहांति और अन्य

विष्णुचंद्र राउतराय ने की। इस सत्र में वसंत मोहांति और दीप्ति घोष ने लक्ष्मीधर की कविताओं और कृष्णचंद्र भूइयां, भूपेन महापात्र, पुलिन बिहारी नायक और गोविंदचंद्र चांद ने उनकी कहानियों का पाठ किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता गोपाल कृष्ण रथ ने की। इस सत्र में जयंत महापात्र और प्रफुल्ल मोहांति ने अपने विचार रखे। संगोष्ठी के अंत में जीवनानंद अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'स्वातंत्र्योत्तर सिंधी नाटक' पर संगोष्ठी

5-6 दिसंबर 2013, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा सिंधी अकादमी, दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में 5-6 दिसंबर 2013 को 'स्वातंत्र्योत्तर सिंधी नाटक' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। लक्ष्मी खिलाणी ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक प्रेम प्रकाश ने बीज भाषण किया। इस सत्र की अध्यक्षता एम. के. जेटली ने की, जबकि भानु भारती विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। सिंधी अकादेमी के सचिव सिंधु मिश्र ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

मुट्टथुवार्की जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद

13 दिसंबर 2013, चांगनचेरी

साहित्य अकादेमी द्वारा 13 दिसंबर 2013 को प्रख्यात मलयाळम् लेखक मुट्टथुवार्की की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन सेंट बर्कमैंस कॉलेज, चांगनचेरी में किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन प्रख्यात आलोचक एम. थॉमस मैथ्यू ने किया। बीज भाषण स्कारिया ज़कारिया ने दिया। उन्होंने मुट्टथुवार्की के साहित्य को लोकप्रिय कथासाहित्य के रूप में परिभाषित किया तथा बताया कि उनके 26 उपन्यासों पर फ़िल्मों का निर्माण किया गया है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता के.एस. रविकुमार ने की। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार चांगमपुषा ने कविता को लोकप्रिय बनाया, उसी प्रकार मुट्टथुवार्की ने गद्य को। उन्होंने उन्हें एक महान कथाशिल्पी के रूप में रेखांकित किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता एम. के. माधवन नायर ने की। इस सत्र में सी.आर. प्रसाद ने 'लोकप्रिय साहित्य की भाषा', सुनील पी. इलाइदम ने 'लोकप्रिय और लोकप्रियता की अवधारणा का प्रभाव', शाजी जैकब ने 'लोकप्रिय कल्पनाशीलता की राजनीति' तथा पी.एस. राधाकृष्णन ने 'मुट्टथुवार्की और मलयाळम् सिनेमा' विषयक आलेखों का पाठ किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता सी. आर. ओमनकुट्टन ने की। इस सत्र में के.एस. जयश्री, एम.आर. महेश तथा ए.जी. श्रीकुमार ने क्रमशः 'वार्की के उपन्यासों में स्थानीय संस्कृति', 'वार्की के नाटक' विषयक आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र में जार्ज जोसेफ़ के. ने समापन भाषण किया।

वसंत कुमार सत्पथी जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी

15 दिसंबर 2013, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी द्वारा 15 दिसंबर 2013 को प्रख्यात ओड़िया साहित्यकार वसंत कुमार सत्पथी की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर आईडीसीओएल सभागार, भुवनेश्वर में एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन सुपरिचित ओड़िया लेखक और अकादेमी के महत्तर सदस्य सीताकांत महापात्र ने किया। उन्होंने कहा कि वसंत कुमार सत्पथी की कहानियों

अध्यक्षीय भाषण करते हुए विश्वनाथ प्रसाद तिवारी।
बाएं से दाएं : के. श्रीनिवासराव, सुमन्यु सत्पथी, सीताकांत महापात्र एवं हरीश त्रिवेदी

दादी-नानी की कहानियों की तरह हैं। उन्होंने सत्पथी द्वारा उन्हें लिखित दो पत्र पढ़कर सुनाए और साहित्य अकादेमी से आग्रह किया कि वह वसंत कुमार सत्पथी की कहानियों के अंग्रेज़ी अनुवाद का संग्रह प्रकाशित करे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। उन्होंने कहा कि लेखक कभी अपने लिए नहीं लिखता, वह समाज के लिए लिखता है। यही कारण है कि समाज उन्हें याद करता है। उन्होंने सत्पथी की कहानी 'निदाश्रयी' का पाठ-विश्लेषण प्रस्तुत किया। समारोह के विशिष्ट अतिथि हरीश त्रिवेदी ने कहा कि सत्पथी ओड़िया साहित्य के आकाश में चमकता हुआ सितारा है। सत्पथी के सुपुत्र सुमन्यु सत्पथी ने बीज भाषण में उनके कृतित्व पर बात करते हुए यह रेखांकित किया कि जिस समय ओड़िया भाषा में कवियों की माँग अधिक थी, वैसे समय में उन्होंने कहानी-लेखन आरंभ किया।

इस अवसर पर वसंत कुमार सत्पथी द्वारा चयनित एवं संपादित *संचयन* नामक पुस्तक का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक गौरहरि दास ने कहा कि वसंत कुमार सत्पथी को न केवल भारतीय परंपराओं का ज्ञान था, बल्कि वे पश्चिमी संस्कृति से भी बखूबी परिचित थे। उद्घाटन सत्र के अंत में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता सौरींद्र बारीक ने की। इस सत्र में दुर्गाप्रसन्न पांडा ने सत्पथी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अपने आलेख का पाठ किया। गौरांग चरण दाश ने कहा कि सत्पथी का व्यक्तित्व अहंकार शून्य था। संघमित्रा मिश्र ने सत्पथी के लघु नाटकों पर अपने विचार व्यक्त किए। विजयानंद सिंह ने सत्पथी की कहानियों के विनोदपूर्ण प्रसंगों पर प्रकाश डाला। सौरींद्र बारीक ने सत्पथी की कहानियों पर विचार करते हुए उनसे जुड़े कुछ संस्मरण भी सुनाए, क्योंकि वे उनके शिक्षक थे। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता गोपालकृष्ण रथ ने की। इस सत्र में जतींद्र कुमार नायक ने सत्पथी के अनुवाद-कार्यों पर तथा कृष्णचंद्र प्रधान ने सत्पथी के फ़ीचर लेखन पर विशेषरूप से बात की।

संगोष्ठी का समापन भाषण दाश बेहुर द्वारा दिया गया। उन्होंने सत्पथी के जीवन-संघर्षों को संदर्भित करते हुए कहा कि अंतिम समय में साहित्य ही उनका एकमात्र साथी था। इस सत्र की अध्यक्षता पीतबास राउतराय ने की। अंत में मनोज त्रिपाठी ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

राजेंद्र शाह जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी

20-22 दिसंबर 2013, वडोदरा

साहित्य अकादेमी द्वारा धर्मसिंह देसाई विश्वविद्यालय, कापड़वनज स्वागत समिति, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, यू.टी.एस. महिला कला महाविद्यालय और बलवंत पारेख सेंटर फ़ॉर जेनरल सेमेंटिक्स, वडोदरा के संयुक्त तत्त्वावधान में 20-22 दिसंबर 2013 को नादियाद, कापड़वनज, वल्लभविद्यानगर, वडोदरा में प्रख्यात गुजराती लेखक राजेंद्र शाह की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी तीन भागों में विभाजित थी : प्रणति, प्रतिप्रश्न और प्रस्तुति।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने 20 दिसंबर को आयोजित प्रणति के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। प्रख्यात ओड़िया कवि सीताकांत महापात्र ने इस सत्र में बीज भाषण किया। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत भाषण किया, जबकि प्रतिष्ठित गुजराती लेखक और अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक सितांशु यशश्चंद्र ने भूमिका के रूप में आरंभिक वक्तव्य दिया। प्रख्यात गुजराती कवि निरंजन भगत ने भी राजेंद्र शाह के कृतित्व के विभिन्न पक्षों पर अनेक दृष्टियों से विचार-विमर्श किया।

बाएँ से दाएँ : धीरूभाई मेहता, सितांशु यशश्चंद्र एवं चंद्रकांत टोपीवाला

'प्रस्तुति' के अंतर्गत तीसरे दिन प्रख्यात संगीतकार एवं गायक अमर भट्ट ने राजेंद्र शाह की कविताओं की संगीतमय प्रस्तुति की। सुपरिचित नृत्यांगना पारुल शाह ने उनकी कविताओं पर नृत्याभिनय प्रस्तुत किया। कापड़वनज, जो राजेंद्र शाह का गृहनगर है, में संगोष्ठी और कार्यक्रमों के संदर्भ में लोगों का उत्साह देखते ही बनता था। इस अवसर पर राजेंद्र शाह स्मारक कक्ष का उद्घाटन अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के कर कमलों द्वारा किया गया।

तिरुमाला रामचंद्र जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद

22 दिसंबर 2013, हैदराबाद

साहित्य अकादेमी द्वारा 22 दिसंबर 2013 को तेलुगु विश्वविद्यालय के एनटीआर सभागार में प्रख्यात तेलुगु लेखक और पत्रकार तिरुमाला रामचंद्र की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन सुपरिचित पत्रकार एवं पत्रकार एसोसिएशन के अध्यक्ष जी.एस. वरदाचार्य ने किया। आरंभ में अकादेमी कार्यालय, बेंगलूरु के प्रभारी एस.पी.

महालिंगेश्वर ने औपचारिक स्वागत भाषण किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे द्रविड़ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति आर. श्रीहरि और विशिष्ट अतिथि थे चर्चित पत्रकार लक्ष्मण राव। अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक एन. गोपी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता बी. श्रीनिवास राव ने की। इस सत्र में चौधुरी उपेंद्र राव, एम. नारायण शर्मा, ए.बी. के. प्रसाद और कल्लुरि भास्करन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने तिरुमाला रामचंद्र के शोधकार्यों और निबंधों के महत्व को रेखांकित किया। श्रीनिवास राव ने कहा कि पत्रकारिता और साहित्य दोनों ही क्षेत्रों में तिरुमाला का योगदान अद्वितीय और विशिष्ट है। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता जी.एस. वरदाचार्य ने की, जिसमें आर.वी. वर्मा राव और जे. चेन्नैया ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन भाषण वरिष्ठ पत्रकार नांदिराजु राधाकृष्ण द्वारा दिया गया। उन्होंने तिरुमाला रामचंद्र को सांस्कृतिक नायक और साहित्यिक ऋषि कहा।

वाणीदासन जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद

31 दिसंबर 2013, चेन्नै

साहित्य अकादेमी द्वारा 31 दिसंबर 2013 को प्रख्यात तमिळ लेखक वाणीदासन की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन तमिळ संगम, चेन्नै में किया गया।

परिसंवाद के आरंभ में अकादेमी के चेन्नै कार्यालय प्रभारी ए.एस. इलानगोवन ने औपचारिक स्वागत भाषण किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता के. नाचिमुथु ने की। उन्होंने आज के समय में वाणीदासन की प्रासंगिकता पर अपने विचार रखे। मरैमलै इलाकुमार ने बीज भाषण किया। उन्होंने वाणीदासन को तमिळ साहित्य के वर्ड्सवर्थ के रूप में व्याख्यायित किया। संबंध ने इस सत्र के अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात तमिळ कवि और वाणीदासन के भाई कल्लादन ने की। उन्होंने भारतीदासन और वाणीदासन के साहित्य के अंतसंबंधों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। हुसैन, युगभारती और कंदासामी ने भी इस सत्र में अपने आलेखों का पाठ किया। युगभारती ने वाणीदासन की बालकविताओं पर सार्थक विमर्श प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता सु. वेलमुरुगन ने की। इस सत्र में अरंग नादरसन, मनोहरन और वाणीदासन की पौत्री मणिमेगलै कुप्पुसामी ने वाणीदासन के व्यक्तित्व और कृतित्व के विभिन्न पक्षों पर अपने विचार व्यक्त किए।

ए. पांडुरंगन ने परिसंवाद का समापन भाषण किया। उन्होंने परिसंवाद में हुए विचार-विमर्श का सार प्रस्तुत करते हुए वाणीदासन से जुड़े अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साझा किया। अंत में तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य सेतुपति ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'मलयाळम् की शास्त्रीय स्थिति : वर्तमान और भविष्य' पर संगोष्ठी

6 जनवरी 2014, तिरुअनंतपुरम

केरल विश्वविद्यालय के मलयाळम् विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में साहित्य अकादेमी द्वारा 'मलयाळम् की शास्त्रीय स्थिति : वर्तमान और भविष्य' विषय पर तिरुअनंतपुरम में 6 जनवरी 2014 को एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

मलयाळम् भाषा परामर्श मंडल के संयोजक सी. राधाकृष्णन् ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि

मलयाळम् को जीवन के दैनंदिन सामाजिक-आर्थिक-प्रशासनिक हर जगह व्यवहार में लाने की आवश्यकता है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि मलयाळम् विश्वविद्यालय के कुलपति के. जयकुमार ने कहा कि मलयाळम् को शास्त्रीय भाषा का दर्जा समाज को महान सांस्कृतिक बोध प्रदान करता है।

सी.आर. प्रसाद ने अध्यक्षीय भाषण में यह संभावना जताई कि मलयाळम् भाषा किसी भी अभिनव साहित्य की रचना बिना किसी स्वत्व क्षरण के करने की क्षमता रखती है।

पुतुसेरी रामचंद्रन और जॉली जैकब ने कहा कि मलयाळम् विश्वविद्यालय को अपना प्राथमिक लक्ष्य भाषा के विभिन्न शोध कार्यों को वर्गीकृत करने का बनाना चाहिए। सुश्री जॉली जैकब ने शिक्षकों और शोधार्थियों को मलयाळम् के क्षरण का उत्तरदायी बताते हुए उन्हें आत्मविश्लेषण के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम का प्रथम सत्र एम.ए. सिद्दिक़ी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में नादुवत्तम गोपालकृष्णन ने मलयाळम् को शास्त्रीय दर्जा मिलने की घटना को केंद्र में रखते हुए अपना आलेख प्रस्तुत किया। मनोज कुरूर ने अपने आलेख के माध्यम से संगम काल के दौरान केरल की संस्कृति पर प्रकाश डाला। उन्होंने संगम साहित्य के संदर्भ में मलयाळम् शब्दों की अर्थवहन क्षमता की चर्चा की।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता शीबा एम. कूरियन ने की। सी.आर. राजगोपालन ने वाचिकता के सांस्कृतिक संदर्भ पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। अनिल वल्लतोल ने 'प्राचीन साहित्य में वाक् चातुर्य और काव्यमयता' पर अपना आलेख पाठ किया। विधु नारायण ने कम्प्यूटर के क्षेत्र में मलयाळम् के भविष्य पर एक पावर प्वाइंट प्रस्तुति की। सुश्री सुनिता टी. ने साइबर मलयाळम् पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता पी. मोहनचंद्रन ने की। के.एस. रविकुमार ने अपने समापन भाषण में स्पष्ट कहा कि मज़बूत राजनीतिक-सामाजिक इच्छाशक्ति के द्वारा ही एक प्रभावशाली भाषा सृजित की जा सकती है।

'साहित्येतिहास का पुनर्लेखन' पर संगोष्ठी

10-11 जनवरी 2014, जलगाँव

'साहित्येतिहास का पुनर्लेखन' विषय पर उत्तरी महाराष्ट्र विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वाधान में साहित्य अकादेमी द्वारा एक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 10-11 जनवरी 2014 को जलगाँव में किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन अकादेमी के मराठी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक और प्रतिष्ठित मराठी साहित्यकार भालचंद्र नेमाडे ने किया। इसके पूर्व अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने अतिथियों और आगंतुकों का

बाएँ से दाएँ : एम.एस. पगारे, यशवंत मनोहर, सुधीर मेश्राम, भालचंद्र नेमाडे, कृष्णा किंबहुने एवं शोभा शिंदे

औपचारिक स्वागत करते हुए कहा कि साहित्येतिहास के आयामों तथा अनेक वादों से प्रभावित अनेक संस्थाओं द्वारा साहित्येतिहास पुनर्लेखन की वृत्तियों पर ध्यान आकर्षित करना ही हमारा मुख्य लक्ष्य होना चाहिए।

अपने उद्घाटन भाषण में भालचंद्र नेमाडे ने साहित्येतिहास लेखन को छोटे-छोटे अंतराल पर लगातार लिखे जाने की वकालत की और वह भी उस काल के समग्र सांस्कृतिक बोध के ज्ञान के साथ तालमेल मिलाते हुए। इस अवसर पर मुख्य अतिथि यशवंत मनोहर ने साहित्येतिहास लेखन में सातत्य को महत्त्वपूर्ण बताया। उत्तरी महाराष्ट्र विश्वविद्यालय के मराठी विभागाध्यक्ष एम. एस. पगारे ने सत्रांत में धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रख्यात मराठी लेखिका पुष्पा भावे की अध्यक्षता में संपन्न प्रथम सत्र में सतीश बडवे और रमेश वारखेडे ने अपने आलेखों के माध्यम से 'साहित्येतिहास : शोध के नए आयाम' विषय पर अपने विचार रखे साहित्येतिहास को संस्कृति का अभिन्न अंग मानकर क़लम उठाने पर ध्यान देने की ज़रूरत मानी गई।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता सतीश बडवे ने की। पहले सत्र के विषय को ही इस सत्र में विस्तार प्रदान किया गया। भारत शिरसाठ, सहिख इक़बाल मीन्ने ने इस सत्र में अपने आलेखों का पाठ किया। मुख्य बात यह निकली कि भाषाएँ धर्म विशेष से जुड़ी होकर विशिष्ट संस्कार पाती हैं। इसके पश्चात् के सत्र में शैलेंद्र लेनदे और रवींद्र शोभने ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता रमेश वारखेडे द्वारा की गई। इसमें साहित्येतिहास के पुनर्लेखन में सामाजिक विवेक और सामाजिक स्वरूप पर विशेष ध्यान देने पर ज़ोर दिया गया।

चतुर्थ सत्र में 11 जनवरी को रवींद्र शोभने की अध्यक्षता में गुजराती और कन्नड साहित्येतिहास पुनर्लेखन में शोध के आयामों पर चर्चा हुई। मृणालिनी कामत और शोभा नाइक ने इस सत्र में अपने आलेख प्रस्तुत किए। इन भाषाओं के आरंभिक साहित्येतिहास लेखकों को याद किया गया। गुजराती के गोवर्धनराम और कन्नड के आर.एस. मुगली के योगदानों पर चर्चा हुई। वक्ताओं ने कहा कि मौखिक और लिखित साहित्य के मध्य आदान-प्रदान को साहित्येतिहास पुनर्लेखन में सम्यक् स्थान मिलना ही चाहिए। कामत ने स्वीकार किया कि गुजराती में साहित्येतिहास लेखन की परंपरा मुश्किल से ही मौजूद है। संगोष्ठी के अंत में पुष्पा भावे ने समापन वक्तव्य दिया।

'21वीं सदी का डोगरी साहित्य' पर संगोष्ठी

11-12 जनवरी 2014, जम्मू

'21वीं सदी का डोगरी साहित्य' विषय पर डोगरी संस्था के सहयोग से साहित्य अकादेमी ने जम्मू के के.एल. सहगल सभागार में 11-12 जनवरी 2014 को एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में नीलांबर देव शर्मा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में संचार माध्यमों के लगातार बदलते तरीक़ों से साहित्यिक शैली के विस्तार को रेखांकित किया। साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक शांतनु गंगोपाध्याय ने औपचारिक स्वागत किया।

डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक ललित मगोत्रा ने अपने बीज-भाषण में साहित्यकारों से संचार माध्यमों और तकनीक के कारण आनेवाले सामाजिक-राजनीतिक बदलवों के प्रति संवेदनशील रहने की गुज़ारिश की। उन्होंने कहा कि एक तरफ़ तो पारंपरिक तरीक़े आज़माए जा रहे हैं, तो दूसरी ओर तकनीक और बाज़ारवाद लोगों के तरीक़े और उनकी अवधारणाएँ बदल रहा है।

आरंभिक सत्र में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए प्रो. वीणा गुप्ता ने पिछले वर्ष डोगरी-प्रकाशन की स्थिति में आए सुखद बदलाव पर हर्ष व्यक्त किया।

आलेख पाठ सत्र में सुशील बेगाना, प्रकाश प्रेमी, सुरजीत हीश, शिव देव सिंह मन्हास, मोहन सिंह, प्रत्यूष गुलेरी, छत्रपाल, शशि पठानिया, वंशीलाल शर्मा और दर्शन दर्शी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। आलेख पाठ सत्र की अध्यक्षता नरसिंह देव जम्वाल, पीयूष गुलेरी और ललित मगोत्रा ने की। समापन वक्तव्य सत्यपाल श्रीवत्स ने दिया।

'समकालीन पूर्वोत्तर साहित्य' पर परिसंवाद

16 जनवरी 2014, मुंबई

साहित्य अकादेमी द्वारा 16 जनवरी 2014 को मुंबई में 'समकालीन पूर्वोत्तर साहित्य' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित प्रख्यात साहित्यकार तेमसुला आओ ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि पूर्वोत्तर के लोगों को लंबे समय तक असुरक्षा और हिंसा की गहरी और मर्मांतक मार झेलनी पड़ी है। इसके साथ ही सरकार की उदासीनता, भ्रष्टाचार, गरीबी, बेरोज़गारी, घुसपैठ का अंतरजाल, आतंकवाद ने उन्हें गहरे घाव दिए हैं। ऐसे में पूर्वोत्तर का साहित्य इस हिंसा और मृत्यु से पैदा भयानक तनाव एवं अफरातफरी को लगातार प्रतिबिंबित करता नज़र आता है। लेकिन सराहना का विषय यह है कि इस अव्यवस्थित लोकाचार के मध्य यहाँ के साहित्य ने अद्भुत विश्वबोध और सार्वभौमिक ऊष्मा को भी समान रूप और संजीदगी से बचाए रखा है।

तेमसुला आओ ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में पूर्वोत्तर की वाचिक परंपरा की चर्चा की और उसे इस क्षेत्र के साहित्य को सँभालनेवाला एक बड़ा कारक बताया। उन्होंने इस वाचिक परंपरा में मौजूद साहित्य के लिखित रूप में सँजोने की ज़रूरत पर बल दिया। उन्होंने पूर्वोत्तर को पहचान और मौलिकता के साथ-साथ खो चुके सांस्कृतिक अतीत को सँजोकर रखनेवाले भूभाग के रूप में स्थापित किया। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर का साहित्य महज़ हिंसा, अराजकता और अस्तित्ववादी चिंता का ही साहित्य नहीं, बल्कि प्रेम और आशा की मानवीय भावना के सार्वभौमिक उत्साह का भी साहित्य है।

उद्घाटन भाषण के पश्चात् असमिया के प्राणजित बोरा, बोडो के धीरजू ज्योति बसुमतारि, मणिपुरी के नाओरेम विद्यासागर सिंह तथा नेपाली के सिद्धार्थ राई ने अपनी कविताओं का पाठ किया। इसके बाद मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक एच. बिहारी सिंह ने संगोष्ठी की अध्यक्षता में संपन्न विचार सत्र में 'समकालीन असमिया साहित्य' विषय पर सत्यकाम बरठाकुर, 'समकालीन बोडो साहित्य' पर अंजलि दैमारि, 'समकालीन नेपाली साहित्य' पर प्रतापचंद प्रधान ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। एच. बिहारी सिंह ने 'समकालीन मणिपुरी साहित्य' पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

परिसंवाद के अंत में साहित्य अकादेमी, मुंबई के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

के. भास्करन नायर जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद

16 जनवरी 2014, केरल

साहित्य अकादेमी और श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्व-विद्यालय, कालडि के मलयाळम् विभाग के सहयोग से लेखक डॉ. के. भास्करन नायर की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 16 जनवरी 2014 को एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। केरल के एर्नाकुलम ज़िला

स्थित कलाडि में श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय के अकादमिक खंड एक का सेमिनार हॉल इस आयोजन का गवाह बना।

वरिष्ठ मलयाळम् समालोचक एम. थॉमस मैथ्यू ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। विश्वविद्यालय के मलयाळम् विभाग के विभागाध्यक्ष और साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य के. एस. रविकुमार ने उपस्थित जन समुदाय का स्वागत किया। वरिष्ठ मलयाळम् समालोचक एम. लीलावती ने उद्घाटन व्याख्यान। अपने भाषण में उन्होंने 20वीं सदी में मलयाळम् आलोचना और विज्ञान लेखन में श्री भास्करन के महत्त्वपूर्ण योगदान को रेखांकित किया।

डॉ. लीलावती ने बताया कि अपने समकालीन आलोचकों से लगातार संवाद बनाए रखकर उन्होंने मलयाळम् साहित्यिक समालोचना के क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार किया।

प्रो. मैथ्यू ने अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. भास्करन की आलोचना के महत्त्वपूर्ण पहलुओं को उजागर किया। भास्करन में कला की स्वायत्तता के प्रति गहरा आदर भाव था। वहीं दूसरी तरफ़ विज्ञान लेखन के माध्यम से वे प्रकृति के जटिल रहस्यों को समझने की चेष्टा करते थे।

उनका विज्ञान लेखन वैज्ञानिक रीति-नीति और कलात्मक शैली के कारण अद्भुत था। उनकी गद्य शैली अनोखी और सुखद थी।

इसके पश्चात् डॉ. भास्करन नायर की साहित्यिक आलोचना पर केंद्रित प्रथम वैचारिक सत्र की अध्यक्षता वलसालन वाधुस्सेरी ने की। मलयाळम् आलोचक के.पी. संकरण ने अपने आलेख में डॉ. भास्करन नायर की गद्य-शैली के अनोखेपन को उजागर किया। एम.आर. राघव ने अपने आलेख में डॉ. भास्करन नायर की ब्रह्मांडीय दृष्टि और वैज्ञानिक नज़रिए को स्पष्ट किया। एस.एस. श्रीकुमार ने डॉ. भास्करन नायर द्वारा सी.वी. रणन पिळ्ळै के उपन्यासों पर लिखे आलेखों की पड़ताल की। एन. अजय कुमार ने अपने आलेख में भास्करन नायर की कविता आलोचना के कई पहलुओं की चर्चा की।

द्वितीय सत्र के.वी. दिलीप कुमार की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र को डॉ. भास्करन नायर के विज्ञान लेखन की पड़ताल के लिए समर्पित किया गया था। कवुम्बई बालकृष्ण ने अपने आलेख में स्पष्ट किया कि डॉ. भास्करन नायर मलयाळम् में विज्ञान लेखन के दूसरे चरण के प्रतिनिधि लेखक हैं। श्री नायर ने मलयाळम् के विज्ञान लेखन में गंभीरता और ख़ूबसूरती का बेहतरीन मेल पैदा किया।

के.वी. प्रसन्न कुमार ने अपने आलेख में एक साहित्यिक और विज्ञान लेखक के रूप में डॉ. भास्करन नायर के लेखन के अंतर्विरोध और जटिलता को परखने की चेष्टा की। वहीं जीवन जॉब थॉमस ने 21वीं सदी के विज्ञान लेखन से संबंधित डॉ. भास्करन नायर की लेखकीय दृष्टि और अभिवृत्ति की पड़ताल की।

चागंती सोमायाजुलु (चासो) जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी

17-18 जनवरी 2014, विजयनगरम

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रख्यात तेलुगु लेखक 'चासो' के गृहनगर विजयनगरम में 17-18 जनवरी 2014 को उनकी जन्मशती के अवसर पर दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

अपने आरंभिक भाषण में चासो की पुत्री चांगती तुलसी ने कहा कि चासो सही मायनों में आधुनिक तेलुगु साहित्य के अग्रदूत गुराजादा के सच्चे उत्तराधिकारी थे। उनकी ही तरह चासो भी अपने साहित्य के माध्यम से समाज को प्रभावित कर बेहतर बनाने को कृतसंकल्पित थे।

व्याख्यान देते हुए एन. गोपी। बाएँ से दाएँ : चांगती तुलसी, कालीपटनम रामाराव एवं केतु विश्वनाथ रेड्डी

प्रख्यात तेलुगु कवि एवं शिक्षाविद एन. गोपी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि चासो की 40 कहानियाँ बिना किसी मार्क्सवादी शब्दावली का प्रयोग किए समाज के कठोर यथार्थ और आर्थिक बुनियाद को पूरी तरह खोलकर रख देती है।

प्यार से का.रा. पुकारे जानेवाले 90 वर्षीय शीर्षस्थ कथाकार कालीपत्तनम रामा राव ने चासो के संस्मरण सुनाए और उनकी रचनाओं पर अपने विचार व्यक्त किए।

अध्यक्षीय भाषण में प्रख्यात तेलुगु लेखक-आलोचक केतु विश्वनाथ रेड्डी ने चासो की लेखकीय भूमि, उनका विकास, तेलुगु के प्रगतिशील लेखकीय आंदोलन में उनकी भूमिका, उनकी लेखकीय निपुणता, उनके प्रभाव और कभी न खत्म होनेवाले उनके मूल्यों की पड़ताल की।

संगोष्ठी के पहले सत्र की अध्यक्षता ख्यात शिक्षाविद यू.ए. नरसिम्हा मूर्ति ने की। उन्होंने कहा कि चासो की कहानियाँ कला के निकष पर इस क़दर कसी हुई हैं कि आप उसकी आत्मा को नष्ट किए बग़ैर उसमें से एक शब्द भी नहीं मिटा सकते।

ख्यात अनुवादक के.के. महापात्र ने अनुवाद के क्रम में चासो को जानने का अनुभव साझा किया। वहीं श्रेष्ठ कवि के. शिव रेड्डी ने 'राजनीतिक कथाकार' चासो द्वारा कहानियों को काव्य की तरह बुनने की महारत पर अपने विचार प्रकट किए। इसे और आगे बढ़ाते हुए चासो की छोटी पुत्री चागंती कृष्ण कुमारी ने चासो की कहानियों में 'संगीत और कला' विषय पर अपनी बातें रखीं।

दूसरे सत्र में *नव्य* पत्रिका के संपादक ए.एन. जगन्नाथ शर्मा, इतिहासकार वकुलाभरनम राजगोपाल आदि ने चासो की कहानियों की सामाजिक पृष्ठभूमि पर अपने विचार रखे। उन्होंने ग्राम्य जीवन और परंपरा से कसकर बुने क़स्बाई शहर विजयनगरम के समाज को आधुनिक पुनर्जागरण का अनोखा गवाह बताया।

रावी शास्त्री और का.रा. के आलेख 'समान विचारधारा और भिन्न मंतव्य : चासो पर एक तुलनात्मक दृष्टि' के माध्यम से मानवीय क्रियाकलापों को मार्क्सवादी दृष्टि से समझने और कलात्मक प्रयासों से उनमें सकारात्मक बदलाव लाने के चासो के प्रयास को समझने-समझाने की चेष्टा की।

कार्यक्रम में ख्यात आलोचक रामतीर्थ, अखिल भारतीय प्रगतिशील साहित्यांदोलन के सचिव पेनुगोंडा लक्ष्मीनारायण, कथाकार के. मल्लेश्वरी, आलोचक काकुमानी श्रीनिवास राव, सूरी सीतारमैया आदि की उपस्थिति में चासो को गहराई से समझने का प्रयास किया गया।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कथाकार चिंताकिंदी श्रीनिवास राव ने की। यहाँ लेखक पत्रकार शशिश्री ने बताया कि यूँ तो कहानी हमने अंग्रेज़ी परंपरा से ग्रहण की, लेकिन चासो ने उसे बहुत जल्दी तेलुगु से संस्कारित करके बेहद निजी और प्रसिद्ध बना दिया।

अरुणा कुमारी ने अपने आलेख में यह स्पष्ट किया कि चासो ने किस तरह अपनी कहानियों में महान सटीकता, अंतर्दृष्टि, आलोच्य विडंबना और अन्य जटिल सामाजिक व्यवहार को कुशलता से संपृक्त किया। चर्चित कथाकार अत्तदा अप्पलनायडू ने चासो के लेखन की शैली और भाषा पर प्रस्तुत अपने आलेख में चासो को विशिष्ट कथाकार बताया।

संगोष्ठी के समापन सत्र में चिकाती दिवाकर ने इसे एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक आयोजन बताया। चासो के प्रशंसक और ख्यात लेखक जी.एस. चलम ने संपूर्ण संगोष्ठी के विमर्श को सम्यक् रूप से संक्षेप में रखने का प्रयास किया। चागंती तुलसी और एन. गोपी ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'कोंकणी साहित्य की विरल प्रवृत्तियाँ' पर परिसंवाद

19 जनवरी 2014, मंगलूर

कोंकणी भास आणि संस्कृत प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वावधान में साहित्य अकादेमी ने 'कोंकणी साहित्य की विरल प्रवृत्तियाँ' विषय पर मंगलूर में 19 जनवरी 2014 को एक परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने श्रोताओं का स्वागत किया। विख्यात कोंकणी लेखक-आलोचक तथा कोंकणी परामर्श मंडल के सदस्य गोकुलदास प्रभु ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि कोंकणी साहित्य व्यापक बदलाव, आंदोलनों और विकास के दौर से गुज़रा है। इसके साहित्य पर पश्चिमी साहित्य का भी सीधा प्रभाव देखा जा सकता है। लेकिन इन सबके बीच कोंकणी साहित्य अपनी अनोखी धारा के साथ सदी के साहित्य में अपनी पहचान विकसित करने में पूर्णतः सफल हुआ है।

कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक तानाजी हलर्नकर ने कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि इस संगोष्ठी का मूल उद्देश्य कोंकणी साहित्य की विरल प्रवृत्तियों को पहचान देनेवाली साहित्य-कृतियों पर विचार-विमर्श है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता रमेश वेलुस्कर ने की। इस सत्र में प्रकाश पाडगांवकर की कविता में आध्यात्मिक एकांत' विषय पर आशा मंगुतकर ने अपना आलेख प्रस्तुत किया। परेश कामत ने 'माधव बोरकर की कविता की मौन धुन' शीर्षक आलेख पढ़ा। मंगुतकर ने अपने पत्र में विस्तार से बताया कि श्री अरबिंदो और बाकीबाब बोरकर का और वेदों-उपनिषदों का भी पडगांवकर की कविता पर सीधा प्रभाव स्पष्ट होता है। वहीं कामत ने बताया कि माधव बोरकर एक आधुनिक कवि थे। उन्होंने गेयता और ग़ैरपारंपरिक शैली को बिना शब्दाडंबर के अपनाया। उन्होंने महसूस किया कि बोरकर की कविता पर संगीत और यूरोपीय चित्रकारी का गहरा प्रभाव लक्षित होता है।

महाबलेश्वर सैल ने दूसरे सत्र की अध्यक्षता की। मेलविन रोड्रिग्ज ने सीएफ डी' कोस्टा के 'सुने माजार हांसता के अतियथार्थवाद' और अविनाश च्यारी ने 'पुंडलिक नायक के नाटकों में गदर' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। रोड्रिग्ज ने स्पष्ट किया कि सीएफ़ डी' कोस्टा के साहित्य में रचनात्मक माँग और सैद्धांतिक ज़रूरतों के बीच बेजोड़ संतुलन उन्हें उसकी ओर आकर्षित करता है। वहीं च्यारी ने बताया कि पुंडलिक नायक के नाटकों ने सामाजिक संस्थाओं के सामने नैतिक चुनौती प्रस्तुत की।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता माधव बोरकर ने की और मीना काकोडकर द्वारा 'एएन मांब्रो की कहानियों में चरित्र' विषय पर और गुरुदत्त बँटवालकर द्वारा 'एडविन जेएफ डीसूजा के *हॉव जीयेतम* में अस्तित्ववाद' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। वहीं वृशाली मांडरेकर ने 'महाबलेश्वर सैल के *युग सँधार* के सांस्कृतिक आयाम'

पर अपना निबंध प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का समापन पुंडलिक नायक के समापन वक्तव्य के साथ हुआ।

'कृश्नचंदर : साहित्य एवं चिंतन' पर परिसंवाद
19 जनवरी 2014, हैदराबाद

'कृश्नचंदर के साहित्य एवं चिंतन' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन अकादेमी द्वारा 19 जनवरी 2014 को हैदराबाद में किया गया। अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक और मशहूर कवि चंद्रभान ख़याल ने कहा कि कृश्नचंदर एक विशिष्ट उर्दू कथाकार थे, जिन्होंने उपन्यास और नाटक सहित फ़िल्मों के लिए पटकथा एवं संवाद लेखन के कार्य किए। उन्होंने बाल साहित्य की सर्जना भी की।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि एस.ए. शकूर ने भी कृश्नचंदर को उर्दू का अहम लेखक बताया। बेग अहसास ने अपने बीज-भाषण में कृश्नचंदर के विभिन्न पहलुओं को रेखांकित किया। उन्होंने कृश्नचंदर जैसे लेखकों की कमी पर चिंता प्रकट की। उन्होंने कृश्नचंदर को उर्दू कथा साहित्य का ऐसा महान रचनाकार बताया, जिसने उर्दू कथाधारा को व्यवस्थित किया।

कृश्नचंदर ने अपनी कथाओं में समाज के निम्न तबक़े को स्वर प्रदान की। मुश्ताक़ सदफ़ और वसीम बेगम ने कृश्नचंदर को मुख्यतः प्रगतिशील लेखक बताया।

द्वितीय सत्र लोकप्रिय कथाकार जीलानी बानो की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। उन्होंने कृश्नचंदर की कहानियों पर अपने विचार रखे। इस पत्र में सैयद मुस्तफ़ा कमाल और फ़ीरोज़ आलम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

मुज़्तबा हुसैन, जियाउद्दीन अहमद, अहमद शाकिब, कादिर जमां और असलम फ़ारुक़ी ने भी संवाद में हिस्सा लिया।

संगोष्ठी में हबीब निसार, तसनीम जौहर, अब्दुर्रब मंज़र, मो. काशिफ़, जफ़र गुलज़ार सहित विश्वविद्यालय के शिक्षकों और छात्रों की अच्छी उपस्थिति कार्यक्रम में रही।

विष्णु प्रभाकर जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
24-25 जनवरी 2014, बीकानेर

अकादेमी ने विष्णु प्रभाकर की जन्मशतवार्षिकी पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन बीकानेर राजस्थान में किया।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलाल मोहता ने कहा कि विष्णु प्रभाकर में शरतचंद्र जैसी भावुकता महात्मा गाँधी और टॉलस्टाय जैसी मानवता, महर्षि दयानंद जैसी तार्किकता और जैनेंद्र जैसी भाषा थी।

अपने बीज-भाषण में नंद भारद्वाज ने कहा कि विष्णु प्रभाकर के सर्वाधिक प्रभावित करने वाले चरित्र, स्त्री चरित्र रहे हैं। प्रेमचंद के बाद आदर्शपरक यथार्थ की परंपरा को उन्होंने बहुत सार्थक ढंग से आगे बढ़ाया।

अपने उद्घाटन व्याख्यान में अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक सूर्यप्रसाद दीक्षित ने कहा कि विष्णु प्रभाकर का व्यक्तित्व विरल और अनन्य है। शरतचंद्र की जीवनी *आवारा मसीहा* लिखने के लिए उन्होंने बाङ्ला भाषा सीखी और 14 साल तक शोध कार्य किया। इस जीवनी ने हिंदी साहित्य को बहुत समृद्ध बना दिया है। उद्घाटन सत्र के प्रारंभ में स्वागत भाषण अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य श्याम महर्षि ने दिया।

इस दिन के अगले सत्र में उनकी कहानियों पर मालचंद तिवाड़ी की अध्यक्षता में अनिता नवीन और बुलाकी शर्मा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस दिन के अंतिम सत्र में सुरेश सलिल की अध्यक्षता में विष्णु प्रभाकर के पुत्र अतुल प्रभाकर, सुधीर विद्यार्थी, रामकुमार

कृषक और श्याम महर्षि ने उनसे जुड़े संस्मरणों को साझा किया।

शनिवार 25 जनवरी के पहले सत्र में उनके उपन्यासों पर कौशलनाथ उपाध्याय की अध्यक्षता में बातचीत हुई। पंकज पराशर, अनिरुद्ध उमट और वत्सला पांडेय ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस दिन के विष्णु प्रभाकर के जीवनी साहित्य, संस्मरण एवं काव्य विषयक सत्र की अध्यक्षता रामशंकर द्विवेदी ने की। इस सत्र में रमेश ऋषिकल्प, राधेश्याम तिवारी और ब्रजरतन जोशी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तीसरे और चौथे सत्र में विष्णु प्रभाकर के बाल साहित्य, उनके नाटक एवं एकांकी तथा यात्रावृत्त पर प्रकाश मनु और प्रताप सहगल की अध्यक्षता में चर्चा हुई। इन सत्रों में दिविक रमेश, प्रत्यूष गुलेरी, रश्मि भार्गव, फूलचंद मानव, सुरेश्वर त्रिपाठी, रामजी बाली और राजेंद्र जोशी ने अपने विचार व्यक्त किए।

भगवतशरण उपाध्याय जन्मशती पर परिसंवाद

28 जनवरी 2014, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रसिद्ध पुरातत्वज्ञ, इतिहासवेत्ता, संस्कृति-मर्मज्ञ, विचारक, निबंधकार, आलोचक और कलाकार भगवशरण उपाध्याय पर एक परिसंवाद का आयोजन अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में 28 जनवरी 2014 को किया गया।

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए प्रसिद्ध आलोचक खगेन्द्र ठाकुर ने कहा कि जिन भगवतशरण उपाध्याय ने इतना विविध और विशाल साहित्य रचा, लेकिन उनके बारे में प्रायः बहुत कम लिखा गया है। उनकी जन्मशतवार्षिकी पर भी उनको ठीक से याद भी नहीं किया गया। आगे उन्होंने कहा कि जनता के प्रति उनकी उल्लेखनीय प्रतिबद्धता देखते हुए उनके विचारों के साथ न्याय होना चाहिए।

अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए प्रसिद्ध आलोचक निर्मला जैन ने कहा कि भगवतशरण जी मूलतः तर्क, विवेक और अनुसंधान को लेकर चलने और बढ़नेवाले व्यक्ति थे। इतिहास और साहित्य को देखने के लिए उनके पास एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण था।

मुख्य अतिथि प्रख्यात लेखक भगवान सिंह ने भगवतशरण उपाध्याय की संस्कृति संबंधी अध्ययन हमें मनुष्यता से सामाजिकता से और वैज्ञानिकता से जोड़ता है।

उद्घाटन सत्र में स्वागत अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने किया और आरंभिक वक्तव्य हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक सूर्य प्रसाद दीक्षित ने दिया।

दूसरे सत्र में मैनेजर पांडेय की अध्यक्षता में उषाकिरण खान, उदय प्रकाश अरोड़ा, गोपेश्वर सिंह और अरुण वर्मा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

खगेन्द्र ठाकुर, के. श्रीनिवासराव, सूर्य प्रसाद दीक्षित, निर्मला जैन तथा भगवान सिंह

'भारतीय साहित्य : परिवार और संबंधों की बदलती अवधारणा' पर संगोष्ठी

2-3 फ़रवरी 2014, तिरुर

साहित्य अकादेमी और थुंचन स्मृति न्यास द्वारा 2-3 फ़रवरी 2014 को 'भारतीय साहित्य : परिवार और संबंधों की बदलती अवधारणा' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि परिवार विभिन्न प्रकार की सोच एवं अभिरुचियों के लोगों को एक साथ और परस्पर लाभकारी संबंधों में बाँधता है। एक अर्थ में यह साहित्य और जीवन के लिए एक मॉडल तैयार करता है।

प्रख्यात बाङ्ला साहित्यकार अमिय देव ने संगोष्ठी का उद्घाटन एवं अध्यक्षता की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में साहित्य की सभी विधाओं में परिवार एवं संबंधों पर प्रकाश डालने में उपन्यास कदाचित् सबसे आगे रहा है। उन्होंने बंकिम चंद्र चटर्जी, रवींद्रनाथ ठाकुर, शरतचंद्र, ज्या पॉल सार्त्र, अल्बर्ट कामु, नैथाली सरान्ते और टॉल्सटाय की कृतियों में परिवार और रिश्तेदारी के वर्णनों पर विशद प्रकाश डाला। पी. पी. रवींद्रन ने बीज वक्तव्य देते हुए कहा कि परिवार के इतिहास और परंपराओं की जानकारी हमें साहित्य से हो सकती है। उन्होंने *रामायण, महाभारत* और *शाकुन्तलम्* से उदाहरण दिए।

तमिळ लेखिका वासंती ने अपने आलेख में संगम साहित्य, *शिलप्पदिकारम* आदि का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान लेखकों के मन में परिवार और रिश्तेदारी से आगे की कहीं वृहत्तर तस्वीर है। कोंकणी कथाकार दामोदर मावज़ो ने कहा कि उन्नीस सौ साठ के दशक में बदलाव और समाज पर इसके प्रभाव का चित्रण करते थे, जिसका अनुकरण बाद में अन्य भाषाओं के लेखकों ने किया। कन्नड लेखक के. मनु चक्रवर्ती ने कहा कि आधुनिक समय के दबाव में पारिवारिक संरचना के पुनर्गठन पर विचार करने की विवशता हो गई है। नई पीढ़ी के सामने संशय की स्थिति है कि पारिवारिक संरचना में परिवर्तन को वे स्वीकार करें अथवा नहीं। गुजराती लेखिका वर्षा दास ने कहा कि आधुनिक और उत्तर-आधुनिक गुजराती साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंधों, पारिवारिक कलहों और स्वतंत्रता की चाहत का गहन एवं विशद वर्णन है।

दूसरा सत्र 'मलयाळम् कविता : परिवार की अवधारणा में परिवर्तन' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता न्यास के उपाध्यक्ष डॉ. चटनाथ अच्युतानुन्नी ने की। इस सत्र में परंपरागत काव्य में परिवार की अवधारणा पर बोलते हुए एस. के. वसंतन ने कहा कि परंपरागत काव्य में परिवार संबंधी अवधारणा का कभी भी बड़ा फ़लक नहीं रहा है। के.एम. भरतन पारिवारिक पर उपनिवेशवादी प्रभाव पर बोलते हुए कहा कि अंग्रेज़ी शिक्षा और प्रिंट मीडिया ने भारतीय चिंतन को एकतरफ़ा प्रभावित किया है, बल्कि इससे परिवार की नई अवधारणा विकसित हुई है।

'रंगमंच और सामाजिक परियर्तन' विषय पर बोलते हुए संगीत नाटक अकादेमी के अध्यक्ष टी.एम. अब्राहम ने कहा कि परिवर्तन तो हो रहे हैं, किंतु परिवार के बिना आप रंगमंच की कल्पना भी नहीं कर सकते। 1860 से अब तक रंगमंच में हुए परिवर्तनों के संबंध में उन्होंने विस्तार से चर्चा की।

तृतीय सत्र 'कथा साहित्य और परिवार' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र में अनिल कोविलकम ने अतिथियों का स्वागत किया और इस सत्र की अध्यक्षता के.पी. रामनुन्नी ने की। 'एकल परिवार, अवधारणा और व्यवहार' पर बोलते हुए वल्सन वेथुसेरी ने कहा कि भारत का निर्माण परिवार की अवधारणा पर हुआ है। प्रदीपन पम्परीकुन्नू ने 'पारिवारिक दायरा' विषय पर बोलते हुए कहा कि अभी परिवार में महिलाओं के साथ गुलाम जैसा व्यवहार किया जाता है। लिंग को धर्म के साथ जोड़ा जाता है।

एस.वी. परमेश्वर भट्ट जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद

8 फ़रवरी 2014, मंगलोर

साहित्य अकादेमी ने मंगलोर स्थित एस.वी. परमेश्वर भट्ट जन्मशती स्मारक समिति के सहयोग से प्रख्यात कन्नड साहित्यकार एस.वी. परमेश्वर भट्ट पर परिसंवाद का आयोजन 8 फ़रवरी 2014 को श्री धर्मस्थल मंजुनाथेश्वर बी.बी.एम. महाविद्यालय सभागार, मंगलोर में किया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता आर्य लक्ष्मीनारायण अल्वा ने की। प्रख्यात विद्वान और अकादेमी के भाषा सम्मान से सम्मानित टी.वी. वेंकटाचल शास्त्री ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। विद्वान प्रसिद्ध लोक कथाकार और कन्नड विश्वविद्यालय, हंपी के पूर्व कुलपति बी.ए. विवेक राय ने बीज वक्तव्य दिया।

अकादेमी के बेंगलूरु कार्यालय के प्रभारी एस.पी. महालिंगेश्वर ने स्वागत भाषण किया। टी.वी. वेंकटाचल शास्त्री ने अपने उद्घाटन भाषण में अपने गुरु एस.वी. परमेश्वर भट्ट को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि प्रोफ़ेसर ने दूसरे के मार्ग का अनुसरण नहीं किया, वरना उन्होंने अपने लेखनी, अनुवाद और भाषण के माध्यम से खुद अपना मार्ग बनाया। सरल जीवन व्यतीत करते हुए भी उनका व्यक्तित्व लोकप्रिय एवं असाधारण था।

विवेक राय ने अपने बीज वक्तव्य में उल्लेख किया कि प्रो. भट्ट किस प्रकार से तटवर्ती ज़िले में सांस्कृतिक दूत बन गए थे, जहाँ पर वे सन् 1968 में कन्नड पोस्ट ग्रेजुएट केंद्र के प्रमुख बने थे। आधुनिक कन्नड साहित्य के इतिहास में उनकी सतत प्रयोगधर्मिता का अनुपम महत्त्व है। कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य दामोदर सेट्टी ने कन्नड के इस लोकप्रिय लेखक पर कार्यक्रम आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया।

'समकालीन संताली नाटक' पर संगोष्ठी

9 फ़रवरी 2014, विशाखापत्तनम

साहित्य अकादेमी ने विशाखापत्तनम में 9 फ़रवरी 2014 को 'समकालीन संताली नाटक' पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। विशेष कार्याधिकारी एन.सी. महेश ने अतिथियों-आगंतुकों का स्वागत किया। संताली लिपि 'ओलचिकी' का आविष्कार करने वाले रघुनाथ मुर्मु, जिनसे संताली के लिखित साहित्य की परंपरा शुरू हुई है, को इस अवसर पर श्रद्धांजलि दी गई।

संगोष्ठी को चार सत्रों में बाँटा गया था। एन. एन. हेंब्रम ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। जदुमणि बेसरा इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के संताली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक गंगाधर हांसदा ने की।

प्रथम सत्र खेरवाल सोरेन की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें जमादार किस्कू, दशरथ हांसदा, सिंगराय मुर्मु, गंगाधर तेंतुम और रमेश हांसदा ने 'संताली नाटकों की विषय-वस्तु', 'संताली नाट्यशालाओं की सज्जा', 'संताली नाटकों के कलाकारों के वस्त्राभूषण', 'संताली नाट्यशालाओं का प्रबंध' एवं 'पर्दे पर संताली नाटक' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र रविलाल टुडु की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में महेश मुर्मु, पीतांबर हांसदा, दुर्गापद हेंब्रम और कृष्ण प्रसाद हांसदा ने क्रमशः अभिनय, संवाद, निर्देशन और सामाजिक प्रभाव पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र गंगाधर हांसदा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। जितराय हांसदा, श्याम चरण मांडी, सरोज कुमार सोरेन और सुशील हांसदा ने क्रमशः संताली रंगशाला, दर्शक प्रतिक्रिया, आर्थिक पक्ष और संताली नाटक एवं 'रंगशाला की प्रवृत्ति' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में श्रोताओं की अच्छी उपस्थिति रही।

हरीश वासवाणी पर परिसंवाद

11 फ़रवरी 2014, आदिपुर

राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद् और भारतीय सिंधोलोजी संस्थान के संयुक्त तत्त्वाधान में साहित्य अकादेमी ने 11 फ़रवरी 2014 को आदिपुर में उत्कृष्ट सिंधी साहित्यकार हरीश वासवाणी पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। प्रख्यात सिंधी लेखक मोती प्रकाश ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। साहित्य अकादेमी, मुंबई कार्यालय के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंवहुने ने अतिथियों का औपचारिक स्वागत करते हुए वासवाणी के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। अकादेमी के सिंधी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक प्रेम प्रकाश ने कहा कि वासवाणी की रचनात्मक उत्कंठा ने उन्हें कविता से इतर अन्य विधाओं में भी हाथ आज़माने को प्रेरित किया। फिर एक पत्रकार के रूप में भी उनका जीवन उत्कृष्ट रहा। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि एनसीपीएसएल के उपाध्यक्ष रमेश वर्लियाणी ने कहा कि अकादेमी के साथ मिलकर वासवाणी पर इस संगोष्ठी के आयोजन ने उन्हें खुशी प्रदान की है। भारतीय सिंधोलोजी संस्थान की अध्यक्ष लक्ष्मी खिलाणी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने वासवाणी के साथ अपनी मैत्री को याद किया। प्रीतम वारियाणी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता मोती प्रकाश ने की। कला प्रकाश ने 'हरीश वासवाणी का जीवन और काल' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। शेफाली वासुदेव के आलेख का शीर्षक था— *हरीश वासवाणी : मेरे पिता, मेरे मित्र*। सुश्री वासुदेव ने उन्मुक्त होकर एक लेखक और एक व्यक्ति के रूप में अपने पिता के बहुआयामी व्यक्तित्व से लोगों का परिचय करवाया। उन्होंने बताया कि उनमें एक-दूसरे का अंतर्विरोध करते कई व्यक्तित्व सन्निहित थे। 'हरिश वासवाणी : एक विलक्षण व्यक्तित्व' शीर्षक अपने आलेख में अमित बोदाणी ने वासवाणी के व्यक्तित्व की अनेक परतें खोलीं।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता अर्जन हासिद ने की। इसमें वासदेव मोही द्वारा 'वासवाणी की कविता : एक मूल्यांकन', कमला गोकलाणी द्वारा 'हरीश वासवाणी की कहानियाँ' तथा नामदेव ताराचंदाणी द्वारा 'हरीश वासवाणी की आलोचना' विषय पर आलेख प्रस्तुत किए गए।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता आसत्र वासवाणी ने की। इस सत्र में मोहन हिमथाणी 'कविता के लिए हरीश वासवाणी के प्रयोगशालायी प्रयोग', बिम्मी सदारंगानी ने 'हरीश वासवाणी का धारा स्तंभ', कीर्ति खत्री ने 'स्तंभ लेखक हरीश वासवाणी', 'हीरो ठाकुर ने 'हरीश वासवाणी का संपादन कार्य' और जेठो लालवाणी ने 'हरीश वासवाणी के नाटक' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किए। साहिब बिजाणी ने वासवाणी से जुड़े अपने संस्मरण सुनाए। प्रेम प्रकाश ने कार्यक्रम का समापन वक्तव्य दिया।

बाएँ से दाएँ : प्रेम प्रकाश, मोती प्रकाश, लक्ष्मी खिलाणी तथा प्रीतम वारियाणी

'उन्नीसवीं सदी में भारतीय पुनर्जागरण और इसका तत्कालीन साहित्य पर प्रभाव' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

12-13 फ़रवरी 2014, डिब्रूगढ़

साहित्य अकादेमी ने डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के असमिया विभाग के सहयोग से 12-13 फ़रवरी 2014 को लक्ष्मीनाथ बेज़बरूआ के 150 वें जन्मदिवस पर 'उन्नीसवीं सदी में भारतीय पुनर्जागरण और इसका तत्कालीन साहित्य पर प्रभाव' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में स्वागत भाषण गौतम पॉल ने दिया। अर्पणा कोनवर ने आरंभिक भाषण देते हुए कहा कि उन्नीसवीं सदी में भारतीय साहित्य में आधुनिकता लाने में बेज़बरूआ का असीम योगदान रहा है।

कार्यक्रम का उद्घाटन मराठी के वरिष्ठ साहित्यकार भालचंद्र नेमाडे ने किया। उन्होंने भारत में उपनिवेशवाद की व्याख्या करनेवाले उन अनेक मापदंडों का उल्लेख किया, जिनका प्रभाव भारत की मनः स्थिति पर पड़ा।

साहित्य अकादेमी के बाङ्ला भाषा परामर्श मंडल के संयोजक रामकुमार मुखोपाध्याय ने बीज भाषण किया। उन्होंने रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद और लक्ष्मीनाथ के उन प्रयासों का उल्लेख किया, जिनसे हमें सत्य की खोज करने और एकात्म भाव प्राप्त करने में मदद मिली।

मुख्य अतिथि नगेन सैकिया ने लक्ष्मीनाथ के बहुआयामी व्यक्तित्व की विभिन्न छटाओं का उल्लेख किया तथा असमिया संस्कृति, साहित्य और समाज को संपन्न बनाने में अनेक योगदान को स्मरण किया। उन्होंने बंगाल के पुनर्जागरण का बेज़बरूआ पर प्रभाव का भी उल्लेख किया। साहित्य अकादेमी के असमिया भाषा परामर्श मंडल के संयोजक करबी डेका हज़ारिका ने अपने अध्यक्षीय भाषण में इस बात पर ज़ोर दिया कि भारतीय पुनर्जागरण का भारत की विभिन्न भाषाओं पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन होना चाहिए। उद्घाटन सत्र में सत्यम् बरठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

प्रथम सत्र में अशोक कुमार झा 'अविचल', इरोम रबींद्र सिंह, मनोरमा विश्वाल महापात्र और श्रीमती चक्रवर्ती ने अपने आलेख पढ़े। नंदिता बोस ने इस सत्र की अध्यक्षता की। श्री झा ने अपने आलेख में समस्त भारतीय साहित्य पर पर्नुजागरण के प्रभाव का उल्लेख किया। श्री सिंह ने 'उन्नीसवीं सदी में भारतीय पुनर्जागरण : मणिपुरी साहित्य के विकास पर प्रभाव' शीर्षक आलेख पढ़ा। श्रीमती महापात्र ने 'उन्नीसवीं सदी में भारतीय पुनर्जागरण और तत्कालीन साहित्य पर समकालीन प्रभाव' शीर्षक आलेख पढ़ा। इसमें उन्होंने उस समय बाङ्ला, असमिया और ओड़िया साहित्य में मौजूद प्रवृत्तियों और पुनर्जागरण पर उनके प्रभाव का उल्लेख किया।

द्वितीय सत्र में खेमराज ने 'बेज़बरूआ और उनके समकालीन नेपाली पत्रकारिता' विषयक आलेख में कहा कि तत्कालीन नेपाली पत्रिकाओं के प्रभाव से नेपाली साहित्य में रोमानी प्रवृत्तियों का उदय हुआ। मामोनी गोगई बरगोहाइं तथा स्वाति किरण ने 'लक्ष्मीनाथ बेज़बरूआ के साहित्य में रोमानीवाद' शीर्षक संयुक्त आलेख में उन्होंने बेज़बरूआ के दो ग्रंथों *पदुमकली* और *कदमकली* का उल्लेख किया और कहा कि इनके प्रभाव से असमिया साहित्य में रोमानीवाद का उदय हुआ। पापोरी गोस्वामी ने 'भारतीय पुनर्जागरण और तत्कालीन समाज पर इसके प्रभाव' नामक आलेख प्रस्तुत किया।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के मणिपुरी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक प्रो.एच. बिहारी सिंह ने की।

अरिंदम बरकतकी ने अपने आलेख 'उन्नीसवीं सदी में भारतीय पुनर्जागरण और इसका असमिया साहित्य पर प्रभाव' में अनंदरन डी. फूकन, गुणाभिराम बरूआ और हेमचंद्र बरूआ जैसे साहित्यकारों का उल्लेख किया, जिनका प्रभाव भारतीय पुनर्जागरण पर पड़ा। जयंत कुमार बर'

ने अपने आलेख 'उन्नीसवीं सदी के भारतीय पुनर्जागरण के परिप्रेक्ष्य में ईश्वरचंद्र विद्यासागर का सामाजिक आंदोलन और तत्कालीन असमिया नाटकों पर इसके प्रभाव' में ऐतिहासिक संदर्भों का उल्लेख किया। सुवासन महंत चौधरी और नबकुमार चमुआ ने संयुक्त रूप से 'उन्नीसवीं सदी के भारतीय पुनर्जागरण का असमिया पत्रिकाओं पर प्रभाव' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया। समापन सत्र की अध्यक्षता कैलाश पटनायक ने की और समापन भाषण आनंद बरमुदै ने दिया। अंत में सत्काम बरठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'जनजातीय लेखक और असमिया साहित्य' पर परिसंवाद

14 फ़रवरी 2014, नमफाके, असम

साहित्य अकादेमी ने 14 फ़रवरी 2014 को नमफाके गाँव, नहरकटिया, असम में 'जनजातीय लेखक और असमिया साहित्य' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया।

डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति कंदर्पकुमार डेका ने उद्घाटन भाषण दिया। असमिया भाषा परामर्श मंडल के सदस्य अतनु भट्टाचार्य ने आरंभिक व्याख्यान दिया। उन्होंने जनजातीय भाषाओं की लिपियों और उनकी साहित्यिक परंपराओं के संदर्भों का उल्लेख किया।

ज्ञानपाल महाथेरों ने जनजातीय असमिया साहित्य के इतिहास पर प्रकाश डाला। फणींद्र कुमार देव चौधरी ने कहा कि ताय फाके लेखकों का योगदान न केवल उनके अपने साहित्य को, बल्कि असमिया और भारतीय साहित्य को भी समृद्धि देने में है।

प्रसिद्ध लेखक और पत्रकार पायम थी गोहाईं ने बीज भाषण किया। उन्होंने इस परिसंवाद के उद्देश्य को स्पष्ट किया। करबी डेका हज़ारिका ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में ताय फाके समुदाय की सामाजिक प्रथाओं, संस्कृति और साहित्यिक परंपरा का उल्लेख किया। आरंभ में गीतम पॉल ने स्वागत भाषण दिया। जबकि सत्रांत में सत्यम बरठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

प्रथम सत्र में आंग सिंग श्याम ने अपने आलेख में ताय भाषा के भाषा वैज्ञानिक पक्षों पर प्रकाश डाला। इस सत्र में नगी पेथोन गोहाईं ने 'ताय भाषा और इसकी विविधापूर्ण सांस्कृतिक परंपरा' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया। बनवांग लोशु ने वांगशो भाषा और इसकी लिपि पर अपने विचार व्यक्त किया। इस सत्र की अध्यक्षता भीमकंठ बरूआ ने की।

तृतीय सत्र में चिकरी तिस्स, फोजेट नोंग वा और मणिराम सोनोवाल ने अपने आलेख पढ़े। ऐथिंग हून बेंग केन ने इस सत्र की अध्यक्षता की। सोनोवाल ने अपने आलेख में सोनोवाल कछारी जनजाति की संस्कृति और परंपराओं का उल्लेख किया। श्री वा ने अपने आलेख में नोकते समुदाय की भाषा का भी उल्लेख किया, जो केवल मौखिक रूप में उपलब्ध हैं, लिखित रूप में नहीं। श्री तिस्स ने करबी आडलोड समुदाय की वाचिक परंपराओं पर प्रकाश डाला।

आम चोन गोहाईं ने ताय फके समुदाय के लोक साहित्य पर चर्चा की। उन्होंने कुछ लोक गीतों को गाकर भी सुनाया। समापन सत्र में समापन भाषण शांतुन तमुली ने दिया।

'योग वासिष्ठ और भारतीय परंपरा' पर संगोष्ठी

18-20 फ़रवरी 2014, वाराणसी

साहित्य अकादेमी ने ज्ञान-प्रवाह के सौजन्य से 'योग वासिष्ठ एवं भारतीय चिंतन परंपरा' विषय पर 18-20 फ़रवरी 2014 को एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

बाएँ से दाएँ : कमलेश दत्त त्रिपाठी, ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, राधावल्लभ त्रिपाठी, वागीश शुक्ल एवं सुधांशु शास्त्री

किया। यह आयोजन वाराणसी स्थित, सांस्कृतिक अध्ययन एवं शोध केंद्र के 'ज्ञान-प्रवाह' सभागार में हुआ। सुधांशु शेखर शास्त्री ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की और कमलेश दत्त त्रिपाठी ने उद्घाटन भाषण दिया। वागीश शुक्ल ने बीज-भाषण रखा। संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक राधावल्लभ त्रिपाठी ने आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन, पहले दो सत्र 'योग वासिष्ठ की पाठ्य परंपरा एवं पाठ्यालोचना' तथा 'योग वासिष्ठ एवं निगमागम परंपरा' को समर्पित रहे। दोनों सत्र पियरे-साइल्विन फिजियोजाट की अध्यक्षता में संपन्न हुए। चंद्रकांत शुक्ल, हरेराम त्रिपाठी, वसुंधरा फिलियोजोट, वागीश शुक्ल, ओमप्रकाश पांडेय, ए.एस. नरसिंम्हा मूर्ति एवं सच्चिदानंद मिश्र ने इस सत्रों में अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तीसरे दिन की संगोष्ठी के तीसरे सत्र का विषय 'योग वासिष्ठ की दार्शनिक परंपरा' था। इसमें मार्क डिजकोवास्की, वेट्टीना बेउमर, कृष्णकांत शर्मा और राजेंद्र प्रसाद शर्मा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चौथा सत्र रामनाथ शर्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ और इस सत्र का प्रसंग 'योग वासिष्ठ एवं भिन्न परंपराएँ' था। विंधेश्वरी प्रसाद मिश्र ने 'योग वासिष्ठ की टीकाएँ' पर अपने विचार रखे तो साथ ही, चंदन पांडेय और इला कुमार ने भी अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता युगल किशोर मिश्र ने की, जिसमें समापन वक्तव्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने प्रस्तुत किया। संगोष्ठी के अंत में आचार्य नीलकंठ पुरुषोत्तम जोशी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

'मलयाळम् में बाल साहित्य' पर परिसंवाद

19 फ़रवरी 2014, चंगनचेरी

साहित्य अकादेमी ने एन.एस.एस. हिंदू कॉलेज, चंगनचेरी के मलयाळम् विभाग के सहयोग से 19 फ़रवरी 2014 को 'मलयाळम् बाल साहित्य' पर एक परिसंवाद का आयोजन किया। मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य सी. आर. प्रसाद ने उपस्थित श्रोताओं और प्रतिभागियों का स्वागत किया। सामान्य परिषद् के सदस्य के.एस. रविकुमार ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। एन.एस.एस. कॉलेज के प्रधानाचार्य एन. जगदीशचंद्रन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अपने भाषण में उन्होंने *बालरामायण* से लेकर अद्यतन बाल साहित्य के ऐतिहासिक महत्त्व पर प्रकाश डाला। इसके बाद पाँच महत्त्वपूर्ण आलेख पढ़े गए। के. श्रीनिवासकुमार ने कहा कि बाल साहित्य में इस इलेक्ट्रॉनिक युग में समाज में होनेवाले परिवर्तनों की

झलक होनी चाहिए। सिप्पली पल्लिपुरम् ने बाल काव्य पर आलेख पढ़ा और प्रख्यात कवियों की कुछ कविताओं का पाठ किया। उन्होंने केरल की लोक परंपराओं की कुछ कविताओं का भी पाठ किया। राधिका नायर ने कुछ अनुवादों में व्याप्त त्रुटियों की ओर संकेत किया। एस.आर. लाल ने उपन्यास और बाल साहित्य पर आलेख पढ़ा। उन्होंने मलयाळम् बाल उपन्यास की विषय-वस्तु और शैली पर प्रकाश डाला।

अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए सिप्पली पालिपुरम

दो सत्रों में विभाजित परिसंवाद का संचालन सी. आर. प्रसाद और जॉर्ज जोसेफ़ ने किया। परिसंवाद के अंत में मलयाळम् विभाग के अध्यक्ष एस. राजलक्ष्मी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सी.एल. एंटनी जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद

20 फ़रवरी 2014, कालडि

सी.एल. एंटनी जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर साहित्य अकादेमी ने श्रीशंकराचार्य विश्वविद्यालय, कालडि के मलयाळम् विभाग के सहयोग से एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया। इस परिसंवाद का विषय था– *मलयाळम् में वैयाकरणिक अध्ययन*।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्रीशंकराचार्य विश्वविद्यालय, कालडि के कुलपति एम.सी. दिलीप ने की। मलयाळम् विभाग के अध्यक्ष एवं सामान्य परिषद् के सदस्य के.एस. रविकुमार ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। प्रसिद्ध मलयाळम् लेखक और आलोचक एम. लीलावती ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि मलयाळम् में वैयाकरणिक अध्ययन के क्षेत्र में सी. एल. एंटनी का कार्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। ए.आर. राजाराम वर्मा द्वारा रचित *केरलपाणिनीयम्* की व्याख्या बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने एक शिक्षक और शोध निदेशक के रूप में एंटनी डॉ. लीलावती की पी-एच. डी. के शोध निर्देशक रहे थे।

महाराजा कॉलेज एरनाकुलम् में सी.एल. एंटनी के छात्र रहे थॉमस मैथ्यू ने उनके संबंध में अपने संस्मरण सुनाए। प्रथम सत्र की अध्यक्षता के.एस. रविकुमार ने की। इस सत्र में टी.बी. वेणुगोपाल पणिक्कर ने 'केरलपाणिनीयम् से लेकर केरलपाणिनीयम् भाष्यम् तक पर टिप्पणी' नामक आलेख पढ़ा। एन. श्रीनाथन ने अपने आलेख में कहा कि सी.एल. एंटनी ने मलयाळम् में व्याकरण अध्ययन की एक नई पद्धति का सिद्धांत विकसित किया। के.वी. शशि ने अपने आलेख में कहा कि श्री एंटनी व्याकरण के अध्ययन में सामाजिक पक्षों का समावेश करते थे।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता सुनील पी. एलाडियम ने की। इस सत्र में सी. आर. प्रसाद ने 'शब्द और अर्थ' नामक अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि परिवर्तन भाषा का मुख्य स्वभाव होता है। सी.एल. एंटनी ने हमेशा भाषा की इस प्रकृति को ध्यान में रखते हुए व्याकरण का अध्ययन किया। डॉ. जोसेफ़ के. जॉब ने उल्लेख किया कि सी.एल. एंटनी का भाषा अध्ययन हमेशा सामाजिक पक्ष पर केंद्रित रहा है।

'21वीं सदी के पहले दशक में पंजाबी भाषा-साहित्य-संस्कृति के संदर्भ एवं सरोकार' पर संगोष्ठी

20-21 फ़रवरी 2014, चंडीगढ़

पंजाब विश्वविद्यालय के गुरु नानक सिख अध्ययन विभाग के सहयोग से साहित्य अकादेमी ने '21वीं सदी के पहले दशक में पंजाबी भाषा-साहित्य-संस्कृति के संदर्भ एवं सरोकार' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। चंडीगढ़ में यह आयोजन 20-21 फ़रवरी 2014 को किया गया। पंजाब विश्वविद्यालय के कुलपति अरुण कुमार ग्रोवर ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इससे पहले साहित्य अकादेमी की प्रकाशन सहायक मनजीत कौर भाटिया ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक रवैल सिंह ने उत्कृष्ट पंजाबी साहित्य के गुणात्मक अध्ययन का आग्रह किया।

अमृतसर स्थित गुरुनानक देव विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति सतिंदर सिंह ने अपने बीज-भाषण में इस बात का ध्यान रखने का सुझाव दिया कि पंजाबी लेखन के इतिहास और विकासात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने के चक्कर में उसके दार्शनिक और सांस्कृतिक आयामों की अनदेखी न हो जाए। अपने अध्यक्षीय भाषण में डी.डी.एस. संधू ने कहा कि संचार तकनीकी की वैश्विकता से प्रस्तुत वातावरण की चुनौतियों के बीच यह चिंता करने की आवश्यकता है कि पंजाबी भाषा-साहित्य-संस्कृति लुप्तप्राय जीव न बन जाए। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि जसपाल सिंह ने पंजाबियों की उदार, बहुआयामी और उद्यमी प्रवृत्ति को रेखांकित किया, जिसने इस भाषा को अंतर्राष्ट्रीय पहचान प्रदान की है। पंजाबी परामर्श मंडल के सदस्य दीपक मनमोहन सिंह कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि थे।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता जसविंदर सिंह ने की। जादीश सिंह, जोगा सिंह, बूटा सिंह बरार, सुखदेव सिंह, उमा सेठी एवं गुरनैब सिंह ने 21वीं सदी के पहले दशक में कथा लेखन की भिन्न विधाओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र राइन्दर सिंह भट्टी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें हरसिमरत सिंह रंधावा, गुरपाल सिंह संधू, धनवंत कौर, रामिंदर कौर, योगराज अंगरीश और कुलबीर सिंह ने सदी के पहले दशक में लिखी कविताओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

21वीं सदी के प्रथम दशक में पंजाबी साहित्य की प्रगति में नाटक और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की भूमिका पर आधारित तृतीय सत्र हरभजन सिंह भाटिया की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें सतनाम सिंह जस्सल, मनजीत सिंह, सुरजीत सिंह भाटी, राजिन्दर बरार, जसपाल सिंह कांग, सुरिन्दर कुमार दावेश्वर और गुरमुख सिंह ने अपने आलेख पढ़े।

समापन सत्र में रवि रविन्दर ने संगोष्ठी पर अपनी राय रखी। मुख्य अतिथि ए.के. भंडारी ने प्रतिभागियों को उनके उत्कृष्ट आलेखों के लिए बधाई दी। समापन वक्तव्य में सतीश कुमार वर्मा ने पूरे संदर्भ में नाटक पर अपने विचार रखे।

'डोगरी साहित्य में बदलता सामाजिक एवं मानवीय मूल्य' पर परिसंवाद

21 फ़रवरी 2014, जम्मू

साहित्य अकादेमी ने जम्मू के के.एल. सहगल सभागार में 'डोगरी साहित्य में बदलता सामाजिक एवं मानवीय मूल्य' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 21 फ़रवरी 2014 को जम्मू में किया।

अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक ललित मगोत्रा ने आगंतुकों का स्वागत किया तथा विषय की प्रस्तावना की। उन्होंने कहा कि प्रगति और पथ का पता लगाने के लिए साहित्य की समीक्षा और मूल्यांकन आवश्यक है।

परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए जम्मू के केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रति-कुलपति राजीव गुप्ता ने डोगरी भाषा के लंबे संघर्ष को रेखांकित किया। प्रख्यात डोगरी लेखिका वीणा गुप्ता ने अपने बीज-भाषण में कहा कि यूँ तो साहित्य स्पष्टतया व्यक्तिपरक होता है, किंतु उसका प्रभाव वैश्विक होता है।

आलेख-पाठ सत्र नीलांबर देव शर्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। 'डोगरी कविताओं में बदलता सामाजिक एवं मानवीय मूल्य' विषय पर अपने आलेख में सुनील शर्मा ने कहा कि समाज की कमान असभ्य, क्रूर और भ्रष्ट लोगों के हाथ आ चुकी है। सभ्य असभ्य बन रहे हैं। समाज क्षरित हो रहा है। संवेदनशील और भावुक पीड़ित हैं। उनका दर्द कविताओं में फूट रहा है।

यश रैना ने 'डोगरी कथाओं में बदलता सामाजिक एवं मानवीय मूल्य' विषय पर अपने आलेख में कहा कि समाज में व्याप्त ऋणात्मक-धनात्मक विचार और मूल्य समकालीन कहानियों में मुखर हैं और समाज में महिलाओं की बदलती भूमिका भी यहाँ विस्तृत हुई है।

नीलांबर देवशर्मा ने अपने विचार प्रकट करते हुए जीवन की जटिलता का ज़िक्र किया। आख़िर इसे समझना इतना कठिन क्यों हो रहा है। उन्होंने लेखक पर समाज के गहरे प्रभाव को भी रेखांकित किया।

अली सरदार जाफ़री जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी

22-24 फ़रवरी 2014, दिल्ली

प्रख्यात उर्दू लेखक अली सरदार जाफ़री की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर साहित्य अकादेमी ने 22-24 फ़रवरी 2014 को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। देशभर से पधारे 60 विद्वानों ने जाफ़री के बहुआयामी व्यक्तित्व और पहलुओं पर इस संगोष्ठी में अपने उद्गार व्यक्त किए।

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्याता उर्दू आलोचक गोपी चंद नारंग ने अपने अभिभाषण में जाफ़री साहब को प्रगतिशील लेखकों का अगुवा बताया। जोश के प्रभाव में उनकी कविताएँ सीधा संवाद करती थीं। मानवता, बंधुत्व और देशभक्ति उनकी कविता के ख़ास मूल्य थे।

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि अली सरदार जाफ़री हिंदी में भी उतने ही ख्यात थे, जितने कि उर्दू में। उन्होंने ग़ालिब को हिंदी साहित्यिक क्षेत्र में प्रस्तावित किया। उन्होंने मीर तक़ी मीर, मीरा बाई और कबीर की रचनाएँ पूरी प्रस्तावना के साथ प्रकाशित कीं।

अपने उद्घाटन भाषण में मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी के प्रतिकुलपति ख़्वाजा मोहम्मद शाहिद ने कहा कि कवि, आलोचक, कथाकार, नाटककार अली सरदार जाफ़री महान प्रतिभा संपन्न थे। उन्होंने पूरब और पश्चिम के अंतर को अपने लेखन से पाट दिया।

अपने बीज-भाषण में अली अहमद फ़ातमी ने कहा कि जाफ़री साहब ने शोषण और विषमता के मुद्दे को गंभीरता से बरता है।

संगोष्ठी के आरंभ में विद्वानों का स्वागत करते हुए अकादेमी सचिव के. श्रीनिवासराव ने अली सरदार जाफ़री को भारतीय साहित्य की अहम आवाज़ बताया। चंद्रभान ख़याल ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए जाफ़री को उर्दू कविता का पुरोधा बताया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता सैयद तक़ी आबिदी ने की। अपने व्याख्यान में उन्होंने कहा कि जाफ़री लाक्षणिक कवि थे, पर उन्होंने जमकर प्रयोग भी किए। निज़ाम सिद्दिक़ी ने 'सरदार जाफ़री का आलोचनात्मक वैशिष्ट्य' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। बेग एहसास ने 'एशिया जाग उठा' शीर्षक कविता पर आलोचनात्मक आलेख प्रस्तुत किया। 'सरदार जाफ़री और इक़बाल' शीर्षक आलेख अफ़ाक अहमद ने प्रस्तुत किया। 'लखनऊ की पाँच रातें' पर रक़ंदा जलील ने आलेख प्रस्तुत किया।

बाएँ से दाएँ : ख़्वाजा मोहम्मद शाहिद, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, अली अहमद फ़ातमी एवं चंद्रभान ख़याल

संगोष्ठी के तीसरे दिन प्रथम सत्र सादिक़ुर रहमान किदवई की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। जाफ़री को उन्होंने अपने समय का प्रतिनिधि कवि बताया। इब्न-ए-कँवल, सैफ़ी सिरोंजी और जमील अख़्तर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता अख़्तरुल वासे ने की। इसमें शमीम तारिक़ और मौला बख़्श ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता फ़ज़ल इमाम रिज़वी ने की। इस सत्र में अनवर पाशा एवं नुसरत ज़हीर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अंतिम सत्र कविता-पाठ को समर्पित रहा। चंद्रभान ख़याल की अध्यक्षता में इस सत्र में शाहिद माहुली, शाइस्ता यूसुफ़, पी.पी. श्रीवास्तव 'रिंद' शकील आज़मी, शम्स् रम्ज़ी और मोईद रशीदी ने अपनी कविताओं का पाठ किया। कार्यक्रम अधिकारी मुश्ताक़ सदफ़ ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

तीसरा सत्र कविता-पाठ का था। इसमें फ़रहत एहसास ने आत्मानुभूति को अभिनव तरीक़े से प्रस्तुत किया तो जयंत परमार ने दलित मुद्दों पर पाठ किया। असद रज़ा की कविताएँ सामाजिक राजनीतिक भावबोध पर केंद्रित थीं। राशिद अनवर, इफ़्फ़त ज़रीन ने भी कविताएँ सुनाईं।

संगोष्ठी के दूसरे दिन प्रथम सत्र अब्दुल कलाम क़ासमी की अध्यक्षता में हुआ, जहाँ उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में जाफ़री को बहुआयामी व्यक्तित्व बताया। इस सत्र में अतीक़ुल्लाह, एफ़.एस. एजाज़, अतहर फारुक़ी और उमर रज़ा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता शाफ़े किदवई ने की। इस सत्र में ख़ालिद अल्वी और रज़ा हैदर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता शाफ़े किदवई ने की। इस सत्र में वसीम बेगम, हुमायुँ अशरफ़ और फ़ज़ल इमाम रिज़वी ने जाफ़री के साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की।

चतुर्थ सत्र कविता-पाठ का था। शीन काफ़ निज़ाम ने इस सत्र की अध्यक्षता की। ख़लील मामून, सैयद तक़ी आबिदी, आज़िम गुरविंदर सिंह कोहली और मोईन शादाब ने अपनी रचनाएँ सुनाईं।

सूफ़ी लेखन पर संगोष्ठी

25 फ़रवरी 2014, लखनऊ

साहित्य अकादेमी द्वारा 'सूफ़ी लेखन' 25 फ़रवरी 2014 को लखनऊ के हिंदी संस्थान सभागार में एक संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी की उपसचिव गीतांजलि चटर्जी ने आमंत्रित अतिथियों और श्रोताओं का औपचारिक स्वागत किया। अकादेमी के कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक और प्रख्यात कश्मीरी लेखक मो. ज़मान आज़ुर्दा ने अपना विद्वत्तापूर्ण बीज-भाषण

प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि एक समाज के रूप में हम जो भी समस्याएँ झेलते हैं, उन सबका हल जाति, रंग, धर्म या राष्ट्रीयता से परे जाकर हर हमराह इन्सान से प्यार करने में है और सूफ़ीमत बिलकुल यही सीख देता है। वह मानव को ईश्वर की सर्जना से प्रेम करने की शिक्षा देता है। उन्होंने आगे कहा कि जब तक ईश्वर और मानव के बीच संबंध बरक़रार है, सूफ़ीमत प्रासंगिक रहेगा और जनमानस को प्रेरित करता रहेगा।

इस अवसर पर हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक सूर्य प्रसाद दीक्षित ने इस तथ्य को रेखांकित किया कि किस प्रकार हिंदी और उर्दू के कवियों ने अपनी सूफ़ी कविताओं से जनमानस को प्यार का संदेश दिया। उन्होंने श्रोताओं को अनेक सूफ़ी कवियों और उनकी रचनाओं से अवगत कराया। उन्होंने आगे कहा कि सूफ़ीमत इस्लामी शिक्षा के अंकुर और भारतीय रहस्यवाद का सम्मिश्रण है। इसमें समाज में व्याप्त बुराइयों का उपचार मौजूद है। हमने अपने क्षेत्र में कई सूफ़ी प्रतिनिधि देखे हैं, जिनकी रचनाओं पर स्थानीय अवधी भाषा का प्रभाव दीखता है।

कवि और प्रध्यापक शानब रुदौलत ने पूर्व वक्ताओं के विचारों से सहमति जताते हुए कहा कि जहाँ धर्म समाज को बाँटता है, सूफ़ीमत हम सबको एक करता है, यही वजह है कि हर तरह के मतावलंबी सूफ़ी दरगाह पर एकत्र होते हैं।

पं. नरेंद्र शर्मा जन्मशतवर्षिकी पर संगोष्ठी

26-27 फ़रवरी 2014, मुंबई

प्रख्यात कवि और गीतकार पं. नरेंद्र शर्मा की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर साहित्य अकादेमी मुंबई विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के सहयोग से दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 26-27 फ़रवरी को मुंबई में किया गया।

शाहीर अमर शेख सभागृह, युनिवर्सिटी क्लब हाउस चर्चगेट पर आयोजित संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात हिंदी कवि केदारनाथ सिंह ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। मुख्य अतिथि मुंबई विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति नरेंद्र गुप्ता थे और बीज-भाषण हरिमोहन शर्मा ने दिया। आरंभिक वक्तव्य हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक सूर्यप्रसाद दीक्षित ने और संचालन साहित्य अकादेमी के उपसचिव ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने किया।

नरेंद्र शर्मा की स्मृतियों पर आधारित सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखक गोविंद मिश्र ने की और उसमें अचला नागर, उनके पुत्र-पुत्री परितोष शर्मा-लावण्याशाह और उद्भ्रांत ने उनमें जुड़ी यादों को साझा किया।

दिन के दूसरे सत्र में उत्तरछायावादी काव्य और नरेंद्र शर्मा पर रामजी तिवारी की अध्यक्षता में अमरनाथ, पुष्पिता अवस्थी, आलोक गुप्त और प्रकाश शुक्ल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

कवि गीतकार नरेंद्र शर्मा विषय पर दूसरे दिन हुए प्रथम सत्र की अध्यक्षता अरुणेश नीरन ने की और त्रिभुवन नाथ राय, रतन कुमार पांडेय, अजित राय और राजेंद्र उपाध्याय ने अपने विचार व्यक्त किए।

नरेंद्र शर्मा के गद्य पर नरेंद्र मोहन की अध्यक्षता में हुए सत्र में नंदकिशोर पांडेय, भारती गोरे ओर विनोद तिवारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

नरेंद्र शर्मा के फ़िल्मी गीतकार और उनके फ़िल्म लेखन के बारे मे राजकुमार केसवानी की अध्यक्षता में माया गोविन्द, इरशाद कामिल, बोधिसत्त्व और रविकांत ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

पंडित जीवन झा पुण्यशती पर संगोष्ठी

27-28 फ़रवरी 2014, पटना

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा मैथिली भाषा के प्रथम आधुनिक नाटककार कविवर जीवन झा पर केंद्रित

द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन पटना में 27-28 फ़रवरी 2014 को किया गया। मैथिली के वरिष्ठ साहित्यकार एवं समालोचक मोहन भारद्वाज की अध्यक्षता में संगोष्ठी का उद्घाटन कमलनाथ सिंह ठाकुर, पूर्व एम.एल.सी. बिहार विधान परिषद् ने दीप प्रज्वलित कर किया। इसके पूर्व अकादेमी के उपसंपादक देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत किया, जिसके पश्चात् कमल मोहन चुन्नू ने 'जय जय भैरवि' का गान प्रस्तुत किया।

उद्घाटन भाषण में कमलनाथ सिंह ठाकुर ने मैथिली भाषा-साहित्य एवं कला-संस्कृति से संबद्ध सभी व्यक्तियों से आग्रह किया कि वे अकादेमी जैसी सक्रिय संस्थाओं का यथावसर-यथासंभव-यथासाध्य सहयोग करें तथा इसकी समृद्धि एवं संवर्द्धन में सहभागी भी बनें।

अकादेमी के मैथिली भाषा परामर्श मंडल की संयोजिका वीणा ठाकुर ने विषय प्रवर्तन करते हुए कविवर जीवन झा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि रत्नेश्वर मिश्र ने पंडित जीवन झा के समकालीन राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्थिति का विस्तारपूर्वक वर्णन करते हुए तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक-शैक्षिक-आर्थिक-राजनीतिक परिदृश्यों का विशद् चित्रण किया। मोहन भारद्वाज ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में मैथिली की नाट्य-परंपरा का ज़िक्र करते हुए पं. जीवन झा को एक युगद्रष्टा नाटककार कहा। उन्होंने उन्हें गहन प्रतिरोध का रचनाकार कहा।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता देवेंद्र झा ने की। इस सत्र में योगानंद झा ने कविवर जीवन झा के समकालीन साहित्यिक परिदृश्य पर, मधुकांत झा ने तत्कालीन राष्ट्रीय परिदृश्य पर एवं इंदिरा झा ने कविवर के जीवन एवं उनकी कृतियों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाले। अपने अध्यक्षीय भाषण में देवेंद्र झा को बलिदानी, अवदानी साहित्यकार कहते हुए उन्हें कवि-गीतकार तथा प्रथम मैथिली ग़ज़लकार भी कहा।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' ने की। इस सत्र में नरेश मोहन झा ने कविवर के नाटकों में समायोजित आधुनिकता को रेखांकित किया एवं शंकरदेव झा ने कविवरकालीन मिथिला की सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया। इस सत्र के संवादी भाग्यनारायण झा ने दोनों ही आलेखों पर अपने विचार रखे एवं कुछ आवश्यक सुझाव भी दिए।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता मैथिली के वरिष्ठ कथाकार अशोक ने की। इस सत्र में वीणा कर्ण ने कविवर के नाटकों के विभिन्न पात्रों का चरित्र-चित्रण किया, तारानंद वियोगी ने कविवर की भाषा-चेतना पर विस्तारपूर्वक अपनी बातें कहीं तथा अरुणा चौधरी ने कविवर के नाटकों के संवाद-पक्ष के गुण-धर्म पर प्रकाश डाला। इस सत्र के संवादी रामनारायण सिंह ने पठित आलेखों पर अपनी टिप्पणी दी। सत्र के अध्यक्ष अशोक ने कविवर की भाषा, भाषा का स्वरूप-गठन जैसे बिंदुओं पर विस्तारपूर्वक अपने विचार रखे।

संगोष्ठी के दूसरे दिन चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता वासुकीनाथ झा ने की। रमानंद झा रमण ने पं. जीवन झा के नाटकों में यथास्थान गुंफित रस एवं उसके विभिन्न प्रभेदों को सोदाहरण रेखांकित किया। पन्ना झा ने कविवर के नाटकों में प्रयुक्त संगीत पक्ष को उद्घाटित किया।

कमल मोहन 'चुन्नू' ने इन नाटकों के काव्य तत्त्वों पर गंभीरतापूर्वक एवं सविस्तार व्याख्या प्रस्तुत की। संवादी रोहिणी रमण झा ने इस सत्र में पठित आलेखों पर अपने विचार रखे। अपने अध्यक्षीय भाषण में वासुकी नाथ झा ने कविवर जीवन झा के नाटकों के आधुनिक पक्ष, रस, गीत, प्रभृति बिंदुओं पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कविवर की कृतियों के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता पर भी बल दिया।

पंचम सत्र की अध्यक्षता लेखनाथ मिश्र ने की एवं इस सत्र में अजित आज़ाद एवं खुशी लाल झा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अजित आज़ाद ने समकालीन एवं कविवरकालीन नाटकों का प्रवृत्तिगत विश्लेषण कर कविवर के नाटकों को आधुनिक नाटक के रूप में परिगणित किया। खुशीलाल झा ने कविवर के नाटकों पर पड़े

पारसी रंगमंच के प्रभाव को रेखांकित किया। इस सत्र के संवादी अमरनाथ ने अपनी जिज्ञासा में आलेख-पाठकों से कुछ प्रश्न भी किए साथ ही आलेख में उपयुक्त उक्तियों को विश्वनीय बनाने का आग्रह भी किया। अध्यक्ष लेखनाथ मिश्र ने मैथिली नाटकों की परंपरा एवं आधुनिकता पर प्रकाश डाला।

षष्ठ सत्र की अध्यक्षता विवेकानंद ठाकुर ने की। पंचानन मिश्र ने कविवर पं. जीवन झा के समकालीन रंगमंचीय सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, सांस्कृतिक यथार्थों एवं तत्कालीन परिस्थितियों को रेखांकित किया। अशोक अविचल ने पं. जीवन झा को आधुनिक मैथिली नाटक एवं रंगमंच के अविष्टाता रूप में व्याख्यावित किया। अमलेंदु शेखर पाठक ने पं. जीवन झा के कतिपय संस्कृत कृतियों एवं इनके नाटकों में वर्णित संस्कृत गद्य-पद्य रूपों की विस्तारपूर्वक व्याख्या की। सत्र के संवादी भैरवलाल दास ने इन आलेखों पर अपने विचार व्यक्त किए। अध्यक्ष विवेकानंद ठाकुर ने कविवर की अन्यान्य रचनाओं के प्रकाशन एवं मंचन पर भी बल दिया।

संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता उषाकिरण खान ने की। इस सत्र में वीरेंद्र झा ने संगोष्ठी में पठित आलेखों के परिदृश्य में अपना पर्यवेक्षण भाषण प्रस्तुत किया।

'संस्कृत में शास्त्र और नए काव्यशास्त्रों का सृजन' पर परिसंवाद

4 मार्च 2014, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने गंगाधर शास्त्री के विशेष संदर्भ में 'संस्कृत के शास्त्र और नए काव्यशास्त्रों का सृजन' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन साहित्य अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में 4 मार्च 2014 को किया। प्रख्यात संस्कृत विद्वान रमाकांत पांडेय ने बीज-भाषण दिया। अकादेमी के संस्कृत भाषा परामर्श मंडल के संयोजक राधावल्लभ त्रिपाठी ने आरंभिक भाषण दिया। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण किया। आलेख-पाठ सत्र की अध्यक्षता कलानंद शास्त्री ने की। इस सत्र में परमानंद झा और पंकज मिश्र ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अकादेमी के उपसचिव ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने कार्यक्रम का संचालन और अंत में धन्यवाद-ज्ञापन किया।

रामेंद्रसुंदर त्रिवेदी की 150वीं जयंती पर संगोष्ठी

6 मार्च 2014, कोलकाता

साहित्य अकादेमी ने अपने क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के सभागार में रामेंद्रसुंदर त्रिवेदी की 150वीं जयंती पर 6 मार्च 2014 को एकदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के कार्यालय प्रभारी गौतम पॉल ने संगोष्ठी में सम्मिलित होनवाले सहभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। प्रख्यात बाङ्ला कवि रामेंद्रसुंदर त्रिवेदी (1864-1919) का जन्म मुर्शिदाबाद के कांडी परगना के जेमो में हुआ था। रामेंद्रसुंदर त्रिवेदी ने मूल रूप से विज्ञान और दर्शन की पुस्तकें ही रचीं।

कार्यक्रम का आरंभिक व्याख्यान प्रख्यात बाङ्ला विचारक और विद्वान आलोक राय ने प्रस्तुत किया। यद्यपि रामेंद्र कविता लिखते थे, लेकिन उनके लेखन का बड़ा हिस्सा विज्ञानमूलक लेखन का रहा। उनकी अध्यापन पद्धति अनोखी थी और वे अपने विद्यार्थियों को प्रयोगों के माध्यम से नए तत्त्वों की खोज के लिए प्रेरित करते थे। उन्होंने ज्ञान प्रदान का माध्यम बाङ्ला भाषा को बनाया था। मातृभाषा को लेकर उनका यह ज़ोर आनेवाली पीढ़ियों के बाङ्ला विचारकों को प्रभावित करने में पूरी तरह कामयाब रहा। त्रिवेदी ने हमेशा ही तर्क तथा विज्ञान के व्याकरण पर बल प्रदान किया।

प्रख्यात विद्वान एवं वैज्ञानिक पार्थ घोष ने अपने मुख्य वक्तव्य में लोगों को यह जानकारी प्रदान की कि त्रिवेदी की मुख्य रुचि इतिहास और साहित्य में थी लेकिन कालांतर में उन्होंने विज्ञान की राह ली। उन्होंने मनोवैज्ञानिक और भूगोलीय शब्दावली पर भी काम किया। उनका मत था कि बाङ्ला और संस्कृत के मध्य जो संबंध है, वह अंग्रेज़ी और ग्रीक के संबंधों से अधिक गहरा है।

अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में रामकुमार मुखोपाध्याय ने श्रोताओं को त्रिवेदी के समय की कुछ प्रमुख घटनाओं की जानकारी दी। इसमें से एक यह थी कि 1901 में त्रिवेदी ने शांतिनिकेतन के पहले विद्यालय का शुभारंभ किया था।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में बिर्येंदु मोहन देव और आशीष लाहिड़ी ने क्रमशः 'रामेंद्रसुंदर त्रिवेदी के विज्ञान और दर्शन के उत्स की खोज' तथा 'रामेंद्रसुंदर त्रिवेदी : विज्ञान बोध' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. देव ने अपने आलेख में यह विचार प्रस्तुत किया कि रामेंद्रसुंदर ने जैविक-अजैविक विश्व के बीच तर्कों की सहायता मात्र से ही भिन्नता स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। सांख्य और न्याय दर्शन पर 'जिज्ञासा' नामक पुस्तक की भी उन्होंने चर्चा की।

विख्यात बाङ्ला लेखक आशीष लाहिड़ी ने त्रिवेदी की लेखन शैली पर भी प्रकाश डाला, कि किस प्रकार उन्होंने वैज्ञानिक विषय, वस्तु के साथ निर्वाहन किया। उन्होंने ऐसे कई उदाहरण प्रस्तुत किए जब किन्हीं विशेष विषय-वस्तुओं पर लिखे गए त्रिवेदी के साहित्य को उन्होंने रवींद्रनाथ और सत्येंद्रनाथ द्वारा ऐसे ही विषय पर लिखे गए साहित्य के समतुल्य पाया। त्रिवेदी ने विज्ञान को मातृभाषा में प्रस्तुत कर उसे घर-घर पहुँचाकर लोकप्रिय बनाया। श्री लाहिड़ी ने त्रिवेदी के लिखे कुछ पाठ भी सुनाए।

द्वितीय सत्र में प्रख्यात बाङ्ला विद्वान अभ्र घोष तथा पबित्र सरकार ने त्रिवेदी से जुड़े आलेख प्रस्तुत किए। इनमें श्री घोष ने बंगीय साहित्य परिषद् के निर्माण में त्रिवेदी की भूमिका और परिषद के युगांतकारी कार्यों का उल्लेख किया। जबकि पबित्र सरकार ने त्रिवेदी के लेखन के व्याकरण और शब्दावली की पड़ताल की।

तृतीय सत्र में मोउ दासगुप्ता ने त्रिवेदी जी के संस्कृत लेखन पर आलेख प्रस्तुत किया। कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रो. दासगुप्ता ने बताया कि श्री त्रिवेदी की वैज्ञानिक सोच का आकलन किया जा सकता है। उन्होंने अपने अनुवाद में सहज, लघु एवं तार्किक वाक्यों का प्रयोग किया। उन्होंने त्रिवेदी के कई अनुवादों की यूरोपीय अनुवादकों से तुलना भी की।

वहीं प्रो. भट्टाचार्य ने विज्ञान के लेखन में अपनाई गई त्रिवेदी जी की दो शैलियों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि एक तो श्री त्रिवेदी ने उस तरह लिखा जिस तरह वैज्ञानिक विषय-वस्तुओं का निरूपण किया जाता है अथवा किया जाना चाहिए और दूसरा रास्ता उन्होंने वह चुना जो जीवनशैली के साथ विज्ञान के तालमेल बिठाने से संपृक्त था, जैसा सांख्य दर्शन में प्रकृति के साथ का भाव होता है। उन्होंने यह साबित करने की कोशिश की कि सच की जो प्रकृति होती है वही विज्ञान से संबद्ध लेखन की भी होनी चाहिए।

'अनुवाद एवं असमिया साहित्य : इतिहास एवं सिद्धांत' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

7-8 मार्च 2014, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी ने 'अनुवाद एवं असमिया साहित्य : इतिहास एवं सिद्धांत' विषय पर 7-8 मार्च 2014 को राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा साथ ही एक कार्यशाला का आयोजन किया। गुवाहाटी आईआईटी के मानविकी और समाज विज्ञान विभाग में इस विभाग के तथा नई दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया के संयुक्त तत्त्वावधान में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

संभाषण करते हुए निर्मलकांति भट्टाचार्जी। साथ में एम. असदुद्दीन, वासुदेव चटर्जी एवं अन्य

पहले दिन की परिचर्चा का विषय था—*असमिया में अनुवाद : इतिहास एवं अभ्यास*। इस विमर्श की अध्यक्षता मदन मोहन शर्मा ने की। तिलोत्तमा मिश्रा, एम. असदुद्दीन एवं निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

गोष्ठी के दूसरे दिन अनुवाद संस्कृति पर सत्रारंभ हुआ। अध्यक्षता एम. असदुद्दीन ने की। इस सत्र में संजीव कुमार वैश्य ने शेक्सपियर के नाटकों के असमिया अनुवाद पर एक संक्षिप्त सर्वेक्षण प्रस्तुत किया। उन्होंने अनुवाद से असमिया नाट्य क्षेत्र में आए सकारात्मक बदलाव और अनुवाद के तरीकों तथा कठिनाइयों पर भी विमर्श किया। अर्जुमन आरा ने मीडिया के अंतरसांकेतिक और सांस्कृतिक अनुवाद पर केंद्रित आलेख प्रस्तुत किया। कोमोरुज़्ज़मान अहमद ने असमिया में इस्लामी पाठ्यानुवाद पर अपना वक्तव्य दिया 'बाङ्ला से असमिया अनुवाद : एक विकासमान कहानी' शीर्षक अपने आलेख में प्रसून बर्मन ने औपनिवेशिक काल से अब तक के काल खंड में सरकार, सांस्कृतिक केंद्रों तथा व्यक्तिगत प्रयासों से हुए अनुवाद पर चर्चा की।

द्वितीय सत्र में निर्मलकांति भट्टाचार्जी की अध्यक्षता में प्रदीप आचार्य और विभास चौधरी ने वक्तव्य दिए। इसमें अनुवाद कर्म की सीमाओं, वर्जनाओं, नैतिकता आदि पर प्रकाश डाला गया।

'अनुवाद एवं लिंग की राजनीति' विषय पर केंद्रित तृतीय सत्र में गरिमा कलिता, बनानी चक्रवर्ती और हेमज्योति मेधि ने अपने विचार और अध्ययन प्रस्तुत किए। अंतिम सत्र 'अनुवाद एवं औपनिवेशिक हस्तक्षेप' विषय पर केंद्रित था। सत्र की अध्यक्षता वासुदेव चटर्जी ने की। इस सत्र में अरूपज्योति सैकिया एवं चंदन कुमार शर्मा ने अपने विचार रखे। संगोष्ठी के अंत में एम. असदुद्दीन ने समापन वक्तव्य दिया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में आईआईटी की रोहिणी मोक्षी पुणेकर ने आगंतुकों का स्वागत तो किया ही संगोष्ठी के मूल उद्देश्य पर भी प्रकाश डाला। जामिया के प्रो. एम. असदुद्दीन ने प्रारंभिक व्याख्यान दिया और कहा कि साहित्यिक अनुवाद को वह सम्मान नहीं दिया जाता, जिसके वह योग्य है। इस सत्र की अध्यक्षता आईसीएचआर के अध्यक्ष वासुदेव चटर्जी ने की तथा मुख्य वक्तव्य गौहाटी विश्वविद्यालय के रंजित कुमार देव गोस्वामी ने दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता आईआईटी, गुवाहाटी के कृष्ण बरुआ ने की। तेजपुर विश्वविद्यालय के प्रो. मदन मोहन शर्मा, जेएनयू के सहायक प्रोफ़ेसर मंजीत बरुआ तथा जामिया के शालिम हुसैन इस सत्र के वक्ता थे। प्रो. शर्मा ने अपने वक्तव्य को अनुवाद की प्रक्रिया में अपने ख़ास तरीक़ों के प्रयोग विशेष पर केंद्रित रखा। उनका आलेख बाइबिल के असमिया अनुवाद पर था, जिसमें धर्मपुस्तक के अनुवाद में बरती जानेवाली सावधानियों और युगांतकारी गायक विष्णु प्रसाद राभा के अनुवाद कर्म पर अपना आलेख पढ़ा। उनके आलेख का शीर्षक था—अनुवाद, संस्कृति और असम का किसान आंदोलन। तीसरे और अंतिम वक्ता श्री हुसैन ने असमिया साहित्यानुवाद के उत्स और अनुवादकों की प्रमाणिकता को अपने वक्तव्य का केंद्र बनाया।

सिंधी सूफ़ी कविता पर परिसंवाद
22 मार्च 2014, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने सिंधी अकादमी, दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में 22 मार्च 2014 को सिंधी सूफ़ी कविता पर विश्व युवक केंद्र, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में एक परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत किया। प्रख्यात सिंधी लेखक लक्ष्मण भाटिया 'कोमल' ने उद्घाटन व्याख्यान दिया। साहित्य अकादेमी की सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक प्रेम प्रकाश ने बीज भाषण दिया। प्रख्यात सिंधी विद्वान सी. जे. दासवाणी कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। सिंधी अकादमी, दिल्ली के उपाध्यक्ष मुरलीधर जेटली ने अध्यक्षीय व्याख्यान दिया तथा सिंधी अकादमी, दिल्ली के सचिव सिंधुभाग्य मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता लक्ष्मण भाटिया 'कोमल' ने की, जबकि जगदीश लछाणी, मोहन गेहाणी, नंद झावेरी, वासदेव मोही, वीणा शृंगी, मीना रूप चंदाणी तथा खीमन मुलाणी ने अपने आलेखों का पाठ किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता अर्जन हाशिद ने की। इस सत्र में कमला गोकलाणी, जया जादवाणी, लक्ष्मण दुबे, मोहन हिमताणी, विनोद असुदाणी तथा अर्जन चावला ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र की अध्यक्षता मुरलीधर जेटली ने की, जिसमें गोवर्धन शर्मा 'घायल', हूंदराज बलवाणी, आशा रंगवाणी, कलाधर मुटवा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अंत में प्रेम प्रकाश ने समापन वक्तव्य दिया।

'केरल में कोंकणी नाटक' पर परिसंवाद
23 मार्च 2014, एर्नाकुलम

साहित्य अकादेमी द्वारा केरल कोंकणी साहित्य अकादमी, केरल के सहयोग से 'केरल में कोंकणी नाटक' विषय पर एर्नाकुलम के स्वर्ण भवन में 23 मार्च 2014 को एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। ख्यात रंगकर्मी पद्मभूषण केवलम नारायण पण्णिक्कार ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। उन्होंने पलायन, विभाजन जैसे भूत से जूझने को मजबूर हुए सिंधी भाषी लोगों के बहुभाषा ज्ञान को उनके नाट्य और वैभव का एक महत्त्वपूर्ण कारक स्थापित किया।

अपने बीज-भाषण में गोवा कोंकणी अकादमी के अध्यक्ष पुंडलिक नायक ने केरल के गंभीर नाट्य कलाकारों-लेखकों को याद किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि ख्यात नाटककार जयप्रकाश कुलुर ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम प्रेरित करते हैं। उन्होंने वादा किया की कोंकणी विकास से प्रेरणा लेते हुए वह कम से कम एक नाटक तो अवश्य लिखेंगे। कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक तानाजी हलर्नकर ने लोगों का स्वागत किया और के.एस.ए.के. के सदस्य सचिव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र जी. कृष्ण राव की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इसमें 'कोंकणी नाटक में मिथकीय विषयवस्तु' पर विचार रखे गए। एल. कृष्ण भट्ट, के.के. सुब्रमण्यन, एस. अशोक आदि ने अनेक कालजयी नाटकों को संदर्भित करते हुए अपने विचार रखे, जिनसे कोंकणी रंगमंच को नई दिशा मिली।

द्वितीय सत्र एम. कृष्णानंद पै की अध्यक्षता में हुआ। उन्होंने कोंकणी के पुराने नाटकों को पुनर्सृजित करने की जरूरत पर बल दिया। आर. रामानंद प्रभु ने एर्नाकुलम में 70 के दशक में मंचित कुछ खास नाटकों को संदर्भित किया।

तृतीय सत्र 'कोंकणी नाटकों में नृत्य-संगीत' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता के. अनंत भट्ट ने की। इसमें सिनेमा के प्रभावों पर भी विमर्श किया गया। वी. सुरेश शेनॉय ने ऐसी कई संगीतमय धुनों को संदर्भित किया, जिनसे रेडियो का संगीत प्रभावित हुआ।

समापन सत्र की अध्यक्षता के.एस.ए.के. के अध्यक्ष पय्यानुर रमेश पै द्वारा की गई। इस सत्र में प्रख्यात कोंकणी नाटककार कासरगोड चीना ने कोंकणी समाज को अपने नाटकीय परंपरा के संरक्षण के लिए आगे आने को कहा। ख्यात रंगकर्मी श्रीधर कामत बामबोलकर ने बच्चों के लिए नाट्य कार्यशाला आयोजित करने को समय की माँग बताया।

'बहुभाषिकता और भारत की साहित्य-संस्कृति' पर संगोष्ठी

27-29 मार्च 2014, हैदराबाद

साहित्य अकादेमी और हैदराबाद विश्वविद्यालय के तुलनात्मक साहित्य केंद्र के संयुक्त तत्त्वावधान में 'बहुभाषिकता और भारत की साहित्य-संस्कृति' विषयक संगोष्ठी का आयोजन 27-29 मार्च 2014 को विश्वविद्यालय परिसर, हैदराबाद में किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन हैदराबाद विश्वविद्यालय के कुलपति ई. हरिबाबू ने किया तथा भारत के बहुभाषिक चरित्र को बचाने की अपील की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कवि शिव के. कुमार ने की। इस सत्र में के. सच्चिदानंदन, अमिय देव और हरीश त्रिवेदी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। सत्र का संचालन अकादेमी की उपसचिव गीतांजलि चटर्जी ने किया, जबकि सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण किया। सत्रांत में अमिताभ दास गुप्त ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

उद्घाटन सत्र के पश्चात् सौम्या देवम्मा की अध्यक्षता में रचना-पाठ सत्र आयोजित हुआ, जिसमें शिव. कुमार, शशि देशपांडे, होशंग मर्जेंट और के. श्रीधर ने अपनी रचनाओं के पाठ प्रस्तुत किए।

28 मार्च 2014 को तीन सत्र आयोजित हुए। पहले सत्र की अध्यक्षता शशि देशपांडे ने की। एम. श्रीधर ने 'भाषाओं के बीच रचनात्मक लेखन और अनुवादक' विषयक आलेख प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कई जिज्ञासाएँ सामने रखीं और बताया कि अनेक लोग अपनी रचनाएँ किसी और को अनूदित करने देना नहीं चाहेंगे।

स्कारिया जक्कारिया ने अपने आलेख में बहुभाषिता एवं रचनात्मकता की सैद्धांतिक रूपरेखा पर विचार किया। केरल की एक यहूदी महिला द्वारा मलयाली लोक संगीत के अनुवाद पर उनका यह शोध केंद्रित था। आपने ऐसे, अकादमिक अभ्यासों को जरूरी बताया। ख्यात कोंकणी लेखक दामोदर मावजो ने कोंकणी के जटिल इतिहास पर दस्तावेज प्रस्तुत किए। बहुभाषिता को उन्होंने भाषा का सवंर्द्धन बताया।

दूसरा सत्र इग्नू के प्रोफ़ेसर अवधेश कुमार सिंह की अध्यक्षता में हुआ। शिवराम पडिक्कल एवं वनमाला

उद्घाटन सत्र में व्याख्यान देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव

विश्वनाथ ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। पंडिक्कल ने अनुवाद को राष्ट्रीयता के उभार का जोड़ीदार बताया तो वहीं यह भी स्वीकार किया कि अनुवाद ने कन्नड को एक नई पहचान दी है। वनमाला विश्वनाथ का आलेख मुस्लिम महिला लेखिकाओं सारा अबूबकर और बानू मुश्ताक पर केंद्रित था। अलग-अलग सांस्कृतिक और भाषाई मूल की ये महिलाएँ कन्नड में लिखती हैं। संगोष्ठी के दूसरे पाठ सत्र की अध्यक्षता जे. भीमैया ने की। के. सच्चिदानंदन एवं ई.वी. रामकृष्णन ने अपनी मूल मलयाळम् एवं अनूदित रचनाओं का पाठ किया। अंत में वनमाला विश्वनाथ ने तेरहवीं सदी की कन्नड कविताओं के अनुवाद सुनाए।

इस सत्र के बाद, '4.48 साइकोसिस' नामक नाटक का मंचन सरोजनी नायडू स्कूल के छात्रों ने किया। हैदराबाद विश्वविद्यालय के इस स्कूल के डीन बी. अनंत कृष्णन ने नाटक का संक्षिप्त परिचय दिया।

संगोष्ठी के अंतिम दिन प्रथम सत्र दामोदर मावजो की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इसमें सच्चिदानंद मोहांति और वी.बी. तारकेश्वर ने अपने आलेख पढ़े। मोहांति का आलेख उन्नीसवीं सदी के पूर्वी भारत में बहुभाषी यात्रा आख्यानों पर केंद्रित था। तारकेश्वर ने अपने आलेख के माध्यम से यह बताया शिक्षण-संस्थाएँ कुछ इस प्रकार से चलती हैं कि उन्होंने कभी इस बहुभाषिता को पूर्ण समर्थ नहीं प्रदान किया। उन्होंने कहा कि अनपढ़ भी बहुभाषी होते हैं, जबकि शिक्षाशास्त्री एकभाषिता को बढ़ावा देते हैं।

दूसरा सत्र तुतुन मुखर्जी की अध्यक्षता में हुआ। इस सत्र में ई.वी. रामकृष्ण और अवधेश कुमार सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। रामकृष्णन ने भारतीय बहुभाषिकता को स्वतः स्फूर्त नहीं, बल्कि बहुभाषी लोगों की इच्छा परिणाम साबित करने की कोशिश की। अवधेश कुमार सिंह ने स्पष्ट किया कि बहुभाषिकता एक प्रवृत्ति है, जिसने हमारे देश की बहुभाषिकता को प्रेरित किया है। उन्होंने इसमें आम लोगों की भूमिका को अहम माना।

समापन सत्र एम.टी. अंसारी की अध्यक्षता में हुआ। विश्व भारती के प्रतिकुलपति उदय नारायण सिंह ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने भारती की बहुभाषिकता को काफ़ी गहराई से विवेचित किया।

'पंजाबी साहित्य में नारी चेतना' पर परिसंवाद

31 मार्च 2014, चुन्नी कलां, फतेहगढ़, पंजाब

साहित्य अकादेमी ने पंजाब स्थित चुन्नी कलां के यूनिवर्सिटी कॉलेज के सहयोग से 'नारी चेतना' पर एक परिसंवाद का आयोजन चुन्नी कलां, फतेहगढ़ साहिब में 31 मार्च 2014 को किया। यह परिसंवाद पंजाबी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में था।

आरंभ में अकादेमी की प्रकाशन सहायक मनजीत कौर भाटिया ने अतिथियों और श्रोताओं का स्वागत किया। यूनिवर्सिटी कॉलेज के प्राचार्य वी.के. तिवारी ने अपने प्रस्तावना वक्तव्य में नारी सशक्तीकरण को सामाजिक बदलाव के लिए ज़रूरी बताया और साथ ही वामपंथी हिंसा संबंधी जटिल मुद्दे पर भी अपने विचार प्रकट किए।

रचना-पाठ सत्र की अध्यक्षता पंजाबी परामर्श मंडल की सदस्य और चंडीगढ़ स्थित पंजाब विश्वविद्यालय के गुरु नानक सिख अध्ययन की अध्यक्ष जसपाल कौर कांग ने अध्यक्षता की। धरणजीत कौर बरार, कमलजीत कौर, अमरजीत घुम्मन, सरबजीत कौर सोहल, बल बहादुर सिंह और देवींदर सिंह ने कविता, गद्य, लघुकथा, उपन्यास और शोध कार्य में पंजाबी लेखिकाओं के योगदान पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अध्यक्षीय भाषण में जसपाल कौर कांग ने कहा कि नारी प्यार, इच्छाशक्ति और पवित्रता बाँटकर समाज को

उन्नत बनाती है और विवेक की राह उज्जवल करती है। पंजाबी की लेखिकाओं—अमृता प्रीतम, दलिप कौर टिवाणा, अजीत कौर, मनजीत टिवाणा आदि की सशक्त लेखनी और लेखन का संदर्भ देकर उन्होंने बताया कि इनकी लेखनी और लेखन किसी भी दृष्टि से पुरुष पंजाबी लेखकों से कमतर नहीं है। लेकिन दुर्भाग्य से उन्हें अवमूल्यांकित किया गया है।

पाल वेंकटसुब्बैया जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद

8 फ़रवरी 2014, कडपा

तेलुगु और अंग्रेज़ी के विख्यात लेखक कवि, उपन्यासकार, कहानीकार और आलोचक पाल वेंकटसुब्बैया की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा 8 फ़रवरी 2014 को कडपा में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर राजपालम चंदशेखर रेड्डी ने अपने संबोधन में प्रकाशकों से अनुरोध किया कि वे पाल वेंकटसुब्बैया की कृतियों का प्रकाशन करें, ताकि वे पाठकों को सुलभ हो सके। एन. ईश्वर रेड्डी ने सभा में उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए कहा कि इस परिसंवाद का आयोजन उस दलित लेखक का सम्मान है, जिसे ज़िंदगीभर उपेक्षा मिली। उन्होंने सुब्बैया के काव्य के माध्यम से उनके जीवन से लोगों का परिचय करवाया। जी. बालसुब्रमण्यम ने लेखक के संबंध में विचारोत्तेजक बीज वक्तव्य किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता एम. संपतकुमार ने की, जिसमें एम.एम. विनोदिनी और एम. मल्लिकार्जुन रेड्डी ने क्रमशः सुब्बैया की कृतियों *परमदर्शिनी, मल्लीश्वरी* और *अनिल संदेशम्* पर अपने आलेख पढ़े। संपतकुमार ने परमदर्शिनी काव्य को उपदेशात्मक कहा और कवि पर वेमन तथा जशुवा के प्रभाव का उल्लेख किया। विनोदिनी ने *मल्लीश्वरी* को एक ऐतिहासिक दुखांत कविता कहा। साथ ही उन्होंने कवि के सौंदर्य की अवधारणा का भी उल्लेख किया। डॉ. रेड्डी ने *अनिल संदेशम्* को एक संदेश का काव्य कहा तथा इस पर कालिदास एवं जेशुवा के प्रभाव का उल्लेख किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता कट्टा नरसिम्हुलू ने की। इस सत्र में तीन आलेख पढ़े गए। एम. रविकुमार, जी. पार्वती और एन. रवि ने क्रमशः *अनुपम, सृष्टिवडु* और *अमरजीवी बापूजी* पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। कट्टा नरसिम्हुलू ने उनके काव्य और जीवन संबंधी अनुभवों पर श्रोताओं के साथ चर्चा की। डॉ. पार्वती ने 'शीलवती' को महिलाओं की अभिव्यक्ति कहा, जिन्होंने कडपा ज़िले में डकैतों के विरुद्ध संघर्ष किया।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता हरिकृष्ण ने की। इस सत्र में हरिकृष्ण टी. वेंकटैय्या

बाएँ से दाएँ : जी. बालसुब्रमण्यम, पी. लक्ष्मीनरायण एवं आर. चंद्रशेखर रेड्डी

और पी. नागराजू ने क्रमशः *पिपासी, भाग्यमती* और *नव्युगम* पर अपने आलेख पढ़े। हरिकृष्ण ने कहा कि पिपासी स्वयं को पीड़ा पहुँचाकर पश्चात्ताप करने पर गाँधीवादी दर्शन पर आधारित है। वेंकटैय्या ने *भाग्यमती* को सुधारवादी एवं प्रगतिशील काव्य कहा, क्योंकि इसमें अंतर्जातीय विवाह का समर्थन और जातिप्रथा के उन्मूलन की बात कही गई है। नागराजू ने *नव्युग* उपन्यास के सामाजिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि का उल्लेख किया और इसे एक दलित उपन्यास कहा।

पी. संजीवम्मा ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में शशिश्री ने समापन भाषण दिया और वेंकटसुब्बैया की पुत्री पी. विजयलक्ष्मी देवी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित हुई। संजीवम्मा ने कहा कि वेंकटसुब्बैया का व्यक्तित्व विलक्षण था, जो एक लेखक के साथ-साथ एक राजनीतिज्ञ भी था।

राजी सेठ इस अवसर पर मुख्य अतिथि थीं। उद्घाटन सत्र की वक्ताओं में रमणिका गुप्ता, उर्वशी बुटालिया, अनिता अग्निहोत्री, निर्मला पिल्लै, वर्षा अडालजा, उर्मिला पवार, शांति क्षेत्री और सलमा शामिल थीं। सत्रांत में अकादेमी की उपसचिव रेणुमोहन भान ने धन्यवाद-ज्ञापन किया। उद्घाटन सत्र के बाद कहानी और कविता-पाठ के सत्र भी आयोजित किए गए।

कहानी-पाठ सत्र हिंदी कथा-लेखिका चंद्रकांता की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें नीलाक्षी सिंह, अद्याशा दास, चंद्रन नेगी और चंद्रलता ने अपनी कहानियाँ सुनाईं। कविता-पाठ सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात डोगरी लेखिका पद्मा सचदेव ने की। इस सत्र में लुत्फ़ा हनुम, सलीमा बेगम, सेवंति घोष, लक्ष्मी कण्णन, गगन गिल, लक्ष्मीश्री बनर्जी, सुजाता चौधुरी, शबाना नज़ीर और रिज़ियो राज ने अपनी कविताओं का पाठ किया। सत्र का संचालन अकादेमी के उपसचिव ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने किया।

'एक स्त्री होना, एक लेखक होना' पर परिसंवाद

8 मार्च 2014, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 'एक स्त्री होना, एक लेखक होना' विषयक परिसंवाद का आयोजन अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में 8 मार्च 2014 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर किया गया। अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत किया। परिसंवाद का उद्घाटन प्रख्यात लेखिका नमिता गोखले ने किया। हिंदी कथा लेखिका

बाएँ से दाएँ : सुजाता चौधुरी, पद्मा सचदेव एवं ब्रजेंद्र त्रिपाठी

हिंदी सप्ताह समारोह

17-23 सितंबर 2013, नई दिल्ली

उद्घाटन समारोह में मृदुला गर्ग और अन्य

साहित्य अकादेमी के सभागार में 17 से 23 सितंबर 2013 तक हिंदी सप्ताह का सफल आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह में अकादेमी के उपसचिव श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि वर्तमान में 22 देशों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। भाषा का कार्य संप्रेषण है, हिंदी का कोई एक रूप निर्धारित नहीं किया जा सकता। हिंदी को हमें बोलचाल के रूप में भी स्वीकार करना होगा। नई पीढ़ी में हिंदी के प्रति रुचि कमतर या कम होती जा रही है, जो चिंता का विषय है।

समकालीन भारतीय साहित्य के अतिथि संपादक डॉ. रणजीत साहा ने कहा कि हिंदी संघर्ष और विद्रोह की भाषा है। हमें अपनी भाषा में दक्ष होना होगा, हमें अंग्रेज़ी भी सीखनी होगी। हमें द्विभाषी होना होगा। भाषा के नाम पर हमें कभी भी अपने आपको बौना नहीं समझना चाहिए।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती मृदुला गर्ग ने कहा कि कोई भी भाषा व्यावहारिकता अथवा आवश्यकता के कारण उपजती है। हिन्दी में मिलने वाली अधिकतर पुस्तकें अनूदित होती हैं, कुछेक को छोड़कर। जो भी भाषा आप सीखेंगे उससे आप समृद्ध होंगे। अंग्रेज़ी का वर्चस्व अमेरिका के कारण है, यहाँ तक कि ब्रिटेन के अंग्रेज़ भी अमेरिकी अंग्रेज़ी बोलने को विवश हैं। भाषा आपको मानवीय गुण प्रदान करती है।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि हमें 'हिंदी पखवाड़ा' मनाने की क्या आवश्यकता है? हमारे पठन-पाठन के स्तर पर भी हिंदी भाषा होनी चाहिए। हिंदी भाषा ने सारे देश को जोड़कर रखा है। हिंदी संप्रेषण की भाषा है। हमें इसका मान करना चाहिए।

कार्यक्रम के अंत में अकादेमी की रा.का.स. की सदस्या श्रीमती शांता ग्रोवर ने औपचारिक रूप से धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

हिंदी सप्ताह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे—सुलेख, श्रुतलेख, निबंध-लेखन, अनुवाद, प्रश्नमंच, कविता-पाठ तथा आशुभाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

अकादेमी द्वारा एक सप्ताह तक चले हिंदी सप्ताह कार्यक्रम का समापन समारोह 23 सितंबर 2013 को सायं 4 बजे अकादेमी सभाकक्ष में प्रख्यात समालोचक और नाट्यकार प्रभाकर श्रोत्रिय के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी की राजभाषा पत्रिका 'आलोक' के नए अंक का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रभाकर श्रोत्रिय (बीच में) और अकादेमी के अधिकारी कर्मचारीगण

विमोचन के उपरांत 'हिंदी सप्ताह' में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि प्रभाकर श्रोत्रिय और अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के अंत में अपने समापन भाषण में प्रभाकर श्रोत्रिय ने कहा कि भाषा वही आगे बढ़ती है, जो जनता द्वारा बोली और समझी जाती है। उर्दू, अंग्रेज़ी, फ़ारसी का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि शासन द्वारा लादी गई भाषाएँ ज़्यादा लंबे समय तक नहीं चलती। भाषा की सरसता को बनाए रखने के लिए उसकी पारिभाषिक शब्दावली सरल करनी होगी और उसमें विभिन्न भाषाओं, बोलियों के प्रचलित शब्द भी शामिल करने होंगे। उन्होंने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि अभी तक हम हिंदी संज्ञाओं को शुद्ध रोमन में लिखने का कोई मानक तय नहीं कर पाए हैं। अंत में उन्होंने सभी विजयी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए उन्हें शुभकामनाएँ दीं। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन उपसचिव गीतांजलि चटर्जी ने किया। कार्यक्रम का संचालन राजभाषा प्रभारी, ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने किया।

क्षेत्रीय कार्यालयों में हिंदी दिवस समारोह

चेन्नै

23 सितंबर 2013 को साहित्य अकादेमी के चेन्नै कार्यालय में 'हिंदी दिवस' का आयोजन किया गया। वरिष्ठ हिंदी विशेषज्ञ शीरिराजन ने वर्तमान हिंदी के महत्त्व पर व्याख्यान दिया। अनुवाद, निबंध-लेखन, सुलेख तथा श्रुतलेख प्रतियोगिताओं में भाग लेनेवाले विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

बेंगळूरु

क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु में 24-25 सितंबर 2013 को 'हिंदी सप्ताह' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बेंगळूरु के हिंदी कवि संतोष कुमार मिश्र को उद्घाटन व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया था। उन्होंने हिंदी सीखने की आवश्यकता पर बल दिया तथा कहा कि दक्षिण भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियों को हिंदी में अनूदित किया जाना चाहिए। इस अवसर पर श्रुतलेख, सुलेख, अनुवाद तथा निबंध-लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। उसी दिन विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार भी प्रदान किए गए। उर्दू शायर एवं अनुवादक मेहर मंसूर भी इस अवसर पर उपस्थित थे तथा उन्होंने समापन व्याख्यान।

मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई में 14-20 सितंबर 2013 के दौरान 'हिंदी सप्ताह' का आयोजन किया गया। इस दौरान निबंध-लेखन, अनुवाद, सृजनात्मक लेखन और श्रुतलेख प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में कार्यालय के कर्मचारियों-अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। अंतिम दिन प्रख्यात हिंदी कवि ज्ञानेंद्रपति मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। उन्होंने भाषा के अनुप्रयोग पर अपने विचार रखे तथा प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

कोलकाता

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता में 23 सितंबर 2013 को 'हिंदी दिवस' का अयोजन किया गया। इस अवसर पर सुलेख, निबंध-लेखन, अनुवाद तथा श्रुतलेख प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। श्यामल भट्टाचार्य ने भारतीयों को एकसूत्र में जोड़ने में हिंदी की भूमिका पर चर्चा की। श्रीमती पोछार ने दैनिक कार्यालयी गतिविधियों में हिंदी के महत्त्व पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के अंत में प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

साहित्यिक कार्यक्रम शृंखला

लेखक से भेंट

साहित्य अकादेमी समय-समय पर 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन करती है, जिसके अंतर्गत किसी प्रख्यात लेखक को अपने जीवन और कृतित्व के बारे में बताने के लिए अमंत्रित किया जता है, जिससे अन्य लेखक विद्वान और साहित्य के पाठक रचनाकार और उसके कृतित्व के विषय में गहरी और व्यक्तिगत समझ विकसित कर सकें। इस वर्ष निम्नलिखित लेखकों ने इस कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त किए।

राशिद नाज़की (कश्मीरी कवि एवं समालोचक)
5 मई 2013, श्रीनगर

रेवा प्रसाद द्विवेदी (हिंदी लेखक)
2 अगस्त 2013, वाराणसी

के.बी. नेपाली (नेपाली लेखक)
15 सितंबर 2013, शिलांग

दमयंती बेसरा (संताली लेखिका)
1 सितंबर 2013, चाकुलिया

ई. दिनमणि सिंह (मणिपुरी लेखक)
16 सितंबर 2013, इंफ़ाल

सुरेश्वर झा (मैथिली लेखक)
22 सितंबर 2013, कोलकाता

भोगला सोरेन (संताली लेखक)
28 सितंबर 2013, रायरंगपुर

अनुराधा पाटील (मराठी)
29 सितंबर 2013, मुंबई

निदा फ़ाज़ली (उर्दू कवि)
30 अगस्त 2013, ग्वालियर

जसवंत सिंह कँवल (पंजाबी लेखक)
2 अक्तूबर 2013, पंजाब

देशबंधु डोगरा 'नूतन' (डोगरी)
10 नंवबर 2013, जम्मू

शिरीष पाँचाल (गुजराती लेखक)
31 दिसंबर 2013, भावनगर

वासदेव मोही (कोंकणी लेखक)
23 फ़रवरी 2014, अहमदाबाद

अरुण साधु (मैथिली लेखक)
23 फ़रवरी 2014

मनमोहन बावा (पंजाबी लेखक)
26 फ़रवरी 2014, अमृतसर

मेरे झरोखे से

इस शृंखला में एक प्रसिद्ध लेखिका/लेखक दूसरे प्रसिद्ध समकालीन लेखक के जीवन और कृतित्व के बारे में अपनी प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करती/करता है। इस वर्ष निम्नलिखित लेखकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

पूर्णानंद दानी पर प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी (ओड़िया)
30 अगस्त 2013, संबलपुर

ई. सोनमणि सिंह पर ई. दीनमणि सिंह (मणिपुरी)
19 अगस्त 2013, मणिपुर

आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी पर विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी (हिंदी)
6 सितंबर 2013, नई दिल्ली

लक्ष्मीनंदन बोरा पर रणजीत देव गोस्वामी (असमिया)
9 सितंबर 2013, असम

डी.टी. जिम्बा पर सी.एम. अधिकारी (नेपाली)
15 सितंबर 2013, शिलॉंग

हरिमोहन झा पर अमरनाथ झा (मैथिली)
29 सितंबर 2013, जमशेदपुर

मोहम्मद अयूब बेताब पर शफ़ाक़त अल्ताफ़ (कश्मीरी)
5 अक्तूबर 2013, शोपियन

देव भंडारी पर सीताराम काफ़ले (नेपाली)
5 अक्तूबर 2013, कालिम्पोंग

पुण्डलिक नायक पर गोकुलदास प्रभु (कोंकणी)
17 अक्टूबर 2013, गोवा

ढोलन राही पर कमल गोकलाणी (कोंकणी)
10 नवंबर 2013, अजमेर

सलाहुद्दीन परवेज़ पर हक़्क़ानी-उल-क़ासमी (उर्दू)
29 नवंबर 2013, नई दिल्ली

बी.पी. साटे पर छत्तरपाल (डोगरी)
21 फ़रवरी 2014, जम्मू

कवि संधि

साहित्यिक कार्यक्रम 'कवि संधि' के अंतर्गत काव्य-प्रेमियों को किसी वरिष्ठ कवि/कवयित्री द्वारा कविताएँ सुनने का अवसर प्राप्त होता है। इस वर्ष इस कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत देश के विभिन्न प्रांतों में 14 कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

मदन मोहन सोरेन (संताली कवि)
1 सितंबर 2013, चाकुलिया

एच.एस. शिवप्रकाश (कन्नड कवि)
23 सितंबर 2013, नई दिल्ली

नवनीता देवसेन (बाङ्ला कवि)
24 सितंबर 2013, मुंबई

जदुमणि बेसरा (संताली कवि)
28 सितंबर 2013, कोलकाता

शहनाज़ रशीद (कश्मीरी कवि)
3 अक्तूबर 2013, श्रीनगर

रश्मि रमानी (सिंधी कवि)
27 अक्तूबर 2013, नागपुर

मोहन हिमताणी (सिन्धी कवि)
9 नवंबर 2013, भोपाल

ज्ञानेश्वर शर्मा (डोगरी लेखक)
11 नवंबर 2013, जम्मू

हीरेन्द्रनाथ दत्त (असमिया कवि)
30 नवंबर 2013, गुवाहाटी

सुनीता रैणा (कश्मीरी कवि)
16 दिसंबर 2013, नई दिल्ली

भवानी देवी (तेलुगु कवि)
22 दिसंबर 2013, हैदराबाद

शेफ़ालिका वर्मा (मैथिली कवि)
26 दिसंबर 2013, नई दिल्ली

एस.जी. सिद्धरमय्या (कन्नड कवि)
16 अक्तूबर 2013, बेंगलूरु

चक्रपाणि भट्टराई (नेपाली कवि)
16 फ़रवरी 2014, नामची

कथा संधि

इस कार्यक्रम में वरिष्ठ कथाकारों द्वारा अपने नव-लिखित उपन्यास या नई कहानियों के अंश पढ़े जाते हैं तथा उन पर चर्चा की जाती है। इस वर्ष निम्नलिखित लेखकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

अमर मित्र (बाइला लेखक)
22 जुलाई 2013, कोलकाता

रामधन हेम्ब्रम (संताली लेखक)
1 सितंबर 2013, चकुलिया

नगेन सइकिया (असमिया लेखक)
6 सितंबर 2013, जोरहाट

एम. नबकिशोर सिंह (मणिपुरी लेखक)
14 सितंबर 2013, काकचिंग

पद्मजा पॉल (ओड़िया लेखक)
28 सितंबर 2013, भुवनेश्वर

चिलुकुरी देवपुत्र (तेलुगु लेखक)
28 अक्टूबर 2013,

अट्टाद अप्पलनायडु (तेलुगु लेखक)
17 जनवरी 2014, विजयनगम

सुंकोजी देवेन्द्रचारी (तेलुगु लेखक)
7 फ़रवरी 2014, कडपा

निर्मल विक्रम (डोगरी लेखक)
22 फ़रवरी 2014, जम्मू

चंडी चरण किस्कू (संताली लेखक)
2 मार्च 2014, मालदा, पश्चिम बंगाल

अस्मिता

इस कार्यक्रम में दलित/स्त्री लेखकों की रचनाओं का पाठ होता है। अग्रलिखित लेखकों ने इस लोकप्रिय शृंखला में भाग लिया तथा पाठकों के समक्ष अपनी रचनाओं का पाठ किया।

सुकृता पॉल कुमार (अंग्रेज़ी), प्रमिला सत्पथी (ओड़िया), मृदुला बिहारी (हिंदी लेखक)
7 मई 2013, दिल्ली

ओड़िया महिला लेखक रंजीता पांडा, सुचेता मिश्र, रत्नमाला स्वैन, अंगूरबाला परिदा, स्वागतिका स्वैन तथा प्रतीक्षा जेना
17 जुलाई 2013, भुवनेश्वर

संताली लेखक : शकुंतला टुडु, सुप्रिया हांसदा, रुक्मिणि टुडु तथा स्वप्ना हेम्ब्रम
1 सितंबर 2013, चाकुलिया

वर्षादास (गुजराती लेखक) तथा मनीषा कुलश्रेष्ठ (हिंदी लेखक)
6 नवंबर 2013, दिल्ली

नेशनल बुक वीक के अवसर पर कन्नड महिला कवयित्रियाँ—पी. चंद्रिका, एम.आर. भगवती, विद्या रश्मि, छाया भगवती तथा डी.सी. गीता

कश्मीरी कवयित्रियाँ : नसीन शफ़ई, फ़िरदौस राना, रफ़ीका मजीद, शमा साहिबा, सुमेरा हमीद तथा निगात साहिबा
28 सितंबर 2013, सोपोर

संताली लेखिकाएँ : सारिका सरेन, जालेश्वरी हांसदा, सिंगा मुर्मू, सिलि हांसदा, शारदा मरांडी, जोबा मुर्मू
28 सितंबर 2013, रायरंगपुर

नेपाली महिला लेखक : शांति छेत्री, कविता लामा, बीनाश्री खारेल, ललिता शर्मा तथा सुधा एम.राई
10 नवंबर 2013, गांतोक

असमिया महिला लेखक : निरुपमा बरगोहाईं, तोषाप्रभा कलिता, निरुपमा मिश्र तथा मालिनी
1 दिसंबर 2013, काजीरंगा, असम

कश्मीरी महिला कवयित्रियाँ : संतोष शाह नादान, बिमला ऐमा तथा डॉली
26 मार्च 2014, जम्मू

बाङ्ला महिला लेखक : कृष्णा बसु, पापोरी गंगोपाध्याय, सेवंति घोष तथा तृप्ति सांत्र
24 फ़रवरी 2014, कोलकाता

लोक : विविध स्वर

यह कार्यक्रम क्षेत्रीय गायन एवं नृत्य प्रस्तुतियों पर आधारित है, जिसमें व्याख्यानों के साथ-साथ प्रदर्शन भी सम्मिलित है। इस वर्ष निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

पेना वादन एवं गायन
14 सितंबर 2013, मणिपुर

ओड़िशा के अश्व नृत्य की प्रस्तुति
28 सितंबर 2013, भुवनेश्वर

ढोल नृत्य : थाप्पत्तम
11 अक्टूबर 2013, तमिलनाडु

बोडो नृत्य प्रस्तुति
17 नवंबर 2013, पुरुलिया

बिहु और होगरा नृत्य प्रस्तुति
19 नवंबर 2013, पुरुलिया

साहित्यिक कृति पर गीत-नृत्य प्रस्तुति
19 नवंबर 2013, कड्डालूरु

रब नृत्य प्रस्तुति
18 जनवरी 2014, दुर्गापुर

रायबेंशे नृत्य प्रस्तुति
19 जनवरी 2014, दुर्गापुर

भोजपुरी लोकगीत प्रस्तुति
14 मार्च 2014, नई दिल्ली

कच्छी लोकगीत
15 मार्च 2014, नई दिल्ली

मुलाक़ात

यह विभिन्न भाषाओं के उन युवा लेखकों के लिए एक विशेष मंच है, जिन्हें अपनी साहित्यिक क्षमता दिखाने का अवसर प्राप्त नहीं हो पाता। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सर्जनात्मक कृतियों से वाचन, व्याख्यान एवं विचार-विमर्श सम्मिलित हैं। इस वर्ष निम्नलिखित कार्यक्रमों को आयोजन किया गया।

राजेश्वर राजू, सुनीता बदवाल, दीपक अर्शी तथा जोगिन्दर कुमार (डोगरी लेखक)
31 अगस्त 2013, दिल्ली

युवा तमिळ लेखक
12 अक्तूबर 2013, सालेम

असमिया लेखक : मोनालिसा सैकिया, संजीव पाल डेका तथा विजय शंकर बर्मन, अनीस-उज-जमान, लुत्फा हनुम् सेलिमा बेगम, कुशाल दत्त
27 अक्टूबर 2013, गुवाहाटी

तमिळ लेखक : पल्लवी कुमार, कवि नानो तथा जयश्री
18 नवंबर 2013, दक्कालोर

मलयाळम् तथा कन्नड लेखक : सुदर्शन रामनथल्ली, नरहल्ली बालसुब्रह्मण्य तथा वेंकटपु सत्यम
20 नवंबर 2013, बेंगळूरु

तमिळ कहानीकार : एन. विश्वनाथन
28 दिसंबर 2013, मन्नारकुडी (तेलुगु लेखक)

तमिळ लेखक : वैमैनादन, सोलै सुंदरपेरुमल, एषिलमिंथान तथा मन्नारकुदी विश्वनाथन
19 अक्तूबर 2013, मन्नारकुडी

युवा लेखक : प्रभात, विपिन चौधरी तथा प्रांजल धर
21 जनवरी 2014

बाङ्ला लेखक : विनोद घोषाल, चंद्रावी बंद्योपाध्याय, देवज्योति मुखोपाध्याय, झुमूरपांडे स्वागता दास गुप्ता
27 फ़रवरी 2014, कोलकाता

संताली लेखक : अर्जुन माझी, असित सोरेन, प्रेम सोरेन, बिरसांत हांसदा तथा प्रेसनजित मुर्मू

कवि अनुवादक

मन प्रसाद सुब्बा (नेपाली कवि) तथा बीना क्षेत्रीय (हिंदी अनुवादक)
सितंबर 2013, नई दिल्ली

ज्ञानेंद्रपति (हिन्दी कवि) तथा प्रफुल्ल शिलेदार (मराठी अनुवादक)
28 सितंबर 2013, मुंबई

मनोहर जाधव (मराठी) ने पवन करण कृत कविताओं का पाठ किया
17 जनवरी 2014, पुणे

सारि धरम हांसदा (संताली) तथा कृष्णपद किस्कू (बाङ्ला अनुवादक)
2 मार्च 2014, मालदा पश्चिम बंगाल

डोगरी महिला लेखक : शशि पठानिया, वीणा गुप्ता, संतोष खजूरिया, हेमला अग्रवाल, उषा किरण खान तथा शकुंतला बीरपुरी
11 नवंबर 2013, जम्मू

तमिळ महिला लेखक : येत्रिसेल्वी, शम्मुगानु, केतारिय, पद्मभराते तथा इंदिरा

तमिळ महिला लेखक : सी. वल्लरसी एम. तमिषरसी, तेविता मणि, शोभना तथा एम. गोमती
13 अक्तूबर 2013, सालेम

बिम्मी सदारंगाणी, भारती सदारंगाणी, पुष्पा भंभाणी, सीमा भंभाणी, अनिता तेजवाणी, चंपा चेतनाणी, मंजु मीरवाणी, कोमल, डालाणी, रीता छट्पर, ऋतु भाटिया तथा संगीता खिलवाणी (सिन्धी कवयित्रियाँ)
27 अक्तूबर 2013, आदिपुर

तमिळ महिला लेखक : ईरा. मीनाक्षी, श्रीविद्या, श्यामला तथा पोरकलै
28 अक्तूबर 2013, पुदुचेरी

आविष्कार

मीनाक्षी प्रसाद (हिन्दुस्तानी गायक)
26 जून 2013, नई दिल्ली

रेखा सूर्य (हिंदुस्तानी गायक)
25 अक्तूबर 2013, मुंबई

नारी चेतना

वनीता (पंजाबी), सुभाष शमाजी (अंग्रेज़ी) तथा सुमन किरण (हिन्दी)
6 अगस्त 2013, नई दिल्ली

पोरकलै, अरंग मल्लिका, मुरुगन, कल्पना एवं तिलकवती
18 जनवरी 2014, चेन्नई

वितस्ता रैणा (अंग्रेज़ी), अल्पना मिश्र (हिंदी), बेअंत और (पंजाबी) एवं वसीम राशिद (उर्दू)
10 फ़रवरी 2014, नई दिल्ली

तिलोत्तमा मजुमदार, कावेरी रायचौधुरी, चैताली चट्टोपाध्याय, गोपा दत्त भौमिक, बिनता रायचौधुरी तथा मितुल दत्त (बाङ्ला महिला लेखक)
8 मार्च 2014, कोलकाता

उमा देवी, अमरंता तथा सी.वी.गीता
8 मार्च 2014, मद्रास विश्वविद्यालय, चैन्नै

कन्नड लेखिकाएँ : अंजलि रमन्ना, बी.बी. भारती, एन. संध्या रानी, स्फूर्ति, पी. चंद्रिका
8 मार्च 2014, बेंगलूरु

युवा साहिति

युवा साहिति
25 जुलाई 2013, दिल्ली

जतींद्र परवेज़ (उर्दू), गुरशरण (पंजाबी) तथा कुमार अनुपम (हिंदी)
25 जुलाई 2013, नई दिल्ली

मैथिली कवि : अविनाश, रमण कुमार सिंह एवं अरुणाभ सौरभ
27 अगस्त 2013, नई दिल्ली

देवप्रिया राय (अंग्रेज़ी), मृत्युंजय प्रभाकर (हिंदी), कुलबीर (पंजाबी) तथा परवेज़ शहरयार (उर्दू)
14 फरवरी 2014, नई दिल्ली

व्यक्ति और कृति

प्रख्यात मणिपुरी विद्वान : एन. राजमोहन सिंह, एम. कीर्ति सिंह, एम. एन. सिंह, जे.सी. सांसम तथा आर.के. विदुर
18 अगस्त 2013, मणिपुर

अमृत वोदाणी (मनोचिकित्सक)
1 सितंबर 2013, अहमदाबाद

केतन मेहता
5 अक्तूबर 2013, गुवाहाटी

सीताराम येचुरी (राजनीतिज्ञ)
7 अक्तूबर 2013, दिल्ली

जे.बी. पटनायक (राजनीतिज्ञ)
4 जनवरी 2014, भुवनेश्वर

माहिम बर' (प्रख्यात असमिया लेखक)
29 नवंबर 2013, गुवाहाटी

शासकीय निकायों की बैठकें

कार्यकारी मंडल

22 मार्च 2013, गुवाहाटी
23 अगस्त 2013, चेन्नै
24 सितंबर 2013, नई दिल्ली
18 दिसंबर 2013, नई दिल्ली
10 मार्च 2014, नई दिल्ली

सामान्य परिषद्

18 फ़रवरी 2013, नई दिल्ली
23 अगस्त 2013, चेन्नै
11 मार्च 2014, नई दिल्ली

वित्त समिति

17 जून 2013, नई दिल्ली

क्षेत्रीय मंडल बैठकें

पूर्वी क्षेत्रीय मंडल
22 जून 2013, गुवाहाटी

उत्तर क्षेत्रीय मंडल
25 जुलाई 2013, नई दिल्ली

पश्चिमी क्षेत्रीय मंडल
27 जून 2013, मुंबई

दक्षिणी क्षेत्रीय मंडल
11 अगस्त 2013, बेंगळूरू

भाषा परामर्श मंडल की बैठकें

असमिया	:	3 जून 2013	मणिपुरी	:	15 जून 2013
बाङ्ला	:	15 जून 2013	मराठी	:	8 जून 2013
बोडो	:	11 मई 2013	नेपाली	:	26 जून 2013
डोगरी	:	25 जून 2013	ओड़िया	:	3 जून 2013
अंग्रेज़ी	:	15 मई 2013	पंजाबी	:	5 जून 2013
गुजराती	:	18 मई 2013	राजस्थानी	:	29 मई 2013
हिंदी	:	7 जून 2013	संस्कृत	:	12 जून 2013
कोंकणी	:	9 जून 2013	संताली	:	15 जून 2013
कन्नड	:	25 मई 2013	सिन्धी	:	19 मई 2013
कश्मीरी	:	1 जून 2013	तमिळ	:	4 मई 2013
मैथिली	:	26 जून 2013	तेलुगु	:	26 मई 2013
मलयालम्	:	28 मई 2013	उर्दू	:	10 मई 2013

साहित्य अकादेमी पुस्तकालय

राजधानी स्थित पुस्तकालयों के मानचित्र पर साहित्य अकादेमी पुस्तकालय का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। पुस्तकालय में 24 भाषाओं की पुस्तकों में साहित्य, समालोचना, दर्शनशास्त्र, इतिहास तथा उससे संबंधित विषयों की पुस्तकों का विशाल भंडार होने के साथ-साथ पुस्तकालय के सक्रिय सदस्यों की संख्या भी उसी अनुपात में है। वर्ष 2013-2014 में पुस्तकालय के 612 नए सदस्य बने हैं तथा 1763 नई पुस्तकें पुस्तकालय हेतु ख़रीदी गई।

बोडो, डोगरी, अंग्रेज़ी, हिन्दी, कश्मीरी मैथिली, मणिपुरी, नेपाली, ओड़िया, पंजाबी, राजस्थानी, संताली तमिळ, तेलुगु तथा उर्दू पुस्तकों को इंटरनेट पर वेब ओपीएसी द्वारा ढूँढ़ा जा सकता है। बाङ्ला और संस्कृत पुस्तकों के रेट्रोकंवर्जन का काम अभी चल रहा है। समस्त भाषाओं की पुस्तकों की ऑन-लाइन कैटलॉगिंग का काम किया जा चुका है। इन खंडों के ऑटोमेशन होने के साथ पुस्तकालय कम समय में ग्रंथ-सूची उपलब्ध करा सकता है। *हूज़' हू ऑफ़ इंडियन राईटर्स* जैसी महत्त्वपूर्ण परियोजना तथा डिजिटल सॉफ़्टवेयर द्वारा फ़ोटोज़ के डिजिटाइज़ेशन का कार्य पुस्तकालय स्टाफ़ द्वारा किया रहा है। पुस्तकालय अन्य भाषाओं की पुस्तकों के कंप्यूटरीकरण का काम शीघ्र प्रारंभ करने जा रहा है।

पुस्तकालय भारतीय साहित्य पर लिखित अंग्रेज़ी भाषा के आलेख, जो उसकी पत्रिका पर आधारित हैं, के क्रमांकन का कार्य भी करता है। यह *डाटाबेस* पुस्तकालय के ग्राहकों के लिए भी उपलब्ध है।

पुस्तकालय ने पाठकों के लाभ को ध्यान में रखते हुए एक नई सेवा प्रारंभ की है जिसमें समाचार पत्र की कतरनों, पुस्तक समीक्षाओं तथा ज्वलंत मुद्दों को प्रदर्शित किया जाता है।

साहित्य अकादेमी के कोलकाता, बेंगळूरु तथा मुंबई स्थित क्षेत्रीय कार्यालयों में भी पुस्तकालय हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए प्रत्येक वर्ष नियमित रूप से पुस्तकों की ख़रीद की जाती है। क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के पुस्तकालय ने अपने संग्रहण के रेट्रोकंवर्जन का कार्य शुरू कर दिया है।

लेखकों को यात्रा अनुदान

वर्ष 2013-14 के दौरान निम्नलिखित लेखकों ने यात्रा अनुदान का लाभ उठाया :-

मराठी : नामदेव कोहली ने मध्यप्रदेश तथा विष्णु पावले ने राजस्थान की यात्रा की।

सिन्धी : रोशनी रोहर ने राजस्थान तथा चंपा चेलाणी ने महाराष्ट्र की यात्रा की।

अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यशालाएँ

सिन्धी लेखन के पुनर्मूल्यांकन पर कार्यशाला
21-23 जून 2013, आदिपुर

अनुवाद कार्यशाला : दिमासा-अंग्रेज़ी
27-29 जुलाई 2013, दिल्ली

अनुवाद कार्यशाला : दिमासा-अंग्रेज़ी
28-30 जुलाई 2013, अगरतला

अनुवाद कार्यशाला : बाड्ला-डोगरी
16-10 सितंबर 2013, जम्मू

पंजाबी, अंग्रेज़ी असमिया कहानी अनुवाद कार्यशाला
21-25 अक्तूबर 2013, दिल्ली

अनुवाद कार्यशाला : बाड्ला-संताली
13-16 नवंबर 2013, कोलकाता

मणिपुरी-बाड्ला कविता अनुवाद कार्यशाला
21-23 नवंबर 2013, इंफ़ाल

अनुवाद कार्यशाला : चिरू-मणिपुरी
22-24 नवंबर 2013, इंफ़ाल

कन्नड-कश्मीर कहानी अनुवाद कार्यशाला
24-27 मार्च 2014, श्रीनगर

सिंधी-डोगरी कविता अनुवाद कार्यशाला
25-28 मार्च 2014, मनसर

सिंधी ग़ज़ल संकलन के हिंदी अनुवाद पर कार्यशाला
30 मार्च 2014, अहमदाबाद

पत्रिकाएँ

इंडियन लिटरेचर (अंग्रेज़ी द्वैमासिक)
संपादक : यशोधारा मिश्र (अतिथि संपादक)
अप्रैल 2013 से मार्च 2014 तक 6 अंक प्रकाशित।

समकालीन भारतीय साहित्य (हिन्दी द्वैमासिक)
संपादक : रणजीत साहा (अतिथि संपादक)
अप्रैल 2013 से मार्च 2014 तक 6 अंक प्रकाशित।

संस्कृत प्रतिभा (अर्द्धवार्षिक)
प्रथम संपादक : राधावल्लभ त्रिपाठी
द्वितीय संपादक : भगवतीनंद
अप्रैल 2013 से मार्च 2014 तक 2 अंक प्रकाशित।

साहित्य मंच, प्रवासी मंच, राजभाषा मंच, पुस्तक विमोचन कार्यक्रम, लेखकों पर बने वृत्तचित्रों का प्रदर्शन, सांस्कृतिक विनिमय गोष्ठयाँ आदि

आदि भाषा सम्मेलन
6-7 अप्रैल 2013, पासिघाट, अरुणांचल प्रदेश

प्रवासी मंच : प्रेमलता (अर्जेंटीना में भारतीय हिंदी लेखिका)
12 अप्रैल 2013, नई दिल्ली

पूर्वोत्तर एवं दक्षिणी युवा लेखक सम्मिलन
27-28 अप्रैल 2013, मदुरै

उर्दू कवि सम्मिलन
कृष्ण कुमार तूर, शाहिद मालुलि, जयंत परमार, फ़रहत अहसास, शाइस्ता यूसुफ़, शमीम तारिक़, अज़ीम गुरविंदर सिंह कोहली, ज़फ़र मुरादाबादी एवं फ़रियाद अज़ार
10 मई 2013, नई दिल्ली

पूर्वोत्तर एवं पश्चिमी युवा लेखक सम्मिलन
31 मई 2013, मुंबई

तीन प्रख्यात लेखक—के.पी. शशिधरन, अभय कुमार तथा ए.पी. महेश्वरी
4 जून 2013, नई दिल्ली

हिंदी नाटक-पाठ : त्रिपुरारी शर्मा
6 जून 2013, नई दिल्ली

पूर्वोत्तर एवं उत्तरी लेखक सम्मिलन
13-14 जून 2013, नई दिल्ली

तेलुगु कवि सम्मिलन
16 जून 2013, सिरसिला (आंध्र प्रदेश)

भारतीय लेखक प्रतिनिधिमंडल—लीलाधर जगूड़ी, ध्रुवज्योति बोरा, एम. प्रियव्रत सिंह तथा बसवराज कालगुडी का सिओल (कोरिया) दौरा
19-23 जून 2013

उर्दू कथा लेखिकाओं द्वारा कहानी-पाठ
जकिया मशहदी, वसीम बेगम, हकरा बानो, रेशम परवीन
21 जून 2013, लखनऊ

बारली भाषा सम्मेलन
29-30 जून 2013, महाराष्ट्र

लेखकों का थाईलैण्ड दौरा : हरेकृष्ण सत्पथी, अर्जुन देव चारण, ऋता शुक्ल तथा के. श्रीनिवासराव
7-15 जुलाई 2013

प्रभाकर श्रोत्रिय द्वारा हिंदी नाटक-पाठ
27 जुलाई 2013, नई दिल्ली

पूर्वोत्तर तथा पूर्वी युवा लेखक सम्मिलन
27-28 जुलाई 2013, भुवनेश्वर

कहानी-पाठ कार्यक्रम
30 जुलाई 2013, नई दिल्ली

डोगरी में बाल साहित्य
7 अगस्त 2013, नई दिल्ली

साहित्य मंच : राहुल सोनी, विवेक नारायण तथा शर्मिष्ठा महांति
7 अगस्त 2013, नई दिल्ली

साहित्य मंच : ज्योतिरींद्र नंदि की जन्मशतवार्षिकी
21 अगस्त 2013, कोलकाता

मणिपुरी काव्योत्सव
17 अगस्त 2013, चुरुचांदपुर, मणिपुर

मणिपुरी साहित्य में प्रकृति का उपयोग
19 अगस्त 2013, इंफाल

साहित्य मंच : इंडो-अमेरिकी कवि मारग्रेट मास्केनहस का कविता पाठ
19 अगस्त 2013, नई दिल्ली

कालूरी हनुमंत राव (तेलुगु लेखक)
20 अगस्त 2013, नई दिल्ली

साहित्य मंच : प्राचीन मणिपुरी साहित्य
20 अगस्त 2013, इंफ़ाल

बाल साहित्य
27 अगस्त 2013, पुदुचेरी

साहित्य मंच : ए.जे. थॉमस (अंग्रेज़ी कवि)
29 अगस्त 2013, दिल्ली

साहित्य मंच : कश्मीरी कवि
29 अगस्त 2013, श्रीनगर

संताली रचनापाठ
31 अगस्त 2013, घाटशिला

साहित्य मंच : बच्चों के लिए सृजनात्मक साहित्य
6 सितंबर 2013, असम

बोडो कवि सम्मिलन
8-9 सितंबर 2013, गोलपाड़ा, असम

तमिळ कवि सम्मिलन
11 सितंबर 2013, तंजावुर

हिंदी नाटक-पाठ : दया प्रकाश सिन्हा
13 सितंबर 2013, दिल्ली

पश्चिमी भारतीय भाषाएँ
13 सितंबर 2013, मुंबई

कवि सम्मिलन (मणिपुरी)
14 सितंबर 2013, वांगजिंग, मणिपुर

साहित्य मंच : सिन्धी नाटककार
14 सितंबर 2013, कुबेर नगर

नेपाली कवि सम्मिलन
भक्त सिंह ठकुरी, राम बहादुर शाह, अपूर्ण अनुभव, सीताराम पौड्याल, जीवन राणा, अनामिका राई, कर्ण थामी, मंजु लामा, हेम जोशी, दिलुसुवेदी एवं गीता लिंबू
15 सितंबर 2013, शिलॉंग

साहित्य मंच : सुनील गंगोपाध्याय
17 सितंबर 2013, इंफ़ाल

हिंदी सप्ताह
17-23 सितंबर 2013, नई दिल्ली

क्रोएशियाई लेखक प्रतिनिधिमंडल का दौरा
17 सितंबर 2013, नई दिल्ली

साहित्य मंच : जिंगोनिया जिंगोने, इतालवी तथा एन्नोलिसा अद्योलोरोतो स्पानी लेखकों के साथ
18 सितंबर 2013, नई दिल्ली

तमिळ लेखकों के साथ क्रोएशियाई लेखक प्रतिनिधिमंडल
चेन्नई

बाल साहित्य तथा युवा साहित्य पुरस्कार विजेता सम्मिलन
21 सितंबर 2013, बेंगळूरु

कवि-संधि
कश्मीरी महिला लेखक
28 सितंबर 2013, कश्मीर

साहित्य मंच एवं कवि सम्मिलन
27 सितंबर 2013, पुदुचेरी

नेपाली कवि सम्मिलन : मनोज बागोटी, मोनिका मुखिया, डालसिंह अकेला, जोगेन दरनाल, एस. मुस्कान, प्रतिभा कुमारी, निर्मला प्रधान, तारा, सुबेदी, सुधीर छेत्री, शमशेर अली, टीका भाई, ज्ञान सुतर तथा सुधा, गुरुंग (नेपाली लेखक), अतुल दोदिया : दृश्य कलाकार
2 अक्तूबर 2013, बडोदरा

साहित्य मंच : लुज़ एलेना सेपुलवेदा जिमेनेज़ (कोलंबियाई कवि)
3 अक्तूबर 2013, नई दिल्ली

साहित्य मंच : भीखुभाई पारेख (गुजराती लेखक)
3 अक्तूबर 2013, बडोदरा

साहित्य मंच : कश्मीरी कहानी-पाठ
5 अक्तूबर 2013, शेपियन

नेपाली ग़ज़ल-पाठ
6 अक्तूबर 2013, सिलिगुड़ी

अगरतला लोकत्सव 2013
7-8 अक्तूबर 2013, अगरतला

हिन्दी कहानी-पाठ कार्यक्रम : हरिसुमन बिष्ट, वीरेन्द्र सक्सेना तथा प्रदीप पंत
8 अक्तूबर 2013, नई दिल्ली

तमिळ कहानी-पाठ
10 अक्तूबर 2013, सालेम

साहित्य मंच : सिन्धी लेखक
इंदिरा पूनावाला शबनम, नीलम छाबरिया, सी.टी. केशवाणी लाल, विजया टेकसिंघाणी, सरोज भरवाणी, बलदेव बुधरानी दीप एवं हरकृष्ण समथाणी
12 अक्तूबर 2013, पुणे

साहित्य मंच : समकालीन मलयाळम् साहित्य
17 अक्तूबर 2013, तिरुवनंतपुरम

साहित्य मंच : बाङ्ला लेखक सुमाथनाथ घोष की जन्मशती के अवसर पर
21 अक्तूबर 2013, कोलकाता

सोफाना श्रीचम्पा (थाईलैण्ड) : अकादेमी की आनंद कुमार स्वामी फ़ेलो
22 अक्तूबर 2013, दिल्ली

पेरू तथा क्यूबा में भारत महोत्सव
प्रतिभागी लेखक : पुरुषोत्तम अग्रवाल, के. सच्चिदानंदन, एच.एस. शिवप्रकाश, एम.पी. गांगुली, अरुण कमल एवं करवी डेका हज़ारिका
23-25 अक्तूबर 2013, पेरू तथा क्यूबा

साहित्य मंच : सोफाना श्रीचम्पा, अकादेमी की आनंद कुमार स्वामी फ़ेलो
25 अक्तूबर 2013, मुंबई

बहुभाषी लेखक सम्मिलन
26-27 अक्तूबर 2013, गुवाहाटी

साहित्य मंच : डॉ. कमल (मणिपुरी लेखक) के जीवन एवं कृतित्व पर
28 अक्तूबर 2013, हवाना

साहित्य मंच : सोफाना श्रीचम्पा, अकादेमी की आनंद कुमार स्वामी फ़ेलो
29-30 अक्तूबर 2013, बेंगळूरु

साहित्य मंच : प्राचीनता और मलयाळम् भाषा एवं साहित्य के मूल्य
1 नवंबर 2013, केरल

साहित्य मंच : सोफाना श्रीचम्पा
4 नवंबर 2013, कोलकाता

शारजाह पुस्तक मेला : अकादेमी की सहभागिता
6-16 नवंबर 2013, नई दिल्ली

युवा कवि सम्मिलन (कन्नड)
9 नवंबर 2013, मुंबई

तमिळ कवि सम्मिलन
9 नवंबर 2013, सालेम

साहित्य मंच : कोंकणी महिला लेखक
16 नवंबर 2013, मुंबई

कहानी-पाठ कार्यक्रम (तमिळ)
16 नवंबर 2013, कड्डालोर

बाल लेखक : नई चुनौतियाँ
17 नवंबर 2013, नई दिल्ली

कवि सम्मिलन (तमिळ)
17 नवंबर 2013, तिरुचिवापल्ली

साहित्य मंच : पुस्तकों पर परिचर्चा
के.के. गंगाधरन, एस. कारलोस, इंदिरा कुमारी, नागतिहल्ली रमेश एवं एन. रविकुमार
18 नवंबर 2013, बेंगळूरु

साहित्य मंच : रामेश्वर प्रेम (हिंदी लेखक) द्वारा नाटक-पाठ
22 नवंबर 2013, दिल्ली

साहित्य मंच : मीडिया और साहित्य
26 नवंबर 2013, बेंगळूरु

साहित्य मंच : हिंदी लेखक : गौरी शंकर रैणा, उमेश चौहान तथा विनोद खेतान
29 नवंबर 2013, दिल्ली

असमिया कवि सम्मिलन
30 नवंबर 2013, असम

साहित्य मंच : च. श्रीनिवास राजू को श्रद्धांजलि
1 दिसंबर 2013, बेंगळूरु

प्रवासी मंच : दिव्या माथुर (हिंदी लेखक)
6 दिसंबर 2013, दिल्ली

पूर्वोत्तर तथा दक्षिणी काव्योत्सव
7-8 दिसंबर 2013, बेंगळूरु

साहित्य मंच : समकालीन मलयाळम् भाषा और साहित्य का वर्तमान परिदृश्य
10 दिसंबर 2013, कोल्लम

मलयाळम् साहित्य परिदृश्य
सी.आर. प्रसाद, के. एस. पिळ्ळै, जी. पचराव, मुंचिनाडु पद्मकुमार
12 दिसंबर 2013, कोल्लम

राजभाषा मंच : ज्ञान प्रकाश विवेकश ग़ज़ल-पाठ
13 दिसंबर 2013, दिल्ली

साहित्य मंच : संताली रचना-पाठ
गोविंद चंद्र माझी, कृष्ण चंद्र सरेन, जगन्नाथ मुर्मू, दाशरथि सरेन एवं फागुराम माझी
15 दिसंबर 2013, नई दिल्ली

साहित्य मंच : साहित्य द्वारा युवाओं में नैतिक जागरूकता
17 दिसंबर 2013, मद्रास

बहुभाषी कवि सम्मिलन
28 दिसंबर 2013, गुवाहाटी

अनुवादक सम्मिलन
30 दिसंबर 2013, पुदुचेरी

हिंदी नाटक-पाठ कार्यक्रम : सुरेन्द्र वर्मा
30 दिसंबर 2013, दिल्ली

विंदा करंदीकर पर बने वृत्तचित्र का प्रदर्शन
24-25 दिसंबर 2013, मुंबई

साहित्य मंच : उर्दू कवि सम्मिलन
चंद्रभान ख्याल, रउफ़ रज़ा, सुरेंद्र शजर, तालिब जैदी एवं निर्मल सिंह
31 दिसंबर 2013, दिल्ली

साहित्य मंच : मीडिया और साहित्य
मलयालम् लेखकों के साथ साहित्य मंच

बाङ्ला कहानी-पाठ
पुष्पल मुखोपाध्याय, रामकुमार मुखोपाध्याय, समरेश मजुमदार
9 जनवरी 2014, कोलकाता

साहित्य मंच : कन्नड साहित्य, संस्कृति और कला
देवदास शेट्टी, ईश्वर अलेवूर, बी.एस. कुरकल, श्रीधर एवं जी.एन. उपाध्या
11 जनवरी 2014, मुंबई

अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्र फ़िल्मोत्सव
10-12 जनवरी 2014, बेंगळूरु

साहित्य मंच : कहानी-पाठ (तमिळ)
12 जनवरी 2014, चेन्नई

नेपाली कवि सम्मिलन
12 जनवरी 2014

साहित्य मंच : प्रेमचंद फ़ेलो राम दयाल राकेश (नेपाली लेखक)
16 जनवरी 2014, मुंबई

पूर्वोत्तर कवि सम्मिलन
22 जनवरी 2014, जोरहाट

कविता-पाठ कार्यक्रम
24 जनवरी 2014, मुंबई

युवा उपन्यासकारों द्वारा उपन्यास पर विमर्श
27 जनवरी 2014, त्रिवेंद्रम

नेपाली कवि सम्मिलन
2 फ़रवरी 2014, तेजपुर

अनुवाद पर व्याख्यान
सायंतन दासगुप्ता, रामकुमार मुखोपाध्याय, अशीक मजुमदार, जतींद्र कुमार नायक एवं उज्जल सिंह
6 फ़रवरी 2014, कोलकाता

साहित्य मंच : मार्गस लतिक (एस्तोनियाई कवि)
24 फ़रवरी 2014, नई दिल्ली

बाङ्ला काव्योत्सव
22-23 मार्च 2014

दक्षिणी भाषाओं का काव्योत्सव
9 फ़रवरी 2014, हैदराबाद

प्रवासी मंच : पंकज मोहन (दक्षिण कोरिया से हिन्दी विद्वान)
14 फ़रवरी 2014, नई दिल्ली

नेपाली रचना-पाठ
16 फ़रवरी 2014, नामची, सिक्किम

हिन्दी रचना-पाठ
16 फ़रवरी 2014, नई दिल्ली

पूर्वोत्तर एवं उत्तरी लेखक सम्मिलन
17 फ़रवरी 2014, नई दिल्ली

जन्मशतवार्षिकी साहित्य मंच : अद्वैत मल्लबर्मन (बाङ्ला कवि)
19 फ़रवरी 2014, कोलकाता

बाल साहित्यकारों द्वारा रचना-पाठ
20 फ़रवरी 2014, नई दिल्ली

युवा लेखक सम्मिलन
21 फ़रवरी 2014, नई दिल्ली

साहित्य मंच : आधुनिक तमिळ साहित्य पर संगम साहित्य का प्रभाव
28 फ़रवरी 2014, चेन्नै

साहित्य मंच : धीरूबेन पटेल और उषा मेहता
8 मार्च 2014, मुंबई

साहित्य मंच : महिला लेखक
हिमांशी शेलत (गुजराती) एवं उर्मिला पवार (मराठी)
12 मार्च 2014, मुंबई

स्थापना दिवस समारोह
12 मार्च 2014, मुंबई

स्थापना दिवस समारोह
12 मार्च 2014, बेंगळूरु

स्थापना दिवस समारोह
12 मार्च 2014, कोलकाता

स्थापना दिवस समारोह
12 मार्च 2014, चेन्नई

भाषा पर साहित्य मंच
14 मार्च 2014, कालिकट

कवि मुरुगुसुंदरम पर केंद्रित साहित्य मंच
15 मार्च 2014, सालेम

उपन्यास पर साहित्य मंच
21 मार्च 2014, कोइलैण्डी

बाङ्ला काव्योत्सव
22-23 मार्च 2014, बर्धमान

साहित्य मंच : उर्दू लेखकों के साथ
23 मार्च 21014, राजौरी

साहित्य मंच : तमिळ बोलियाँ और साहित्य
28 मार्च 2014, पुदुचेरी

मैथिली कवि सम्मिलन
29 मार्च 2014, बेगूसराय

मैथिली कवि सम्मिलन
29 मार्च 2014, भागलपुर

पूर्वोत्तर एवं दक्षिणी लेखक सम्मिलन
29-30 मार्च 2014, विशाखापत्तनम

प्रवासी मंच : उषा राजे सक्सेना
(यू. के. से पधारी हिंदी लेखिका)
31 मार्च 2014, नई दिल्ली

पुस्तक प्रदर्शनियाँ

प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

4-5 अप्रैल 2013, हिंदू कॉलेज, नई दिल्ली
16 अप्रैल 2013, प्रधान कार्यालय, दिल्ली
8-14 मई, धर्मशाला
19-23 जून 2013, सिओल
20-23 जून 2013, उज्जैन
29 जुलाई–1 अगस्त 2013, उदयपुर
2-4 अगस्त 2013, वाराणसी
4-7 अगस्त 2013, अजमेर
23-31 अगस्त 2013, दिल्ली पुस्तक मेला
5-7 सितंबर 2013, प्रधान कार्यालय, दिल्ली
20-24 सितंबर 2013, उर्दू पुस्तक प्रदर्शनी
25-26 सितंबर 2013, भीष्म साहनी पुस्तक प्रदर्शनी
28 सितंबर-6 अक्तूबर 2013, मोगा पुस्तक मेला पंजाब
6-9 अक्तूबर 2013, अकबरपुर
8-12 अक्तूबर 2013, फ्रैंकफर्ट
24-27 अक्तूबर 2013, इलाहाबाद
26-30 अक्तूबर 2013, फैज़ाबाद
24 अक्तूबर 2013, नेहरू भवन, दिल्ली
6-15 नवंबर 2013, शारजाह
14-16 नवंबर 2013, रोहतक
15-20 नवंबर 2013, जे.एन.यू., नई दिल्ली
21-25 नवंबर 2013, मुज्जफरपुर
5-6 दिसंबर 2013, विश्व युवक केंद्र
14-17 दिसंबर 2013, लुधियाना
27-29 दिसंबर 2013, उर्दू पुस्तक प्रदर्शनी
8-9 जनवरी 2014, सी.आर.पार्क, दिल्ली
18-20 जनवरी 2014, जयपुर
31 जनवरी से 5 फ़रवरी 2014, पटना
5-7 फ़रवरी 2014, जोधपुर
18-20 फ़रवरी 2014, वाराणसी
15-23 फ़रवरी 2014, विश्व पुस्तक मेला
14-16 फ़रवरी 2014, दिल्ली विश्वविद्यालय
28 फ़रवरी 2014, के.एन.सी.
1-3 मार्च 2014, आई.ओ.आर.ए.
10-15 मार्च 2014, साहित्योत्सव, नई दिल्ली
21-24 मार्च 2014, सबद कार्यक्रम के अंतर्गत दिल्ली

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

1-12 जनवरी 2014, विजयवाड़ा
4-12 जनवरी 2014, मंगलौर
7-9 जनवरी 2014, मैडिकेरी
10-12 जनवरी 2014, बेंगलूरु
1-9 फ़रवरी 2014, तिरुपति
27-29 मार्च 2014, हैदराबाद
29-30 मार्च 2014, विशाखापत्तनम
29-31 मार्च 2014, नागतिहल्ली

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

28 जून 2013, कोलकाता
22 जुलाई 2013, कोलकाता
27-28 जुलाई 2013, भुवनेश्वर, ओड़िशा

12 अगस्त 2013, कोलकाता
31 अगस्त 2013, घाटशिला, झारखंड
1 सितंबर 2013, चाकुलिया, झारखंड
31 अगस्त–1 सितंबर 2013, बर्ला ओड़िशा
9 सितंबर 2013, कोलकाता
12-21 सितंबर 2013, कोलकाता
28 सितंबर 2013, रायरंगपुर, ओड़िशा
30 सितंबर 2013, जमशेदपुर, झारखंड
26-27 अक्तूबर 2013, गुवाहाटी
15-24 नवंबर 2013, असम
22 नवंबर 2013, डिब्रूगढ़, असम
22-24 नवंबर 2013, कोलकाता
24-26 नवंबर 2013, कोलकाता
25-26 नवंबर 2013, कोलकाता
4-15 दिसंबर 2013, भुवनेश्वर
11-17 दिसंबर 2013, कैनिंग II पश्चिम बंगाल
14-21 दिसंबर 2013, दक्षिण 24 परगना, प.बं.
15-24 दिसंबर 2013, इंफ़ाल
23-30 दिसंबर 2013, नदिया, प.बं.
25 दिसंबर 2013-5 जनवरी 2014, गुवाहाटी
27 दिसंबर 2013-2 जनवरी 2014, बांकुरा, प.बं.
27 दिसंबर 2013-5 जनवरी 2014, हुगली, प.बं.
2-8 जनवरी 2014, वीरभूमि, प.बं.
5-12 जनवरी 2014, कोकराझार, असम
11-15 जनवरी 2014, कोलकाता
11-19 जनवरी 2014, हावड़ा, प.बं.
22 जनवरी 2014, संबलपुर, ओड़िशा
17-26 जनवरी 2014, कोलकाता
18-27 जनवरी 2014, जोरहाट, असम
29 जनवरी-9 फ़रवरी 2014, कोलकाता
29 जनवरी-9 फ़रवरी 2014, भुवनेश्वर
11-16 फ़रवरी 2014, कोलकाता
13-24 फ़रवरी 2014, अगरतला
14-20 फ़रवरी 2014, माल्दा, प.बं.
14-20 फ़रवरी 2014, मुर्शिदाबाद, प.बं.
20-25 फ़रवरी 2014, राउरकेला, ओड़िशा

चेन्नई कार्यालय

27-28 अप्रैल 2013, मदुरै
14-28 अप्रैल 2013, चितिराय
5-9 जून 2013, तिरुर
5-14 जुलाई 2013, नेयवाली
2-11 अगस्त 2013, उडुमलै
23-25 अगस्त 2013, चेन्नै
30 अगस्त–9 सितंबर 2013, मदुरै
20-21 सितंबर 2013, चेन्नै
27 सितंबर 2013, पुदुचेरी
1-10 अक्तूबर 2013, कोयंबटूर
4-13 अक्तूबर 2013 डिन्डिगुल
9-13 अक्तूबर 2013, सालेम
18 अक्तूबर 2013, त्रिवेंद्रम
23-24 अक्तूबर 2013, तंजावूर
28 अक्तूबर 2013, पुदुचेरी
14-20 नवंबर 2013, कड्डलोर
25-26 नवंबर 2013, थानिनायग अडिगलर
29 नवंबर-9 दिसंबर 2013, कोयंबटूर
31 दिसंबर 2013, पुदुचेरी
10 जनवरी 2014, चेन्नै

24 जनवरी – 2 फ़रवरी 2014, रामनाथपुरम
30 जनवरी – 9 फ़रवरी 2014, त्रिशूर
31 जनवरी – 9 फ़रवरी 2014, पेरमबलूर
31 जनवरी – 9 फ़रवरी 2014, तिरुप्पुर
11 जनवरी – 12 फ़रवरी 2014, चेन्नै
1-5 फ़रवरी 2014, तिरुर
14-23 फ़रवरी 2014, तंजावूर
14-23 फ़रवरी 2014, करैकुडी

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

1-7 मई 2013, अहमदाबाद
21-24 जून 2013, आदिपुर, कच्छ
26-30 जून 2013, भुज, गुजरात
29-30 जून 2013, ठाणे
13-19 जुलाई 2013, नासिक
16-21 जुलाई 2013, जूनागढ़, गुजरात
20-25 जुलाई 2013, अकोला, महाराष्ट्र
27-31 जुलाई 2013, बुलढाना, महाराष्ट्र
9-15 अगस्त 2013, जलगाँव, महाराष्ट्र
28-29 सितंबर 2013, नवी मुंबई
2-5 अक्तूबर 2013, वड़ोदरा, गुजरात
19-20 अक्तूबर 2013, सांताक्रूज़, मुंबई
15-20 अक्तूबर 2013, पुणे
23-29 अक्तूबर 2013, राजकोट, गुजरात
1 नवंबर 2013, माटुंगा, मुंबई
9-10 नवंबर 2013, हिंगोली, महाराष्ट्र
14-20 नवंबर 2013, मुंबई
15-17 नवंबर 2013, पणजी, गोवा
28 नवंबर-1 दिसंबर 2013, शिवाजीनगर, पुणे
29 नवंबर-3 दिसंबर 2013, मुंबई
28-31 दिसंबर 2013, वर्द्धा, महाराष्ट्र
3-5 जनवरी 2014, पुणे
3-12 जनवरी 2014, नाशिक
9-13 जनवरी 2014, सतारा, महाराष्ट्र
4-12 जनवरी 2014, नागपुर, महाराष्ट्र
10-11 जनवरी 2014, जलगाँव, महाराष्ट्र
15-18 जनवरी 2014, जलगाँव, महाराष्ट्र
15-18 जनवरी 2014, मुंबई
17-19 जनवरी 2014, नंदुरबार, महाराष्ट्र
10-12 फ़रवरी 2014, ठाणे, महाराष्ट्र
17-19 फ़रवरी 2014, नांदेड़, महाराष्ट्र
9-13 जनवरी 2014, सतारा, महाराष्ट्र
26 फ़रवरी-1 मार्च 2014, पणजी, गोवा
26-27 फ़रवरी 2014, मुंबई
1-5 मार्च 2014, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

परियोजना एवं संदर्भ कार्य

भारतीय साहित्य का अभिलेखागार

साहित्य के क्षेत्र में अभिलेखन के महत्त्व और उसकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए साहित्य अकादेमी ने मार्च 1997 से भारतीय साहित्य के अभिलेखागार की एक परियोजना प्रारंभ की। जब अभिलेखागार पूरी तरह से बन जाएगा तो यह लेखकों और साहित्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री एकत्र और संरक्षित करेगा, जैसे कि पांडुलिपियाँ, चित्र, ऑडियो रिकार्डिंग, वीडियो रिकॉर्डिंग और प्रतिकृतियों (शबीह) आदि। पूरे भारतवर्ष में संस्थाओं और व्यक्तियों के पास उपलब्ध वीडियो फ़िल्म एवं फुटेज, लेखकों की पांडुलिपियाँ, लेखकों के मध्य हुए रोचक पत्राचार एवं साक्षात्कार और पाठ के उपलब्ध ऑडियो रिकॉर्डिंग को इकट्ठा कर यह भारतीय साहित्य के संग्रहालय के लिए एक ठोस आधार तैयार करेगा। अभिलेखागार में कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण चित्रों की सीडी-रोम्स पर स्कैन करने और संरक्षित करने का कार्य शुरू कर दिया गया है। लगभग एक सौ चित्रों का चयन कर उन्हें पोर्टफ़ोलियो सीडी में संरक्षित किया गया है।

साहित्य अकादेमी ने फ़िल्मों और भारतीय लेखकों और उनके लेखन से संबंधित वीडियो रिकॉर्डिंग के अभिलेखागार की परियोजना पर कार्य प्रारंभ किया है। अकादेमी द्वारा महत्त्वपूर्ण लेखकों पर बनाई गई फ़िल्मों में उनके चित्रों, आवाज़ों, जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं, जिन्होंने उनके जीवन को बदल दिया, उनके विचारों और सृजनात्मक उपलब्धियों एवं समकालीन प्रतिक्रिया को अभिलेखित करने का प्रयास किया गया है। वीडियो फ़िल्मों का यह अभिलेखागार भविष्य के अनूठे भारतीय साहित्यिक संग्रहालय का बीज होगा, जो आम पाठकों के लिए आनन्द का विषय होगा और साहित्यिक अनुसंधान-कर्ताओं और इतिहासकारों के लिए उपयोगी होगा। ये फ़िल्में उन निर्देशकों द्वारा निर्मित की गई हैं, जो अपनी तरह के सृजनात्मक कलाकार हैं। अकादेमी के द्वारा अब तक 112 लेखकों पर वीडियो फ़िल्में बनाई गई हैं। इन फ़िल्मों की सीडी बिक्री के लिए भी उपलब्ध हैं।

अकादेमी से किए जाने वाले पत्राचार को पुनर्मूल्यांकित किया गया है तथा जवाहरलाल नेहरू, एस. राधाकृष्णन, के.आर. कृपलानी, ज़ाकिर हुसैन, सी. राजगोपालचार्य एवं अन्य प्रख्यात व्यक्तियों पत्रों को संरक्षण हेतु पुस्तक रूप में तैयार किया गया है। समस्त मास्टर बीटा फ़िल्मों के डिजिटाइजेशन का कार्य पूर्ण हो चुका है। ऑडियो टेप्स की प्रामाणिकता को जाँचने के उपरांत उनका क्रमांकन, शीर्षक एवं सूची बनाने का कार्य आरंभ कर दिया गया है तथा उनकी प्रामाणिकता की जाँच के उपरांत वर्ष 2010 तक की ऑडियो कैसेट तैयार कर ली गई हैं।

श्री ज़ेड.ए. बर्नी ने जुलाई 2010 से अभिलेखागार परियोजना के निर्देशक के रूप में पदभार सँभाला।

नेशनल बिब्लियोग्राफ़ी ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

साहित्य अकादेमी की कार्यकारी मंडल की 19 अगस्त 2002 को हुई बैठक के लिए गए निर्णय के अनुरूप, एन. बी.आई.एल. की दूसरी शृंखला में सन् 1954-2000 तक का काल खंड सम्मिलित है। यह पुस्तक विद्वानों, पुस्तकालय के पाठकों, प्रकाशकों, पुस्तक विक्रेताओं तथा

उन व्यक्तियों के लिए कारगर सिद्ध होगी, जो पुस्तकों को संदर्भिका के रूप में देखने की रुचि रखते हैं।

इसकी दूसरी शृंखला में, साहित्य स्तर की समस्त पुस्तकों तथा साहित्य के क्षेत्र में स्थाई मूल्यों तथा 1 जनवरी 1954 से 31 दिसंबर 2000 तक के मध्य प्रकाशित संबद्ध विषय सम्मिलित हैं।

इस परियोजना के अंतर्गत 22 भारतीय भाषाओं की ग्रंथ-सूची का संकलन बनाने की योजना है। इस संदर्भ में 22 भाषाओं के विशेषज्ञों को अनुबंधित किया गया है। उक्त कार्य संकलन के विभिन्न स्तरों पर यूनाइटेड स्टेट्स लाइब्रेरी ऑफ़ कॉंग्रेस के पूर्व चयन एवं सूचीकरण अधिकारी जे़ड.ए. बर्नी के संपादन में किया जा रहा है। असमिया, बाड्ला, डोगरी, अंग्रेज़ी, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयाळम्, मराठी, मणिपुरी, नेपाली, ओड़िया, राजस्थानी, संस्कृत, सिंधी, तमिळ, तेलुगु और उर्दू की ग्रंथ-सूची का कार्य संकलनकर्त्ताओं द्वारा संपन्न किया जा चुका है। मुद्रण की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। मलयाळम् और उर्दू की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा इस वर्ष कन्नड और तमिळ की पुस्तकें प्रकाशित हो जाएँगी।

अनुवाद केन्द्र

अकादेमी ने बेंगळूरु और कोलकाता में दो अनुवाद केन्द्रों की स्थापना की। ये केन्द्र उस क्षेत्र की भाषाओं से अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं में अनूदित पुस्तकों की विशेष शृंखला के प्रकाशन से की गई है। हमने अपने दो केन्द्रों से पूर्व आधुनिक गौरव ग्रंथों के प्रकाशन की शृंखला प्रारंभ की है। बेंगळूरु में स्थित केन्द्र ने 'अस्मिता' नामक एक नई परियोजना भी आरंभ की है।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

साहित्य अकादेमी की प्रमुख गतिविधियों में इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर का निर्माण भी है। यह अपनी तरह की पहली योजना है, जिसमें भारत की बाइस भाषाओं को शामिल किया गया है। अंग्रेज़ी में प्रस्तुत इस विश्वकोश से भारतीय साहित्य की अभिवृद्धि और विकास की व्यापक रूपरेखा सामने आई है। लेखकों, पुस्तकों और सामान्य विषयों पर लिखित प्रविष्टियों को संबद्ध परामर्श मंडलों द्वारा सुव्यवस्थित किया गया और एक संचालन समिति द्वारा अंतिम रूप दिया गया है। देश भर के सैकड़ों लेखकों ने विभिन्न विषयों पर प्रविष्टियाँ भेजी हैं। यह विश्वकोश, जिसे छह खंडों की परियोजना के रूप में नियोजित किया गया, प्रकाशित है। डिमाई क्वार्टो आकार के प्रत्येक खंड में लगभग 1000 पृष्ठ हैं।

प्रथम तीन खंडों का संपादन प्रो. अमरेश दत्त ने किया, चौथे और पाँचवें खंड का संपादन प्रो. मोहन लाल ने किया, छठे खंड का संपादन परम अबीचंदानी एवं के. सी. दत्त ने किया।

इनसाइक्लोपिडिया के संशोधित संस्करण का संपादन कार्य प्रो. अय्यप्प पणिक्कर करेंगे। संप्रति, प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी इस परियोजना के प्रधान संपादक हैं। संशोधित संस्करण का प्रथम और द्वितीय खंड प्रकाशित किया जा चुका है। तृतीय खंड के संशोधन का कार्य साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में किया जा रहा है तथा इसे शीघ्र ही प्रकाशित किया जाएगा।

हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

अकादेमी की इस परियोजना का उद्देश्य है विभिन्न भाषाओं में और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों के अंतर्गत विभिन्न कालों में भारत में साहित्यिक गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना। प्रो. शिशिर कुमार दास द्वारा लिखित सन् 500-1399, 1800-1910 और सन् 1911 से 1956 तक के कालखंड को समेटनेवाले तीनों खंडों का प्रकाशन हो चुका है।

पूर्वी क्षेत्रीय अनुवाद केन्द्र

शांतिनिकेतन स्थित अनुवाद केंद्र को वर्ष 2001 के आरंभ में क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में स्थानांतरित कर दिया गया। इसके मानद निदेशक प्रो. स्वपन मजुमदार हैं। यह केन्द्र मुख्यतः पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं के मध्य अनुवाद को प्रोत्साहित भी करता है। इस केंद्र में समय-समय पर मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं के पूर्व-आधुनिककाल की पांडुलिपियों का अनुवाद किया जाता है जिससे (क) अन्य भाषाओं में पूर्वी भाषाओं का एक महत्वपूर्ण पाठ उपलब्ध हो सके तथा (ख) पूर्वी भाषाओं में किए गए अनुवाद अन्य भाषाओं में उपलब्ध हो सकें। इसका मुख्य ध्येय अनुवादकीय गतिविधियों को बढ़ावा देना है। इस केन्द्र की गतिविधियों में शामिल हैं—अनुवादकों को अनुबंधित करना, अनुवादों के संकलन तैयार करना, अनुवाद कार्यशालाओं और अनुवाद के सिद्धांतों पर आधारित संगोष्ठियों का आयोजन तथा स्नातक विद्यार्थियों को अनुवाद की आवश्यकता तथा गुणवत्ता के बारे में जानकारी देना है। केंद्र का कार्यक्षेत्र, लक्ष्य भाषा के संदर्भ में पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं तक सीमित है तथा स्रोत भाषा भारतीय भाषाएँ हैं—यद्यपि पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं में परस्पर अनुवाद बड़ी प्राथमिकता है।

द्विभाषी शब्दकोश परियोजना

सन् 2004 में साहित्य अकादेमी ने कई द्विभाषी शब्दकोशों का संकलन तैयार करने हेतु एक परियोजना का शुभारंभ किया। प्रथम चरण में बाङ्ला-असमिया, बाङ्ला-ओड़िया, बाङ्ला-मैथिली, बाङ्ला-मणिपुरी तथा बाङ्ला-संताली शब्दकोश लाने का निर्णय लिया गया। प्रत्येक शब्दकोश के लिए प्रख्यात विद्वानों, कोशकारों तथा विभिन्न भाषाओं के भाषा विशेषज्ञों का एक संपादन मंडल तैयार किया गया है। एक केन्द्रीय संपादन मंडल का भी गठन किया गया है जो पांडुलिपि के निर्माण एवं आगामी प्रकाशन संबंधी दिशा निर्देश तैयार करेगा तथा उसकी निगरानी करेगा।

यह पाया गया कि पूर्वोत्तर भारत की लगभग समस्त भाषाओं में अंग्रेज़ी की एकल तथा अंग्रेज़ी एवं अन्य भाषाओं के शब्दकोश तो कमोबेश उपलब्ध हैं, किन्तु बाङ्ला-मणिपुरी अथवा मणिपुरी-असमिया आदि भाषाओं के शब्दकोश लगभग न के बराबर हैं। साहित्य अकादेमी पड़ोसी राज्यों के बीच आपसी संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ करने के प्रयासों के चलते साहित्यिक कार्यों का अनुवाद एक भाषा से अन्य भाषाओं में करवा कर, कर रही है। किंतु समुचित मात्रा में शब्दकोशों की अनउपलब्धता एक बाधा बन चुकी है तथा अनुवादकों के पास अनुवाद कार्य करने हेतु विश्वसनीय शब्दकोश नहीं हैं। इस परिस्थिति में साहित्य अकादेमी ने शब्दकोश निर्माण की परियोजना को प्रारंभ किया है।

यह शब्दकोश औसत आकार के होंगे जिनमें 40000-45000 शब्द तथा प्रविष्टि स्वरूप वाक्यांश होंगे। विवरण अंश में आई.पी.ए. (इंटरनेशनल फोनेटिक ऐसोसिएशन) के अंतर्गत उच्चारण चिह्न दिया जाना प्रस्तावित है, स्रोत जैसे—संस्कृत, अरबी आदि, बोली के भाग में विस्तृत अर्थ (एक से अधिक, यदि आवश्यक हो तो) उदाहरण, व्युत्पन्न शब्द आदि। इस संपूर्ण परियोजना को प्रख्यात कोशकार प्रो. अशोक मुखोपाध्याय के संपादन में किया जा रहा है।

परियोजना के प्रथम द्विभाषी बाङ्ला-मैथिली शब्दकोश का 1 मई 2012 को लोकार्पण किया गया। बाङ्ला-संताली द्विभाषी शब्दकोश को 14 अगस्त 2012 को लोकार्पित किया गया। बाङ्ला-मणिपुरी तथा बाङ्ला-असमिया शब्दकोश इसी वर्ष प्रकाशित होने की संभावना है। बाङ्ला-नेपाली तथा बाङ्ला-ओड़िया द्विभाषी शब्दकोशों

के संकलन का कार्य प्रगति पर है। बाङ्ला-बोडो शब्दकोशों को पूरा करने हेतु एक नया संपादक मंडल बनाया जाएगा। संताली-बाङ्ला शब्दकोश तैयार करने का प्रस्ताव प्राप्त हुआ है, जिस पर अगली भाषा परामर्श मंडल की बैठक में चर्चा की जाएगी।

पूर्वोत्तर वाचिक साहित्य केन्द्र

पूर्वोत्तर वाचिक साहित्य केन्द्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य प्रकाशनों एवं रिकॉर्डिंग द्वारा पूर्वोत्तर वाचिक भाषाओं के कार्यों एवं वहाँ के साहित्य को प्रोत्साहित करना है। यह केन्द्र नियमित रूप से कवि गोष्टियों, साहित्य मंच, कार्यशालाओं आदि का आयोजन करता रहता है। यह केंद्र पूर्वोत्तर वाचिक साहित्य को अन्य मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं में भी अनूदित करवाता है। यह केन्द्र पूर्वोत्तर जनजातीय भाषाओं को अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं से निरंतर कार्यक्रमों के आयोजनों द्वारा मिलाने का कार्य भी करता है। संप्रति, श्रीमती मीनाक्षी सेन चंद्योपाध्याय इस केन्द्र की निदेशक हैं। यहाँ से लेपचा, क्रॉकबोराक, मिसिंग, बोंगचेर, गारो तथा मोग भाषाओं से अंग्रेज़ी में कई अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं।

इस वर्ष इस केन्द्र ने मिज़ोराम में राल्टे भाषा पर परिसंवाद तथा 26-27 फ़रवरी 2012 को तेलियामूरा में हालम साहित्य पर द्विदिवसीय साहित्य मंच का आयोजन किया। इस केन्द्र ने अरुणांचल प्रदेश में आदि परंपरा से संबंधित समस्त प्रारंभिक कार्य कर लिए हैं। इस केन्द्र ने अगरतला में आयोजित संताली तथा बाङ्ला संगोष्ठियों के आयोजन में भी सहायता की।

केंद्र ने प्रकाशक संघ, त्रिपुरा द्वारा आयोजित पुस्तक मेला तथा त्रिपुरा सरकार के आई.सी.ए. विभाग द्वारा आयोजित अगरतला पुस्तक मेला में भाग लिया।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक्स

यूनियन एकेडमी इंटरनेशनल द्वारा समर्थित इस महत्त्वाकांक्षी परियोजना का कार्य अकादेमी ने प्रो. कपिल कपूर के संपादन में प्रारंभ किया है। समस्त भारतीय भाषाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए लगभग 900 प्राप्त आलेखों का संपादन किया जा चुका है। इस खंड को प्रकाशन हेतु तैयार किया जा रहा है।

प्रकाशन

असमिया

उल्लंघन (पुरस्कृत ओड़िया कहानी-संग्रह *उल्लंघन*)
ले. प्रतिभा राय
अनु. ज्योत्स्ना बिस्वाल राउत
पृ. 280, रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-4420-7

हिस्ट्री ऑफ़ असमिया लिटरेचर : सप्लिमेंट्री वॉल्यूम
संपा. गोविंद प्रसाद शर्मा
पृ. 160, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-4421-4

निर्वाचित आधुनिक असमिया नाटक खंड-1 एवं 2 (असमिया नाटक संचयन)
संपा. पोना महंत
पृ. 616+528, रु. 550/-
ISBN : 978-81-260-4422-1

मैथिली गल्प संकलन
(स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कहानी संचयन)
संक. एवं संपा. कामाख्या देवी
अनु. प्रीति बरूआ
पृ. 120, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4438-2

मणिमहेश (पुरस्कृत बाङ्ला यात्रावृत्त)
ले. उमाप्रसाद मुखोपाध्याय
अनु. तीर्थ फूकन
पृ. 152, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-4493-1

रामकृष्ण परमहंस (विनिबंध)
ले. स्वामी लोकेश्वरानंद
अनु. संजीव कुमार नाथ
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4494-8

आधुनिक असमिया गद्य (प्रथम खंड)
(आधुनिक असमिया निबंधों का संचयन)
सं. लीलावती सइकिया बोरा
पृ. 296, रु. 170/-
ISBN : 978-81-260-4222-7

योगायोग (बाङ्ला उपन्यास)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. केशव महंत
पृ. 208, रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-4221-0 (द्वितीय पुनर्मुद्रण)

चंद्रगुप्त (हिंदी नाटक)
ले. जयशंकर प्रसाद
अनु. निरुपमा फूकन
पृ. 168, रु. 80/-
ISBN : 978-81-260-4429-0 (पुनर्मुद्रण)

चंद्रकुमार अग्रवाल (विनिबंध)
ले. के.एन. फूकन
पृ. 96, रु. 40/-
ISBN : 81-260-1523-3 (पुनर्मुद्रण)

गुणाभिराम बरूआ (विनिबंध)
ले. नारायण भूइयाँ
पृ. 86, रु. 40/-
ISBN : 81-260-1206-4 (पुनर्मुद्रण)

गुलिवरर भ्रमण वृत्तांत
ले. जोनाथन स्विफ़्ट
अनु. नरेंद्रनाथ शर्मा
पृ. 352, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4521-1 (द्वितीय पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला

ऐतो पाषाण आलो (पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह *पत्थर फेंक रहा हूँ*)
ले. चंद्रकांत देवताले
अनु. अरुणा मुखोपाध्याय
पृ. 88, रु. 80/-
ISBN : 978-81-260-4209-8

कलि कथा : वाया बाईपास
(इसी नाम का पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. अलका सरावगी
अनु. जया मित्र
पृ. 204, रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-4227-2

पाताल भैरवी (पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
ले. लक्ष्मीनंदन बोरा
अनु. सत्येन चौधुरी
पृ. 272, रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-4427-6 (पुनर्मुद्रण)

दादीबुढ़ा (इसी नाम का पुरस्कृत ओड़िया उपन्यास)
ले. गोपीनाथ महांति
अनु. रत्ना शाह
पृ. 70, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4227-2 (पुनर्मुद्रण)

मोहन दास (पुरस्कृत हिंदी कहानी)
ले. उदय प्रकाश
अनु. पारुल बंद्योपाध्याय
पृ. 68, रु. 60/-
ISBN : 978-81-260-4514-3

हठयोगी (पुरस्कृत सिंधी उपन्यास)
ले. तारा मीरचंदाणी
अनु. माया गराणी
पृ. 88, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-4491-7

अतीत तथा अनागतेर दाबी : सुधींद्रनाथ दत्त स्मारक प्रबंध संकलन (संगोष्ठी के आलेख)
सं. तीर्थंकर चट्टोपाध्याय
पृ. 152, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-4436-8

प्राचीन ओ आधुनिक गारो साहित्य (गारो साहित्य संचयन)
चयन एवं सं. कैरोलिन आर.मराक
अनु. एवं संपा. सुनील दास
पृ. 160, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-4437-5

बाङ्ला गल्प संकलन, खंड-1 (बाङ्ला कहानी संचयन)
संक. एवं संपा. असित कुमार बंद्योपाध्याय
एवं अजित कुमार घोष
पृ. 244, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-2655-5 (छठा पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला गल्प संकलन, खंड-2
संक. एवं संपा. अश्रु कुमार सिकदर एवं कविता सिन्हा
पृ. 288, रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-2519-0 (छठा पुनर्मुद्रण)

गठनबाद, उत्तर-गठनबाद एवङ प्राच्य काव्यतत्त्व
(पुरस्कृत उर्दू आलोचना कृति *साख़्तियात, पस-साख़्तियात और मशरिक़ी शैरियात*)
ले. गोपीचंद नारंग
अनु. सोमा बंद्योपाध्याय
पृ. 464, रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-4217-3 (दूसरा पुनर्मुद्रण)

संताली गान ओ कविता संकलन
(संताली गीतों एवं कविताओं का संकलन)
संक., अनु. एवं संपा. सुहृद कुमार भौमिक
पृ. 360, रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-4218-0 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

काज़ी नज़रुल इस्लाम (विनिबंध)
ले. गोपाल हलदर
पृ. 88, रु. 40/-
ISBN : 81-260-0847-4 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला गल्प संकलन, खंड-4
संक. एवं संपा. सुनील गंगोपाध्याय
पृ. 424, रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-2726-2 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

सैलजानंद मुखोपाध्याय (विनिबंध)
ले. बंधन. सेनगुप्ता
पृ. 110, रु. 40/-
ISBN : 81-260-2441-0 (दूसरा पुनर्मुद्रण)

जीवनलीला (गुजराती यात्रा वृत्तांत)
ले. काकासाहेब कालेलकर
अनु. प्रियरंजन सेन
पृ. 368, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4216-6 (पुनर्मुद्रण)

काज़ी अब्दुल वादूद (विनिबंध)
ले. ज़हीर उल हसन
पृ. 118, रु. 40/-
ISBN : 978-81-260-2591-6 (पुनर्मुद्रण)

बनफूल (विनिबंध)
ले. विप्लव चक्रवर्ती
पृ. 76, रु. 40/-
ISBN : 81-260-2117-9 (पुनर्मुद्रण)

सतीनाथ भादुड़ी (विनिबंध)
ले. स्वासती मंडल
पृ. 92, रु. 40/-
ISBN : 81-260-1533-0 (पुनर्मुद्रण)

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय : निर्वाचित रचना
संक. एवं संपा. भवतोष दत्त
पृ. 296, रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-2592-3 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

चंडीमंगल (मध्यकालीन बाङ्ला गौरवग्रंथ)
संपा. सुकुमार सेन
पृ. 464, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-2588-6 (छठा पुनर्मुद्रण)

राजशेखर बसु (विनिबंध)
ले. हेमंत कुमार
पृ. 68, रु. 40/-
ISBN : 81-260-1323-0 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

सत्येंद्रनाथ दत्त (विनिबंध)
ले. आलोक राय
पृ. 92, रु. 40/-
ISBN : 81-260-2501-8 (दूसरा पुनर्मुद्रण)

कबीर (विनिबंध)
ले. प्रभाकर माचवे
पृ. 56, रु. 40/-
ISBN : 978-81-260-2650-0 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

अपराध औ शास्ति (रूसी गौरवग्रंथ)
ले. फ्योदोर दोस्तोएव्स्की
अनु. अरुण सोम
पृ. 656, रु. 230/-
ISBN : 81-260-2175-6 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

अवनींद्रनाथ टैगोर (विनिबंध)
ले. अमितेंद्रनाथ टैगोर
पृ. 84, रु. 40/-
ISBN : 81-260-0659-5 (दूसरा पुनर्मुद्रण)

जन्माष्टावर्षे जीवनानंद (संगोष्ठी आलेखों का संकलन)
संपा. भूमेंद्र गुह
पृ. 308, रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-4228-3 (दूसरा पुनर्मुद्रण)

सांप्रतिक कश्मीरी छोटोगल्प
(समकालीन कश्मीरी कहानियाँ)
संक. हृदय कौल भारती
अनु. पृथ्वीश साहा
पृ. 88, रु. 65/-
ISBN : 81-260-2274-4 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

हरप्रसाद शास्त्री (विनिबंध)
ले. सत्यजित चौधुरी
पृ. 162, रु. 40/-
ISBN : 81-260-2019-9 (चौथा पुनर्मुद्रण)

माइकेल मधुसूदन दत्त : निर्वाचित रचना
संक. एवं संपा. शिशिर कुमार दास
पृ. 214, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-2511-4 (चौथा पुनर्मुद्रण)

साढ़े तिन हात भूमि
ले. अब्दुस्समद
अनु. अफ़सर अहमद तथा कलीम ख़ज़िक
पृ. 222, रु. 100/-
ISBN : 81-260-2444-5 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

सैय्यद मुज्तबा अली (विनिबंध)
ले. प्रशांत चक्रवर्ती
पृ. 120, रु. 40/-
ISBN : 978-81-260-2914-3 (दूसरा पुनर्मुद्रण)

स्वर्णकुमारी देवी (विनिबंध)
ले. सुदक्षिणा घोष
पृ. 72, रु. 40/-
ISBN : 81-260-2124-1 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

मृच्छकटिक (प्राचीन संस्कृत गौरवग्रंथ)
ले. शूद्रक
अनु. सुकुमारी भट्टाचार्जी
पृ. 182, रु. 85/-
ISBN : 978-81-260-2403-2 (आठवाँ पुनर्मुद्रण)

मोहितलाल मजुमदार (विनिबंध)
ले. द्विजेंद्रलाल नाथ
पृ. 96, रु. 40/-
ISBN : 81-260-2280-9 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय (विनिबंध)
ले. सुनील कुमार चट्टोपाध्याय
पृ. 96, रु. 40/-
ISBN : 81-260-1507-1 (चौथा पुनर्मुद्रण)

गोदान (हिंदी उपन्यास)
ले. प्रेमचंद
अनु. रणजीत सिन्हा
पृ. 410, रु. 160/-
ISBN : 81-260-2319-8 (पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला कविता समुच्चय (खंड-2)
(बाङ्ला कविता संकलन)
संक. एवं संपा. असित बंद्योपाध्याय
पृ. 393, रु. 150/-
ISBN : 81-260-1763-5 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

ताराशंकर : व्यक्तित्व ओ साहित्य (संगोष्ठी के आलेख)
संक. एवं संपा. प्रद्युम्न भट्टाचार्य
पृ. 291, रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-4245-8 (दूसरा पुनर्मुद्रण)

वामन फिरलोन्हा (मराठी उपन्यास)
ले. जयंत वी. नार्लीकर
अनु. सुव्रत बसु
पृ. 132, रु. 70/-
ISBN : 81-260-2107-1 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

लुन-यु (चीनी गौरवग्रंथ)
ले. कन्फ्यूशियस
अनु. अमितेंद्रनाथ ठाकुर
पृ. 96, रु. 60/-
ISBN : 978-81-260-2508-4 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

अद्वैत मल्लबर्मन (विनिबंध)
ले. अचिंत्य विश्वास
पृ. 72, रु. 40/-
ISBN : 978-81-260-4515-0 (दूसरा पुनर्मुद्रण)

ईश्वरचंद्र विद्यासागर (विनिबंध)
ले. हिरण्मय बनर्जी
अनु. सुधीर कुमार चौधुरी
पृ. 78, रु. 40/-
ISBN : 81-260-2125-X (छठा पुनर्मुद्रण)

रमेशचंद्र दत्त (विनिबंध)
ले. शिशिर कुमार सिन्हा
पृ. 85, रु. 40/-
ISBN : 81-260-1327-3 (दूसरा पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद (विनिबंध)
ले. प्रकाशचंद्र गुप्त
अनु. सुधाकांत रायचौधुरी
पृ. 86, रु. 40/-
ISBN : 81-260-1760-0 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

एई समय ओ जीवनानंद (संगोष्ठी आलेख)
संक. एवं संपा. शंख घोष
पृ. 192, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4224-1 (चौथा पुनर्मुद्रण)

दुसौ बछरेर बाङ्ला प्रबंध साहित्य, खंड-2
सं. आलोक राय, पवित्र सरकार एवं आशा घोष
पृ. 552, रु. 210/-
ISBN : 978-81-260-4513-6 (दूसरा पुनर्मुद्रण)

प्रणयनेर शतवर्षे विद्यासागर
(विद्यासागर की पुण्यशती संगोष्ठी के आलेख)
संपा. शंख घोष
पृ. 108, रु. 60/-
ISBN : 81-260-2193-4 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

असमिया साहित्येर इतिहास
(असमिया साहित्य का इतिहास)
ले. विरंचि कुमार बरुआ
अनु. सुधांशुमोहन बंद्योपाध्याय
पृ. 242, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-4512-9 (दूसरा पुनर्मुद्रण)

अश्वघोष (विनिबंध)
ले. तपोधीर भट्टाचार्जी
पृ. 56, रु. 40/-
ISBN : 81-7201-882-7 (दूसरा पुनर्मुद्रण)

शिवनाथ शास्त्री (विनिबंध)
ले. वारिवरण घोष
पृ. 88, रु. 40/-
ISBN : 81-7201-902-5 (दूसरा पुनर्मुद्रण)

गालिबेर स्मृति
ले. अल्ताफ़ हुसैन
अनु. पुष्पितो मुखोपाध्याय
पृ. 168, रु. 80/-
ISBN : 978-81-260-4425-2 (पुनर्मुद्रण)

डोगरी

पिछलग
(पुरस्कृत गुजराती उपन्यास *आंगलियात*)
ले. जोसेफ मैकवान
अनु. यश रैना
पृ. 184, रु. 180/-
ISBN : 978-81-260-4027-8

डोगरी गीत (डोगरी गीत-संचयन)
चयन एवं सं. इंद्रजीत केसर
पृ. 248, रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-4185-5

डोगरी एकांकी (डोगरी एकांकी संचयन)
चयन एवं सं. इंद्रजीत केसर
पृ. 233, रु. 220/-
ISBN : 978-81-260-4182-4

नवी दुनिया नवो चाननो
(पुरस्कृत नेपाली उपन्यास *नया क्षितिजका खोज*)
ले. असीत राई
अनु. विश्वनाथ भाटी
पृ. 116, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4028-5

गणनायक (पुरस्कृत मैथिली कहानी-संग्रह)
ले. साकेतानंद
अनु. कृष्ण प्रेम
पृ. 120, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-3385-0

हिंदी कैहनी संग्रैह
ले. भीष्म साहनी
अनु. उषा व्यास
पृ. 356, रु. 320/-
ISBN : 978-81-260-4235-7

छित्ती कहानियाँ
ले. ज्ञान सिंह
पृ. 226, रु. 230/-
ISBN : 978-81-260-480-0

किन्ने पाकिस्तान
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास *कितने पाकिस्तान*)
ले. कमलेश्वर
अनु. छत्रपाल
पृ. 384, रु. 375/-
ISBN : 978-81-260-4033-9

समेंगी देङ नेई सौना (पुरस्कृत तेलुगु कविता-संग्रह *कालान्नि निद्र पोन्निच्चनु*)
ले. एन.गोपी
अनु. प्रकाश प्रेमी
पृ. 116, रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-4031-5

नमेंन लाके च (पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह *नए इलाक़े में*)
ले. अरुण कमल
अनु. विजया ठाकुर
पृ. 88, रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-4288-3

मोकला गास (डोगरी कविता संचयन)
ले. ओम गोस्वामी
पृ. 239, रु. 220/-
ISBN : 978-81-260-4181-7

अंग्रेज़ी

ए ग्रीन पिज़न ऑन ए ड्रायड अप ब्रांच
(पुरस्कृत गुजराती उपन्यास)
ले. अंबर बहराइची
अनु. बलराज कोमल
पृ. 100, रु. 75/-
ISBN : 978-81-260-4176-3

शेष नमस्कार
ले. केतकी दत्त
अनु. संतोष कुमार घोष
पृ. 401, रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-3338-6

स्वीट वाटर एंड अदर कंट्री स्टोरीज़
ले. व्यंकटेश मडगुलकर
अनु. सुधाकर मराठे
पृ. 160, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-3335-8

कुरिंजि (पुरस्कृत तमिल उपन्यास *कुट्टाल कुरिंजि*)
ले. कोवि मणिशेखरन
अनु. के. चेल्लप्पन
पृ. 228, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-3337-8

ढोढ़ाइ चरित मानस (बाङ्ला उपन्यास)
ले. सतीनाथ भादुड़ी
अनु. इंशिता चंदा
पृ. 343, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-3333-1

करतार सिंह दुग्गल : ए रीडर
चयन एवं सं. परमजित सिंह रमण
पृ. 342, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4162-6

नेशनल बिब्लियोग्राफ़ी ऑफ़ इंडियन लिटरेचर दूसरी शृंखला (1954-2000), द्वितीय खंड
मुख्य सं. जेड. ए. बर्नी
संक. अरुण घोष
पृ. 540, रु. 355/-
ISBN : 978-81-260-4285-2

ए स्टोन्स थ्रो फ्रॉम कोलकाता
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. गजेंद्र कुमार मित्र
अनु. अनसूया गुह
पृ. 280, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-4213-5

नलचरितम
अनु. सुधा गोपाल कृष्णन
रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-0798-8 (पुनर्मुद्रण)

कॉनटेंपोरेरी डोगरी शॉर्ट स्टोरी
ले. वेद राही
अनु. सतनाम कौर
पृ. 108, रु. 85/-
ISBN : 978-81-260-4054-4

कमला आंशु (नेपाली लेखक पर विनिबंध)
ले. विजय बांतवा
रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4266-1

द एनसेस्टर (ओड़िया उपन्यास *दादी बुढ़ा*)
ले. गोपीनाथ महांति
अनु. अरुण कुमार महांति
पृ. 88, रु. 70/-
ISBN : 978-81-260-4226-5 (संशोधित संस्करण)

पोपटी हीरानंदानी (सिंधी लेखक पर विनिबंध)
ले. मोहन गेहाणी
पृ. 88, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4154-1

मराठी पोएट्री (1975-2000)
संक. एवं अनु. संतोष भूमकर
पृ. xii+188, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4158-9

द ब्रांडेड (पूरक खंड)
ले. लक्ष्मण गायकवाड
अनु. पी.ए. कोल्हटकर
रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-0486-X (पुनर्मुद्रण)

ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन इंग्लिश लिटरेचर
ले. एम.के. नायक
पृ. 344, रु. 120/-
ISBN : 81-260-1872-0 (बीसवाँ पुनर्मुद्रण)

कुवेंपु (विनिबंध)
ले. प्रभुशंकर
अनु. एच एस. कोमलेश
पृ. 120, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4386-5

नलयिर दिव्य प्रबंधम (कालजयी कन्नड कृति)
ले. आळ्वार
अनु. वेंगरै पार्थसारथि
पृ. 184, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4381-4

टी. जानकीरमन (विनिबंध)
ले. एम.ए. मोहम्मद हुसैन
अनु. अखिल शिवरामन
पृ. 83, रु. 50/-
ISBN : 81-260-4372-9

द लाइफ़ एंड वर्क्स ऑफ़ महर्षि विट्ठल रामजी शिंदे
ले. जी. एम. पवार
अनु. सुधाकर मराठे
पृ. 726, रु. 320/-
ISBN : 978-81-260-4064-3

यशोधरा चरित
ले. जन्न
अनु. टी.आर.एस. शर्मा
पृ. 152, रु. 95/-
ISBN : 978-81-260-4380-6

पेंसिल एंड अदर पोएम्स
ले. जयंत परमार
अनु. निशाद ज़ैदी
रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4330-9

नेशनल बिब्लिओग्राफी ऑफ़ इंडियन लिटरेचर द्वितीय शृंखला (1954-2000), खंड-1
सामान्य संपा. जे.ए. बर्नी
संक. अलका बरगोहाई
रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-4440-5

रोटेशंस ऑफ़ अनएंडिंग टाइम
ले. मार्क हाल्पेरिन
अनु. सुरा पी. रथ
रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-4243-2

मनोज दास : ए रीडर
सं. पी. राजा
रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-4246-3

समडे ड्रीम
(नवोदय योजना के अंतर्गत कविता-संग्रह)
ले. वितस्ता रैणा
रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-4248-7

फ़र्स्ट इंस्टिंक्ट
(नवोदय योजना के अंतर्गत कविता-संग्रह)
ले. विजया सिंह
रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-4259-3

ऑन पोएट्री दैट डिफ़ाइज़ डेफ़िनेशन
(संक्षिप्त व्याख्यान)
ले. ओ.एन.वी. कुरुप
रु. 40/-
ISबN : 978-81-260-4251-7

सांग्स फ्राम द सी शोर (कविता-संकलन)
सं. के. सच्चिदानंदन
रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4348-4

सतीशचंद्र बसुमतारी (विनिबंध)
ले. अदाराम बसुमतारी
पृ. 72, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4497-9

प्रहलाद प्रधान (विनिबंध)
ले. श्यामसुंदर महापात्र
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4518-1

वासो : सेलेक्टेड शॉर्ट स्टोरीज़
(चांगती सोमयाजुलु की कहानियों का संचयन)
सं. के. चंद्रहास एवं. के.के. महापात्र
पृ. 208, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-4398-9

द गिफ़्ट (पुरस्कृत तमिळ कहानी-संग्रह *अनवलिप्पु*)
ले. कु. अपगिरिसामी
अनु. पी. एम. भूपति
पृ. 176, रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-4365-1

गोरा (बाङ्ला उपन्यास)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. सुजीत मुखर्जी
रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-1801-1 (पुनर्मुद्रण)

मिस्ट्री ऑफ़ मिसिंग कैप
अनु. मनोज दास
रु. 100/-
ISBN : 81-7201-886-X (पुनर्मुद्रण)

द ड्राउट एंड अदर स्टोरीज़
ले. शरतचंद्र चटर्जी
सं. शशधर सिन्हा
रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1931-X (पुनर्मुद्रण)

पेरियालवार (विनिबंध)
ले. एस.पी. श्रीनिवास
पृ. 124, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4190-9

ऑफ़ मेन एंड मोमेंट्स
(पुरस्कृत तमिळ उपन्यास)
ले. डी. जयकांतन
अनु. के.एस. सुब्रमणियन
पृ. 288 रु. 180/-
ISBN : 978-81-260-4363-7

जेस्चर
सं. के. सच्चिदानंदन
रु. 180/-
SBN : 978-81-260-0019-8 (पुनर्मुद्रण)

कंप्लीट वर्क्स ऑफ़
कालिदास (खंड-1)
अनु. चंद्र राजन
रु. 350/-
ISBN : 81-7201-824-X (पुनर्मुद्रण)

द कंप्लीट वर्क्स ऑफ
कालिदास (खंड-II)
अनु. चंद्र राजन
रु. 350/-
ISBN : 81-260-1484-9 (पुनर्मुद्रण)

द इंग्लिश राइटिंग्स ऑफ़
रवींद्रनाथ टैगोर, खंड-II
सं. शिशिर कुमार दास
रु. 450/-
ISBN : 81-7201-945-9 (पुनर्मुद्रण)

तुरवि वेंधार श्रीनारायण गुरु
ले. टी. भास्करन
अनु. विजय कुमार कुनिस्सेरी
पृ. 152, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4204-3 (पुनर्मुद्रण)

टेल्स टोल्ड बाय मिस्टीक्स
ले. मनोज दास
रु. 180/-
ISBN : 81-260-1175-0 (पुनर्मुद्रण)

गुजराती

तन्मय धूली (पुरस्कृत ओड़िया कविता-संग्रह)
ले. प्रतिभा सत्पथी
अनु. रेणुका सोनी
पृ. VI+98, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-3245-7

हमपिना खडको (मूल कन्नड)
ले. चंद्रशेखर कंबार
अनु. हरीश मीनाक्षु
पृ. VI+88, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4155-8

गुणवंतराय आचार्य (विनिबंध)
ले. वर्षा अडालजा
पृ. 116, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3259-4

भक्त कवि दयारमणी काव्य सृष्टि
संपा. सुमन शाह
पृ. vii+216, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4143-5

हिंदी

खोए हुए अर्थ
(पुरस्कृत पंजाबी कविता-संग्रह *गुवाचे अर्थ*)
ले. निरंजन तस्नीम
अनु. कीर्ति केसर
पृ. 176, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-4022-3

शब्दांत (अकादेमी पुरस्कार प्राप्त पंजाबी कविता-संग्रह)
ले. देव
अनु. तरसेम
पृ. 303, रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-3388-1

कनकदास (कन्नड लेखक पर निबंध)
ले. टी.एन. नागरत्न
अनु. भालचंद्र जयशेट्टी
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4017-9

मंडन मिश्र (संस्कृत लेखक पर विनिबंध)
ले. उदयनाथ झा 'अशोक'
अनु. स्वाति एच. पद्मनाभन
पृ. 147, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3364-5

प्रेमचंद (हिंदी लेखक पर विनिबंध)
ले. कमल किशोर गोयनका
पृ. 124, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4023-0

रा रा (रचमल्लु रामचंद्र रेड्डी)
(तमिळ लेखक पर विनिबंध)
ले. तक्कोलु माचि रेड्डी
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4024-7

पिंजरे के पंछी
(अकादेमी पुरस्कार प्राप्त तमिळ उपन्यास)
ले. नील पद्मनाभन
पृ. 112, रु. 80/-
ISBN : 978-81-260-4008-7

मोक्ष और अन्य कहानियाँ (स्पानी कहानी-संग्रह)
ले. खुआन अल्फ्रेडो पिंतो सावेद्रा
अनु. सोन्या सुरभि गुप्ता
पृ. 108, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-4311-8

धरा गीत (पूर्वोत्तर भारत की कहानियाँ)
सं. कैलाश सी. बराल
अनु. नरेंद्र तोमर
पृ. 147, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4296-8

गए दिनों की धूप छाँव
ले. शिवनाथ
अनु. उषा व्यास
पृ. 175, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-4297-5

मास्टर दीनदयाल (बाल साहित्य)
ले. परशुराम शुक्ल
पृ. 96, रु. 60/-
ISBN : 978-81-260-4014-8

मिश्र बंधु (विनिबंध)
ले. सूर्य प्रसाद दीक्षित
रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3237-2

उचितवक्ता (पुरस्कृत मैथिली कहानी-संग्रह)
ले. गंगेश गुंजन
अनु. देवशंकर नवीन
पृ. 121, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-4298-2

हुंदराज दुख्याल (विनिबंध)
ले. गोवर्द्धन शर्मा
पृ. 84, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4150-3

अपनों में नहीं रह पाने का गीत
(नवोदय योजना के अंतर्गत कविता-संग्रह)
ले. प्रभात
पृ. 154, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4301-9

समकालीन गुजराती कविताएँ
सं. एवं अनु. मीनाक्षी जोशी
पृ. 74, रु. 70/-
ISBN : 978-81-260-4300-2

प्रतिनिधि हिंदी बाल नाटक
सं. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 288, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4305-7

सिंधु-कन्या (पुरस्कृत संस्कृत उपन्यास)
ले. एवं अनु. श्रीनाथ श्रीपाद हसुरकर
पृ. 248, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4316-3

अली सरदार जाफ़री (विनिबंध)
ले. क़मर रईस
अनु. जानकी प्रसाद शर्मा
पृ. 132, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4314-9

अज्ञेय पत्रावली
सं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-3092-7

गुमशुदा दैर की गूँजती घंटियाँ (पुरस्कृत उर्दू कृति)
ले. एवं अनु. शीन काफ़ निज़ाम
अनु. सुंदर रामसामी
पृ. 116 रु. 80/-
ISBN : 978-81-260-4312-5

वचन (पुरस्कृत नेपाली उपन्यास)
ले. काशीबहादुर श्रेष्ठ
अनु. दुर्गाप्रसाद श्रेष्ठ
पृ. 64, रु. 70/-
ISBN : 978-81-260-4302-6

रघुवीर सहाय (विनिबंध)
ले. पंकज चतुर्वेदी
पृ. 136 रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4315-6

काठ (पुरस्कृत मैथिली कथनी-संग्रह)
ले. विभूति आनंद
अनु. प्रतिमा
पृ. 144, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4303-3

इंद्रनाथ मदान (विनिबंध)
ले. राकेश कुमार
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4313-2

अंतिम विदाई से तुरंत पहले
(नवोदय योजना के अंतर्गत कविता-संग्रह)
ले. प्रांजल धर
पृ. 174, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4021-6

दादू दयाल (विनिबंध)
ले. राम बक्ष
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2602-9 (पुनर्मुद्रण)

निर्मल वर्मा (विनिबंध)
ले. कृष्णदत्त पालीवाल
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2616-6 (पुनर्मुद्रण)

धरीक्षण मिश्र (विनिबंध)
ले. वेद प्रकाश पांडे
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2602-9 (पुनर्मुद्रण)

दुष्यंत कुमार (विनिबंध)
ले. विजय बहादुर सिंह
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2633-3 (पुनर्मुद्रण)

महामति प्राणनाथ (विनिबंध)
ले. रणजीत साहा
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1580-2 (पुनर्मुद्रण)

कबीर (विनिबंध)
ले. प्रभाकर माचवे
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2426-1 (पुनर्मुद्रण)

तीसरा प्राणी (पुरस्कृत ओड़िया कहानी-संग्रह)
ले. मनोज दास
अनु. श्रवण कुमार
रु. 150/-
ISBN: 81-7201-351-5 (पुनर्मुद्रण)

गोरखनाथ (विनिबंध)
ले. नगेन्द्र नाथ उपाध्याय
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2042-3 (पुनर्मुद्रण)

त्रिलोचन (विनिबंध)
ले. रेवती रमण
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-3188-7 (पुनर्मुद्रण)

गरीबदास (विनिबंध)
ले. लालचंद गुप्ता
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-3087-3 (पुनर्मुद्रण)

अमृत राय (विनिबंध)
ले. रणजीत साहा
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2051-2 (पुनर्मुद्रण)

भिखारी ठाकुर (विनिबंध)
ले. तैयब हुसैन पीड़ित
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2630-2 (पुनर्मुद्रण)

भगवती चरण वर्मा (विनिबंध)
ले. श्रीलाल शुक्ल
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0425-8 (पुनर्मुद्रण)

कुबेरनाथ राय (विनिबंध)
ले. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2523-9 (पुनर्मुद्रण)

अमृतलाल नागर रचना संचयन
सं. शरद नागर
रु. 600/-
ISBN: 978-81-260-2724-8 (पुनर्मुद्रण)

खड़ी बोली का पद्य
ले. अयोध्या प्रसाद खत्री
सं. राम निरंजन परिमलेन्दु
रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-2634-0 (पुनर्मुद्रण)

भूषण (विनिबंध)
ले. राजमल बोरा
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-199-x (पुनर्मुद्रण)

देवकीनंदन खत्री (विनिबंध)
ले. मधुरेश
रु. 50/-
ISBN: 81-7201-844-4 (पुनर्मुद्रण)

मलयज (विनिबंध)
ले. विजय कुमार
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2262-0 (पुनर्मुद्रण)

देवीशंकर अवस्थी (विनिबंध)
ले. अरविन्द त्रिपाठी
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1898-4 (पुनर्मुद्रण)

भारत भूषण अग्रवाल (विनिबंध)
ले. मूलचंद गौतम
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0952-7 (पुनर्मुद्रण)

अध्यापक पूर्ण सिंह (विनिबंध)
ले. रामचंद्र तिवारी
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-498-3 (पुनर्मुद्रण)

गणेश शंकर विद्यार्थी (विनिबंध)
ले. कृष्ण बिहारी मिश्र
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0006-6 (पुनर्मुद्रण)

धुवनेश्वर (विनिबंध)
ले. गिरीश रस्तोगी
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1029-6 (पुनर्मुद्रण)

जैनेन्द्र कुमार (विनिबंध)
ले. गोविन्द मिश्र
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1579-9 (पुनर्मुद्रण)

गुरु नानक (विनिबंध)
ले. गुरबचन सिंह तालिब
अनु. नरेन्द्र मोहन
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2873-4 (पुनर्मुद्रण)

चाहे जितनी दूर जाऊँ (बाङ्ला कविता संग्रह)
ले. सुभाष मुखोपाध्याय
अनु. रणजीत साहा
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-7201-999-8 (पुनर्मुद्रण)

बच्चों ने दबोचा चोर (मराठी बाल साहित्य)
ले. गंगाधर गाडगिल
अनु. एच.एस. साने
रु. 25/-
ISBN: 978-81-260-7201-522-4 (पुनर्मुद्रण)

इक दुनिया मेरी भी
(पुरस्कृत राजस्थानी कहानी संग्रह)
ले. सॉवर दइया
अनु. कन्हैयालाल भाटी
रु. 45/-
ISBN: 978-81-260-0865-4 (पुनर्मुद्रण)

अब्दुल क़लाम आज़ाद (विनिबंध)
ले. अब्दुल क़ाज़ी देसनवी
अनु. जानकी प्रसाद शर्मा
रु. 60/-
ISBN: 978-81-260-1408-3 (पुनर्मुद्रण)

आँधी और अन्य कहानियाँ (तेलुगु कहानियाँ)
ले. पी. पदमराजू
अनु. भीमसेन निर्मल
रु. 65/-
ISBN: 978-81-260-7201-493-7 (पुनर्मुद्रण)

रवीन्द्रनाथ का बाल साहित्य (खंड I)
अनु. युगजित नवलपुरी, सं. लीला मजुमदार
रु. 35/-
ISBN: 978-81-260-0009-0 (पुनर्मुद्रण)

रवीन्द्रनाथ का बाल साहित्य (खंड II)
अनु. युगजित नवलपुरी, सं. लीला मजुमदार
रु. 35/-
ISBN: 978-81-260-0008-2 (पुनर्मुद्रण)

किशोर कहानियाँ
ले. विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
अनु. अमर गोस्वामी
रु. 40/-
ISBN: 978-81-260-0747-8 (पुनर्मुद्रण)

हिन्दी कहानी संग्रह
सं. भीष्म साहनी
रु. 90/-
ISBN: 978-81-7201-657-3 (पुनर्मुद्रण)

पंजाबी कवितावली
सं. अमृता प्रीतम
अनु. हरिवंश
रु. 175/-
ISBN: 978-81-260-2149-7 (पुनर्मुद्रण)

लघु कथा संग्रह - I
सं. जयमंत मिश्र
अनु. रेखा व्यास
रु. 40/-
ISBN: 978-81-260-1219-6 (पुनर्मुद्रण)

अमृतलाल नागर (विनिबंध)
ले. श्रीलाल शुक्ल
रु. 50/-
ISBN: 81-7201-658-1 (पुनर्मुद्रण)

मलूकदास (विनिबंध)
ले. बलदेव वंशी
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2259-0 (पुनर्मुद्रण)

पांडे बेचन शर्मा 'उग्र' (विनिबंध)
ले. भवदेव पांडे
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1024-X (पुनर्मुद्रण)

पीतांबर दत्त बर्थ्वाल (विनिबंध)
ले. विष्णुदत्त राकेश
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1217-X (पुनर्मुद्रण)

इंद्र विद्यावाचस्पति (विनिबंध)
ले. विजयेन्द्र स्नातक
रु. 50/-
ISBN: 81-7201-505-4 (पुनर्मुद्रण)

नंद दुलारे वाजपेयी (विनिबंध)
ले. प्रेम शंकर
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1827-5 (पुनर्मुद्रण)

नरेन्द्र शर्मा (विनिबंध)
ले. हरि मोहन शर्मा
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2054-7 (पुनर्मुद्रण)

आचार्य नरेन्द्रदेव (विनिबंध)
ले. मस्तराम कपूर
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2384-8 (पुनर्मुद्रण)

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (विनिबंध)
ले. परमानंद श्रीवास्तव
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2738-5 (पुनर्मुद्रण)

दादा और पोता (असमिया बालसाहित्य)
ले. लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ
अनु. दिनकर कुमार
रु. 70/-
ISBN: 978-81-260-2043-1 (पुनर्मुद्रण)

वनदेवी (विनिबंध)
ले. कलवी गोपालकृष्णन
अनु. हरिकृष्ण देवसरे
रु. 25/-
ISBN: 81-7201-576-3 (पुनर्मुद्रण)

कबूतरों की उड़ान
ले. रस्किन बॉण्ड
अनु. सौमित्र मोहन
रु. 30/-
ISBN: 978-81-7201-806-1 (पुनर्मुद्रण)

बालकृष्ण शर्मा नवीन (विनिबंध)
ले. पवन कुमार मिश्र
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0647-1 (पुनर्मुद्रण)

प्रभाकर माचवे (विनिबंध)
ले. राजेन्द्र उपाध्याय
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1912-3 (पुनर्मुद्रण)

लघु कथा संग्रह (भाग II)
ले. रेखा व्यास
संक एवं संपा. जयमंत मिश्र
रु. 40/-
ISBN: 978-81-7201-348-5 (पुनर्मुद्रण)

सुभाषित संग्रह
संपा. वी. राघवन
अनु. राममूर्ति त्रिपाठी
रु. 75/-
ISBN: 978-81-7201-348-5 (पुनर्मुद्रण)

डॉ. नगेन्द्र (विनिबंध)
ले. निर्मला जैन
रु. 50/-
ISBN: 978-81-1581-0 (पुनर्मुद्रण)

होनहार बच्चे (मराठी बालसाहित्य)
ले. गंगाधर गाडगिल
अनु. माधवी देशपांडे
रु. 25/-
ISBN: 81-260-2954-8 (पुनर्मुद्रण)

पंडित श्रीराम शर्मा (विनिबंध)
ले. रामगोपाल शर्मा दिनेश
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2044-X (पुनर्मुद्रण)

एक पेड़ दो पक्षी (पुरस्कृत मराठी आत्मकथा)
ले. विश्राम बेडेकर
अनु. आर.एस. केलकर
रु. 160/-
ISBN: 978-81-7201-811-8 (पुनर्मुद्रण)

गुलेरी रचना संचयन
संपा. पीयूष गुलेरी एवं प्रत्यूष गुलेरी
रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-2990-7 (पुनर्मुद्रण)

फ़ादर कामिल बुल्के (विनिबंध)
ले. दिनेश्वर प्रसाद
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1416-4 (पुनर्मुद्रण)

राजस्थानी लोक जीवन शब्दावली
ले. ब्रजमोहन जवालिया
रु. 400/-
ISBN: 978-81-260-1212-9 (पुनर्मुद्रण)

आरण्यक
ले. विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
अनु. हंसकुमार तिवारी
रु. 125/-
ISBN: 978-81-260-0932-2 (पुनर्मुद्रण)

छह बीघा ज़मीन
ले. फ़कीरमोहन सेनापति
अनु. युगजित नवलपुरी
रु. 90/-
ISBN: 978-81-260-2129-2 (पुनर्मुद्रण)

मतिराम (विनिबंध)
ले. प्रभाकर श्रोत्रिय
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2526-3 (पुनर्मुद्रण)

काव्यार्थ चिन्तन (पुरस्कृत कन्नड कृति)
ले. जी.एस. शिवरुद्रप्पा
अनु. भालचंद्र जयशेट्टी
रु. 125/-
ISBN: 978-81-260-2389-9 (पुनर्मुद्रण)

भगवतशरण उपाध्याय (विनिबंध)
ले. खगेन्द्र ठाकुर
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2045-8 (पुनर्मुद्रण)

बाबू गुलाब राय (विनिबंध)
ले. इंद्रनाथ चौधुरी
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-3189-1 (पुनर्मुद्रण)

बिहारी (विनिबंध)
ले. बच्चन सिंह
रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0414-2 (पुनर्मुद्रण)

पराया (पुरस्कृत मराठी जीवनी)
ले. लक्ष्मण माणे
अनु. दामोदर खड़से
रु. 75/-
ISBN: 978-81-7201-179-2 (पुनर्मुद्रण)

जंगल टापू (पंजाबी बाल-साहित्य)
ले. जसबीर भुल्लर
अनु. शांता ग्रोवर
रु. 40/-
ISBN: 978-81-7201-482-1 (पुनर्मुद्रण)

मोरों वाला बाग (अंग्रेज़ी बाल-साहित्य)
ले. अनिता देसाई
अनु. विमला मोहन
रु. 30/-
ISBN: 81-7201-491-0 (पुनर्मुद्रण)

जंगल की एक रात (मराठी बाल-साहित्य)
ले. लीलावती भागवत
रु. 25/-
ISBN: 81-260-0228-X (पुनर्मुद्रण)

अबरज ग्रह की दंतकथा (जापानी बाल-साहित्य)
ले. ताजिमा शिन्जी
अनु. हरीश नारंग
रु. 40/-
ISBN: 978-81-260-0224-7 (पुनर्मुद्रण)

पक्या और उसका गैंग (मराठी बाल-साहित्य)
ले. गंगाधर गाडगिल
अनु. माधवी देशपांडे
रु. 25/-
ISBN: 978-81-260-2544-1 (पुनर्मुद्रण)

बिल्ली हाउस बोट पर (अंग्रेज़ी बाल-साहित्य)
ले. अनिता देसाई
अनु. विमला मोहन
रु. 25/-
ISBN: 978-81-7201-492-9 (पुनर्मुद्रण)

बुलबुल की किताब (बाङ्ला बाल-साहित्य)
ले. उपेन्द्रकिशोर रायचौधुरी
अनु. स्वप्न दत्ता
रु. 35/-
ISBN: 978-81-7201-481-1 (पुनर्मुद्रण)

जंगल कथा
ले. होराशियो क्यूरोगा
अनु. प्रीति पंत
रु. 40/-
ISBN: 978-81-260-2555-8 (पुनर्मुद्रण)

नेपाली लोक कथाएँ खंड - 1
ले. प्रकाश प्रसाद उपाध्याय
रु. 40/-
ISBN: 978-81-260-2672-2 (पुनर्मुद्रण)

नेपाली लोक कथाएँ खंड - 2
ले. प्रकाश प्रसाद उपाध्याय
रु. 40/-
ISBN: 978-81-260-2672-2 (पुनर्मुद्रण)

भारतीय बाल कहानियाँ - 1
ले. हरिकृष्ण देवसरे
रु. 40/-
ISBN: 978-81-260-2676-0 (पुनर्मुद्रण)

भारतीय बाल कहानियाँ - 2
ले. हरिकृष्ण देवसरे
रु. 40/-
ISBN: 978-81-260-2627-7 (पुनर्मुद्रण)

भारतीय बाल कहानियाँ - 3
ले. हरिकृष्ण देवसरे
रु. 40/-
ISBN: 978-81-260-2678-4 (पुनर्मुद्रण)

भारतीय बाल कहानियाँ - 4
ले. हरिकृष्ण देवसरे
रु. 40/-
ISBN: 978-81-260-2740-8 (पुनर्मुद्रण)

जलपरी का मायाजाल
ले. वेवस्टार डेविस जीरवा
अनु. अलमा सोहिल्या
रु. 30/-
ISBN: 81-260-1817-8 (पुनर्मुद्रण)

गोसांई बागान का भूत (बाङ्ला बाल-साहित्य)
ले. शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय
अनु. अमर गोस्वामी
रु. 30/-
ISBN: 81-260-0226-3 (पुनर्मुद्रण)

चंद्र पहाड़ (बाङ्ला बाल-साहित्य)
ले. विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
अनु. अमर गोस्वामी
रु. 30/-
ISBN: 81-7201-575-5 (पुनर्मुद्रण)

निर्बुद्धि का राजकाज
ले. गोपाल दास
रु. 30/-
ISBN: 81-7201-996-3 (पुनर्मुद्रण)

जापान की कथाएँ
ले. साइजी माकिनो
रु. 40/-
ISBN: 978-81-260-2627-7 (पुनर्मुद्रण)

गोट्या
ले. एन.डी. ताम्हनकर
अनु. सुरेखा पाणंदीकर
रु. 25/-
ISBN: 81-7201-244-6 (पुनर्मुद्रण)

अंतरिक्ष में विस्फोट
ले. जयंत वी. नार्लीकर
अनु. सुरेखा पाणंदीकर
रु. 30/-
ISBN: 81-7201-423-6 (पुनर्मुद्रण)

सुनो कहानी
ले. विष्णु प्रभाकर
रु. 25/-
ISBN: 81-7201-092-3 (पुनर्मुद्रण)

सूरज और मोर
ले. वेबस्टार डेविस जीरवा
अनु. अलमा सोहिल्या
रु. 40/-
ISBN: 81-260-1818-6 (पुनर्मुद्रण)

सुकुमार राय चुनिंदा कहानियाँ
ले. सुकुमार राय
अनु. अमर गोस्वामी
रु. 30/-
ISBN: 81-260-1415-6 (पुनर्मुद्रण)

गीतों की फुलवाड़ी
ले. कैलाश कबीर
संक. एवं संपा. विजयदान देथा
रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-1822-2 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद चुनिंदा कहानियाँ -1
सं. अमृत राय
रु. 30/-
ISBN: 978-81-7201-975-0 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद चुनिंदा कहानियाँ -2
सं. अमृत राय
रु. 30/-
ISBN: 978-81-7201-993-9 (पुनर्मुद्रण)

जड़ वाला कटहल
ले. एस. समुतिराम
अनु. विजयलक्ष्मी सुंदरराजन
रु. 60/-
ISBN: 978-81-260-0268-9 (पुनर्मुद्रण)

रवीन्द्रनाथ की कहानियाँ -1
ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर
अनु. राम सिंह तोमर
रु. 125/-
ISBN: 978-81-260-0323-5 (पुनर्मुद्रण)

रवीन्द्रनाथ की कहानियाँ -2
ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर
अनु. कनिका तोमर
रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-1409-1 (पुनर्मुद्रण)

गोरा (बाङ्ला उपन्यास)
ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर
अनु. सच्चिदानंद वात्स्यायन
रु. 125/-
ISBN: 978-81-7201-627-1 (पुनर्मुद्रण)

कुर्आँ (पुरस्कृत गुजराती उपन्यास)
ले. अशोकपुरी गोस्वामी
अनु. योगेन्द्रनाथ मिश्र
रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-2383-X (पुनर्मुद्रण)

कहानी : सूफ़ी की ज़ुबानी
ले. के.पी. रामनुन्नी
अनु. पी.के. राधामणि
रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2144-6 (पुनर्मुद्रण)

पुष्पदंत (विनिबंध)
ले. योगेन्द्रनाथ शर्मा
रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4002-5

जगनिक (विनिबंध)
ले. अयोध्या प्रसाद गुप्ता कुमुद
रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4018-6

अज्ञेय (विनिबंध)
ले. रमेश चंद्र शाह
रु. 50/-
ISBN : 81-7201-713-8 (पुनर्मुद्रण)

ताश का देश (विनिबंध)
ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर
अनु. रणजीत साहा
रु. 50/-
ISBN : 81-260-0317-0 (पुनर्मुद्रण)

नरेश मेहता (विनिबंध)
ले. प्रभाकर श्रोत्रिय
रु. 50/-
ISBN : 81-260-1823-2 (पुनर्मुद्रण)

कन्नड

ब्रह्मर्षि श्रीनारायण गुरु (विनिबंध)
ले. टी. भास्करन
अनु. पार्वती जी. ऐथल
पृ. 152, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4110-2

संरचनावाद, संरचनोत्तरवाद तथा प्राच्य काव्य मीमांसे
(पुरस्कृत उर्दू आलोचना कृति *साख़्तियात, पस साख़्तियात और मशरिक़ी शेरियात*)
ले. गोपी चंद नारंग
अनु. तिप्पे स्वामी
पृ. 528, रु. 350/-
ISBN : 81-260-4109-9

हरिणाक्षी (पुरस्कृत पंजाबी कहानी-संग्रह)
ले. मोहन भंडारी
अनु. जी. एन. रंगनाथ राव
पृ. 168, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4113-7

हिंदी कहानी-संग्रह
सं. भीष्म साहनी
अनु. एस. मालती सागर
पृ. 424, रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-4384-9

आर.के. नारायण (विनिबंध)
ले. रंगा राव
अनु. गीता शेनॉय
पृ. 104, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4387-3

उरियुतिरुव हूबना
(पुरस्कृत तेलुगु उपन्यास 'कालुतुन्न पूलयोटा')
ले. सैयद सलीम
अनु. जी. वीरभद्रगौड़ा
पृ. 174, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4114-5

यू. वी. स्वामीनाथ अय्यर (विनिबंध)
ले. के.वी. जगन्नाथन
अनु. कृष्णमूर्ति हनूर
पृ. 78, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4112-9

व्यासराय बल्लाल (विनिबंध)
ले. जी.एन. उपाध्याय
पृ. 132, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4388-1

बेगुडी (पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास *ककाल्ड*)
ले. किरण नागरकर
अनु. आर. लक्ष्मीनारायण
पृ. 696, रु. 350/-
ISBN : 978-81-260-4383-0

मोहना...ओ मोहना (पुरस्कृत तेलुगु काव्यकृति)
ले. के. शिव रेड्डी
अनु. चिदानंद सालि
पृ. 96, रु. 75/-
ISBN : 978-81-260-3324-X

नतु होगे रसुगोंडे
(मराठी आत्मकथा *मी असा घडलो)*
ले. भालचंद्र मंगुकर
अनु. सूरज कातकर
पृ. 160, रु. 95/-
ISBN : 978-81-260-4392-X

कन्नड मुक्तट्टु सन्ना कथैगलु (कहानी-संचयन)
सं. कृष्णमूर्ति हनुर एवं फ़कीर मो. कटपदी
पृ. 300, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4471-3

इस्मत चुग़ताई (विनिबंध)
ले. असदुद्दीन
अनु. फ़क़ीर मोहम्मद कटपदी
पृ. 120, रु. 50/-
ISBN : 81-260-4474-8

भवानी भट्टाचार्य (विनिबंध)
ले. शांतिनाथ के. देसाई
अनु. चिन्नेय्य सी. वस्तराड
पृ. 104, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4473-X

तिप्पेरुद्रस्वामी (विनिबंध)
ले. बी. जी. वेन्नेश होन्नली
पृ. 122, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4393-8

गिदुगु वेंकटराम मूर्ति (विनिबंध)
ले. एच. एस. ब्रह्मानंद
अनु. वी. गोपालकृष्ण
पृ. 78, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4394-6

राजिंदर सिंह बेदी (उर्दू लेखक पर विनिबंध)
ले. वारिस अल्वी
अनु. चंद्रशेखरय्या
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4395-4

विद्याधर पुंडलिक (विनिबंध)
ले. एस.एच. देशपांडे
अनु. ए. सुब्रमण्य
पृ. 88, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4104-8

श्यामसुंदर दास (हिंदी लेखक पर विनिबंध)
ले. सुधाकर पांडेय
अनु. टी.वी. अन्नपूर्णम्मा
पृ. 116, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4107-2

एल्लकिंता दीर्घ राति (पुरस्कृत ओड़िया कहानी-संग्रह *सब टारु दीर्घ राति*)
ले. चंद्रशेखर रथ
अनु. स्नेहलता रोहिंदकर
पृ. 112, रु. 75/-
ISBN : 978-81-260-4475-6

अस्तव्यस्त बदुकिना स्त्रीयरु
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास *डिस्ऑर्डरली वुमेन*)
ले. मालती राव
अनु. एम.वी. वसंत कुमारी
पृ. 224, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-4477-2

कश्मीरी

डूह
ले. रहीम रहबर
पृ. 230, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4172-5

मंज़ूर हाशमी (कश्मीरी लेखक पर विनिबंध)
ले. सद-उद्दीन सादी
पृ. 119, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4166-4

पी.आई.आर.
ले. पुनाथिल कुनहलाब्बदुला
अनु. मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा
रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-48-7 (पुनर्मुद्रण)

ऐजाज़-ए-ग़रीबा
ले. पीर गुलाम हसन शाह खोइहामी
सं. अब्दुल अहद हाजिनी
पृ. 245, रु. 225/-
ISBN : 978-81-260-4177-0

साख़ितयात-पस-साख़ितयात ते मशरिक़ी शेरियात
(अकादेमी पुरस्कार प्राप्त उर्दू आलोचना कृति
साख़ितयात, पस-साख़ितयात और मशरिक़ी शेरियात)
ले. गोपीचंद नारंग
अनु. मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा
पृ. 568, रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-4174-9

तेहराना आमेज़ी दलित दलीले
सं. रमणिका गुप्ता
अनु. अज़ीज़ हाजिनी
पृ. 576, रु. 450/-
ISBN : 978-81-260-4179-4

पंजाबी अफ़साना
ले. ओंकार कौल
रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-4326-2

कोंकणी अफ़साना
सं. मुश्ताक़ अहमद
रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-4331-6

कोंकणी

ब्रह्मर्षि श्री नारायण गुरु
ले. टी. भास्करन
अनु. आर.एस. भास्कर
पृ. VI+116 रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4159-6

उचल्या (पुरस्कृत मराठी उपन्यास)
ले. लक्ष्मण गायकवाड
अनु. पांडुरंग गावडे
पृ. 264, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-4141-1

राजवाड़े लेख संग्रह
(वी. के. राजवाड़े की चुनिंदा रचनाएँ)
संपा. टी. लक्ष्मणशास्त्री जोशी
अनु. नारायण भास्कर देसाई
पृ. 316, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4406-1

डोन वोलिचे मजगाती
(हिंदी कविता-संग्रह *दो पंक्तियों के बीच*)
ले. राजेश जोशी
अनु. परेश एन. कामत
पृ. 108, रु. 75/-
ISBN : 978-81-260-3126-6

रक्तकुंड (तमिळ उपन्यास)
ले. इंदिरा पार्थसारथी
अनु. माया खरंगटे
पृ. 148, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-3254-9

सुमिरन (राजस्थानी कविता-संग्रह)
ले. संतोष मायामोहन
अनु. संजीव वेरेंकर
पृ. 80, रु. 75/-
ISBN : 978-81-260-4403-0

मैथिली

हंसराज (मैथिली लेखक पर विनिबंध)
ले. धीरेंद्र नाथ मिश्र
पृ. 72, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4149-0

बाघे टापूक राति
(अकादेमी पुरस्कार प्राप्त असमिया कहानी-संग्रह *बाघे टापूर राति*)
ले. अपूर्व शर्मा
अनु. जयनारायण यादव
पृ. 95, रु. 60/-
ISBN : 978-81-260-4206-7

मदनेश्वर मिश्र (मैथिली लेखक पर विनिबंध)
ले. इंद्रकांत झा
पृ. 80, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4046-9

बङ्ला गल्प संकलन (खंड : एक)
सं. असित कुमा बंद्योपाध्याय
अनु. अशोक झा
पृ. 332, रु. 210/-
ISBN : 978-81-260-4274-6

कामायनी (कालजयी हिंदी काव्य)
ले. जयशंकर प्रसाद
अनु. शांति सुमन
रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-4266-1

छाछक डरीर (पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. अमिताव घोष
अनु. शंकर देव झा
पृ. 332, रु. 210/-
ISBN : 978-81-260-4047-6

राजमहलक अंतःपुर (पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. रमा मेहता
अनु. रवींद्र कुमार चौधरी
पृ. 184, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4268-5

मोहन दास
ले. उदय प्रकाश
अनु. विनीत उत्पल
पृ. 75, रु. 95/-
ISBN : 978-81-260-4207-4

श्रीकांत ठाकुर विद्यालंकार (विनिबंध)
ले. सुरेश्वर झा
पृ. 72, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4265-4

समयकें सुतऽने देबै (पुरस्कृत तेलुगु कविता-संग्रह *कालान्नि निद्र पोन्निव्वनु*)
ले. एन. गोपी
अनु. कविता कुमारी
पृ. 112, रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-4231-9

हेराएल जकों किछु (पुरस्कृत उर्दू कविता-संग्रह *खोया हुआ सा कुछ*)
ले. निदा फ़ाजली
अनु. सदरे आलम 'गौहर'
पृ. 112, रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-4269-2

सती बिहुला (लोकगाथा)
ले. बुचरू पासवान
पृ. 192, रु. 150/—
ISBN : 978-81-260-4270-8

योगानंद झा (विनिबंध)
ले. शचींद्र नाथ मिश्र
पृ. 72, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4051-3

मलयाळम्

सिरिसंपिगे (पुरस्कृत कन्नड नाटक)
ले. चंद्रशेखर कंबार
अनु. एस. रामंतल्ली
पृ. 96 रु. 75/-
ISBN : 978-81-260-4397-2

मणिपुरी

मणिपुरी लोकसाहित्य (मैती)
सं. एल. बीरेंद्र सिंह
पृ. 248, रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-4495-5

संस्कार (पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. यू. आर. अनंतमूर्ति
अनु. बाई. इबोम्चा
पृ. 140, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4498-6 (पुनर्मुद्रण)

चेम्मीन (पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास)
ले. तकषी शिवशंकर पिळ्ळै
अनु. एल. वीरेंद्र कुमार शर्मा
पृ. 192, रु. 190/-
ISBN : 978-81-260-4492-4

लोमज़िडबा मणिपुरी सुमङलीला
(मणिपुरी जात्रा संचयन)
सं. राजेन तोइजंबा
पृ. 374, रु. 290/-
ISBN : 978-81-260-3215-0

बाङ्ला-मणिपुरी शब्दकोश
मुख्य सं. अशोक मुखोपाध्याय
भाषा संक. एन. कुंजमोहन सिंह
पृ. 736, रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-4430-6

खुनुशिंग्गी लानजेन (पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. रस्किन बॉण्ड
अनु. भानुमति देवी
पृ. 120, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-3106-1 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

अरबिक अहिंग 1001 गी रारी (खंड-I एवं II)
ले. रिचर्ड बर्टन
अनु. ई. सोनमणि सिंह
पृ. (576 + 362) = 938, रु. 350/- (प्रति सेट)
ISBN : 978-81-260-4434-4 (पुनर्मुद्रण)

मराठी

बाल गाँधी बापू गाँधी ज़ालि त्याची गोष्ट (कन्नड उपन्यास)
ले. बोल्वार मोहम्मद कुन्ही
अनु. ए.आर. यार्दी
पृ. 208, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4402-3

वी. द. घाटे (विनिबंध)
ले. अनंत देशमुख
पृ. 88, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4404-7

संज्ञयात्मा (पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह)
ले. ज्ञानेंद्रपति
अनु. प्रफुल्ल शिलेदार
पृ. xiv+246, रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-4146-3

भारतीय दलित साहित्य
सं. शरण कुमार लिंबाले
पृ. 500, रु. 230/-
ISBN : 978-81-260-4401-6

स्त्रीयंचे मराठीतिल निबंधलेखन
सं. विद्युत भागवत
पृ. 448, रु. 270/-
ISBN : 978-81-260-4156-5

दुर्गा भागवत (विनिबंध)
ले. शोभा नाइक
पृ. VI+140, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4152-7

रामधारी सिंह दिनकर (हिंदी लेखक पर विनिबंध)
ले. विजेंद्र नारायण सिंह
अनु. मीरा तारालेकर
पृ. VI+110, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4157-2

अग्निकुदत उमलालेले गुलाब (पुरस्कृत गुजराती जीवनी)
ले. नारायणभाई देसाई
अनु. एस.बी. शाह एवं विश्वास पाटिल
पृ. VI+VII+808, रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-3122-1

बाल साहित्य
(टैगोर कृत बाल साहित्य)
ले. लीला मजूमदार एवं क्षीतिज राय
अनु. सरोजनी कामतनुरकर
पृ. 228, रु. 120/-
ISBN : 81-260-1047-9 (पुनर्मुद्रण)

राहुल सांकृत्यायन
ले. प्रभाकर माचवे
अनु. अरुणा लोखाण्डे
पृ. 60, रु. 40/-
ISBN : 81-260-1674-4 (पुनर्मुद्रण)

महात्मा ज्योतिराव फूले (विनिबंध)
ले. बी.एल. भोले
पृ. 112, रु. 40/-
ISBN : 81-7201-728-6 (पुनर्मुद्रण)

सआदत हसन मंटो (विनिबंध)
ले. वारिस अल्वी
अनु. विश्वास वासेकर
पृ. 68, रु. 25/-
ISBN : 81-260-1146-7 (पुनर्मुद्रण)

नामदेव (विनिबंध)
ले. एम.जी. देशमुख
पृ. 80, रु. 40/-
ISBN : 81-260-1965-4 (पुनर्मुद्रण)

नामदेव गाथा
संक. एवं संपा. एच.एस. शेनोलिकर
पृ. IV+IV+XXXIV+150, रु. 90/-
ISBN : 81-260-1569-1 (पुनर्मुद्रण)

तुकाराम गाथा
संक. एवं संपा. बालचंद्र नेमाडे
पृ. 206+XIV+IV, रु. 110/-
ISBN : 81-260-1925-5 (पुनर्मुद्रण)

बी.बी. बोरकर (विनिबंध)
ले. प्रभा गानोरकर
पृ. 118, रु. 50/-
ISBN : 81-260-1964-6 (पुनर्मुद्रण)

आगंतुक (पुरस्कृत गुजराती उपन्यास)
ले. धीरूबेन पटेल
अनु. सुषमा कारोगल
पृ. 115, रु. 70/-
ISBN : 81-260-2036-0 (पुनर्मुद्रण)

मराठी लोककथा
संक. एवं संपा. माधुकर वाकोडे
पृ. 148, रु. 60/-
ISBN : 81-7201-144 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद (विनिबंध)
ले. प्रकाश चंद्र गुप्ता
अनु. चंद्रकांत बांदिवडेकर
पृ. 64, रु. 50/-
ISBN : 81-260-2710-X (पुनर्मुद्रण)

खानाबदोश
ले. अजीत कौर
अनु. अरुणा लोखंडे
पृ. 176, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-3248-8 (पुनर्मुद्रण)

समर्थ रामदास : विवेकदर्शन
संक. वी.आर. करंदीकर
पृ. 272, रु. 150/-
ISBN : 81-260-2021-0 (पुनर्मुद्रण)

निवडक विट्ठल रामजी शिंदे
सं. जी.एम. पवार
पृ. 376, रु. 170/-
ISBN : 81-7201-968-8 (पुनर्मुद्रण)

मौखिक परंपरातिल बालगीते
चयन एवं सं. मधुकर वाकोडे
पृ. 60, रु. 50/-
ISBN : 81-260-1921-2 (पुनर्मुद्रण)

बावर्ची स्मृतिचित्रे
ले. एच.आर. दियेकर
पृ. 184, रु. 100/-
ISBN : 81-260-1048-7 (पुनर्मुद्रण)

बाणभट्टची आत्मकथा (हिंदी उपन्यास)
ले. हजारी प्रसाद द्विवेदी
अनु. आर.एस. केलकर
पृ. 236, रु. 130/-
ISBN : 81-260-1257-9 (पुनर्मुद्रण)

अजबग्रहची दंतकथा (जापानी बालसाहित्य)
ले. ताजिमा शिंजी
अनु. सुलभा कोरे
पृ. VIII+66, रु. 50/-
ISBN : 81-260-2022-9 (पुनर्मुद्रण)

दोन सेर धान (मलयालम् उपन्यास)
ले. तकषी शिवशंकर पिळ्ळै
अनु. उषाताई कोल्टे
पृ. 120, रु. 80/-
ISBN : 81-7201-873-8 (पुनर्मुद्रण)

निकोबारच्या लोककथा
ले. रॉबिन रायचौधुरी
अनु. अशोक बेंडखले
पृ. 92, रु. 60/-
ISBN : 81-260-1773-2 (पुनर्मुद्रण)

बाल साहित्य
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
सं. लीला मजुमदार एवं क्षितिश राय
अनु. सरोजिनी कामतनुरकर
पृ. 228, रु. 120/-
ISBN : 81-260-1047-9 (पुनर्मुद्रण)

टुनटुनिया गोष्ठी (बाङ्ला बालसाहित्य)
ले. उपेंद्रकिशोर राय चौधुरी
अनु. नीलिमा भावे
पृ. 116, रु. 75/-
ISBN : 81-260-1437-1 (पुनर्मुद्रण)

राहुल सांकृत्यायन (विनिबंध)
ले. प्रभाकर माचवे
अनु. अरुणा लोखंडे
पृ. 60, रु. 50/-
ISBN : 81-260-1674-4 (पुनर्मुद्रण)

गोरखनाथ (विनिबंध)
ले. नगेंद्रनाथ उपाध्याय
अनु. एम.वी. शाह
पृ. 64, रु. 50/-
ISBN : 81-260-2236-1 (पुनर्मुद्रण)

पंडिता रमाबाई (विनिबंध)
ले. अनुपमा उजगरे
पृ. 80, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2968-6 (पुनर्मुद्रण)

प्रतिनिधिक लघु निबंध संग्रह
सं. के.जे. पुरोहित
पृ. IX+130, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-2569-7 (पुनर्मुद्रण)

दलकवि (विनिबंध)
ले. एवं अनु. अनुराधा पोतदार
पृ. VI+82, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4140-4 (पुनर्मुद्रण)

माधव जूलियन (विनिबंध)
ले. एस.आर. चुनेकर
पृ. 116, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2717-0

वामन मल्हार जोशी (विनिबंध)
ले. गोविंद मल्हार कुलकर्णी
पृ. VI+68, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2718-5 (पुनर्मुद्रण)

त्रिपलुनकर लेख संग्रह
सं. एम.जी. बुद्धिसागर
पृ. 242, रु. 180/-
ISBN : 978-81-260-4147-3 (पुनर्मुद्रण)

गालिब : काल आणि कृतित्व (विनिबंध)
ले. पवन कुमार वर्मा
अनु. निशिकांत ठकार
पृ. 208, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-2824-5 (पुनर्मुद्रण)

मानवी दशावतारचा खेळ
ले. पन्नालाल पटेल
अनु. सुषमा करोगल
पृ. 292, रु. 130/-

प्रह्लाद केशव अत्रे (विनिबंध)
ले. ए.एन. पेंडेकर
पृ. 72, रु. 50/-
ISBN : 81-260-1570-5 (पुनर्मुद्रण)

मराठी दलित एकांकिका
सं. दत्त भगत
पृ. XVIII+158, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-2969-3 (पुनर्मुद्रण)

लोकमान्य तिलक लेख संग्रह
सं. तर्कतीर्थ लक्ष्मण शास्त्री जोशी
पृ. 520, रु. 260/-
ISBN : 81-260-2567-0 (पुनर्मुद्रण)

आगरेकर लेख संग्रह
चयन एवं सं. जी.पी. प्रधान
पृ. 414, रु. 125/-
ISBN : 81-7201-305-1 (पुनर्मुद्रण)

निवडक सदानंद रेगे
चयन एवं सं. वसंत आबाजी डहाके
पृ. XVIII+230, रु. 130/-
ISBN : 81-7201-960-2 (पुनर्मुद्रण)

श्री दा. पणवेलकर यांची कथा
चयन एवं सं. एम.डी. हटकांगलेकर
पृ. 257, रु. 100/-
ISBN : 81-720-276-4

क्रौंच पक्षी (पुरस्कृत कन्नड कहानी-संग्रह)
ले. वैदेही
अनु. उमा कुलकर्णी
पृ. 120, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-3250-1 (पुनर्मुद्रण)

श्री तुकारामच्या अभंगांची चर्चा-I (विनिबंध)
ले. वासुदेव बलवंत पटवर्धन एवं गणेश हरिकेलकर
पांडुलिपि सं. दिलीप ढोंडगे
पृ. XXXIV+336, रु. 150/-
ISBN : 81-260-2675-8 (पुनर्मुद्रण)

श्री तुकारामच्या अभंगांची चर्चा-II (विनिबंध)
ले. वासुदेव बलवंत पटवर्धन एवं गणेश हरिकेलकर
पांडुलिपि सं. दिलीप ढोंडगे
पृ. XXX+308, रु. 150/-
ISBN : 81-260-2676-8 (पुनर्मुद्रण)

चक्षुशाल्य
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. शंकर बालाजी शास्त्री
पृ. IV+264, रु. 150/-
ISBN : 81-260-1269-2 (पुनर्मुद्रण)

हेलगेलांड्चे वांचे (विनिबंध)
ले. इब्सन
अनु. के.जे. पुरोहित
पृ. 84, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4400-9 (पुनर्मुद्रण)

काल्ला जोपु देनार नही
ले. एन. गोपी
अनु. कंचन जतकर
पृ. 100, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-2828-3 (पुनर्मुद्रण)

नेपाली

गोदान (हिंदी उपन्यास)
ले. प्रेमचंद
अनु. हरि लुइंटेल
पृ. 368, रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-4161-9

प्रकाश 'कोविद' (विनिबंध)
ले. भीम संतोष
पृ. 108, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4290-2

इंद्र सुंदास (विनिबंध)
ले. नीना राई
पृ. 84, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4042-1

काशीबहादुर श्रेष्ठ : व्यक्तित्व र कृतित्व
(संगोष्ठी के आलेख)
सं. दुर्गा प्रसाद श्रेष्ठ
पृ. 136, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-4267-8

गाँउका नीलडामहारू (कविता-संग्रह)
ले. नरेश कटुवाल
पृ. 92, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4229-6

कृष्ण प्रसाद ज्ञवाली (विनिबंध)
ले. नर बहादुर राई
पृ. 72, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4232-6

ओड़िया

ओड़िया शिशु किशोर कहानी
संक. एवं संपा. बीरेंद्र महांति
पृ. 288, रु. 190/-
ISBN : 978-81-260-4424-5

1950 परवर्ती ओड़िया कविता
(1950 के बाद का आधुनिक ओड़िया कविता संकलन)
संक. एवं संपा. भगवान जयसिंह
पृ. 260, रु. 180/-
ISBN : 978-81-260-4223-4

आशीर्वादर रंग (पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
ले. अरुण शर्मा
अनु. मोनालिसा जेना
पृ. 312, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4214-2

कान्हुचरण चयनिका
(कान्हुचरण महांति रचना-संचयन)
चयन एवं सं. मनोरंजन प्रधान
पृ. 488, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-4215-9

पतझरर स्वर (पुरस्कृत उर्दू कहानी-संग्रह)
ले. कुर्तुलेन हैदर
अनु. श्रीनिवास उद्गाता
पृ. 248, रु. 100/-
ISBN : 81-260-0858-X (दुसरा पुनर्मुद्रण)

शेष गोलोकधांदा (पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. अरुण जोशी
अनु. किशोरी चरण दास
पृ. 188, रु. 70/-
ISBN : 81-260-0084-8 (दूसरा पुनर्मुद्रण)

संस्कार
ले. यू.आर. अनंतमूर्ति
अनु. सुभाष सत्पथी
पृ. 148, रु. 140/-
ISBN : 81-260-1200-5 (दूसरा पुनर्मुद्रण)

तमिळ गल्प संचयन
संपा. ए.सी. चेत्तियर
अनु. ममता दास
पृ. 304, रु. 75/-
ISBN : 81-7201-692-1 (दुसरा पुनर्मुद्रण)

तमिऴ साहित्यर इतिहास
ले. एम. भारदराजन
अनु. विजय प्रसाद महापात्र एवं रंगनायकी महापात्र
पृ. 320, रु. 100/-
ISBN : 81-260-0919-5 (दूसरा पुनर्मुद्रण)

ओड़िया लोकगीत
संक. प्रसन्न कुमार मिश्र
पृ. 320, रु. 90/-
ISBN : 81-7201-455-4 (पुनर्मुद्रण)

कृश्नचंदरका श्रेष्ठ गल्प
अनु. सृजन प्रकाश
पृ. 192, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-4431-3 (तीसरा पुनर्मुद्रण)

गोरा (बाङ्ला उपन्यास)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. लक्ष्मीनारायण महांति
पृ. 424, रु. 180/-
ISBN : 81-7201-886-X (पुनर्मुद्रण)

एकुशटि गल्प (बाङ्ला कहानी-संचयन)
ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर
अनु. कालिंदीचरण पाणिग्रही
पृ. 432, रु. 180/-
ISBN : 978-81-260-3011-8 (पुनर्मुद्रण)

नीलामस्तरानि ओ अन्यान्य गल्प
(ओड़िया कहानी-संग्रह)
ले. गोदावरीश महापात्र
संक. एवं संपा. विभूति पटनायक
पृ. 168, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-4433-7 (पुनर्मुद्रण)

स्वाधीनतोत्तर ओड़िया क्षुद्र गल्प, खंड-I
सं. सतकड़ी होता
पृ. 338, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4432-0 (पुनर्मुद्रण)

उपेन्द्र भंज
ले. गंगाधर बल
पृ. 216, रु. 40/-
ISBN : 81-260-1389-9 (पुनर्मुद्रण)

श्री अरविन्दो
ले. मनोज दास
अनु. मोहापात्र नीलमणि साहू
पृ. 136, रु. 40/-
ISBN : 978-81-260-3112-2

कबीर वचनावली
ले. कबीर
अनु. वनमाली मिश्र
पृ. 320, रु. 140/-
ISBN : 81-260-1516-0 (पुनर्मुद्रण)

संचयन (ओड़िया कविता-संचयन)
संक. एवं संपा. बसंत कुमार सत्पथी
पृ. 480, रु. 240/-
ISBN : 978-81-260-4435-1 (पुनर्मुद्रण)

पंजाबी

मोहन सिंह दीवाना
(पंजाबी लेखक पर विनिबंध)
ले. हरभजन सिंह भाटिया
पृ. 147, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4233-3

उल्लंघन (पुरस्कृत ओड़िया कहानी-संग्रह)
ले. प्रतिभा राय
अनु. रविंदर सिंह
रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-4286-9

महाभारत (पुरस्कृत अंग्रेज़ी कृति)
ले. चतुर्वेदी बद्रीनाथ
अनु. राजिंदरजित कौर ढींडसा एवं
मनप्रीत कौर सल्हेता
रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-4294-4 (पुनर्मुद्रण)

असी जो देख्दे हाँ
(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह *हम जो देखते हैं*)
ले. मंगलेश डबराल
अनु. अमरजीत घुम्मन
रु. 70/-
ISBN : 978-81-260-3291-4

बलवंत गार्गी (विनिबंध)
ले. रबेल सिंह
रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4170-1

दिव्या (कालजयी हिंदी उपन्यास)
ले. यशपाल
अनु. सुरजीत सरना
रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-4241-8

पवन समीर दी उडीक
ले. सैय्यद मोहम्मद
अनु. रघुबीर सिंह
रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4165-7

राजस्थानी

रवींद्रनाथ र लेख (खंड-1)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. शरण शर्मा पूरण
पृ. 503, रु. 430/-
ISBN : 978-81-260-4237-1

रेक्तदान चारण (विनिबंध)
ले. धनंजय अमरावत
पृ. 95, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4030-8

रवींद्रनाथ री कवितावां
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. आईदान सिंह भाटी
पृ. 316, रु. 280/-
ISBN : 978-81-260-4289-0

छानबीन-कमीशन (पुरस्कृत तमिळ उपन्यास *विसारणै कमीशन*)
ले. सा. कंदासामी
अनु. देवकरण जोशी
पृ. 180, रु. 180/-
ISBN : 978-81-260-4242-5

उचक्को (पुरस्कृत प्राप्त मराठी उपन्यास *उचल्या*)
ले. लक्ष्मण गायकवाड
अनु. उम्मेद गोठवाल
पृ. 171, रु. 180/-
ISBN : 978-81-260-4234-0

देवां री घाटी (पुरस्कृत गुजराती उपन्यास)
ले. भोलाभाई पटेल
अनु. नीरज दइया
पृ. 136, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4029-2

मा (रूसी उपन्यास)
ले. मक्सिम गोर्की
अनु. पुष्पलता कश्यप
पृ. 382, रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-4032-2

ज्ञान सिंह 'शातिर' (पुरस्कार उर्दू आत्मकथा)
ले. ज्ञान सिंह शातिर
अनु. सूरज राव
रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-4238-8

पाताल भैरवी (पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
ले. लक्ष्मीकांत बोरा
अनु. किशोर कुमार
रु. 220/-
ISBN : 978-81-260-4240-1

महन जिकाउ देखां
(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह *हम जो देखते हैं*)
ले. मंगलेश डबराल
अनु. पारस अरोड़ा
रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4239-5

च्यार पाठ (बाङ्ला कृति)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. दुलाराम सहारण
रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4287-6

एक धूली रो घर (नार्वेजियन नाटक)
ले. हेनरिक इब्सन
अनु. भवानीशंकर व्यास विनोद
रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-4289-3

आ म्हारी जून
ले. दिलीप कौर टिवाणा
रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-3384-3 (पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ री कहानियाँ खंड-2
अनु. मनोहर सिंह राठौड़
रु. 280/-
ISBN : 978-81-260-3222-8 (पुनर्मुद्रण)

आचार्य बद्री प्रसाद सकारिया (विनिबंध)
ले. भूपतिराम सकारिया
रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3370-6

संस्कृत

कल्पवल्ली
संपा. अभिराज राजेंद्र मिश्र
पृ. 628, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-4275-3

भट्ट मथुरानाथ शास्त्री मंजुनाथ
(संस्कृत लेखक पर विनिबंध)
ले. कलानाथ शास्त्री
पृ. 106, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3365-2

संताली

आषाढ़ विनती (संताली कविता-संग्रह)
ले. नारायण सोरेन 'तोरेसुताम'
संपा. रामसुंदर बास्के
पृ. 81, रु. 60/-
ISBN : 978-81-260-4038-4

साधु रामचंद्र मुर्मू
(संताली लेखक पर विनिबंध)
ले. सचिन मांडी
पृ. 108, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4040-7

पद्मा नाई रेंजी लावरिया
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास *पद्मानदीर माझी*)
ले. माणिक बंद्योपाध्याय
अनु. भुजंग टुडु
पृ. 144, रु. 80/-
ISBN : 978-81-260-4241-4

टावक टारको
(नवोदय योजनांतर्गत कविता-संग्रह)
ले. मीना मुर्मू
पृ. iv+80, रु. 60/-
ISBN : 978-81-260-4037-7

हड़म्बा
(कालजयी ओड़िया उपन्यास *दादी बुढ़ा*)
ले. गोपीनाथ महांति
अनु. गंगाधर हांसदा
रु. 60/-
ISBN : 978-81-260-4035-3

तुमल काहनी माला (पुनर्मुद्रण)
ले. जितेंद्रनाथ मुर्मू
पृ. 215, रु. 150/-
ISBN : 81-260-2391-0

संताली अनोरहें तुमल
संपा. जदुमणि बेसरा
रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-2557-2 (पुनर्मुद्रण)

सिंधी

भरतमुनि (संस्कृत लेखक पर विनिबंध)
ले. कपिला वात्स्यायन
अनु. मोहन गेहाणी
पृ. x+174, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260

संरचनावाद, बादे संरचनावाद एन पूरबी काव्यशास्त्र
(पुरस्कृत उर्दू समालोचना *साख़्तियात पस साख़्तियात और मशरिक़ी शेरियात*)
ले. गोपीचंद नारंग
अनु. हीरो ठाकुर
पृ. 632, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-4153-4

आज़ादिया खाउपोइ ग़ैरअफ़सानवी सिंधी अदब
(संगोष्ठी के आलेख)
संक. एवं संपा. वासदेव मोही
पृ. xvii+236, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-3260-0

सिंधी नाटक जी चूंद तनक़ीद (समालोचना-संग्रह)
संक. एवं संपा. प्रेम प्रकाश
पृ. XX+225, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-4151-0

तीर्थ बसंतजी जन्म शताब्दी (संगोष्ठी के आलेख)
संपा. अर्जन हासिद
पृ. XVI+192, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-4142-8

वक्त खो सग्हन न दिंउस
(पुरस्कृत तेलुगु कविता-संग्रह)
ले. एन. गोपी
अनु. श्रीचंद दुबे
पृ. 108, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-4407-8

तमिऴ

सुंदर रामसामयिन तेरेथेदुथा कतुरैगऴ
संपा. एस. तिलैनायगम
पृ. 304, रु. 155/-
ISBN : 978-81-260-4128-2

पल्लु इलाक्किया तिरत्तु
(पल्लु इल्लाकिया की रचनाओं का संचयन)
सं. टी. ज्ञानशेकरण
पृ. 192, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-4193-0

समकाल मलयाला कविदैगऴ
(समकालीन मलयाळम् कविता संचयन)
सं. सुगत कुमारी
अनु. एस. शिवमणि
पृ. 256, रु. 135/-
ISBN : 978-81-260-4196-1

समकाल इंध्या चिरुकथैगऴ (चतुर्थ खंड)
(भारतीय भाषाओं का अंग्रेज़ी कहानी-संचयन)
सं. शांतिनाथ के. देसाई
अनु. महर पी.यू. अयूब
पृ. 512, रु. 235/-
ISBN : 978-81-260-3346

मीनिविन कथैगऴ (तेलुगु कहानी-संचयन)
ले. मीनि
चयन एवं संपादन : के.ए. सच्चिदानंदम
पृ. 192, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-4120-0

अवलातु पाथै (पुरस्कृत तेलुगु कहानी-संग्रह *तन मार्गम्*)
ले. अब्बूरि छायादेवी
अनु. को.मा. कोदंडम
पृ. 336, रु. 165/-
ISBN : 978-81-260-4131-2

तुरवि वेंधर श्रीनारायण गुरु (विनिबंध)
ले. टी. भास्करन
अनु. विजय कुमार कुनिस्सेरि
पृ. 152, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4204-3

कालयिन कथा : वाया बाइपास (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास *कलि कथा : वाया बाइपास*)
ले. अलका सरावगी
अनु. बालत्रिपुर सुंदरी
पृ. 340
ISBN : 978-81-260-3356-0

पुधिया तमिल इलाक्किया वरलरू—खंड-1
(तमिल साहित्य का इतिहास)
ले. सिर्पी बालसुबह्मण्यम एवं नीला पद्मनाभन
पृ. 432, रु. 450/-
ISBN : 978-81-260-4360-6

पुधिया तमिल इलाक्किया वरलरू—खंड-2
ले. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम एवं नीला पद्मनाभन
पृ. 464, रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-4361-3

पुधिया तमिल इलाक्किया वरलरू—खंड-3
ले. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम एवं नीला पद्मनाभन
पृ. 976, रु. 850/-
ISBN : 978-81-260-4362-0

आनंदकंद (बेटगेरि कृष्ण शर्मा) (विनिबंध)
ले. राघवेंद्र पाटिल
रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0810-5

शिवज्ञान मुनिवर (विनिबंध)
ले. टी.एन. रामचंद्रन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4122-0

नागोर गुलाम कंदीर नवलर (विनिबंध)
ले. ए.वी. एम. नज़ीमुद्दीन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4488-1

वाणीदासन कविते तिरट्टु
(वाणीदासन की कविताओं का संचयन)
सं. महारंदन
पृ. 304, रु. 185/-
ISBN : 978-81-260-4370-5

विधैन्ध कूडु
ले. रवींद्रनाथ टाकुर
अनु. एम. कृष्णमूर्ति
पृ. 288, रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-4377-3

तेरिंतेदुत सुरत कवितैगळ
(सुरत की कविताओं का संचयन)
सं. मरैमलै इलाक्कुंवर
पृ. 200, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-4378-1

धूमि (पुरस्कृत मराठी उपन्यास)
ले. आशा बगे
अनु. पी. आर. राजाराम
प. 400, रु. 225/-
ISBN : 978-81-260-4369-9

उपेंद्रनाथ अश्क (हिंदी लेखक पर विनिबंध)
ले. राजेंद्र टोकी
अनु. बी.के. बालसुब्रमणियम
पृ. 224, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-4442-9

स्वामी दयानंद सरस्वती (विनिबंध)
ले. विष्णु प्रभाकर
अनु. अखिल शिवरामन
पृ. 160, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4445-0

उयिल मातुम पिरा कथैगळ (कहानी-संग्रह)
ले. जे.पी. दास
अनु. शुभ्रभारतीमणियम्
पृ. 250, रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-4375-0

मृगुसुंदरम (विनिबंध)
ले. के. गणेशन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4376-8

तेलुगु

ब्रह्मर्षि श्री नारायण गुरु (विनिबंध)
ले. टी. भास्करन
अनु. एल. आर. स्वामी
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4111-0

मधुरांतकम राजाराम (विनिबंध)
ले. सिंगमनेनी नारायण
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4382-8

आर.के. नारायण (विनिबंध)
ले. रंगा राव
अनु. वीराजी
पृ. 120, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4389-X

राजिंदर सिंह बेदी (विनिबंध)
ले. बारिस अल्वी
अनु. पुट्टपर्थी नागपद्मिनी
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4390-3

उन्नावलक्ष्मी नारायण मालपल्ली
(संगोष्ठी के आलेख)
सं. कोदुरि श्रीराममूर्ति
पृ. 172, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-4385-7

चागंती सोमयाजुलु (विनिबंध)
ले. चागंती कृष्ण कुमारी
पृ. 136, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4396-2

मानवल्ली रामकृष्ण कवि (विनिबंध)
ले. नरसिंह मूर्ति
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 81-260-4396-2

ठाकुर धर (पुरस्कृत ओड़िया कहानी-संग्रह)
ले. किशोरी चरण रास
अनु. महीधर रामशास्त्री
पृ. 216, रु. 115/-
ISBN : 978-81-260-4481-0

उर्दू

जगत मोहन लाल रवाँ
(उर्दू लेखक पर विनिबंध)
ले. सुलेमान अतहर जावेद
पृ. 95, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4164-0

इंतखाब-ए मरासी-ए दबीर
ले. मिर्ज़ा सलामत अली दबीर
चयन एवं सं. तक़ी अबेदी
पृ. 392, रु. 180/-
ISBN : 978-81-260-4167-1

रामधारी सिंह दिनकर
(हिंदी लेखक पर विनिबंध)
ले. विजेंद्र नारायण सिंह
अनु. अंबर बहराइची
पृ. 147, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4175-6

ग़ालिब : मानी आफरीनी, जदलियाती बजा,
शून्यता और शेरियात
ले. गोपीचंद नारंग
पृ. 678, रु. 450/-
ISBN : 978-81-260-4171-8

गुबार-ए-ख़ातिर
ले. मौलाना अबुल क़लाम आज़ाद
रु. 100/-
ISBN : 81-260-0132-1

तर्जुमान-उल-क़ुरान, खंड-1-4
ले. मौलाना अबुल क़लाम आज़ाद
रु. 800/-

उर्दू की ख़वातीन फ़िक्शन-निगार
सं. मुश्ताक़ सदफ़
रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-4327-9

राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद'
(हिंदी लेखक पर विनिबंध)
ले. वीर भारत तलवार
अनु. जावेद रहमानी
रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4328-6

सर्वपल्ली राधाकृष्णन (विनिबंध)
ले. प्रेमा नंद कुमार
अनु. सैयद तनवीर हुसैन
रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4329-3

ख़्वाजा हसन निज़ामी
ले. मौला बख़्श
रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3394-2

ख़ुशीदुल इस्लाम
ले. सरवारुल होदा
रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3395-9

ख़ुशीदुल इस्लाम
ले. सरवारुल होदा
रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3395-9 (पुनर्मुद्रण)

ख़्वाजा हसन निज़ामी
ले. मौला बख़्श
रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3394-2 (पुनर्मुद्रण)

शब्दकोश

डोगरी-हिंदी राजस्थानी शब्दकोश
(खंड : एक)
सं. चंद्रप्रकाश देवल
पृ. 182, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-3366-9

डोगरी-हिंदी-राजस्थानी शब्दकोश
(खंड : दो)
सं. चंद्रप्रकाश देवल
पृ. 843-1741, रु. 1000/-
ISBN : 978-81-260-3366-9

पूर्वोत्तर केंद्र (एनई सीओएल), अगरतला द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

मिसिंग फोकटेल्स
(अंग्रेज़ी अनुवाद में)
संक. एवं संपा. टाबू राम टाईद
अनु. संकलक द्वारा
पृ. V+131, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4439-9

चकमा फोक एंड मॉडर्न लिटरेचर
(अंग्रेज़ी अनुवाद में)
संक. एवं संपा. निरंजन चकमा
अनु. विविध अनुवादकों द्वारा
पृ. XVII+225, रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-4219-7

शबर लोकगान ओ लोककथा
(बाङ्ला अनुवाद में)
संक. एवं संपा. महाश्वेता देवी
अनु. प्रशांत रक्षित
पृ. V+91, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4208-1

टेनिदे लिटरेचर : ट्रेडिशनल एण्ड मॉडर्न
(अंग्रेज़ी अनुवाद में)
संक. एवं संपा. डी. कोली
अनु. विविध अनुवादकों द्वारा
पृ. I+199, रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-4220-3

पूर्वी क्षेत्रीय अनुवाद केंद्र द्वारा प्रकाशित पुस्तक

रामप्रसादी (18वीं सदी के बाङ्ला कवि की 100 कविता/गीतों का संकलन)
ले. रामप्रसाद सेन
संक. एवं. संपा. सर्वानंद चौधुरी
अनु. देवरंजन धर
पृ. 160, रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-4210-4

वार्षिक लेखा
2013 - 2014

साहित्य अकादेमी
वित्तीय वर्ष 2013-2014

विषय सूची

	पृष्ठ सं.
तुलनपत्र	iii
आय एवं व्यय लेखा	iv
तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण	x
आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण	xv
योजनागत और गैर-योजनागत प्राप्ति और भुगतान लेखा	xxiii
सामान्य भविष्य निधि का तुलनपत्र	xxviii
सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति एवं भुगतान लेखा	xxix
सामान्य भविष्य निधि की निवेश और प्रोद्भूत ब्याज अनुसूची	xxx
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ और लेखा पर टिप्पणियाँ	xxxiv

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
तुलन-पत्र यथातिथि 31 मार्च 2014

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	चालू वर्ष	गत वर्ष
संग्रह निधि और दायित्व			
संग्रह निधि	1	1,06,42,375	1,17,38,450
आरक्षित और अधिशेष	2	2,09,62,169	1,67,78,127
नियत अक्षय निधि	3	26,98,15,682	25,23,47,474
सुरक्षित ऋण और उधार	4	—	—
असुरक्षित ऋण और उधार	5	—	—
अस्थगित जमा दायित्व	6	—	—
चालू दायित्व और उपबंध	7	2,44,78,179	2,11,01,873
योग		32,58,98,405	30,19,65,924
परिसंपत्तियाँ			
स्थायी परिसंपत्तियाँ	8	10,22,97,520	9,84,29,794
नियत/अक्षय निधियों से निवेश	9	5,80,71,010	5,37,24,120
अन्य निवेश	10	—	—
चालू परिसंपत्ति, ऋण, अग्रिम आदि	11	16,55,29,875	14,98,12,011
विविध व्यय		—	—
(एक सीमा तक अपलेखित या समायोजित)			
योग		32,58,98,405	30,19,65,924
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	25		
प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	26		

	ह./-	ह./-	ह./-	ह./-
स्थान : नई दिल्ली	राजेश कुमार गुप्ता	बाबूराजन एस.	रेणु मोहन भान	के. श्रीनिवासराव
दिनांक : 11.06.2014	(प्रवर लेखापाल)	(उपसचिव)	(उपसचिव)	(सचिव)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

आय और व्यय लेखा : 31 मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	चालू वर्ष	गत वर्ष
आय			
बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आय	12	–	–
अनुदान/इमदाद राशि प्राप्त	13	27,74,09,583	22,57,11,501
शुल्क/अंशदान प्राप्त	14	–	–
निवेश से प्राप्त आय	15	–	–
रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि से प्राप्त आय	16	2,14,82,703	2,40,23,555
प्राप्त ब्याज	17	70,56,404	42,76,035
अन्य आय	18	15,06,795	15,92,546
पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में उतार/चढ़ाव	19	75,00,035	85,88,701
योग (ए)		31,47,55,520	26,41,92,337
व्यय			
स्थापना व्यय	20	10,24,42,691	9,91,08,916
अन्य प्रशासनिक व्यय	21	2,15,50,359	2,19,97,341
संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार की गतिविधियाँ	22	18,51,15,379	15,16,46,092
अनुदान, इमदाद आदि पर व्यय	23	14,63,049	14,42,575
ब्याज	24	–	–
योग (बी)		31,05,71,478	27,41,94,924
आय पर व्यय का आधिक्य (ए-बी)		41,84,042	(1,00,02,587)
विशेष आरक्षित में स्थानांतरित		–	–
सामान्य आरक्षित से स्थानांतरित		–	–
कुल योग अधिशेष के कारण/(घाटा) संग्रह/पूँजी निधि में अग्रेनीत		41,84,042	(1,00,02,587)
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	25		
आकस्मिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	26		

	ह/-	ह/-	ह/-	ह/-
स्थान : नई दिल्ली	राजेश कुमार गुप्ता	बाबूराजन एस.	रेणु मोहन भान	के. श्रीनिवासराव
दिनांक : 11.06.2014	(प्रवर लेखापाल)	(उपसचिव)	(उपसचिव)	(सचिव)

अनुसूची - I

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2014

V

(राशि रुपये में)

अनुसूची-1—संग्रह निधि :	चालू वर्ष	चालू वर्ष		गतवर्ष		गत वर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योजनागत	गैर योजनागत	योग
वर्ष के आरंभ में शेष	1,17,38,450	1,17,38,450	–	1,06,78,810	–	1,06,78,810
जमा : संग्रह निधि में योगदान	–	–	–	–	–	–
जमा : संग्रह निवेश पर प्राप्त कुल ब्याज	9,90,629	9,90,629	–	10,59,640	–	10,59,640
घटा : योजनागत संग्रह में स्थानांतरित	(20,86,704)	(20,86,704)	–	–	–	–
वर्ष के अंत में शेष	1,06,42,375	1,06,42,375	–	1,17,38,450	–	1,17,38,450

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2014

(राशि रुपये में)

		चालू वर्ष	गत वर्ष
अनुसूची - 2—आरक्षित और अधिशेष :			
1. आरक्षित पूँजी :			
पिछले लेखा के अनुसार			
वर्ष के दौरान जमा (राशि)			
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ		–	–
	योग		
2. आरक्षित पुनर्मूल्यन :			
पिछले लेखा के अनुसार			
वर्ष के दौरान जमा (राशि)			
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ		–	–
	योग		
3. विशेष आरक्षित :			
पिछले लेखा के अनुसार			
वर्ष के दौरान जमा (राशि)			
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ		–	–
	योग		
4. सामान्य आरक्षित :			
पिछले लेखा के अनुसार—योजनागत		1,56,73,336	2,36,52,932
पिछले लेखा के अनुसार—गैर योजनागत		11,04,791	42,27,123
जमा : वर्ष के दौरान अधिकता/(घाटा)-योजनागत		57,65,212	(68,80,255)
जमा : वर्ष के दौरान अधिकता/(घाटा)-गैर योजनागत		(15,81,170)	(31,22,332)
जमा : पूर्व अवधि समायोजन		–	(10,99,341)
	योग	2,09,62,169	1,67,78,127
कुल योग		2,09,62,169	1,67,78,127

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2014

(राशि रुपये में)

अनुसूची-3—नियत/अक्षय निधि	चालू वर्ष				गत वर्ष			
	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	सा.भ.नि./ एन.पी.एस.	योग	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	सा.भ.नि./ एन.पी.एस.	योग
(ए) निधियों का आदि शेष	9,84,29,795	7,68,52,638	7,70,65,042	25,23,47,475	9,93,03,752	6,82,63,937	7,06,83,288	23,82,50,976
(बी) निधियों में बढ़ोतरी								
(i) वर्ष के प्रारंभ अव्ययित अनुदान	69,52,128	–	1,19,13,450	1,88,65,578	–	–	–	–
(ii) दान/अनुदान/अभिदान	19,339	–	–	19,339	67,05,492	–	1,18,59,000	1,85,64,492
(iii) पूँजी/अनुदान/अभिदान	82,50,000	–	–	82,50,000	1,09,00,000	–	–	1,09,00,000
(iv) खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय	–	–	53,51,348	53,51,348	–	–	51,74,569	51,74,569
– निवेश पर ब्याज	–	–	–	–	–	–	–	–
(v) अन्य बढ़ोतरियाँ								
– नई पेंशन योजना	–	–	27,52,026	27,52,026	–	–	17,61,221	17,61,221
– प्रकाशनों की बिक्री	–	–	–	–	–	–	–	–
– रॉयल्टी	–	–	–	–	–	–	–	–
– अग्रिम राशियों की ब्याज सहित वसूली	–	–	–	–	–	–	–	–
– पेंशन और सीजीएचएस के लिए दिया गया कर्मचारियों का योगदान	–	–	–	–	–	–	–	–
– बयाना और प्रतिभूति जमा	–	–	–	–	–	–	–	–
– संयुक्त सेवाओं से प्राप्तियाँ	–	–	–	–	–	–	–	–
– विविध प्राप्तियाँ	–	–	–	–	–	–	–	–
– पुस्तकालय पुस्तकें/भेंट की गई पुस्तकें	2,17,164	–	–	2,17,164	4,40,991	–	–	4,40,991
– प्रकाशनों/वीडियो फ़िल्में/कागज़	–	73,19,215	–	73,19,215	–	86,15,641	–	86,15,641
– संग्रह निधि से ब्याज का स्थानांतरण	–	–	–	–	–	–	–	–
– वर्ष के दौरान समायोजन	–	–		–	–	–	–	–
(vi) अतिरिक्त अर्जन	–	–	2,35,443	2,35,443	–	–	6,49,003	6,49,003
योग (बी)	1,54,38,631	73,19,215	2,02,52,267	4,30,10,113	1,80,46,483	86,15,641	1,94,43,793	4,61,05,917
योग (ए + बी)	11,38,68,426	8,41,71,853	9,73,17,309	29,53,57,588	11,73,50,235	7,68,79,578	9,01,27,081	28,43,56,893

(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए								
(i) पूंजी व्यय								
– स्थायी परिसंपत्ति	–	–	–	–	–	–	–	–
– अन्य								
– स्टॉफ को अग्रिम	–	–	–	–	–	–	–	–
– प्रतिभूति की वापसी	–	–	–	–	–	–	–	–
– पुस्तकालय और सूचना सेवा में सुधार	–	–	–	–	–	–	–	–
– निधि से पूंजी की कटौती/वापसी	–	–	99,88,000	99,88,000	–	–	82,82,000	82,82,000
– पूर्ण और अंतिम समायोजन	–	–	30,43,242	30,43,242	–	–	38,96,099	38,96,099
– वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन	–	19,180	9,20,580	9,39,760	67,05,492	26,940	8,83,940	76,16,372
– वर्ष के दौरान मूल्यह्रास	47,43,350	–	–	47,43,350	52,62,820	–	–	52,62,820
– पूर्व अवधि मूल्यह्रास	2,55,469	–	–	2,55,469	–	–	–	–
योग	49,98,819	19,180	1,39,51,822	1,89,69,821	1,19,68,312	26,940	1,30,62,039	2,50,57,291
(ii) राजस्व खर्च								
– वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि	–	–	–	–	–	–	–	–
– किराए की दरें और कर	–	–	–	–	–	–	–	–
(iii) योजनाओं के अंतर्गत व्यय								
– प्रशासनिक कार्यों में सुधार	–	–	–	–	–	–	–	–
– प्रचार और प्रदर्शनियाँ	–	–	–	–	–	–	–	–
– लेखकों को सेवाएँ	–	–	–	–	–	–	–	–
– प्रकाशन योजनाएँ	–	–	–	–	–	–	–	–
– अनुवाद और भाषाओं का विकास	–	–	–	–	–	–	–	–
– साहित्यिक समारोह और कार्यक्रम	–	–	–	–	–	–	–	–
– संयुक्त सेवाओं का भुगतान	–	–	–	–	–	–	–	–
– स्वर्ण जयंती समारोह	–	–	–	–	–	–	–	–
– अन्य योजनाओं पर खर्च	–	–	–	–	–	–	–	–
– वर्ष के अंत में अव्ययित अनुदान	65,72,086	–	–	65,72,086	69,52,128	–	–	69,52,128
योग	65,72,086	–	–	65,72,086	69,52,128	–	–	69,52,128
योग (सी)	1,15,70,905	19,180	1,39,51,822	2,55,41,907	1,89,20,440	26,940	1,30,62,039	3,20,09,419
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)	10,22,97,520	8,41,52,673	8,33,65,487	26,98,15,682	9,84,29,795	7,68,52,638	7,70,65,042	25,23,47,474

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2014

	चालू वर्ष योग	गत वर्ष योग
अनुसूची - 4—सुरक्षित ऋण और उधार		
(1) केन्द्र सरकार	–	–
(2) राज्य सरकार (उल्लेख करें)	–	–
(3) वित्तीय संस्थाएँ		
(क) आवधिक ऋण	–	–
(ख) ब्याज प्रोद्भूत और देय	–	–
(4) बैंक		
(क) आवधिक ऋण	–	–
– ब्याज प्रोद्भूत और देय	–	–
(ख) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	–	–
– ब्याज प्रोद्भूत और देय	–	–
– केनरा बैंक से ओवरड्राफ्ट की सुविधा	–	–
(5) अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	–	
(6) डिबेंचर और बॉण्ड्स	–	–
(7) अन्य (उल्लेख करें)	–	–
योग	–	–

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2014

	चालू वर्ष योग	गत वर्ष योग
अनुसूची- 5—असुरक्षित ऋण और उधार		
(1) केन्द्र सरकार	–	–
(2) राज्य सरकार (उल्लेख करें)	–	–
(3) वित्तीय संस्थाएँ		
(4) बैंक		
(क) आवधिक ऋण	–	–
(ख) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	–	–
(5) अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	–	–
(6) डिबेंचर और बॉण्ड्स	–	–
(7) आवधिक जमा	–	–
(8) अन्य (उल्लेख करें)	–	–
योग	–	–
अनुसूची- 6—आस्थगित जमा दायित्व		
(क) पूँजीगत उपस्करों तथा अन्य परिसंपत्तियों के बंधकीकरण द्वारा सुरक्षित स्वीकृतियाँ	–	–
(ख) अन्य	–	–
योग	–	–

अनुसूची - 7		X

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2014

	चालू वर्ष	चालू वर्ष			गत वर्ष			गत वर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	सा.भ.नि./एन.पी.एस	योजनागत	गैर योजनागत	सा.भ.नि./एन.पी.एस	योग
अनुसूची-7–चालू दायित्व और उपबंध								
(1) स्वीकृति								
प्रतिभूति जमा (प्राप्त)								
– पुस्तकालय के सदस्य	53,23,598	53,25,598	–	–	46,29,098	–	–	46,29,098
– अन्य	1,27,500	127,500	–	–	127,500	–	–	127,500
(2) विविध लेनदार								
(क) सामान के लिए	56,439	56,439	–	–	56,439	–	–	56,439
(ख) रॉयल्टी	5,35,273	5,35,273	–	–	5,35,273	–	–	5,35,273
(ग) अन्य	8,68,916	8,68,916	–	–	12,97,460	–	–	12,97,460
(3) प्राप्त अग्रिम	1,43,544	1,43,544	–	–	1,43,544	–	–	1,43,544
(4) संचित ब्याज पर देय नहीं :								
(ए) सुरक्षित ऋण/उधार	–	–	–	–	–	–	–	–
(बी) असुरक्षित ऋण/उधार	–	–	–	–	–	–	–	–
(5) कानूनी दायित्व :								
(ए) अतिशेष	–		–	–	–	–	–	
(बी) देय दावा भत्ता	–	–	–	–				
(6) अन्य चालू दायित्व :								
देय वेतन	12,48,512	–	12,48,512	–	–	7,32,813	–	7,32,815
लेखापरीक्षा शुल्क	–	–	–	–	–	–	–	–
सा.भ.नि. खाता	1,04,216	1,04,216	–	–	58,090	–	–	58,090
	51,977	–	–	51,977	–	–	51,977	51,977
(7) वर्ष के अंत में पूँजीगत अनुदान के साथ अप्रयुक्त अनुदान शेष	1,17,18,204	1,00,68,204	16,50,000	–	84,69,079	9,00,000	–	93,69,079
योग (ए)	2,01,78,179	1,72,27,690	28,98,512	51,977	1,53,17,083	16,32,813	51,977	1,70,01,873
(बी) प्रावधान								
(1) कर लगाने के लिए	–	–	–	–	–	–	–	–
(2) संचित रॉयल्टी के लिए	8,00,000	8,00,000	–	–	8,00,000	–	–	8,00,000
(3) अधिवर्षिता-पेंशन	21,00,000	–	21,00,000	–	–	21,00,000	–	21,00,000
(4) संचित अवकाश भुगतान	9,00,000	–	9,00,000	–	–	9,00,000	–	9,00,000
(5) व्यापार वारंटी-दावे	–	–	–	–	–	–	–	–
(6) अन्य–देय लेखापरीक्षा शुल्क	5,00,000	–	5,00,000	–	–	3,00,000	–	3,00,000
योग (बी)	43,00,000	8,00,000	35,00,000	–	8,00,000	33,00,000	–	41,00,000
योग (ए +बी)	2,44,78,179	1,80,27,690	63,98,512	51,977	1,61,17,083	49,32,813	51,977	2,11,01,873

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2014

(राशि रुपये में)

क्रम सं.	विवरण	दर	कुल ब्लॉक				मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
			वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत में कुल लागत/मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत तक में कुल योग	चालू वर्ष के अंत तक कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
(क)	स्थायी परिसंपत्ति											
1.	भूमि :											
	(क) पूर्ण स्वामित्व वाली		–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
	(ख) पट्टे पर		83,95,459	–	–	83,95,459	–	–		–	83,95,459	83,95,459
2.	भवन :											
	(क) पट्टे वाली भूमि पर		–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
	(ख) पट्टे वाली भूमि पर	10%	–	44,83,290	–	44,83,290	–	2,24,165	–	2,24,165	42,59,126	–
	(ग) फ्लैट/परिसर का स्वामित्व		3,62,25,175	–	–	3,62,25,175	–	–	–	–	3,62,25,175	3,62,25,175
	(घ) भूमि पर अधिरचना		–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
3.	संयंत्र और तंत्र		–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
4.	वाहन	15%	13,98,332	19,339	–	14,17,671	10,51,675	54,899	–	11,06,575	3,11,096	3,46,657
5.	फर्नीचर और जुड़नार	10%	2,68,75,177	3,22,337	–	2,71,97,514	1,70,68,822	9,99,836	6,419	1,80,62,239	91,35,275	98,06,355
6.	कार्यालय उपकरण	15%	2,45,14,331	17,58,416	–	2,62,72,747	1,96,38,605	11,40,241	14,467	2,07,64,379	55,08,368	48,75,726
7.	कंप्यूटर/परिधीय	60%	1,15,32,996	5,46,894	–	1,20,79,890	1,07,97,356	7,93,892	1,74,043	1,14,17,205	6,62,685	7,35,640
8.	विद्युतीय प्रस्थापन	15%	6,03,578	81,524	–	6,85,102	4,09,961	93,053	5,214	4,97,800	1,87,302	1,93,617
9.	पुस्तकालय में पुस्तकें	10%	3,78,82,237	12,31,321	–	3,91,13,558	2,01,68,467	18,46,100	27,827	2,19,86,740	1,71,26,818	1,77,13,770
10.	वातानुकूलन	15%	65,08,644	–	–	65,08,644	56,11,296	1,34,602	–	57,45,899	7,62,745	8,97,348
(ख)	कार्य संचालन पूंजी		1,95,00,047	9,17,424	4,94,000	1,97,23,471	–	–	–	–	1,97,23,471	1,95,00,047
	चालू वर्ष का कुल योग		17,32,35,976	93,60,545	4,94,000	18,21,02,521	7,48,06,182	52,26,789	2,27,970	7,98,05,001	10,22,97,520	9,84,29,794
	गत वर्ष		16,88,64,730	1,10,94,355	67,23,109	17,32,35,976	6,95,61,040	52,62,820	17,677	7,48,06,182	9,84,29,794	9,95,03,750

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2014

(राशि रुपये में)

अनुसूची - 9–नियत/अक्षय निधियों से निवेश	चालू वर्ष	चालू वर्ष			चालू वर्ष			गत वर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योजनागत	गैर योजनागत	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग
(1) सरकारी प्रतिभूतियों में	–	–	–	–	–	–	–	–
(2) अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ	–	–	–	–	–	–	–	–
(3) शेयर	–	–	–	–	–	–	–	–
(4) डिबेंचर और बॉण्ड्स	–	–	–	–	–	–	–	–
– आई.डी.बी.आई. सुविधा बॉण्ड्स	–	–	–	–	–	–	–	–
(5) समानुषंगी और संयुक्त उद्यम	–	–	–	–	–	–	–	–
(6) अन्य	–	–	–	–	–	–	–	–
– आवधिक जमा	3,00,00,000	–	–	3,00,00,000	–	–	2,77,15,246	2,77,15,246
– आई.डी.बी.आई. बैंक फ्लेक्सी बॉण्ड	60,00,000	–	–	60,00,000	–	–	60,00,000	60,00,000
– एनएबीएआरडी भविष्य निर्माण बॉण्ड	1,40,25,000	–	–	1,40,25,000	–	–	1,40,25,000	1,40,25,000
– आवधिक जमा-नई पेंशन योजना	80,46,010	–	–	80,46,010	–	–	39,83,877	39,83,877
योग	5,80,71,010	–	–	5,80,71,010	–	–	5,37,24,120	5,37,24,120

(राशि रुपये में)

अनुसूची - 10–निवेश–अन्य	चालू वर्ष	चालू वर्ष		गत वर्ष		गतवर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योजनागत	गैर योजनागत	योग
(1) सरकारी प्रतिभूतियों में	–	–	–	–	–	–
(2) अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ	–	–	–	–	–	–
(3) शेयर	–	–	–	–	–	–
(4) डिबेंचर और बॉण्ड्स	–	–	–	–	–	–
(5) समानुषंगी और संयुक्त उद्यम	–	–	–	–	–	–
(6) अन्य	–	–	–	–	–	–
योग	–	–	–	–	–	–

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2014

(राशि रुपये में)

अनुसूची-11-चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम आदि	चालू वर्ष	चालू वर्ष			चालू वर्ष			गत वर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	सा.भ.नि/एन.पी.एस	योजनागत	गैरयोजनागत	सा.भ.नि/एन.पी.एस	योग
(ए) चालू परिसंपत्तियाँ :								
(1) वस्तुसूची								
प्रकाशन एवं कागज का स्टॉक								
पुस्तकें : अकादेमी प्रकाशन	7,15,86,360	7,15,86,360	–	–	6,64,28,500	–	–	6,64,28,500
अपरोल प्रकाशन	1,59,270	1,59,270	–	–	1,78,450	–	–	1,78,450
वीडियो फिल्म एवं सी.डी.	7,89,050	7,89,050	–	–	7,36,000	–	–	7,36,000
कागज : अपने पास	74,86,887	74,86,887	–	–	57,52,857	–	–	57,52,857
मुद्रणालयों में	41,51,106	41,51,106	–	–	37,56,831	–	–	37,56,831
(2) विविध देनदार								
(क) छह माह की अवधि से अधिक बकाया ऋण	74,73,730	74,73,730	–	–	59,20,920	–	–	59,20,920
(ख) अन्य	52,84,121	52,84,121	–	–	47,00,316	–	–	47,00,316
(3) हाथ में शेष धन या बकाया राशि (जिसमें चेक/ड्राफ्ट, स्टैंप टिकट और अग्रदाय शामिल हैं)	8,65,855	8,65,855	–	–	12,13,961	–	–	12,13,961
(4) बैंक में शेष धन :								
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ :								
– चालू खातों पर	–	–	–	–	–	–	–	–
– जमा खातों पर (संग्रह निधि)	1,00,00,000	1,00,00,000	–	–	1,00,00,000	–	–	1,00,00,000
– बचत खातों पर	2,11,37,272	1,94,87,272	16,50,000	–	1,37,40,092	9,00,000	–	1,46,40,092
– सा.भ.नि. के बचत खातों पर	56,91,670	–	–	56,91,670	–	–	21,01,562	21,01,562
(ख) गैर-अनुसूचित बैंकों के साथ :								
– चालू खातों पर	–	–	–	–	–	–	–	–
– जमा खातों पर	–	–	–	–	–	–	–	–
– बचत खातों पर	–	–	–	–	–	–	–	–
(5) डाक-घर के बचत खाते								
योग (ए)	13,46,05,321	12,72,63,651	16,50,000	56,91,670	11,24,27,927	9,00,000	21,01,562	11,54,29,489

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तुलन-पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2014

(राशि रुपये में)

अनुसूची-11-चालू परिसंपत्तियां, ऋण, अग्रिम आदि	चालू वर्ष	चालू वर्ष			चालू वर्ष			गत वर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	सा.भ.नि/एल.पी.एस	योजनागत	गैर योजनागत	सा.भ.नि/एल.पी.एस	योग
(बी) ऋण,अग्रिम तथा अन्य परिसंपत्तियाँ :								
(1) ऋण								
(क) स्टॉफ	27,73,875	–	27,73,875	–	–	31,97,234	–	31,97,234
(ख) अन्य व्यक्ति/संस्था, जो समान								
गतिविधियों/कार्यों में संलग्न हैं	–	–	–	–	–	–	–	–
(ग) अन्य–सा.भ.नि. अग्रिम	61,81,773	–	–	61,81,773	–	–	72,30,828	72,30,828
(2) अग्रिम और अन्य राशियाँ जो नकदी								
अथवा वस्तु अथवा उसके समतुल्य								
मूल्य के लिए वसूला जाना है								
(क) पूंजी खातों पर	–		–	–				
(ख) पूर्व भुगतान	–		–	–				
(ग) अन्य	–		–	–				
स्रोतों से कर कटौती	8,58,861	8,58,861	–	–	5,35,437	–	–	5,35,437
प्रतिभूति जमा	11,95,861	–	11,95,861	–	–	12,54,509	–	12,54,509
पूर्व भुगतान खर्च	3,11,619	–	3,11,619	–	–	2,42,692	–	2,42,692
संयुक्त सेवाएँ वसूली योग्य	24,49,125	–	24,49,125	–	41,82,119	–	–	41,82,119
अन्य वसूली योग्य(अग्रिम सहित)	30,38,056	23,10,735	7,27,321	–	14,54,575	4,88,109	–	19,42,684
(3) प्रोद्भूत आय								
(क) निधारित/अक्षय निधियों से निवेश पर	1,33,68,795	–	–	1,33,68,795	–	–	1,40,01,824	1,40,01,824
(ख) निवेशों पर–अन्य	–	–	–	–	–	–	–	–
(ग) ऋणों तथा अग्रिमों पर	–	–	–	–	–	–	–	–
(घ) अन्य	6,42,375	6,42,375	–	–	17,38,430	–	–	17,38,430
(4) प्राप्त करने योग्य दावे								
(क) वसूली योग्य सा.भ.नि.	1,04,216	–	–	1,04,216	–	–	58,690	38,690
(ख) गैर योजनागत खाता	–	–	–	–	–	–	–	–
योग (बी)	3,09,24,555	38,11,971	74,57,801	1,96,54,784	79,08,581	51,82,604	2,12,91,337	3,43,82,552
योग (ए + बी)	16,55,29,875	13,10,75,621	91,07,801	2,53,46,454	12,03,36,508	60,82,604	2,33,92,809	14,98,12,011

अनुसूची - 12 एवं 13

साहित्य अकेदमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची-12—बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आय	चालू वर्ष	चालू वर्ष		गत वर्ष		गत वर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योजनागत	गैर योजनागत	योग
(1) बिक्री से प्राप्त आय						
(क) भंडारी द्वारा की गई बिक्री	—	—	—	—	—	—
(2) सेवाओं से प्राप्त आय	—	—	—	—	—	—
(क) श्रम और प्रक्रमण शुल्क	—	—	—	—	—	—
(ख) व्यावसायिक/परामर्श सेवाएँ	—	—	—	—	—	—
(ग) एजेंसी कमीशन और दलाली	—	—	—	—	—	—
(घ) अनुरक्षण सेवाएँ (उपकरण/संपत्ति)	—	—	—	—	—	—
योग	—	—	—	—	—	—

अनुसूची - 13—अनुदान/इमदाद	चालू वर्ष	चालू वर्ष		गत वर्ष		गतवर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योजनागत	गैर योजनागत	योग
(अटल अनुदान और प्राप्त इमदाद)						
(1) केन्द्र सरकार						
(क) पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय, संस्कृति विभाग से प्राप्त अनुदान						
—योजनागत	13,55,48,000	13,55,48,000	—	11,00,00,000	—	11,00,00,000
—गैर योजनागत	9,40,90,750	—	9,40,90,750	—	8,57,10,500	8,57,10,500
पूर्वोत्तर (योजनागत)	2,97,00,000	2,97,00,000	—	2,50,00,000	—	2,50,00,000
रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 150वीं जन्मशतवार्षिकी	—	—	—	22,95,000	—	22,95,000
संस्कृति मंत्रालय-शब्द (बेनाले)	1,40,00,000	1,40,00,000	—	—	—	—
संस्कृति मंत्रालय-आईओआरएआरसी कार्योत्सव	32,00,000	32,00,000	—	—	—	—
पेरू और क्यूबा में भारत का लघु उत्सव	36,00,000	—	36,00,000	—	—	—
(2) राज्य सरकार	—	—	—	—	—	—
(3) सरकारी अभिकरण	—	—	—	—	—	—
(4) संस्थाएँ/कल्याणकारी निकाय	—	—	—	—	—	—
(5) अंतर्राष्ट्रीय संगठन	—	—	—	—	—	—
(6) अन्य सैम्संग साहित्य पुरस्कार	—	—	—	3,59,536	—	3,59,536
जमा : वर्ष के प्रारंभ में अव्ययित शेष	24,16,951	24,16,951	—	47,63,416	—	47,63,416
घटा : वर्ष के अंत में टैगोर स्मृति						
अनुदान योजना अव्ययित शेष	(22,41,951)	(22,41,951)	—	(24,16,951)	—	(24,16,951)
घटा : वर्ष के अंत में शब्द (बेनाले) का अव्ययित शेष	(29,04,167)	(29,04,167)	—	—	—	—
घटा : वर्ष के दौरान पूँजीगत अनुदान	—	—	—	—	—	—
योग	27,74,09,583	17,97,18,833	9,76,90,750	14,00,01,001	8,57,10,500	22,57,11,501

अनुसूची - 14

साहित्य अकेदमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

	चालू वर्ष	चालू वर्ष		गत वर्ष		गत वर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योजनागत	गैर योजनागत	योग
अनुसूची - 14–शुल्क/अंशदान						
(1) प्रवेश शुल्क	–	–	–	–	–	–
(2) वार्षिक शुल्क/अंशदान	–	–	–	–	–	–
(3) संगोष्ठी/कार्यक्रम शुल्क	–	–	–	–	–	–
(4) परामर्श शुल्क	–	–	–	–	–	–
(5) अन्य	–	–	–	–	–	–
योग	–	–	–	–	–	–

अनुसूची - 15

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

अनुसूची - 15–निवेश से प्राप्त आय	अक्षय निधियों से निवेश		अन्य निवेश	
	चालू वर्ष	गत वर्ष	चालू वर्ष	गत वर्ष
(1) ब्याज				
(क) सरकारी प्रतिभूतियों पर	–	–	–	–
(ख) अन्य बॉण्ड/डिबेंचर	–	–	–	–
(2) लाभांश		–		–
(क) शेयरों पर	–	–	–	–
(ख) म्युचुअल फंड प्रतिभूतियों पर	–	–	–	–
(3) किराए	–	–	–	–
(4) अन्य	55,87,455	58,24,403	–	–
घटा : सा.अ.नि. पूँजी में स्थानांतरित	(55,87,455)	(58,24,403)	–	–
योग	–	–	–	–
नियत/अक्षय निधियों में स्थानांतरित	–	–	–	–

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची- 16–रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि से प्राप्त आय	चालू वर्ष	चालू वर्ष		गत वर्ष		गत वर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योजनागत	गैर योजनागत	योग
(1) रॉयल्टी से प्राप्त आय	48,700	48,700	–	12,000	–	12,000
(2) अकादेमी प्रकाशनों से प्राप्त आय	2,14,34,003	2,13,98,139	35,864	2,13,62,889	26,48,666	2,40,11,555
(3) अन्य	–	–	–	–	–	–
योग	2,14,82,703	2,14,46,839	35,864	2,13,74,889	26,48,666	2,40,23,555

अनुसूची - 17–प्राप्त ब्याज	चालू वर्ष	चालू वर्ष		गत वर्ष		गत वर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योजनागत	गैर योजनागत	योग
(1) सशर्त जमा						
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ	53,40,924	39,86,704	13,54,220	20,69,076	6,89,692	27,58,768
(ख) गैर अनुसूचित बैंकों के साथ	–	–	–	–	–	–
(ग) संस्थाओं के साथ	–	–	–	–	–	–
(घ) अन्य	–	–	–	–	–	–
(2) बचत खातों पर :						
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ	11,03,287	6,00,000	5,03,287	7,24,153	2,41,384	9,65,537
(ख) गैर अनुसूचित बैंकों के साथ	–	–	–	–	–	–
(ग) डाक घर के बचत खाते	–	–	–	–	–	–
(घ) अन्य	–	–	–	–	–	–
(3) ऋणों पर :						
(क) कर्मचारी/स्टाफ	6,12,193	–	6,12,193	–	5,51,730	5,51,730
(ख) अन्य	–	–	–	–	–	–
(4) ऋणदाताओं पर ब्याज तथा अन्य प्राप्तियाँ	–	–	–	–	–	–
अन्य	–	–	–	–	–	–
योग	70,56,404	45,86,704	24,69,700	27,93,229	14,82,806	42,76,035

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची - 18—अन्य आय	चालू वर्ष	चालू वर्ष		गत वर्ष		गत वर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योजनागत	गैर योजनागत	योग
1. परिसंपत्तियों की बिक्री/निपटान से प्राप्त आय						
(क) निजी परिसंपत्तियां	–	–	–	–	–	–
(ख) परिसंपत्तियां जो कि अनुदान अथवा निःशुल्क प्राप्त हुई	–	–	–	–	–	–
(ग) गैर उपभोज्य सामग्री (स्थायी परिसम्पत्ति) की बिक्री	–	–	–	–	–	–
(घ) पुस्तकालय की खोई हुई पुस्तकों के मूल्य की वसूली	1,087	1,087	–	10,559	–	10,559
2. निर्यात को प्रोत्साहन	–	–	–	–	–	–
3. विविध आय						
– सामान्य	5,13,352	16,717	4,96,636	5,96,778	1,14,257	7,11,035
– पूर्व अवधि आय	7,41,843	6,37,110	1,04,733	6,32,245	1,574	6,33,819
– कर्मचारियों का छुट्टी का वेतन/पेंशन अंशदान	60,287	–	60,287	–	54,858	54,858
– सा.भ.नि. की ब्याज प्राप्तियों में कमी/वृद्धि	–	–	–	–	–	–
– कर्मचारियों का सीजीएचएस अंशदान	1,90,225	–	1,90,225	–	1,82,275	1,82,275
योग	15,06,795	6,54,914	8,51,881	12,39,582	3,52,964	15,92,546

अनुसूची - 19—पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में (उतार)/चढ़ाव	चालू वर्ष	चालू वर्ष		गत वर्ष		गत वर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योजनागत	गैर योजनागत	योग
(ए) अंत शेष माल						
– तैयार सामान (पुस्तकें)	7,25,34,680	7,25,34,680	–	6,73,42,950	–	6,73,42,950
– कच्चा माल (कागज़)	1,16,17,993	1,16,17,993	–	95,09,688	–	95,09,688
(बी) घटा : आदि शेष माल						
– तैयार सामान (पुस्तकें)	6,73,42,950	6,73,42,950	–	6,06,91,430	–	6,06,91,430
– कच्चा माल (कागज़)	95,09,688	95,09,688	–	75,72,507	–	75,72,507
कुल उतार/(चढ़ाव) (ए-बी)	73,00,035	73,00,035	–	85,88,701	–	85,88,701

अनुसूची - 20 एवं 21

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची - 20—स्थापना व्यय	चालू वर्ष	चालू वर्ष		गत वर्ष		गत वर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योजनागत	गैर योजनागत	योग
(क) वेतन, मजदूरी और भत्ते	7,66,33,134	2,50,61,391	5,15,71,743	2,77,88,989	4,19,88,222	6,97,77,211
(ख) कर्मचारियों की सेवा-निवृत्ति पर हुए खर्चे तथा आवधिक लाभ	2,15,88,244	–	2,15,88,244	–	2,29,25,316	2,29,25,316
(ग) नई पेंशन योजना हेतु योगदान	10,56,532	–	10,56,532	–	8,20,436	8,20,436
(घ) सा. भ. नि. के ब्याज में कमी	–	–	–	–	–	–
(ङ) अन्य						
– चिकित्सा सुविधाएँ	21,57,331	–	21,57,331	–	25,11,172	25,11,172
– अवकाश यात्रा सुविधा	2,84,289	–	2,84,289	–	6,96,289	6,96,289
– स्टॉफ़ को यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता	7,23,161	–	7,23,161	–	23,78,492	23,78,492
(च) पूर्व आवधिक वेतन बकाया	–	–	–	–	–	–
योग	10,24,42,691	2,50,61,391	7,73,81,300	2,77,88,989	7,13,19,927	9,91,08,916

अनुसूची - 21 - अन्य प्रशासनिक व्यय	चालू वर्ष	चालू वर्ष		गत वर्ष		गत वर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योजनागत	गैर योजनागत	योग
(क) सेवा शर्तेंका एवं सेवा शुल्क	5,99,604	–	5,99,604	–	2,10,017	2,10,017
(ख) मुद्रण एवं लेखन सामग्री	6,40,572	–	6,40,572	–	4,86,439	4,86,439
(ग) दूरभाष एवं डाक-व्यय	28,70,535	–	28,70,535	–	51,93,447	51,93,447
(घ) अन्य आकस्मिक व्यय	39,77,796	–	39,77,796	–	52,93,888	52,93,888
(ङ) वाहन अनुरक्षण	2,48,334	–	2,48,334	–	1,99,542	1,99,542
(च) किराया, रतिकर एवं कर	1,42,13,718	–	1,42,13,718	–	1,45,90,867	1,45,90,867
(छ) फर्नीचर एवं जुड़नार	–	–	–	–	23,171	23,171
योग	2,15,50,559	–	2,15,50,559	–	2,10,97,341	2,10,97,341

अनुसूची - 22

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची- 22-संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार की गतिविधियाँ	चालू वर्ष	चालू वर्ष		गत वर्ष		गत वर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योजनागत	गैर योजनागत	योग
(क) पुस्तकालय और सूचना सेवा में सुधार	69,65,919	69,65,919	–	64,15,306	–	64,15,306
(ख) प्रकाशन योजनाएँ	5,56,04,577	5,56,04,577	–	5,73,90,525	–	5,73,90,525
(ग) प्रशासनिक कार्यप्रणाली का आधुनिकीकरण एवं सुधार	75,28,990	75,28,990	–	41,43,092	–	41,43,092
(घ) साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम	5,96,34,828	5,96,34,828	–	5,45,39,019	–	5,45,39,019
(ङ) लेखकों को दी जाने वाली सेवाएँ	2,83,24,577	2,83,24,577	–	2,49,27,609	–	2,49,27,609
(च) साहित्य अकादेमी प्रकाशनों की बिक्री संवर्धन, विज्ञापन, प्रचार, पुस्तक प्रदर्शनियाँ	1,55,50,605	1,55,50,605	–	95,36,151	–	95,36,151
(छ) अनुवाद योजनाएँ	1,34,25,375	1,34,25,375	–	80,66,725	–	80,66,725
(ज) क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजना	92,79,353	92,79,353	–	45,45,516	–	45,45,516
(झ) भाषाओं का विकास	19,87,901	19,87,901	–	14,57,034	–	14,57,034
(ञ) फ़ेलोशिप	11,34,685	11,34,685	–	5,09,356	–	5,09,356
(ट) राजभाषा कार्यक्रम	5,81,724	5,81,724	–	5,91,842	–	5,91,842
(ठ) इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक्स	16,48,291	16,48,291	–	1,30,550	–	1,30,550
(ड) बाल साहित्य पुरस्कार	45,14,743	45,14,743	–	36,18,371	–	36,18,371
(ढ) सियोल–टैगोर साहित्य पुरस्कार	3,000	3,000	–	6,37,921	–	6,37,921
(ण) युवा पुरस्कार	49,21,099	49,21,099	–	62,00,672	–	62,00,672
(त) टैगोर स्मृति योजना	1,75,000	1,75,000	–	21,20,899	–	21,20,899
(थ) रवीन्द्रनाथ की 150वीं जन्मशतवार्षिकी	4,55,040	4,55,040	–	19,38,292	–	19,38,292
(द) अवधि पूर्व खर्च	7,50,529	6,52,823	97,706	52,21,836	–	52,21,836
(ध) नेशनल बिब्लियोग्राफी ऑफ़ ट्रांसलेशन्स	5,70,453	5,70,453	–	–	–	–
(न) एन्थोलॉजी ऑफ़ इंडियन क्लासिक्स ऑफ़ ट्रांसलेशन ऑफ़ इंडिया	8,32,460	8,32,460	–	–	–	–
(प) विदेश में भारतीय साहित्य	4,88,199	4,88,199	–	–	–	–
(फ) बेनाले ऑफ़ वर्ल्ड पोएट्री	1,09,29,514	1,09,29,514	–	–	–	–
(ब) इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन कार्यक्रम (आई.ओ.आर.ए.)	43,92,904	43,92,904	–	–	–	–
(भ) पेरू और क्यूबा में भारत का लघु उत्सव	36,00,000	–	36,00,000	–	–	–
योग	18,51,15,379	18,14,17,673	36,97,706	15,16,46,092	–	15,16,46,092

अनुसूची - 23 एवं 24

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

31 मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची- 23—अनुदान, इमदाद आदि पर व्यय	चालू वर्ष	चालू वर्ष		गत वर्ष		गत वर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योजनागत	गैर योजनागत	योग
(क) संस्थाओं/संगठनों को दिए गए अनुदान	–	–	–	–	–	–
(ख) संस्थाओं/संगठनों को दी गई इमदाद	–	–	–	–	–	–
–राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता	14,63,049	14,63,049	–	14,42,575	–	14,42,575
योग	14,63,049	14,63,049	–	14,42,575	–	14,42,575

अनुसूची - 24—ब्याज	चालू वर्ष	चालू वर्ष		गत वर्ष		गत वर्ष
	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योजनागत	गैर योजनागत	योग
(क) स्थायी ऋण पर	–	–	–	–	–	–
(ख) अन्य ऋणों पर (बैंक शुल्क सम्मिलित)	–	–	–	–	–	–
(ग) अन्य (उल्लेख करें)	–	–	–	–	–	–
योग	–	–	–	–	–	–

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

योजनागत और गैर योजनागत प्राप्ति और भुगतान लेखा : यथातिथि 01-04-2013 से 31-03-2014 तक

प्राप्तियाँ	चालू वर्ष			गत वर्ष		
	योजनागत	गैर योजनागत	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योग
I. आरंभिक शेष						
(क) हाथ में रोकड़	11,86,088	–	11,86,088	13,78,311	–	13,78,311
(ख) बैंक में जमा						
(i) चालू खातों में	–	–	–	–	–	–
(ii) जमा खातों में	–		–	–	–	–
(iii) बचत खातों में	1,37,48,092	9,00,000	1,46,48,092	1,50,35,305	–	1,50,35,305
(ग) फ्रैंकिंग मशीन में	24,273	–	24,273	40,007	–	40,007
II. प्राप्त अनुदान						
(क) भारत सरकार द्वारा						
– संस्कृति मंत्रालय-योजनागत	15,55,48,000	–	15,55,48,000	11,00,00,000	–	11,00,00,000
– संस्कृति मंत्रालय-गैर योजनागत	–	8,48,90,750	8,48,90,750	–	8,57,10,500	8,57,10,500
– संस्कृति मंत्रालय–पूंजी अनुदान (योजनागत)	75,00,000	–	75,00,000	1,00,00,000	–	1,00,00,000
– संस्कृति मंत्रालय–पूंजी अनुदान (गैर योजनागत)	–	7,50,000	7,50,000	–	8,00,000	8,00,000
– संस्कृति मंत्रालय–पूर्वोत्तर(योजनागत)	3,07,00,000	–	3,07,00,000	3,50,00,000	–	3,50,00,000
– संस्कृति मंत्रालय–रवीन्द्रनाथ की 150वीं जयन्ती (योजनागत)	–	–	–	25,50,000	–	25,50,000
– संस्कृति मंत्रालय–[illegible]	1,48,00,000	–	1,48,00,000	–	–	–
– संस्कृति मंत्रालय-आई.जी.आर.ए. कविता उत्सव	50,00,000	–	50,00,000	–	–	–
– संस्कृति मंत्रालय-जेल और बच्चों में भाषा का लघु उत्सव (गैर योजनागत)	–	36,00,000	36,00,000	–	–	–

भुगतान	चालू वर्ष			गत वर्ष		
	योजनागत	गैर योजनागत	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योग
I. व्यय						
(क) स्थापना व्यय (अनुसूची 19 के अनुसार)	3,18,74,843	7,73,09,611	10,91,84,454	2,77,88,989	6,87,27,229	9,65,16,218
(ख) प्रशासनिक व्यय (अनुसूची 21 के अनुसार)	–	1,88,72,815	1,88,72,815	–	2,19,41,580	2,19,41,580
(ग) कार्यक्रम एवं विकास व्यय (अनुसूची 22 के अनुसार)	17,37,79,264	36,00,000	17,73,79,264	13,75,24,879	–	13,75,24,879
(घ) अनुदान, इमारत आदि पर व्यय (अनुसूची 23 के अनुसार)	14,64,549	–	14,64,549	14,57,075	–	14,57,075
II. विभिन्न परियोजनाओं के भुगतान हेतु पूंजी	–	–	–	–	–	–
III. निधियों और अन्य राशियों के लिए किए गए भुगतान						
(क) निर्धारित निधियों से	–	–	–	–		
(ख) लघुनिधियों से (विशेष-अन्य)	–	–	–	–		
IV. स्थायी परिसंपत्तियों तथा पूंजी पर आधारित कार्यों पर व्यय						
(क) स्थायी परिसंपत्तियों की खरीद	77,15,618	–	77,15,618	38,78,538	–	38,78,538

प्राप्तियाँ	चालू वर्ष			गत वर्ष		
	योजनागत	गैर योजनागत	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योग
(ख) राज्य सरकार द्वारा	–	–	–	–	–	
(ग) अन्य स्रोतों द्वारा (विवरण दें)	–	–	–	–	–	
III. निवेशों से आय–						
(क) विनि.अक्ष निधियाँ	–	–	–	–		–
(ख) स्वदेशी (अन्य निवेश)	19,00,000	13,54,259	32,54,259	28,48,076	8,88,692	37,36,768
IV. प्राप्त ब्याज						
(क) ऋण, अग्रिम आदि	–	6,12,193	6,12,193	–	3,51,250	3,51,250
(ख) बैंकों में जमा राशि पर	6,00,000	5,05,897	11,05,897	7,24,153	8,41,984	9,46,287
V. अन्य आय						
– फीस (शोध एवं शिक्षा)	–	–	–	–	–	–
– दान	–	–	–	–	–	–
VI. उधार ली गई राशि	–	–	–	–	–	–
VII. कोई अन्य प्राप्तियाँ (विवरण दें)						
(क) स्टाफ को दी गई अग्रिम राशियों की वसूली	–	8,92,349	8,92,349	–	8,28,073	8,28,073
(ख) संयुक्त सेवाएँ	–	55,35,849	55,35,849	32,48,881	–	32,48,881
(ग) विविध आय	17,831	4,96,628	5,14,459	5,51,778	92,437	6,44,215
(घ) कर्मचारियों द्वारा सी.जी.एच.एस. अंशदान	–	1,90,225	1,90,225	–	1,85,875	1,85,875
(ङ) स्वास्थ्य-प्रतिपूर्ति राशि	7,20,050	–	7,20,050	3,78,450	–	3,78,450
(च) प्रकाशन की बिक्री	1,95,61,524	35,864	1,95,97,388	1,96,70,531	25,48,666	2,22,19,197
(छ) रॉयल्टी प्राप्त	48,700	–	48,700	15,000	–	15,000
(ज) पूर्व आवधिक प्राप्तियाँ	11,48,999	1,01,183	12,50,182	6,52,804	1,574	6,54,378
(झ) टी.एम.सी. कार्यक्रम वसूली	20,95,864	–	21,00,864	14,07,132	–	14,07,132
(ञ) निवेश-अक्षय निधियाँ, पूँजी में वापसी	–	–	–	–	–	–
(ट) अंशदा निधि पर ब्याज	20,86,704	–	20,86,704	–	14,808	14,808
(ठ) कर्मचारियों द्वारा पेंशन अंशदान	–	80,287	80,287	–	1,14,000	1,14,000
(ड) स्वयं	–	–	–	3,18,506	–	3,18,506
(ढ) सैमसंग-टैगोर साहित्यिक पुरस्कार	–	–	–	–	–	–
योग	23,28,79,698	10,89,84,063	34,18,63,761	19,40,20,882	9,21,16,189	28,61,37,071

भुगतान	चालू वर्ष			गत वर्ष		
	योजनागत	गैर योजनागत	योग	योजनागत	गैर योजनागत	योग
(ख) पूँजी पर आवधिक कार्यों पर व्यय	9,17,424	–	9,17,424	–	–	–
V. अधिशेष धन/ऋणों की वापसी						
(क) भारत सरकार को	–	–	–	–		
(ख) राज्य सरकार को	–	–	–	–		
(ग) अन्य पूँजी उपलब्ध कराने वालों को	–	–	–	–		
VI. वित्त शुल्क (ब्याज)	–	–	–	–		
VII. अन्य भुगतान (उल्लेख करें)	–	–	–	–		
सा. भ. नि. के निवेश में कमी						
स्टाफ को अग्रिम राशि	–	–	–	–		
वाहन अग्रिम	–	5,47,760	5,47,760	–	5,75,000	5,75,000
कोष्ठ अग्रिम	–	1,61,218	1,61,218	–	1,61,250	1,61,250
कम्प्यूटर अग्रिम	–	60,000	60,000	–	50,000	50,000
एच.बी.ए. अग्रिम	–	–	–	–	2,07,000	2,07,000
प्रतिपूर्ति राशि	35,530	–	35,530	57,300		57,300
संयुक्त सेवाएँ	–	54,31,899	54,31,899	19,16,538	–	19,16,538
जमा (वसूली योग्य)	14,54,028	4,31,411	18,85,439	19,40,882	–	19,40,882
टी.डी.एस. प्राप्त वसूल	20,95,864	–	21,00,864	14,07,132	–	14,07,132
वेंडरों से का कटौती	5,35,424	–	5,35,424	2,76,095	–	2,76,095
जमानत राशि की वापसी	–	–	–	–	1,14,000	1,14,000
अंत शेष						
(क) हाथ में रोकड़	6,39,517	–	6,39,517	11,89,698	–	11,89,698
(ख) बैंकों में शेष	–	–	–	–		
(i) चालू खातों में	–	–	–	–		
(ii) जमा खातों में	–	–	–	–		
(iii) बचत खातों में	1,94,87,272	16,50,000	2,11,37,272	1,37,00,092	9,00,000	1,46,00,092
(iv) डाकघर बचत खाता में	5,26,398	–	5,26,398	54,575	–	54,575
योग	23,28,79,698	10,89,84,063	34,18,63,761	19,40,20,882	9,21,16,189	28,61,37,071

	ह/-	ह/-	ह/-	ह/-
स्थान : नई दिल्ली	राजेश कुमार गुप्ता	वासुदेवन एस.	रेणु मोहन भान	के. श्रीनिवासराव
दिनांक : 11.06.2014	(प्रभार लेखापाल)	(उपसचिव)	(उपसचिव)	(सचिव)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

आय और व्यय लेखा के निर्माण करने वाली अनुसूची : यथातिथि 01-04-2013 से 31-03-2014 तक

प्राप्ति एवं भुगतान खाते की उप-अनुसूची–व्यय (क) स्थापना व्यय

(राशि रुपये में)

विवरण	कुल व्यय वेतन	योजनागत वसूली योग	अन्य	योग
स्टाफ़ वेतन और भत्ते	5,12,83,819	2,46,74,843	2,501	7,59,56,161
चिकित्सा सुविधाएँ	21,57,331	–	–	21,57,331
अपदान	23,76,820	–	–	23,76,820
पेंशन (परिवार सहित)	1,92,20,940	–	–	1,92,20,940
नई पेंशन योजना में अंशदान	10,56,532	–	–	10,56,532
छुट्टी यात्रा रियायत	5,85,789	–	4,46,500	1,39,289
स्टाफ़ को टी.ए./डी.ए.	8,28,420	–	2,450	8,25,970
योग	7,75,09,651	2,46,74,843	4,51,451	10,17,33,043

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

आय और व्यय लेखा के निर्माण करने वाली अनुसूची : यथातिथि 01-04-2013 से 31-03-2014 तक

प्राप्ति एवं भुगतान खाते की उप-अनुसूची—व्यय (ख) प्रशासनिक व्यय

क्र. सं.	विवरण	कुल व्यय	योजनागत वेतन	स्थायी परिसंपत्तियाँ	अन्य वसूली योग	योग
	फर्नीचर एवं उपस्कर	–	–	–	–	–
	लेखा परीक्षा शुल्क	3,99,604	–	–	–	3,99,604
	मुद्रण एवं लेखन सामग्री	6,48,487	–	–	–	6,48,487
	दूरभाष एवं डाक-व्यय	29,23,990	–	–	–	29,23,990
	अन्य आकस्मिक व्यय	15,49,782	–	–	–	15,49,782
	स्टॉफ कार अनुरक्षण	2,48,334	–	–	–	2,48,334
	किराया, परिकर एवं कर	1,40,04,950	–	–	–	1,40,04,950
		1,97,75,147			–	1,97,75,147
1.	पुस्तकालय और सूचना सेवा में सुधार	1,25,44,185	47,52,283	10,29,945	–	67,61,957
	(क) पुस्तकालयों का विकास (वाचन कक्षों के व्यय सहित)	72,32,735	34,32,418	10,29,945	–	27,70,392
	(ख) प्रलेखन एवं ग्रंथ सूची केन्द्र	53,11,450	13,19,865	–	–	39,91,565
	(ग) हू'ज़ हू ऑफ़ इंडियन राइटर्स	–	–	–	–	–
		–	–	–	–	–
2.	प्रकाशन योजनाएँ	3,27,49,014	42,96,890	60,371	–	2,83,91,753
	(क) प्रकाशन	2,58,60,720	19,66,244	–	–	2,38,94,476
	(ख) पत्रिकाएँ	52,89,887	23,30,646	60,371	–	28,98,870
	(ग) नेशनल बिब्लियोग्राफ़ी ऑफ़ इंडियन लिटरेचर (1954-00)	5,93,736	–	–	–	5,93,736
	(घ) ग्रंथावली	10,04,671	–	–	–	10,04,671
3.	पूर्व आयोजित योजना	7,50,529	–	–	–	7,50,529
4.	प्रशासनिक कार्यप्रणाली का आधुनिकीकरण एवं सुधार	2,27,46,323	78,21,493	72,18,470	1,21,114	75,85,246
	(क) कंप्यूटरीकरण	13,82,821	–	4,86,523	1,19,863	7,76,435
	(ख) कार्यालयों का सुधार एवं अनुरक्षण	2,13,63,502	78,21,493	67,31,947	1,251	68,08,811
5.	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम	3,45,87,077	–	–	4,70,918	3,41,16,159
	(क) शतवार्षिकी उत्सव, संगोष्ठियाँ एवं लेखकों की कार्यशालाएँ आदि	2,63,76,545	–	–	4,47,214	2,59,29,331
	(ख) साहित्य मंच, लेखक सम्मिलन, व्यक्ति और कृति तथा लेखक से भेंट कार्यक्रम	82,10,532	–	–	23,704	81,86,828
6.	लेखकों को सेवा एवं सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम आदि	3,00,87,578	–	–	2,40,710	2,98,46,868
	(क) लेखकों को यात्रा अनुदान	1,41,113	–	–	–	1,41,113
	(ख) साहित्यिक आदान-प्रदान	23,71,350	–	–	–	23,71,350
	(ग) लेखकों और महत्तर सदस्यों को वार्षिक पुरस्कार	1,62,49,597	–	–	2,02,388	1,60,47,209
	(घ) सदस्यों को यात्रा भत्ता	86,80,210	–	–	38,322	86,41,888
	(ङ) मनोरंजन एवं भेंट स्वरूप प्रदान की गई पुस्तकें	5,759	–	–	–	5,759
	(च) राज्य अकादेमियों एवं अन्य सांस्कृतिक संस्थाओं को सहायता	14,64,549	–	–	–	14,64,549
	(छ) लेखकों को चिकित्सा सहायता	–	–	–	–	–
	(ज) राइटर्स इन रेज़िडेंस	11,75,000	–	–	–	11,75,000
	योग अग्रसारित	15,32,39,852	1,68,70,666	83,08,786	8,32,742	12,72,27,658

क्र. सं.	विवरण	कुल व्यय	योजनागत वेतन	स्थायी परिसंपत्तियाँ	अन्य वसूली योग	योग
7.	साहित्य अकादेमी प्रकाशनों की बिक्री संवर्द्धन, विज्ञापन, प्रचार पुस्तक प्रदर्शनियाँ आदि	1,40,82,185	13,59,617	3,21,256	77,030	1,23,24,282
8.	अनुवाद योजनाएँ	1,99,59,400	64,44,560	–	4,444	1,35,10,396
	(क) अनुवाद केन्द्र	47,74,400	34,99,038	–	–	12,75,362
	(ख) अनुवाद पुरस्कार	58,06,862	11,50,034	–	4,444	46,52,384
	(ग) पुरस्कृत पुस्तकों के अनुवाद	66,70,484	17,95,488	–	–	48,74,996
	(घ) बाल साहित्य का अनुवाद	27,07,654	–	–	–	27,07,654
9.	क्षेत्रीय साहित्यिक आयोजन योजनाएँ	92,91,020	–	–	855	92,90,165
10.	भाषाओं का विकास	22,04,302	–	–	–	19,87,901
	(क) भाषा विकास बोर्ड	6,607	–	–	–	6,607
	(ख) भाषा सम्मान	9,85,766	–	–	5,401	9,80,365
	(ग) जनजातीय एवं वाचिक साहित्य परियोजना	12,11,929	–	–	2,11,000	10,00,929
11.	कुमार स्वामी महत्तर सदस्यता	2,59,515	–	–	–	2,59,515
12.	अन्य महत्तर सदस्यताएँ	6,65,696	–	–	–	6,65,696
13.	हिन्दी सप्ताह कार्यक्रम	5,01,724	–	–	–	5,01,724
14.	प्रेमचंद फेलोशिप	2,09,471	–	–	–	2,09,471
15.	बाल साहित्य पुरस्कार	45,48,193	–	–	33,450	45,14,743
16.	स्टाफ को गृह निर्माण अग्रिम	–	–	–	–	–
17.	युवा पुरस्कार	43,24,609	–	–	2,190	43,22,419
	नई योजनाएँ	2,05,98,237	–	–	–	2,39,02,602
	(i) भवन	–	–	–	–	–
	(ii) नेशनल बिब्लियोग्राफी ऑफ ट्रांसलेशन	5,70,452	–	–	–	5,70,452
	(iii) इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन पोएटिक्स	18,79,896	–	–	–	18,79,896
	(iv) ग्रेट बुक्स ऑफ इंडिया	–	–	–	–	–
	(v) सैम्संग-टैगोर साहित्य पुरस्कार	3,000	–	–	–	3,000
	(vi) ट्रांसलेशन ऑफ इंडियन क्लासिक्स इन टू यूरोपियन लैंग्वेजिज़	–	–	–	–	–
	(vii) एंथोलॉजी ऑफ इंडियन डिस्कोर्स ऑन ट्रांसलेशन ऑफ इंडिया	8,32,460	–	–	–	8,32,460
	(viii) रवीन्द्रनाथ ठाकुर	4,53,040	–	–	–	4,53,040
	(ix) राष्ट्रमंडल खेल	–	–	–	–	–
	(x) टैगोर स्मृति योजना	1,90,461	–	–	–	1,90,461
	(xi) विदेश में भारतीय साहित्य	4,66,199	–	–	–	4,66,199
	(xii) वैश्विक कविता उत्सव	1,10,80,569	–	–	1,66,289	1,09,14,280
	(xiii) इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (आई.ओ.आर.ए.)	51,16,160	–	–	1,23,256	49,92,904
	(xiiii) पेरू और क्यूबा में लघु उत्सव	36,00,000	–	–	–	36,00,000
	कुल योग	22,98,78,204	2,46,74,843	86,30,042	14,56,657	19,87,16,662
	घटा : स्थापना व्यय में स्थानांतरित		(2,46,74,843)			
	अनुसूची-24 के अनुरूप राशि				4,51,451	
	(vii) संयुक्त सेवाएँ	54,46,099	–	–	15,000	54,31,099
	(viii) पुस्तकालय को प्रतिभूति जमा राशि वापस	23,550	–	–	–	23,550
			–	86,30,042	19,23,108	

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

सामान्य भविष्य निधि का तुलन-पत्र : यथातिथि 31-03-2014

2012-2013	दायित्व	2013 – 2014		2012 – 2013	परिसम्पत्तियाँ	2013 – 2014	
	सा. भ. नि. खाता				निवेश (लागत पर)		
6,58,61,384	01-04-2013 को शेष	6,98,33,114			आवधिक जमा (निम्नलिखित बैंकों के साथ)		
	वर्ष के दौरान परिवर्धन :			27,13,243	केनरा बैंक, नई दिल्ली	–	
1,18,39,000	कर्मचारियों का सा. भ. नि. में अंशदान	1,19,13,450		2,50,00,000	कार्पोरेशन बैंक, नई दिल्ली	–	
51,74,569	ग्राहकों के खाते में ब्याज जमा	53,51,548		28,40,965	केनरा बैंक, नई दिल्ली–नई पेंशन योजना	42,55,010	
8,28,95,153		8,70,97,912			यूको बैंक, नई दिल्ली-एन.पी.एस.	37,91,000	
				31,42,912	कोर्पोरेशन बैंक, नई दिल्ली–नई पेंशन योजना	–	
				60,00,00	आईडीबीआई बैंक, फ्लेक्सी बॉण्ड	60,00,000	
				1,40,25,000	एनएचएआई–पब्लिक निर्गम बॉण्ड	1,40,25,000	
	वर्ष के दौरान कटौती :			–	यूको बैंक, नई दिल्ली	3,00,00,000	
82,82,000	अंतिम निकासी	99,88,000		5,37,24,120			5,80,71,010
8,83,940	अग्रिमों का अंतिम निकासी में परिवर्तन	9,26,580			निवेशों पर प्रोद्भूत ब्याज-सा.भ.नि.		
38,96,899	पूर्ण एवं अंतिम भुगतान	30,45,212		88,33,697	01-04-2013 को शेष	1,33,57,621	
–	समायोजन			54,71,656	जमा : 2013-2014 के दौरान प्रोद्भूत ब्याज	54,75,000	
1,30,62,839		1,39,51,822		9,47,732	घटा : परिपक्वता पर ब्याज	57,21,669	
6,98,33,114			7,31,46,090				1,31,10,952
	नई पेंशन योजना			1,33,57,621	निवेशों पर प्रोद्भूत ब्याज-एन.पी.एस.		
–	01-04-2013 को शेष			2,91,456	01-04-2013 को शेष	6,44,203	
19,72,205	कर्मचारियों का नई पेंशन योजना में अंशदान	28,08,734		45,69,06	जमा : 2013-2014 के दौरान प्रोद्भूत ब्याज	6,38,962	
19,72,205	अकादेमी का नई पेंशन योजना में अंशदान	28,08,734		1,04,159	घटा : वर्ष के दौरान परिपक्वता पर ब्याज	10,25,322	
2,84,428	एन.पी.एस. आवधिक पर प्राप्त ब्याज	3,88,587		6,44,203	ग्राहकों को अग्रिम		2,57,843
42,28,834		59,98,055		64,28,013	01-04-2013 को शेष	73,30,833	
	वर्ष के दौरान परिवर्धन :			50,80,600	जमा : वर्ष के दौरान स्वीकृत	33,25,000	
8,28,331	कर्मचारियों का नई पेंशन योजना में अंशदान	10,36,532		42,77,790	घटा : वर्ष के दौरान वसूल की गई राशि	45,74,050	
8,28,331	अकादेमी का नई पेंशन योजना में अंशदान	10,36,532					61,81,773
1,04,159	एन.पी.एस. आवधिक पर प्राप्त ब्याज	6,38,962					
17,61,221		27,32,026	87,42,081	72,30,823			
	ब्याज (अविनियोजित) खाता						
5,92,870	01-04-2013 को शेष	12,41,873			अन्य अग्रिम		
48,76,671	जमा : निवेश पर प्रोद्भूत ब्याज	54,75,000		–	वसूली योग्य राशि–साहित्य अकादेमी	58,690	
9,02,744	जमा : निवेश पर अर्जित ब्याज	–		58,690	जमा : टैक्स कटौती	45,526	
44,988	जमा : एसबी खातों पर प्राप्त ब्याज	1,32,455		–	घटा : प्राप्त राशि	–	
64,17,273				–	घटा : कमिशन के अनुरूप समायोजन	–	1,04,216
		68,29,328	–	58,690			
51,74,569	घटा : सा.भ.नि. के ग्राहकों के खाते में ब्याज जमा	53,51,548	14,77,316		बैंक शेष		
831	घटा : बैंक शुल्क	664		74,258	एस.बी. खाता सं. 01100/401527, एसबीआई, नई दिल्ली	82,805	
–	घटा : टैक्स कटौती	–	51,977	20,27,309	एस.बी. खाता सं. 3064, केनरा बैंक, नई दिल्ली	58,08,867	58,91,672
12,41,873		53,52,212					
51,977	सा.भ. नि. के स्थायी शेष			21,01,562			
7,71,17,019	योग		8,34,17,464	7,71,17,019	योग		8,34,17,464

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति और भुगतान लेखा : यथातिथि 01-04-2013 से 31-03-2014

2012-2013	प्राप्तियां	2013-2014		2012-2013	भुगतान	2013-2014	
	cSa 'kSk				lk- Hk- fu- [kkrk		
10,16,755	केनरा बैंक	20,27,309		82,82,000	अंतिम निकासी	99,88,000	
74,253	एस.बी.आई.	74,253	21,01,562	40,76,569	पूर्ण और अंतिम भुगतान	30,43,242	1,30,31,242
10,91,008				1,23,58,569			
	सा.भ.नि. खाता				ग्राहकों को अग्रिम		
1,18,59,000	कर्मचारियों का अंशदान	1,19,13,450			वर्ष के दौरान ग्राहकों को		
33,93,850	सा.भ.नि. से अग्रिमों का भुगतान	33,53,470		50,80,600	दी गई अग्रिम राशि		
–	आवधिक जमा पर ब्याज	–	1,52,66,920		बेदावेदार सा.भ.नि. शेष		32,25,000
1,52,52,850							
	नई पेंशन योजना				निवेश		
8,28,531	अकादेमी का योगदान	10,56,532		27,15,243	वर्ष के दौरान सा.भ.नि.		
8,28,531	कर्मचारियों का योगदान	10,56,532			खाते में किए गए निवेश	3,00,00,000	
1,04,159	आवधिक जमा पर ब्याज	10,25,322	31,38,386	29,99,775	नई पेंशन योजना	1,02,91,756	4,02,91,756
17,61,221				57,15,018			
	प्राप्त ब्याज						
4,82,744	सा. भ. नि. के निवेश पर ब्याज	53,01,669			साहित्य अकादेमी से		
44,988	बैंक बचत खातों पर ब्याज.	1,12,455			वसूली योग्य राशि		
4,20,000	आई.डी.बी.आई. फ्लेक्सी बॉण्ड	4,20,000	58,34,124				
9,47,732	निवेश			831	जमा : बैंक शुल्क	–	
50,00,000	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–सा.भ.नि.	2,77,15,243			जमा : सा.भ.नि. के अग्रिम	664	
12,62,459	वर्ष के दौरान निकाली गई	82,29,623	3,59,44,866	–	भुगतान पर प्राप्त ब्याज	–	
62,62,459	निवेश राशि–एन.पी.एस.			–	जमा : समायोजन	–	
				38,690	जमा : टैक्स कटौती	45,526	46,190
				39,521	बैंक अंत शेष		
–	साहित्य अकादेमी			20,27,309	केनरा बैंक	56,09,667	
				74,253	एस.बी.आई.	82,003	56,91,670
				21,01,562			
2,53,15,270	योग		6,22,85,858	2,53,15,270	योग		6,22,85,858

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

सामान्य भविष्य निधि खाता वर्ष 2013-2014 में निवेश और प्रोद्भूत ब्याज की अनुसूची

विवरण	क्रय तिथि	परिपक्वता तिथि	निवेश राशि	ब्याज की दर (%)	निवेश: शेष 1.4.2013 को	निवेश: 2013-14 में बढ़ोतरी	निवेश: 2013-14 में परिपक्वता	निवेश: शेष 31.3.2014 को	ब्याज: 31.3.13 तक प्रोद्भूत	ब्याज: 2013-14 तक प्रोद्भूत	ब्याज: कुल योग 31.3.2014 तक	ब्याज: 2013-14 में परिपक्वता पर प्राप्त	ब्याज: 31.3.14 को प्रोद्भूत	निवेश का कुल मूल्य
नई पेंशन योजना केनरा बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा :														
के.डी.आर. नं. 3117401001000	29/05/2012	1/06/2013	1,15,898	9.05	1,15,898	–	1,15,898	–	11,883	5	11,888	11,888	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100331	31/05/2012	31/05/2013	1,27,296	9.00	1,27,296	–	1,27,296	–	7,789	5,124	12,913	12,913	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100457	31/08/2012	1/10/2013	1,32,654	9.00	1,32,654	–	1,32,654	–	7,078	6,378	13,456	13,456	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100457	26/08/2012	31/10/2013	1,20,972	8.50	1,20,972	–	1,20,972	–	5,679	6,813	12,492	12,492	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100288	19/10/2012	28/11/2013	18,284	8.50	18,284	–	18,284	–	625	969	1,594	1,594	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100902	31/10/2012	01/12/2013	1,32,802	8.50	1,32,802	–	1,32,802	–	4,715	7,893	12,608	12,608	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100331	28/11/2012	28/12/2013	1,38,002	8.50	1,38,002	–	1,38,002	–	3,991	9,253	13,244	13,244	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100331	31/12/2012	31/01/2014	1,47,566	8.50	1,47,566	–	1,47,566	–	5,136	10,972	16,108	16,108	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100845	29/03/2013	31/03/2014	1,36,554	9.05	1,36,554	–	1,36,554		185	12,773	12,958	12,958	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100331	01/06/2012	4/10/2013	1,67,767	9.00	1,67,767	–	1,67,767	–	8,851	8,358	17,209	17,199	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100354	01/11/2012	31/12/2013	1,18,654	8.50	1,18,654	–	1,18,654	–	4,248	7,996	12,244	12,244	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100902	01/12/2012	29/01/2014	1,22,454	8.50	1,22,454	–	1,22,454	–	3,488	9,087	12,575	12,575	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100845	01/12/2012	08/01/2014	17,867	8.50	17,867	–	17,867	–	589	1,294	1,883	1,883	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100786	01/01/2013	25/03/2014	1,28,547	8.50	1,28,547	–	1,28,547	–	2,717	10,236	12,953	12,953	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100299	01/01/2013	05/03/2014	1,30,848	8.50	1,30,848	–	1,30,848	–	2,781	9,763	12,544	12,544	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100380	01/03/2013	03/3/2014	1,30,551	9.05	1,30,551	–	1,30,551	–	1,966	11,287	13,253	13,553	–	–
के.डी.आर. नं. 3117401001462	05/03/2013	05/03/2014	1,25,225	9.05	1,25,225	–	1,25,225	–	941	11,869	12,810	12,810	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100354	01/03/2013	01/03/2014	1,42,647	9.05	1,42,647	–	1,42,647	–	1,870	11,309	13,179	13,179	–	–
के.डी.आर. नं. 3117401000100	16/03/2013	18/05/2013	1,37,736	7.50	1,37,736	–	1,37,736	–	179	1,359	1,538	1,538	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100685	26/03/2013	25/04/2013	1,36,154	7.50	1,36,247	–	1,36,247	–	181	237	418	418	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100459	28/04/2012	06/01/2013	1,29,574	9.00	1,29,574	–	1,29,574	–	10,015	5,369	15,384	15,384	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100458	31/05/2012	07/01/2013	1,47,536	9.25	1,47,536	–	1,47,536	–	12,931	2,485	15,416	15,416	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100331	29/06/2012	06/01/2013	1,29,122	9.00	1,29,122	–	1,29,122	–	8,982	4,385	13,367	13,367	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100331	01/06/2013	26/05/2014	1,40,948	7.00	–	1,40,948	1,40,948	–	–	6,460	6,460	6,460	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100458	15/07/2013	26/05/2014	1,42,100	7.00	–	1,42,100	1,42,100	–	–	6,738	6,738	6,738	–	–
के.डी.आर. नं. 311740100459	25/07/2013	26/05/2014	1,82,656	7.00	–	1,82,656	1,82,656	–	–	7,302	7,302	7,302	–	–

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

सामान्य भविष्य निधि खाता वर्ष 2013-2014 में निवेश और प्रोद्भूत ब्याज की अनुसूची

विवरण	क्रय तिथि	परिपक्वता तिथि	निवेश राशि	ब्याज की दर (%)	निवेश				ब्याज					
					शेष 1.4.2013 को	2013-14 में बढ़ोत्तरी	2013-14 में परिपक्वता	शेष 31.3.2014 को	31.3.13 तक प्रोद्भूत	2013-14 तक प्रोद्भूत	कुल योग 31.3.2014 तक	2013-14 में परिपक्वता पर प्राप्त	31.3.14 को प्रोद्भूत	निवेश का कुल मूल्य
के.डी.आर. नं. 31170100160	30/04/2013	30/05/2014	1,43,684	8.50	–	1,43,684	1,42,684	–	–	11,279	11,279	–	11,279	11,279
के.डी.आर. नं. 31170100160	30/04/2013	30/05/2014	19,002	8.50	–	19,002	19,002	–	–	1,518	1,518	–	1,518	1,518
के.डी.आर. नं. 31170100157	31/05/2013	16/05/2014	1,43,684	8.50	–	1,43,684	1,42,684	–	–	10,175	10,175	–	10,175	10,175
के.डी.आर. नं. 31170100331	26/06/2013	26/05/2014	1,45,802	8.50	–	1,45,802	1,45,802	–	–	9,093	9,093	–	9,093	9,093
के.डी.आर. नं. 31170100161	31/07/2013	26/05/2014	1,50,802	7.00	–	1,50,802	1,50,802	–	–	7,257	7,257	–	7,257	7,257
के.डी.आर. नं. 31170100331	30/08/2013	26/05/2014	1,39,102	7.00	–	1,39,102	1,39,102	–	–	6,438	6,438	–	6,438	6,438
के.डी.आर. नं. 31170100455	30/09/2013	26/05/2014	1,64,266	7.40	–	1,64,266	1,64,266	–	–	5,942	5,942	–	5,942	5,942
के.डी.आर. नं. 31170100455	05/10/2013	26/05/2014	26,330	7.30	–	26,330	26,330	–	–	930	930	–	930	930
के.डी.आर. नं. 31170100017	31/10/2013	26/05/2014	1,75,602	7.30	–	1,75,602	1,75,602	–	–	5,199	5,199	–	5,199	5,199
के.डी.आर. नं. 31170100017	29/11/2013	26/05/2014	1,69,302	7.50	–	1,69,302	1,69,302	–	–	4,148	4,148	–	4,148	4,148
के.डी.आर. नं. 31170100308	31/12/2013	26/05/2014	1,69,848	7.50	–	1,69,848	1,69,848	–	–	3,036	3,036	–	3,036	3,036
के.डी.आर. नं. 31170100308	31/01/2014	26/05/2014	1,69,302	7.50	–	1,69,302	1,69,302	–	–	1,548	1,548	–	1,548	1,548
के.डी.आर. नं. 31170100097	26/03/2014	26/05/2014	1,60,134	4.50	–	1,60,134	1,60,134	–	–	553	553	–	553	553
के.डी.आर. नं. 31170100160	30/03/2014	01/05/2015	1,51,935	8.25	–	1,51,935	–	1,51,935	–	69	69	–	69	1,52,004
के.डी.आर. नं. 31170100160	30/03/2014	01/05/2015	18,934	8.25	–	38,398	–	38,398	–	9	9	–	9	38,407
के.डी.आर. नं. 31170100157	26/03/2014	15/01/2015	1,51,851	8.25	–	1,51,851	–	1,51,851	–	157	157	–	157	1,54,588
के.डी.आर. नं. 31170100331	26/03/2014	26/12/2014	1,54,346	6.25	–	1,54,346	–	1,54,346	–	140	140	–	140	1,54,486
के.डी.आर. नं. 31170100161	26/03/2014	25/11/2014	1,02,405	7.40	–	1,61,405	–	1,61,405	–	132	132	–	132	1,02,537
के.डी.आर. नं. 31170100331	26/03/2014	26/10/2014	1,64,896	7.40	–	1,64,896	–	1,64,896	–	134	134	–	134	1,65,030
के.डी.आर. नं. 31170100455	26/03/2014	25/09/2014	1,69,636	7.40	–	1,69,636	–	1,69,636	–	138	138	–	138	1,69,774
के.डी.आर. नं. 31170100455	26/03/2014	05/09/2014	37,364	7.50	–	37,364	–	37,364	–	32	32	–	32	37,396
के.डी.आर. नं. 31170100017	26/03/2014	25/08/2014	1,80,331	7.50	–	1,80,331	–	1,80,331	–	148	148	–	148	1,80,479
के.डी.आर. नं. 31170100017	26/03/2014	25/07/2014	1,73,038	7.50	–	1,73,038	–	1,73,038	–	142	142	–	142	1,73,178
के.डी.आर. नं. 31170100308	26/03/2014	25/06/2014	1,72,580	7.50	–	1,72,580	–	1,72,580	–	145	145	–	145	1,72,725
के.डी.आर. नं. 31170100308	26/03/2014	25/06/2014	1,71,065	7.50	–	1,71,065	–	1,71,065	–	141	141	–	141	1,71,206
के.डी.आर. नं. 31170100234	31/12/2013	02/05/2015	1,29,308	9.05	–	1,29,308	–	1,29,308	–	2,932	2,932	–	2,532	1,32,840
के.डी.आर. नं. 31170100234	01/03/2014	01/01/2015	1,53,602	8.25	–	1,53,602	–	1,53,602	–	2,048	2,048	–	2,048	1,55,650
के.डी.आर. नं. 31170100202	01/12/2013	01/01/2015	1,44,204	9.05	–	1,44,204	–	1,44,204	–	4,326	4,326	–	4,326	1,48,530
के.डी.आर. नं. 31170100203	29/01/2014	16/05/2015	1,33,749	9.05	–	1,33,749	–	1,33,749	–	2,056	2,056	–	2,056	1,35,805

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

सामान्य भविष्य निधि खाता वर्ष 2013-2014 में निवेश और प्रोद्भूत ब्याज की अनुसूची

विवरण	क्रय तिथि	परिपक्वता तिथि	निवेश राशि	ब्याज की दर (%)	निवेश: शेष 1.4.2013 को	निवेश: 2013-14 में बढ़ोतरी	निवेश: 2013-14 में परिपक्वता	निवेश: शेष 31.3.2014 को	ब्याज: 31.3.13 तक प्रोद्भूत	ब्याज: 2013-14 तक प्रोद्भूत	ब्याज: कुल योग 31.3.2014 तक	ब्याज: 2013-14 में परिपक्वता पर प्राप्त	ब्याज: 31.3.14 को प्रोद्भूत	निवेश का कुल मूल्य
के.डी.आर. सं. [illegible]	22/01/2014	15/05/2013	13,487	9.05	–	1,89,848	–	1,89,848	–	333	333	–	333	13,820
के.डी.आर. सं. [illegible]	05/06/2013	05/04/2015	1,47,945	9.05	–	1,47,945	–	1,47,945	–	37	37	–	37	1,47,588
के.डी.आर. सं. [illegible]	02/10/2013	02/10/2014	1,38,883	8.75	–	1,38,883	–	1,38,883	–	7,081	7,082	–	7,695	1,45,595
के.डी.आर. सं. [illegible]	02/10/2013	05/12/2014	1,41,189	8.75	–	1,41,189	–	1,41,189	–	5,145	5,145	–	5,145	1,46,334
के.डी.आर. सं. [illegible]	02/10/2013	02/11/2014	1,44,736	8.75	–	1,44,736	–	1,44,736	–	6,015	6,015	–	6,015	1,50,651
के.डी.आर. सं. [illegible]	04/10/2013	07/11/2014	1,83,139	8.75	–	1,83,139	–	1,83,139	–	7,858	7,858	–	7,858	1,90,996
के.डी.आर. सं. [illegible]	30/12/2013	30/01/2015	1,30,798	9.05	–	1,30,798	–	1,30,798	–	3,440	3,440	–	3,440	1,34,238
के.डी.आर. सं. [illegible]	02/01/2014	02/05/2015	1,00,241	9.05	–	1,00,241	–	1,00,241	–	2,384	2,384	–	2,384	1,02,625
के.डी.आर. सं. [illegible]	16/05/2014	18/11/2014	1,46,763	7.40	–	1,46,762	–	1,46,762	–	179	179	–	179	1,46,941
के.डी.आर. सं. [illegible]	30/11/2013	11/01/2015	17,635	9.05	–	17,635	–	17,635	–	533	533	–	533	18,168
के.डी.आर. सं. [illegible]	26/05/2014	26/11/2014	1,48,164	7.40	–	1,48,164	–	1,48,164	–	180	180	–	180	1,48,344
के.डी.आर. सं. [illegible]	28/05/2014	28/11/2014	1,68,068	7.40	–	1,68,068	–	1,68,068	–	206	206	–	206	1,68,274
के.डी.आर. सं. [illegible]	06/05/2014	06/04/2015	1,41,274	9.05	–	1,41,274	–	1,41,274	–	1,623	1,623	–	1,623	1,42,897
के.डी.आर. सं. [illegible]	05/05/2014	05/05/2015	1,42,118	9.05	–	1,42,118	–	1,42,118	–	2,044	2,044	–	2,044	1,44,162
के.डी.आर. सं. [illegible]	15/05/2014	15/04/2015	1,39,986	9.05	–	1,39,986	–	1,39,986	–	1,319	1,319	–	1,319	1,41,305
योग			94,39,864		25,40,965	65,80,756	58,86,711	42,55,010	1,83,907	2,92,270	3,96,183	2,77,380	1,18,803	43,73,833
नई पेंशन योजना, कॉर्पोरेशन बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा														
टी.डी.आर. 01/11130	23/03/2011	23/03/2013	34,42,912	9.50	34,42,911	–	34,42,912	–	4,60,295	1,08,235	6,48,430	6,48,430	–	–
			–		–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
योग-I			1,25,82,776		59,83,877	65,80,756	82,29,623	42,55,010	6,44,202	4,00,411	10,44,613	9,25,810	1,18,803	43,73,813
नई पेंशन योजना, यूको बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा														
एफ.डी.आर. 01/11596	28/03/2013	15/10/2014	37,91,000	9.15	–	37,91,000	–	37,91,000	–	2,38,551	2,38,551	–	2,38,551	40,29,551
योग-II			1,63,73,776		59,83,877	1,02,91,756	82,29,623	80,46,010	6,44,202	6,38,962	12,83,164	9,25,810	3,57,354	84,03,364

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

सामान्य भविष्य निधि खाता वर्ष 2013-2014 में निवेश और प्रोद्भूत ब्याज की अनुसूची

					निवेश				ब्याज					
विवरण	क्रय तिथि	परिपक्वता तिथि	निवेश राशि	ब्याज की दर (%)	शेष 1.4.2013 को	2013-14 में बढ़ोतरी	2013-14 में परिपक्वता	शेष 31.3.2014 को	31.3.13 तक प्रोद्भूत	2013-14 तक प्रोद्भूत	कुल योग 31.3.2014 तक	2013-14 में परिपक्वता पर प्राप्त	31.3.14 को प्रोद्भूत	निवेश का कुल मूल्य
सा.भ.नि. की राशि यूको बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा :														
एफ.डी.आर. नं [illegible]	25/03/2013	15/10/2014	1,00,00,000	9.15	–	1,00,00,000	–	1,00,00,000	–	6,39,751	6,39,751	–	6,39,751	1,06,39,751
एफ.डी.आर. नं [illegible]	26/03/2013	15/10/2014	1,00,00,000	9.15	–	1,00,00,000	–	1,00,00,000	–	6,37,127	6,37,127	–	6,37,127	1,06,37,127
एफ.डी.आर. नं [illegible]	27/03/2013	15/10/2014	1,00,00,000	9.15	–	1,00,00,000	–	1,00,00,000	–	6,34,503	6,34,503	–	6,34,503	1,06,34,503
कुल योग			3,00,00,000		–	3,00,00,000	–	3,00,00,000	–	19,11,381	19,11,381	–	19,11,381	3,19,11,381
सा.भ.नि. की राशि केनरा बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा :														
के.डी.आर.नं [illegible]	08/03/2013	08/3/2014	27,15,243	9.05	27,15,243	–	27,15,243	–	35,494	49,414	84,908	84,908	–	–
योग-II			27,15,243		27,15,243		27,15,243		35,494	49,414	84,908	84,908	–	–
सा.भ.नि.की राशि कॉर्पोरेशन बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा :														
के.डी.सी.सी नं 01/111592	22/07/2011	21/07/2013	2,50,00,000	9.60	2,50,00,000		– 2,50,00,000	–	43,46,125	8,70,636	52,16,761	52,16,761	–	–
योग-III			2,77,15,243		2,77,15,243		–2,77,15,243		43,81,619	9,20,050	53,01,669	53,01,669	–	–
आई.डी.बी.आई., नई दिल्ली में आवधिक जमा :														
आई.डी.बी.आई. फ्लेक्सी बॉण्ड	17/12/2003	16/12/2018	60,00,000	7.00	60,00,000	–	–	60,00,000	1,20,822	4,20,000	5,40,822	4,20,000	1,20,822	61,20,822
योग-IV			60,00,000		60,00,000	–	–	60,00,000	1,20,822	4,20,000	5,40,822	4,20,000	1,20,822	61,20,822
एन.ए.बी.ए.आर.डी., नई दिल्ली में आवधिक जमा														
भविष्य निर्माण बॉण्ड	01/01/2008	31/12/2017	1,40,25,000	9.26	1,40,25,000	–	–	1,40,25,000	86,54,233	21,74,155	1,08,28,388	–	1,08,28,388	2,48,53,388
योग-IV			1,40,25,000	9.26	1,40,25,000	–	–	1,40,25,000	86,54,233	21,74,155	1,08,28,388	–	1,08,28,388	2,48,53,388
कुल योग (I+II+III+IV+V+VI)			9,08,29,262	–	5,64,39,363	4,02,91,756	3,86,60,109	5,80,71,010	1,38,96,370	61,13,962	1,99,50,332	67,32,387	1,32,17,945	7,12,88,955
01-04-2012 को आदि शेष			5,64,39,363											
वर्ष के दौरान जमा			4,02,91,756											
योग			9,67,31,119											
वर्ष के दौरान परिपक्व			3,86,60,109											
31-03-2013 को अंत शेष			5,80,71,010											

31-03-2014 को समाप्त वर्ष के लिए
वित्तीय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची-25—महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ

1. लेखा परिपाटी

वित्तीय विवरण ऐतिहासिक मूल्य परिपाटी तथा लेखा की प्रोद्भवन पद्धति के आधार पर तैयार किए गए हैं।

2. वस्तुसूची मूल्यांकन

(2.1) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनके मुद्रित मूल्य की 40 प्रतिशत राशि पर किया गया है।

(2.2) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनकी न्यूनतम लागत तथा कुल विश्वसनीय मूल्य पर किया गया है। लागत उनके तौल के औसत मूल्य या लागत पर आधारित है।

3. स्थायी परिसंपत्तियाँ

(3.1) स्थायी परिसंपत्तियाँ अर्जन की लागत पर आधारित हैं, जिसमें आवक भाड़ा, कर और परिकर तथा अर्जन से संबंधित आनुषंगिक एवं प्रत्यक्ष व्यय भी सम्मिलित हैं। निर्माण से संबंधित परियोजनाओं के सन्दर्भ में, पूर्व प्रचालन व्यय (जिनमें परियोजनाओं के पूर्ण होने पर दिए गए ऋणों पर ब्याज शामिल है), पूँजी परिसंपत्तियों के मूल्य का भाग हैं।

(3.2) गैर-अनुवीक्षण अनुदानों (संग्रह निधि के अलावा) द्वारा प्राप्त स्थायी परिसंपत्तियों की पूँजी का मूल्य निर्धारण तदनुरूप जमा आरक्षित पूँजी पर आधारित है।

4. मूल्यह्रास

(4.1) मूल्यह्रास को आयकर के 1961 के अधिनियम में विनिर्दिष्ट लिखित मूल्यों/दरों के अनुरूप किया गया है, इसमें पुस्तकालय की पुस्तकों पर छूट है, जिन पर मूल्यह्रास की दर 10 प्रतिशत है।

(4.2) वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों की बढ़ोतरी के सन्दर्भ में, मूल्यह्रास को परिसंपत्तियों की ब्लॉक पद्धति के आधार पर विचार गया।

(4.3) वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों की कटौतियों के सन्दर्भ में, मूल्यह्रास को दर्शाए जाने की आवश्यता नहीं।

5. विविध व्यय

आस्थगित राजस्व व्यय गत 5 वर्षों के प्रारम्भ से नहीं लिखा गया।

6. बिक्री के लिए लेखा

बिक्री में उत्पाद शुल्क और बिक्री का कुल लाभ, रियायत तथा व्यापार छूट शामिल हैं।

7. सरकारी अनुदान/इमदाद

(7.1) वह सरकारी अनुदान जो कि संगठन की प्रवृत्ति (या प्रकृति) के हैं, जिन पर पूँजी लागत द्वारा परियोजनाओं को चलाया जाता है उन्हें पूँजी राजस्व माना गया है।

(7.2) विशिष्ट स्थायी परिसंपत्तियों पर दिए गए अनुदान के सन्दर्भ में, उन्हें उनसे संबंधित परिसंपत्तियों में लागत पर कटौती में दर्शाया गया है।

(7.3) सरकारी अनुदानों/इमदादों को लेखा उगाही के आधार पर किया गया है।

8. विदेशी मुद्रा संचालन

(8.1) विदेशी मुद्रा में किया गया संव्यवहार, जिस तिथि लेन-देन किया गया है, उस तिथि की विनिमय दर पर तय किया गया है।

(8.2) चालू परिसंपत्तियों, विदेशी मुद्रा ऋण तथा चालू दायित्वों को वर्ष के अंत तक चलनेवाली विनिमय दरों में परिवर्तित किया गया है तथा यदि विदेशी मुद्रा दायित्व स्थायी परिसंपत्तियों से संबंधित हैं तो उन्हें प्राप्त लाभ/हानि में स्थायी परिसंपत्तियों की लागत में समायोजित किया गया है और अन्य मामलों में उन्हें राजस्व माना गया है।

9. पट्टा

पट्टों के किराए पट्टों की शर्तों के आधार पर खर्च किए गए हैं।

10. सेवा-निवृत्ति लाभ

(10.1) किसी कर्मचारी की मृत्यु/सेवा-निवृत्ति में दिए जानेवाले उपदान का दायित्व प्रोद्भूत है, उसके बीमांकित मूल्यांकन पर आधारित है।

(10.2) कर्मचारी को संचित अवकाश का भुगतान प्रोद्भूत है तथा इस बात को भी सुनिश्चित किया गया है कि संबंधित कर्मचारी (जो लाभ के अधिकारी/हकदार हैं) को मिलनेवाले लाभ प्रत्येक वर्ष के अंत में मिले।

अनुसूची-26—प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ

1. प्रासंगिक दायित्व

(1.1) संगठन (अथवा व्यक्ति) के विरुद्ध किए गए दावों को ऋणों की पावती के रूप में नहीं दर्शाया गया है—रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.2) निम्नांकित विवादास्पद माँगें :

आयकर—रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

बिक्रीकर—रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

नगरपालिका कर—रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.3) संगठन द्वारा पार्टियों को दिए गए आदेशों का अनुपालन न किए जाने के विरुद्ध दावे—रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)।

2. पूँजीगत प्रतिबद्धताएँ

पूँजी लेखा में अनुबंधों के अनुमानित मूल्य को लागू नहीं किया है तथा अग्रिमों की कुल शून्य रुपए की राशि (गत वर्ष रु. शून्य) भी उपलब्ध नहीं कराई गई है।

3. पट्टा दायित्व

भविष्य में प्लॉट और यंत्रों की वित्तीय पट्टे पर की जानेवाली देख-रेख पर व्यय की जानेवाली राशि—रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य) उपलब्ध नहीं कराई गई है।

4. 31.3.2014 को अक्षय निधि/उद्दिष्ट पूँजियों के निवेश का समाधान निम्न प्रकार किया गया :

निधि का नाम	*अनुसूची सं.*	*राशि*	*परिसंपत्ति का नाम*	*अनुसूची सं.*	*राशि*
संग्रह निधि	1	10,642,375	बैंक शेष (जमा खाता)	11ए	10,00,000
योग		10,642,375	प्रदोभूत ब्याज	11बी	642,375
			योग		10,642,375
स्थायी परिसम्पत्ति निधि	3	102,297,520	स्थायी परिसम्पत्तियाँ	8	102,297,520
योग		102,297,520	योग		102,297,520
प्रकाशन निधि	3	84,152,673	स्टॉक की स्थिति	11 ए	84,152,673
योग		84,152,673	योग		84,152,673
सा.भ.नि./एन.पी.एस.	3	88,716,835	आवधिक जमा	9	58,071,010
		—	बैंक शेष	11 ए	5,691,670
		—	सा.भ.नि. अग्रिम	11 बी	6,181,773
		—	साहित्य अकादेमी बेदावा शेष	7	(51,977)
			से वसूली योग राशि	11 बी	13,368,796
		—	प्रोद्भूत ब्याज	11 बी	104,216
योग		83,365,487	योग		83,365,487
कुल योग		285,809,403	कुल योग		285,809,403

5. चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण और अग्रिम

संगठन का मानना है कि सामान्य व्यापार के सन्दर्भ में चालू परिसंपत्तियों, ऋणों और अग्रिमों से उतना ही उगाही योग्य पैसा है, जितना कि तुलन-पत्र के कुल योग में दर्शाया गया है।

6. मूल्यह्रास

फ्लैटों के स्वामित्व के संदर्भ में वर्ष के दौरान भवनों पर मूल्यह्रास प्रभारित नहीं किया गया है, चूंकि अकादेमी प्रमाणिक मूल्यांकक से भूमि तथा भवन का मूल्यांकन प्राप्त करने की प्रक्रिया में अग्रसित है। मूल्यह्रास द्विभाजन अथवा मूल्यांकन के पश्चात ही दर्शाया जा सकता है।

7. सेवानिवृत्ति लाभ

सेवानिवृत्ति के लाभों के प्रति दायित्व यथा- मृत्यु/सेवानिवृत्ति पर दिए जानेवाले उपदान तथा कर्मचारी को संचित अवकाश के भुगतान के मिलने वाले लाभ, ग़ैर योजनागत शीर्ष के अंतर्गत आवर्ती अनुदान के संदर्भ में देना आवश्यक नहीं है, जिसमें सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी को देय राशि तथा सेवानिवृत्त कर्मचारियों को मिलने वाली अनुदान अवधि शामिल है।

8. कराधान

1961 के आयकर अधिनियम के अंतर्गत तीन कर योग्य राशि नहीं है, इसलिए आयकर का प्रावधान आवश्यक नहीं है।

9. विदेशी मुद्रा संव्यवहार

(9.1)	आयात के मूल्य की सी.आई.एफ. के आधार पर गणना :	शून्य
	तैयार सामान, कच्चा माल एवं अवयव (पारगमन सहित)	
	तथा पूँजीगत सामान की ख़रीद	
	भंडार, अतिरिक्त और उपभोज्य	
(9.2)	विदेशी मुद्रा में व्यय :	
(क)	कनाडा, चीन, फ्रैंकफर्ट तथा नेपाल पुस्तक मेला तथा अन्य साहित्यिक कार्यक्रम–योजनागत	
	योजना के अंतर्गत	रु. 18,12,649/-
(ख)	वित्तीय संस्थाओं/बैंकों को विदेशी मुद्रा में भेजी गई रकम और ब्याज भुगतान	शून्य
(ग)	अन्य व्यय	शून्य
	बिक्री पर कमीशन	शून्य
	कानूनी तथा व्यावसायिक व्यय	शून्य
	विविध व्यय	
(9.3)	अर्जन :	
	एफ.ओ.बी. के आधार पर निर्यात मूल्य	शून्य
(9.4)	लेखापरीक्षकों को पारिश्रमिक	5,00,000/-

10. अकादेमी ने निम्नलिखित अनुदान राशि प्राप्त की तथा उसका उपयोग विभिन्न स्थायी परिसंपत्तियों जैसे फर्नीचर एवं जुड़नार, कार्यालय उपस्कर, कंप्यूटर तथा पुस्तकालय की पुस्तकों की खरीद पर खर्च किए :–

गत वर्ष अनुदान	:	रु. 69,52,128/-
अनुदान प्राप्त (योजनागत)	:	रु. 75,00,000/-
अनुदान प्राप्त (ग़ैर योजनागत)	:	रु. 7,50,000/-
वर्ष के दौरान उपयोग किया गया अनुदान	:	रु. 86,30,042/-

11. वर्ष 2013-2014 में संग्रह निधि के ब्याज के रूप में 9,90,629/- रुपए प्राप्त। एक करोड़ रुपए की संग्रह निधि की राशि को नई दिल्ली स्थित यूको बैंक में आवधिक जमा किया गया है।

12. गत वर्ष के तदनुरूप आँकड़ों को जहाँ भी आवश्यक हो पुनर्वर्गीकृत/पुनर्व्यवस्थित किया गया है।

13. अनुसूची 1 से 26 जिसमें, प्राप्ति और भुगतान, सा.भ.नि., तुलन पत्र, सा.भ.नि. प्राप्ति और भुगतान, 31.03.2014 को समाप्त वर्ष के तुलन-पत्र के संलग्नक एवं अभिन्न अंग हैं तथा आय और व्यय लेखा भी इसी तिथि को समाप्त वर्ष का संलग्नक एवं अभिन्न अंग है।

	ह/-	ह/-	ह/-	ह/-
दिनांक : 11.06.2014	राजेश कुमार गुप्ता	बालूराजन एस.	रेणु मोहन भान	के. श्रीनिवासराव
स्थान : नई दिल्ली	(प्रवर लेखापाल)	(उपसचिव) (लेखा)	(उपसचिव) (प्रशा.)	(सचिव)

II cover

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110001
फ़ोन : 23386626/27/28
फ़ैक्स : 091-11-23382428
ई-मेल : secy@ndb.vsnl.net.in
वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

विक्रय विभाग
'स्वाति'
मंदिर मार्ग, नई दिल्ली 110001
फ़ोन : 23745297, 23364207,
फ़ैक्स : 091-11-23364207
ई-मेल : sahityakademisale@yahoo.com

क्षेत्रीय कार्यालय

172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग
दादर, मुंबई 400014
फ़ोन : 022-24135744, 24131948
फ़ैक्स : 091-022-24147650
ई-मेल : sahityaakademimumbai@gmail.com

4, डी.एल. ख़ान रोड,
(एस.एस.के.एम. अस्पताल के निकट)
कोलकाता 700025
फ़ोन : 033-24191683
फ़ैक्स : 091-033-24191684
ई-मेल : saekolkata@gmail.com

सेंट्रल कॉलेज परिसर,
डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी,
बेंगळूरु 560001
फ़ोन : 080-22245152
फ़ैक्स : 091-080-22121932
ई-मेल : sa.bengaluru@gmail.com

चेन्नई कार्यालय

मेन गुना बिल्डिंग परिसर
(द्वितीय तल), 443 (304), अन्नासालइ,
तैनामपेट, चेन्नई 600018
फ़ोन : 091-044-24311741, 24354815
फ़ैक्स : 091-044-24311741
ई-मेल : sahityaakademichennai@gmail.com